NANDISUTTAṂ

by

DEVAVĀCAKA

with the CŪRṆI by

JINADĀSA GAṆI MAHATTARA

Edited by

MUNI SHRI PUNYAVIJAYAJI

General Editors :

Dr V S. AGRAWALA

Pandit DALSUKH MALVANIA

PRAKRIT TEXT SOCIETY

VARANASI-5 AHMEDABAD-9

1966

Published by
DALSUKH MALVANIA
Secretary,
PRAKRIT TEXT SOCIETY
VARANASI-5

Price Rs 10/-

Available from :

1 MOTILAL BANARASIDASS NEPALI KHAPRA Post Box 75 VARANASI
2 CHAUKHAMBA VIDYABHAVAN CHAWK VARANASI
3 GURJAR GRANTHARATNA KARYALAYA GANDHI ROAD AHMEDABAD-1
4 SARASWATI PUSTAK BHANDAR RATANPOLE HATHIKHANA AHMEDABAD-1
5 MUNSHI RAM MANOHARLAL NAI SARAK DELHI

Printed by :-
JAYANTI DALAL
Vasant P Press
Gheekanta Ghelabhai's Wadi,
AHMEDABAD-1

सिरिदेववायगविरइयं

नंदीसुत्तं

सिरिजिणदासगणिमहत्तरविरइयाए चुण्णीए संजुयं

संशोधकः सम्पादकश्च

मुनिपुण्यविजयः

जिनागमरहस्यवेदिजैनाचार्यश्रीमद्विजयानन्दसूरिवर(प्रसिद्धनाम--आत्मारामजीमहाराज)शिष्यरत्न–
प्राचीनजैनभाण्डागारोद्धारकप्रवर्तकश्रीमत्कान्तिविजयान्तेवासिनां
श्रीजैनआत्मानन्दग्रन्थमालासम्पादकानां मुनिप्रवरश्रीचतुरविजयानां विनेयः

प्राकृत ग्रन्थ परिषद्,

वाराणसी–५ अहमदाबाद–९,

वीरसंवत् २४९२ विक्रमसंवत् २०२२ इस्वीसन् १९६६

प्रकाशक –

दलसुख मालवणिया

सेक्रेटरी प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी

वाराणसी-५

मुद्रक –

जयंति दलाल

वसंत प्रिन्टींग प्रेस

घीकांटा घेलाभाईकी वाडी

अहमदाबाद-१

गंथसमप्पणं

वरसुयसायरवीईतरतमण-वयण-कायजोगाणं ।
वरजिणआगमपयडणकरणे अपमत्तजोगाण ॥ १ ॥

जोगाजोगविहन्नूण नूण गंभीरिमाए गरिमाणं ।
'आगमउद्धारय 'वरउवाहिमंताण सताणं ॥ २ ॥

आयरियपुगवाण सागरआणंदसूरिणामाणं ।
महणायसद्दसच्चावयाण दुसमम्मि कालम्मि ॥ ३ ॥

करकमलकोसमज्झे ताण सपइ दिवंगयाण मए ।
अप्पिज्जइ गंथोऽय विणएण पुण्णविजएणं ॥ ४ ॥

ग्रन्थसमर्पण

जिनका मन वचन-काययोग श्रेष्ठ श्रुतसागरकी तरंगोंमें तैरता था, जो श्रेष्ठ जिनागमके प्रकाशनमें अप्रमत्तयोगसे प्रवृत्त थे, योग-अयोग के विवेक में कुशल थे, गाम्भीर्यगुणकी गरिमासे अन्वित थे, 'आगमोद्धारक'की श्रेष्ठ पदवीसे विभूषित संत थे, और दुःषमकालमें जिन्होंने अपने आपमें 'महानाद' शब्दको सत्य सिद्ध किया था ऐसे साम्प्रत कालमें दिवंगत आचार्यश्रेष्ठ श्रीसागरानन्दसूरिजीके पवित्र करकमल रूप कोषमें यह ग्रन्थ विनयपूर्वक समर्पित करता हूँ।

पुण्यविजय

प्रकाशकीय निवेदन

जैन आगम ग्रन्थों के प्रकाशनके लिए अब तक अनेक व्यक्ति और संस्थाओंने प्रयत्न किया है। ई. १८४८ में सर्व प्रथम स्टिवेन्सन ने कल्पसूत्रका अनुवाद प्रकाशित किया किन्तु वह क्षतिपूर्ण था। वस्तुतः वेबर ही सर्वप्रथम विद्वान माने जायंगे जिन्होंने इस दिशामें नया प्रस्थान शुरू किया। उन्होंने ई. १८६५–६६ में भगवती सूत्रके कुछ अंशो का संपादन किया और उन पर टिप्पणीरूप अपना अध्ययन भी लिखा।

राय धनपतसिंह बहादुरने आगमोका प्रकाशन १८७४ में शुरू किया और कई आगम प्रकाशित किये किन्तु उनका मूल्य हस्तप्रतो की मुद्रित आवृत्तिसे कुछ अधिक था। फिर भी– विद्वानों को दुर्लभ वस्तु सुलभ बनानेका श्रेय उन्हें है ही। जेकोबीका कल्पसूत्र (ई. १८७९), और आचारांग (ई. १८८२), ल्युमनका औपपातिक (ई. १८८३) और आवश्यक (ई. १८९७), स्टेइन्थलका ज्ञाताधर्मकथा का कुछ अंश (ई. १८८१), होर्नलका उपासकदशा (ई. १८९०), शुब्रिंगके आचारांग (ई. १९१०) इत्यादि ग्रन्थ आगमों के संपादनकी कला में आधुनिक विद्वानों को संमत ऐसी पद्धति को अपनाकर प्रकाशित हुए थे। फिर भी लाला सुखदेव सहायद्वारा ऋषि अमोलकक्रुत हिन्दी अनुवाद के साथ (ई. १९१४–२०) जो ३२ आगम प्रकाशित हुए तथा आगमोदय समिति द्वारा समग्र सटीक आगमों का ई. १९१५में जो मुद्रण प्रारंभ हुआ उनमें उस पद्धति की उपेक्षा ही हुई। आचार्य सागरानन्दसूरि द्वारा संपादित संस्करण शुद्धिकी और मुद्रण की दृष्टिसे राय धनपतसिंहके सस्करणसे आगे बढा हुआ है और विद्वानोंके लिये उपयोगी भी सिद्ध हुआ है। इस संस्करणके प्रकाशनके बाद जैनधर्म और दर्शनके अध्ययन और संशोधन में जो प्रगति हुई उसका श्रेय आचार्य सागरानन्दसूरिको है। किन्तु इतना होने पर भी आगमों की आधुनिक पद्धतिसे समीक्षित वाचना की आवश्यकता तो बनी ही रही थी। पाटनमें ई.१९४३ में आगम प्रकाशनके लिए जिनागम प्रकाशिनी ससदकी स्थापना की गई किन्तु उससे अब तक कुछ भी प्रकाशन हुआ नहीं। पू. पा. मुनिश्री पुण्यविजयजी लगातार चालीससे भी अधिक वर्ष से इस प्रयत्नमें है कि आगमोंका सुसपादित सस्करण प्रकाशित हो। उन्होंने इस दृष्टिसे प्राचीन प्रतों की शोध करके कई मूल आगमों और उनकी प्राकृत-सस्कृत टीकाओ के पाठ संशोधित किए हैं। इतना ही नहीं उन्होंने टीकाओंमें या अन्य ग्रन्थोंमें आगमोके जो अवतरण आये हैं उनका आधार लेकर भी पाठशुद्धिका प्रयत्न किया है। उनके इस प्रयत्नको ही मुख्यरूपसे नजर समक्ष रख कर स्वतन्त्र भारतके प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्रप्रसादने ई. १९५३ में प्राकृत ग्रन्थ परिषद्की स्थापना की। अबतक इस परिषद् के द्वारा प्राकृत भाषाके कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ सुसंपादित होकर प्रकाशित हुए है। तथा पं. हरगोविंददासका सुप्रसिद्ध पाइयसद्दमहण्णवो भी पुनः मुद्रित हुआ है। प्राकृत ग्रन्थपरिषद् के द्वारा सटीक आगमों का प्रकाशन होना है यह जानकर केवल मूल आगमो के प्रकाशनके लिए बंबईके महावीर जैन विद्यालयने ई. १९६० में योजना बनाई और पू. मुनिश्री का सहकार मांगा जो सहर्ष दिया गया।

यह परम हर्षका विषय है कि प्राकृत ग्रन्थ परिषद् अब अपने मुख्य ध्येय के अनुसार आगमप्रकाशनके क्षेत्रमें भी प्रवेश कर रही है और समग्र आगमके मगलभूत नन्दीसूत्र आ० जिनदास महत्तर कृत चूर्णि और आचार्य हरिभद्रकृत वृत्ति आदिके साथ नवम और दशम ग्रन्थके रूपमें प्रकाशित कर रही है। इसका श्रेय पू. पा. मुनिराज श्री पुण्यविजयजी को है जिन्होंने बडे परिश्रम से इनका संपादन दीर्घकालीन अध्यवसायसे अनेक हस्तप्रतो और टीकाओंके आश्रयसे किया है। इसके लिए प्राकृत ग्रन्थ परिषद् और विद्वज्जगत उनका ऋणी रहेगा।

ता. २९–६–६६

दलसुख मालवणिया

मंत्री

नन्दिसूत्रमूलकी 'जे०' सञ्ज्ञकप्रतिके प्रथम पत्रकी प्रथम पृष्ठि और अंतिम (२६वाँ) पत्रकी द्वितीय पृष्ठि ।

नन्दिसूत्रमूलकी 'ख०' सञ्ज्ञक प्रतिके प्रथम और अंतिम (१९वाँ) पत्रकी द्वितीय पृष्ठि ।

नन्दिसूत्रचूर्णिकी 'जे०' सञ्ज्ञकप्रतिका जिस पत्रसे प्रारंभ होता है उस १८वे पत्रकी और अंतिम (२२३वाँ) पत्रकी द्वितीय पृष्ठि ।

प्रस्तावना

॥ जयन्तु वीतरागाः ॥

चूर्णिसहित नन्दीसूत्रके सशोधनके लिये मूलसूत्रकी आठ और चूर्णिकी चार, एवं सब मिलकर बारह प्रतियाँ सामने रक्खी गई है। इनमें से मूलसूत्रकी तीन और चूर्णीकी एक, ये चार ताडपत्रीय प्रतियाँ है। इन सबोका परिचय इस प्रकार है—

जे० प्रति—यह प्रति जेसलमेरके किलेमे स्थित खरतरगच्छीय युगप्रधान आचार्य श्रीजिनभद्रसूरि ताडपत्रीय ज्ञान-भंडारकी ताडपत्रीय प्रति है। सूचीमें इस प्रतिका क्रमाङ्क ७७ है। इसमें पत्र १ से २६ में नन्दीसूत्र मूल है और पत्र १ से २९७ में श्रीमलयगिरिसूरिकृत वृत्ति है। प्रतिकी लबाई-चौडाई ३३॥×२॥ इंच है। प्रतिपत्रमें पत्रकी चौडाईके अनुसार चार या पांच पंक्तियाँ लिखी है। प्रति तीन विभागमें लिखी गई है। प्रति शुद्धतम है। पुष्पिकाके लेखानुसार इस प्रति का सशोधन खरतरगच्छीय आचार्य श्रीजिनभद्रसूरिने स्वयं किया है। अनेक स्थानपर आपने उपयोगी टिप्पनीयाँ भी की है, जो हमने हमारे मुद्रणमें तत्तत् स्थान पर दे दी है। प्रतिकी लिपि सुन्दरतम है। अन्तमें लेखककी पुष्पिका इस प्रकार है—

> स्वस्ति। सवत् १४८८ वर्षे श्री**सत्यपुरे** पौष वदि १० दिने श्री**पार्श्वदेव**जन्मकल्याणके श्री**खरतरगणाधिपैः श्रीजिनराजसूरि**पट्टालंकारसारैः प्रभुश्रीमज्जि**नभद्रसूरि**सूर्यावतारैः श्री**नन्दिसिद्धान्तपुस्तकं** स्वहस्तेन शोधितं पाठितं च। तच्च श्रीश्रमणसङ्घेन वाच्यमानं चिर नन्दतु॥

सामान्यतया श्री**जिनभद्र**सूरिके उपदेशसे लिखाई गई प्रतियाँ **स्तम्भतीर्थ**(खंभात)निवासी खरतरगच्छीय श्रावक परीक्षित **धरणाशाह** या श्रीमालिज्ञातीय (?) **बलिराज-उदयराज**की पाई गई है। किन्तु इस प्रतिमें इन तीनोंमेंसे किसीके नामका उल्लेख नहीं है। यहां यह भी स्पष्ट होता है कि अपने विहारगत क्षेत्रोंमें भी आचार्य श्रीजिनभद्रसूरिको अन्य मुख्य कार्योंके साथ साथ पुस्तकलेखन-सशोधन-अध्यापनादि कार्य भी था।

सं० प्रति—यह प्रति पाटन-सघवीपाडाके **लघुपोशालिक** ताडपत्रीय जैन ज्ञानभंडारकी ताडपत्रीय प्रति है। इसके पत्र ८२ है। प्रतिपत्रमें तीन या चार पंक्ति लीखी है। प्रतिपंक्तिमें ४० से ४३ अक्षर लिखे है। प्रति दो विभागमें लिखी है। इसकी लंबाई-चौडाई १४×१॥ इचकी है। प्रतिकी लिपि सामान्यतया अच्छी है। अन्तमें लेखककी पुष्पिका नहीं है। इसके अन्तमें **अनुज्ञानन्दी** नहीं है।

खं० प्रति—यह प्रति **खंभात**के श्री**शान्तिनाथताडपत्रीय जैनज्ञानभंडार**की ताडपत्रीय प्रति है। प्राच्यविद्यामंदिर-बडौदासे प्रकाशित इस भंडारकी सूचीमें इसका क्रमाङ्क ३८ है। इसमें पत्र १ से १८ में नन्दीसूत्र मूल है, पत्र १८-१९ में **अनुज्ञानन्दी** है और पुन पत्र १ से २४७ में नन्दीसूत्रकी मलयगिरीया वृत्ति है। प्रतिकी लंबाई-चौडाई ३१॥×२॥ इंच है। ताडपत्रकी चौडाईके अनुसार तीनसे पाँच पंक्तियाँ लिखी हुई हैं। प्रतिपंक्तिमें १०१ से ११९ अक्षर लिखे पाये जाते है। प्रति शुद्धप्राय है और लिपि सुन्दरतम है। प्रति तीन विभागमें लीखी गई है। अन्तमें इस प्रकारकी पुष्पिका है—

> स० १२९२ वर्षे वैशाख शुदि १३ अद्येह **बीजापुरे** श्रावकपौषधशालायां श्री**देवभद्रगणि** प० **मलयकीर्ति** पं० **अजितप्रभगणि**प्रभृतीनां व्याख्यानत ससारासारतां विचिन्त्य सर्वज्ञोक्तं शास्त्र प्रमाणमिति मनसि ज्ञात्वा सा० **धणपाल**सुत सा० **रत्नपाल** ठ० **गजसुत** ठ० **विजयपाल** श्रे० **देल्हा**सुत श्रे० **वील्हण** मह० **जिणदेव** मह० **वीकल**सुत ठ० **आसपाल** श्रे० **साल्हा** ठ० **सहजा**सुत ठ० **अरसीह** सा० **राहड**सुत सा० **लाहड**प्रभृतिसमस्तश्रावकैः मोक्षफलप्रार्थकैः समस्तचतुर्विधसङ्घस्य पठनार्थं वाचनार्थं च ममर्पणाय लिखापितम्॥छ॥

इन्हीं विजापुरके श्रावकोंकी लिखाई हुई अन्य कइ ताडपत्रीय प्रतिया खंभातके इस भाण्डागारमें विद्यमान हैं।

डे० प्रति—यह प्रति अहमदाबादके डेला उपाश्रयके ज्ञानभडारकी है। इसमें मलयगिरीया टीका भी पचपाठरूपसे लिखित है। साथमें अनुज्ञानन्दी भी है। कागज पर लिखी हुई यह प्रति अनुमान सत्रहवीं सदीमें लिखी मालूम होती है।

ल० प्रति—यह प्रति अहमदाबाद-खवारकी पोल्के उपाश्रयके ज्ञानभडारकी है। इसकी पत्रसख्या ३५ हैं। हरेक पत्रमें नव पक्तियाँ हैं। हरेक पंक्तिमें ३१ से ४२ अक्षर लिखे हैं। प्रतिकी लिपि सुन्दरतम है। अक्षर मोटे हैं। कागज पर लिखो हुइ इस प्रतिके अतमें लेखककी पुष्पिका इस प्रकार है—

नन्दी सम्पत्ता ॥छ॥ स १४८५ वर्षे फाल्गुन सुदि ७ शनौ श्रीभीमपल्लीय [अक्षर बीगाड दिये हैं]।

श्री ॥ठा॥ शुभं भवतु ॥ठा॥

इस पुष्पिकामें बो अक्षर बिगाड दिये हैं उनके स्थानमें बहार इस प्रकार नये अक्षर लिखे है—

साह श्रीवच्छासुत साह सहिसकस्य स्वपुण्यार्थे पुस्तकभडारे कारापिता सुत वर्धमानपुस्तकपरिपालनार्थं ॥ छ ॥

मो० प्रति—यह प्रति पाटन–श्रीहेमचद्राचार्यजैनज्ञानमदिरमें स्थित मोदी ज्ञानभडारकी है। यह प्रति विक्रमकी सोलहवीं सदीमें लिखी हुई है।

शु० प्रति—यह प्रति पाटन–श्रीहेमचन्द्राचार्यजैनज्ञानमदिरमें स्थित शुभवीरजैनज्ञानभडारकी है। प्रति प्राय शुद्ध है। प्रति अनुमान सत्रहवीं सदीके उत्तरार्द्धमें लिखी प्रतीत होती है।

मु० प्रति—यह प्रति आगमोद्धारक श्रीसागरान दसूरिवरसम्पादित श्रीमलयगिरिकृतटीकायुक्त है। जो आपने आगम वाचनाके समय सम्पादित की है। यह आवृत्ति वि स १९७३में आगमोदयसमिति–सुरतकी ओरसे प्रकाशित हुई है।

चूर्णीकी प्रतियाँ

जे० प्रति—यह प्रति जेसलमेर किलेमें स्थित श्रीजिनभद्रीय ताडपत्रीय जैन ज्ञानभडारकी ताडपत्रीय प्रति है। इसका क्रमाङ्क ४१० है। इस क्रमाकमें तीन ग्रन्थ हैं–१ दशवैकालिक अगस्त्यसिंहीया चूर्णी पत्र १८४। २ नदीसूत्रचूर्णी पत्र १८५–२२३। ३ अनुयोगद्वारसूत्रचूर्णी पत्र १२४–२७५। इनमसे नदीचूर्णी और अनुयोगद्वारचूर्णी ये दोनों चूर्णीयाँ किसी गीतार्थकी सशोधित हैं। प्रतिकी लबाई–चौडाई २५×२॥ इंचकी है। प्रतिके अतमें लेखनसवत् या लेखककीपुष्पिका नहीं है। तथापि प्रतिका रग-ढग देखनेसे प्रतीत होता है कि–यह प्रति तेरहवीं सदीमें लिखित है। प्रति शुद्धप्राय है।

आ० प्रति—यह प्रति आगमोद्धारकजी श्रीसागरान दसूरिमहाराजसम्पादित मुद्रित प्रति है। जिसका प्रकाशन श्रीऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेताम्बरसस्था–रतलामकी ओरसे हुआ है। पूज्यश्रीको इसकी कोई अच्छी प्रति न मीलनेके कारण यह बहुत अशुद्ध छपी है। फिर भी एक प्रत्य तरकी तोरसे हमारे सशोधनमें यह आवृत्ति काममें ही आई है।

दा० प्रति—यह प्रति जिनागमज्ञ पूज्य श्रीविजयदानसूरिमहाराजसम्पादित मुद्रित प्रति है। जो भाई हीरालालके द्वारा प्रकाशित है। इसमें भी काफी अशुद्धियाँ हैं। तथापि पूज्य सागरान दसूरिम०की आवृत्तिकी अपेक्षा यह कुछ अच्छी आवृत्ति है।

चूर्णिके सम्पादन और सशोधनके समय पाटन–श्रीहेमचन्द्राचार्यजैनज्ञानमदिरकी एक प्रति और श्रीलालभाई दलपतभाई भारतीय सस्कृति विद्यामदिरकी प्रतिको भी सामने रक्खी थी। ये दोनों प्रतियाँ क्रमश सोलहवीं और सत्रहवीं सदीमें लिखी हुई प्रतियाँ हैं और अशुद्धिभरपूर प्रतियाँ हैं। तथापि शुद्ध पाठोंके निर्णयमें ये भी सहायक हुई है।

इस चूर्णीके सशोधनमें हमारे लिये मुख्य आधारस्तम्भ जे० प्रति ही है, जो अतीव शुद्ध प्रति है।

सूत्रप्रतियोंकी विशेषता

स० डे० मो०, ये तीन प्रतियोंका प्रतिलेखनके बाद किसी विद्वानने सशोधन नहीं किया है।

जे० खं० ल० शु०, ये चार प्रतियाँ सशोधित प्रतियाँ है। इनमें भी **जे०** प्रतिका सशोधन खरतरगच्छीय गीतार्थ आचार्य श्री**जिनभद्रसूरि**ने किया है, जिसमें आपने नन्दीसूत्रके प्रक्षिप्त पाठादिके विषयमें स्थान स्थान पर टिप्पणीयाँ की है, जो हमने हमारे इस प्रकाशनमें दी है, देखो पृ. ५ टि. १०, पृ. ८ टि. १०, पृ. १० टि. ७, पृ. ११ टि. ११, पृ. १२ टि. ५ इत्यादि।

शु० प्रति अधिकतर अंशमें **खं०** प्रतिसे मीलतीझुलती होने पर भी जुदा कुलकी मालुम होती है। इसमें स्थविरावलिकी प्रक्षिप्त मानी जानेवाली गाथाये नहीं है, देखो पृ. ८ टि. १०, पृ. १० टि. ७, पृ. ११ टि. ११। छट्ठे परिषत्सूत्रमें जो तीन गाथायें प्रक्षिप्त है वे भी इस प्रतिमें नहीं है, देखो पृ १२ टि ५। इसी प्रकार मनःपर्यवज्ञानके द्रव्यक्षेत्रादिविषयक सूत्रपाठमें जो सूत्रपाठ चूर्णीकार एवं हरिभद्रसूरिको अभिप्रेत है वह इस प्रतिसे पाया गया है, देखो पृ. २३ टि. ३। ऐसी जो जो अन्यान्य विशेषतायें इस प्रतिकी हैं उनका पादटिप्पणीयोंमें उल्लेख कर दिया है। यहां पर परीक्षण एवं अभ्यासकी दृष्टिसे पाठभेदोंका निरीक्षण करनेवाले विद्वानोसे प्रार्थना है कि इस मुद्रणमें पृ. १० टि. ७, पृ. ११ टि. ११ आदि दो-चार स्थानोंमें P प्रतिका निर्देश किया है वह P प्रति कौनसी? और किस भंडारकी थी? यह मेरी स्मृतिसे चला गया है। फिर भी यहाँ इतनी सूचना कर देता हूँ कि—शु० प्रति कुछ अंशमें इस P प्रतिसे मीलतीझुलती प्रति है। अर्थात् जैसे—**गोविंदाणं पि णमो**० तथा **तत्तो य भूयदिन्नं**० ये दो गाथायें P प्रतिमें नहीं हैं इसी तरह शु० प्रतिमें भी उपलब्ध नहीं हैं, देखो पृ. १० टि. ७। यद्यपि प्रस्तुत मुद्रणमें इस स्थानमें P प्रतिके साथ **शु०** प्रतिका उल्लेख छुट गया है किन्तु भंडारमें जा कर शु० प्रतिको पुन: देखके निश्चित किया है कि **गोविंदाणं पि णमो**० तथा **तत्तो य भूयदिन्नं**० ये दोनों गाथायें शु० प्रतिमें भी नहीं है। एवं—**वंदामि अज्जधम्मं**० तथा **वंदामि अज्जरक्खियं**० ये दो गाथायें शु० प्रतिमें नहीं हैं, देखो पृ० ८ टि. १०। चूर्णी एव टीकाओमें इन चार गाथाओका उल्लेख या व्याख्यान नहीं है। नन्दीसूत्रकी ऐसी और भी प्रति मेरे देखनेमें आई है, जिसमें ये गाथाये नहीं है। फिर भी नन्दीसूत्रकी प्राचीन ताडपत्रीय प्रतियोंमें और दूसरी बहुतसी पंद्रहवीं-सोलहवीं शती में लिखित कागजकी प्रतियोंमें ये गाथाये अवश्य ही उपलब्ध हैं। यहां प्रश्न होता है कि—चूर्णिकार और टीकाकारोंने इन गाथाओंका स्पर्श तक क्यों नहीं किया है?।

जे० और **मो०** प्रतिकी विशेषता यह है कि—इसमें प्रायः लुप्तव्यञ्जनके स्थानमें अस्पष्ट **य**श्रुतिके प्रयोग न होकर केवल **अ** और **आ** की श्रुतिवाले प्रयोग ही हैं, जो पूज्य श्रीसागरानन्दसूरिमहाराजके मुद्रणमें नजर आते है। ये दो प्रतियाँ उस परम्पराकी है, जिसमें अस्पष्ट यश्रुतिके प्रयोग कम है। आदि ण प्रयोगके स्थानमें **न**का प्रयोग मुख्य है। जैसे कि—नाण नाह नमंसिय नियम नदिघोस निग्गय नाल निम्मल सुयनिस्सिय आदि।

डे०शु० प्रतियाँ **न**प्रयोगके विषयमें जे०मो० प्रतियोंके समान है, किन्तु इन प्रतियोंमें अस्पष्ट यश्रुतिके प्रयोग ही प्रयुक्त हैं।

खं०स० प्रतियोमें **ण**प्रयोगकी प्रधानता है। किन्तु सं० प्रतिमें फुरन्त महन्त समन्ता आदि परसवर्णके प्रयोग नजर आते है, इतना खं० और स० प्रतिका भेद है। इसी तरह स० और खं० प्रतिका अन्तर यह है कि खं० प्रतिमें चडुलियम्वा पदीवम्वा आदि जैसे प्रयोग भी प्रयुक्त दिखाई देते है देखो पृ. १६ टि० ३।

उपर आठ प्रतियोंका परिचय दिया गया है, जो आज उपलब्ध प्रतियोंमें प्राचीन प्रतियाँ है। इतनी प्रतियाँ एकत्र करने पर भी चूर्णिकार एवं वृत्तिकारसम्मत ऐसे अनेक पाठ है जो इन इतनी प्रतियोंसे भी प्राप्त नहीं हुए है। इनका सूचन पादटिप्पणियोंमें यथास्थान किया है।

इस नन्दीसूत्रके सशोधन, पाठ, पाठभेद, पाठोकी कमीवेशीके निर्णयके लिये चूर्णि. हरिभद्रवृत्ति, मलयगिरिवृत्ति, श्रीचन्द्रीय

डे० प्रति—यह प्रति अहमदाबादके डेला उपाश्रयके ज्ञानभंडारकी है। इसमें मलयगिरीया टीका भी पंचपाठरूपसे लिखित है। साथमें अनुज्ञानन्दी भी है। कागज पर लिखी हुई यह प्रति अनुमान सत्रहवीं सदीमें लिखी मालूम होती है।

ल० प्रति—यह प्रति अहमदाबाद-ल्वारकी पोलके उपाश्रयके ज्ञानभंडारकी है। इसकी पत्रसंख्या ३५ हैं। हरेक पत्रमें नव पंक्तियाँ हैं। हरेक पंक्तिमें ३१ से ४२ अक्षर लिखे हैं। प्रतिकी लिपि सुन्दरतम है। अक्षर मोटे हैं। कागज पर लिखी हुई इस प्रतिके अंतमें लेखककी पुष्पिका इस प्रकार है—

नन्दी सम्मत्ता ॥छ॥ सं. १४८५ वर्षे फाल्गुन सुदि ७ शनौ श्रीभीमपल्लीय [अक्षर बीगाड दिये हैं]।

श्री ॥छ॥ शुभं भवतु ॥छ॥

इस पुष्पिकामें जो अक्षर बिगाड दिये हैं उनके स्थानमें बहार इस प्रकार नये अक्षर लिखे हैं—

साह श्रीवच्छासुत साह सहिसकस्य स्वपुण्यार्थं पुस्तकभंडारे कारापिता सुत वर्धमानपुस्तकपरिपालनार्थं ॥ छ ॥

मो० प्रति—यह प्रति पाटन–श्रीहेमचंद्राचार्यजैनज्ञानमंदिरमें स्थित मोदी ज्ञानभंडारकी है। यह प्रति विक्रमकी सोलहवीं सदीमें लिखी हुई है।

शु० प्रति—यह प्रति पाटन–श्रीहेमचन्द्राचार्यजैनज्ञानमंदिरमें स्थित शुभवीरजैनज्ञानभंडारकी है। प्रति प्रायः शुद्ध है। प्रति अनुमान सत्रहवीं सदीके उत्तरार्द्धमें लिखी प्रतीत होती है।

मु० प्रति—यह प्रति आगमोद्धारक श्रीसागरानंदसूरिवरसम्पादित श्रीमलयगिरिकृतटीकायुक्त है। जो आपने आगम वाचनाके समय सम्पादित की है। यह आवृत्ति वि. सं. १९७३में आगमोदयसमिति–सुरतकी ओरसे प्रकाशित हुई है।

चूर्णीकी प्रतियाँ

जे० प्रति—यह प्रति जेसलमेर किलेमें स्थित श्रीजिनभद्रीय ताडपत्रीय जैन ज्ञानभंडारकी ताडपत्रीय प्रति है। इसका क्रमाङ्क ४१० है। इस क्रमांकमें तीन ग्रन्थ हैं–१ दशवैकालिक अगस्त्यसिंहीया चूर्णी पत्र १८४। २ नन्दीसूत्रचूर्णी पत्र १८५–२२३। ३ अनुयोगद्वारसूत्रचूर्णी पत्र १२४–२७५। इनमेंसे नन्दीचूर्णी और अनुयोगद्वारचूर्णी ये दोनों चूर्णियाँ किसी गीतार्थकी संशोधित है। प्रतिकी लंबाई–चौडाई २५×२॥ इंचकी है। प्रतिके अंतमें लेखनसंवत् या लेखककीपुष्पिका नहीं है। तथापि प्रतिका रंग-ढंग देखनेसे प्रतीत होता है कि–यह प्रति तेरहवीं सदीमें लिखित है। प्रति शुद्धप्राय है।

आ० प्रति—यह प्रति आगमोद्धारकजी श्रीसागरानंदसूरिमहाराजसम्पादित मुद्रित प्रति है। जिसका प्रकाशन श्रीऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेताम्बरसंस्था–रतलामकी ओरसे हुआ है। पूज्यश्रीको इसकी कोई अच्छी प्रति न मीलनेके कारण यह बहुत अशुद्ध छपी है। फिर भी एक प्रत्यंतरकी तौरसे हमारे संशोधनमें यह आवृत्ति काममें ही आई है।

दा० प्रति—यह प्रति जिनागमज्ञ पूज्य श्रीविजयदानसूरिमहाराजससम्पादित मुद्रित प्रति है। जो भाई हीरालालके द्वारा प्रकाशित है। इसमें भी काफी अशुद्धियाँ हैं। तथापि पूज्य सागरानंदसूरिम०की आवृत्तिकी अपेक्षा यह कुछ अच्छी आवृत्ति है।

चूर्णिके सम्पादन और संशोधनके समय पाटन–श्रीहेमचन्द्राचार्यजैनज्ञानमंदिरकी एक प्रति और श्रीलालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिरकी प्रतिको भी सामने रक्खी थी। ये दोनों प्रतियाँ क्रमशः सोलहवीं और सत्रहवीं सदीमें लिखी हुई प्रतियाँ हैं और अशुद्धिभरपूर प्रतियाँ हैं। तथापि शुद्ध पाठोंके निर्णयमें ये भी सहायक हुई है।

इस चूर्णीके संशोधनमें हमारे लिये मुख्य आधारस्तम्भ जे० प्रति ही है, जो अतीव शुद्ध प्रति है।

सूत्रप्रतियोंकी विशेषता

सं० डे० मो०, ये तीन प्रतियोंका प्रतिलेखनके बाद किसी विद्वानने संशोधन नहीं किया है।

जे० खं० ल० शु०, ये चार प्रतियाँ संशोधित प्रतियाँ है। इनमें भी **जे०** प्रतिका संशोधन खरतरगच्छीय गीतार्थ आचार्य श्री**जिनभद्रसूरि**ने किया है, जिसमें आपने नन्दीसूत्रके प्रक्षिप्त पाठादिके विषयमें स्थान स्थान पर टिप्पणीयाँ की है, जो हमने हमारे इस प्रकाशनमें दी है, देखो पृ. ५ टि. १०, पृ. ८ टि. १०, पृ. १० टि. ७, पृ. ११ टि. ११, पृ. १२ टि. ५ इत्यादि।

शु० प्रति अधिकतर अंशमे **खं०** प्रतिसे मीलतीजुलती होने पर भी जुदा कुलको मालुम होती है। इसमें स्थविरावलिकी प्रक्षिप्त मानी जानेवाली गाथाये नहीं है, देखो पृ. ८ टि. १०, पृ. १० टि. ७, पृ. ११ टि. ११। छट्ठे परिषत्सूत्रमें जो तीन गाथायें प्रक्षिप्त है वे भी इस प्रतिमें नहीं है, देखो पृ. १२ टि. ५। इसी प्रकार मनःपर्यवज्ञानके द्रव्यक्षेत्रादिविषयक सूत्रपाठमें जो सूत्रपाठ चूर्णीकार एवं हरिभद्रसूरिको अभिप्रेत है वह इस प्रतिसे पाया गया है, देखो पृ. २३ टि. ३। ऐसी जो जो अन्यान्य विशेषतायें इस प्रतिकी हैं उनका पादटिप्पणीयोंमें उल्लेख कर दिया है। यहां पर परीक्षण एवं अभ्यासकी दृष्टिसे पाठभेदोका निरीक्षण करनेवाले विद्वानोसे प्रार्थना है कि इस मुद्रणमें पृ. १० टि. ७, पृ. ११ टि. ११ आदि दो-चार स्थानोंमें P प्रतिका निर्देश किया है वह P प्रति कौनसी? और किस भंडारकी थी? यह मेरी स्मृतिसे चला गया है। फिर भी यहाँ इतनी सूचना कर देता हूँ कि—शु० प्रति कुछ अंशमें इस P प्रतिसे मीलतीझुलती प्रति है। अर्थात् जैसे—**गोविंदाणं पि णमो०** तथा **तत्तो य भूयदिन्नं०** ये दो गाथायें P प्रतिमें नहीं हैं इसी तरह शु० प्रतिमें भी उपलब्ध नहीं हैं, देखो पृ. १० टि ७। यद्यपि प्रस्तुत मुद्रणमें इस स्थानमें P प्रतिके साथ **शु०** प्रतिका उल्लेख छुट गया है किन्तु भंडारमें जा कर शु० प्रतिको पुन: देखके निश्चित किया है कि **गोविंदाणं पि णमो०** तथा **तत्तो य भूयदिन्नं०** ये दोनों गाथाये शु० प्रतिमें भी नहीं है। एवं—**वंदामि अज्जधम्मं०** तथा **वंदामि अज्जरक्खियं०** ये दो गाथाये शु० प्रतिमें नहीं हैं, देखो पृ० ८ टि १०। चूर्णी एवं टीकाओमें इन चार गाथाओका उल्लेख या व्याख्यान नहीं है। नन्दीसूत्रकी ऐसी और भी प्रति मेरे देखनेमें आई है, जिसमें ये गाथायें नहीं है। फिर भी नन्दीसूत्रकी प्राचीन ताडपत्रीय प्रतियोमें और दूसरी बहुतसी पंद्रहवीं-सोलहवीं शती में लिखित कागजकी प्रतियोंमें ये गाथाये अवश्य ही उपलब्ध हैं। यहां प्रश्न होता है कि—चूर्णिकार और टीकाकारोंने इन गाथाओंका स्पर्श तक क्यों नहीं किया है?।

जे० और **मो०** प्रतिकी विशेषता यह है कि—इसमें प्रायः लुप्तव्यञ्जनके स्थानमें अस्पष्ट यश्रुतिके प्रयोग न होकर केवल **अ** और **आ** की श्रुतिवाले प्रयोग ही हैं, जो पूज्य श्रीसागरानन्दसूरिमहाराजके मुद्रणमें नजर आते है। ये दो प्रतियाँ उस परम्पराकी है, जिसमें अस्पष्ट यश्रुतिके प्रयोग कम है। आदि **ण** प्रयोगके स्थानमें **न**का प्रयोग मुख्य है। जैसे कि—नाण नाह नमंसिय नियम नदिवोस निग्गय नाल निम्मल सुयनिस्सिय आदि।

डे०शु० प्रतियाँ **न**प्रयोगके विषयमें जे०मो० प्रतियोंके समान है, किन्तु इन प्रतियोंमें अस्पष्ट यश्रुतिके प्रयोग ही प्रयुक्त हैं।

खं०स० प्रतियोंमें णप्रयोगकी प्रधानता है। किन्तु स० प्रतिमें फुरन्त महन्त समन्ता आदि परसवर्णके प्रयोग नजर आते है, इतना खं० और स० प्रतिका भेद है। इसी तरह स० और खं० प्रतिका अन्तर यह है कि ख० प्रतिमें चडुलियम्वा पदीवम्वा आदि जैसे प्रयोग भी प्रयुक्त दिखाई देते है देखो पृ. १६ टि० ३।

उपर आठ प्रतियोंका परिचय दिया गया है, जो आज उपलब्ध प्रतियोंमें प्राचीन प्रतियाँ है। इतनी प्रतियाँ एकत्र करने पर भी चूर्णिकार एवं वृत्तिकारसम्मत ऐसे अनेक पाठ है जो इन इतनी प्रतियोंसे भी प्राप्त नहीं हुए है। इनका सूचन पादटिप्पणियोंमें यथास्थान किया है।

इस नन्दीसूत्रके संशोधन, पाठ, पाठभेद, पाठोकी कमीवेशीके निर्णयके लिये चूर्णि, हरिभद्रवृत्ति, मलयगिरिवृत्ति, श्रीचन्द्रीय

टिप्पन, इन चारोंका समग्रभावसे उपयोग किया गया है, इतना ही नहीं, किंतु जहाँ जहाँ नंदीसूत्रके उद्धरण, व्याख्यान आदि आये हैं ऐसे द्वादशारनयचक्र, समवायाङ्गसूत्र एवं भगवतीसूत्रकी अभयदेवीया वृत्ति, विशेषावश्यकमलधारीया वृत्ति, पाक्षिकसूत्रवृत्ति आदि अनेक शास्त्रोंका उपयोग भी किया है, जिसकी प्रतीति इस सम्पादनकी पादटिप्पणियोंको देखनेसे होगी।

नंदीसूत्रकी चूर्णिके संशोधनके लिये मेरा आधारस्तम्भ जैसलमेरकी प्रति ही है। अगर यह प्रति प्राप्त न होती तो इसका जो गौरवपूर्ण सम्पादन हुआ है, वह शक्य न बनता। संस्कृत टीका निर्माणके बाद चूर्णियोंका अध्ययन कम हो जानेसे प्रायः आज ज्ञानभंडारोंमें जो जो आगमिक या आगमेतर शास्त्रोंके चूर्णिग्रंथोंकी हस्तप्रतियाँ हैं, वे सभी अशुद्धिभाण्डागारस्वरूप हो हो गई हैं। इतनी बात जरूर है कि–ज्यों ज्यों प्रति प्राचीन त्यों त्यों अशुद्धियाँ कम रहती है। किन्तु एक ही युगकी प्रतियोंके लिये यह अनुभव हुआ है कि–अगर वह प्रति प्राचीन प्रतिकी या भिन्न प्रदेशस्थित प्रतिकी नकल न हो कर, उसी युगकी या प्रदेशकी उत्तरोत्तर नकलकी नकल हो, तब तो उत्तरोत्तर अशुद्धियोंकी वृद्धि ही होती रही है, इतना ही नहीं पंक्तियोंकी पंक्तियाँ और सन्दर्भ के सन्दर्भ गायब हो गये हैं। अस्तु, मेरेको जैसलमेरकी प्रति मीली, यह मैं सिर्फ अपना ही नहीं, साथमें सब शास्त्रपाठी जैन गीतार्थ मुनिगण एवं विद्वानोंका भी सौभाग्य समझता हूं।

अनेक आगमोंकी चूर्णि, वृत्ति आदिके अवलोकनसे प्रतीत हुआ है कि–अगर प्राचीन एवं अलग अलग कुलकी प्रतियाँ प्राप्त न हों तो मुद्रणादिमें प्रायः सैंकडों अशुद्धियाँ पाठपरावृत्तियाँ आदि रहनेका सम्भव रहता है, इतना ही नहीं सन्दर्भके सन्दर्भ छूट जाते है। विद्वान् संशोधकोंके ध्यानमें लानेके लिये मैं यहां एक बातको उद्धृत करता हूं—

अनुयोगद्वारसूत्रकी चूर्णिका संशोधन मैंने पाटन ज्ञानभंडारकी दो प्राचीन ताडपत्रीय हस्तप्रतियाँ और खंभातके श्रीशान्तिनाथ ज्ञानभंडारकी दो ताडपत्रीय प्रतियाँ, एवं चार प्रतियोंके आधारसे सुचारुतया कर लिया। कुछ शंकास्थान होने पर भी दिलमें विश्वास हो गया था कि–एकदर संशोधन अच्छा हो गया है। किन्तु जब जैसलमेर जानेका मोका मिला, और वहाँके ज्ञानभंडारकी प्राचीन ताडपत्रीय प्रतिसे तुलना की तो कितने ही शङ्कास्थान दूर हुए, इतना ही नहीं, परन्तु अलग अलग स्थानमें हो कर दश–बारह पंक्तियाँ जितना दूसरे कुलकी प्रतियोंमें छूट गया हुआ नया पाठ प्राप्त हुआ और अनेकानेक अशुद्धियाँ भी दूर हुईं। यह प्राचीन प्राचीनतम एवं अलग अलग कुलकी प्रतियोंके उपयोगका साफल्य है।

प्रसंगवश यहाँ यह कहना भी उचित है कि–इस नंदीसूत्रचूर्णिके संशोधन एवं सम्पादनमें साद्यन्त उपयोगमें लाई गई प्रतियोंके अलावा दूसरी अनेक प्रतियाँ मैंने समय समय पर देखी हैं, इससे ज्ञात हुआ है कि–जैसलमेरकी प्रतिकी अपेक्षा इन प्रतियोंमें त द य आदि वर्णोंके प्रयोग विपुल प्रमाणमें नजर आये हैं।

नन्दीसूत्रके प्रणेता

नंदीसूत्रकारने नंदीसूत्रमें कहीं भी अपने नामका निर्देश नहीं किया है, किन्तु चूर्णिकार श्रीजिनदासगणि महत्तरने अपनी चूर्णिमें सूत्रकारका नाम निर्दिष्ट किया है, जो इस प्रकार है—

> 'एवं कतमंगलोवयारो थेरावलिकमे य दंसिए अरिहेसु य दंसितेसु दूसगणिसीसो देववायगो साहुजणहितट्ठाए इणमाह" [पत्र १३]

इस उल्लेखद्वारा चूर्णिकारने नन्दीसूत्रप्रणेता स्थविर श्रीदेववाचक हैं–ऐसा बतलाया है। आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि एवं आचार्य श्रीमलयगिरिसूरिने भी इसी आशयका उल्लेख अपनी अपनी टीकामें किया है, किन्तु इनका मूल आधार चूर्णिकारका उल्लेख ही है। चूर्णिकारके उल्लेखसे ही ज्ञात होता है कि–नन्दीसूत्रके प्रणेता नन्दिसूत्रस्थविरावलिगत अंतिमस्थविर श्रीदुष्यगणिके शिष्य श्रीदेववाचक हैं।

पंन्यासजी श्रीकल्याणविजयजीमहाराजने अपने 'वीरनिर्वाणसवत् और जैन कालगणना' निबन्धमें (नागरीप्रचारिणी भाग १० अंक ४) अनेकानेक प्रमाण और युक्ति द्वारा नन्दीसूत्रप्रणेता स्थविर देववाचक और जैन आगमोकी माथुरी एवं वाल्लभी वाचनाओको सवादित करनेवाले श्रीदेवर्द्धिगणि क्षमाश्रमणको एक बतलाया है।

नव्यकर्मग्रन्थकार आचार्य श्रीदेवेन्द्रसूरि महाराजने अपनी स्वोपज्ञ वृत्तिमे देवर्द्धिवाचक, देवर्द्धिक्षमाश्रमण नामके उल्लेखपूर्वक अनेकवार नन्दीसूत्रपाठके उद्धरण दिये है, यह भी उन्होने देववाचक और देवर्द्धिक्षमाश्रमणको एक व्यक्ति मानके ही दिये है। यह भी श्रीकल्याणविजयजी महाराजकी मान्यताको पुष्ट करनेवाला सबूत है। तथापि नन्दीकी स्थविरावलीमें अंतिम स्थविर दुष्यगणि है, जिनको नन्दीचूर्णिकारने देववाचकके गुरु दरशाये है। तब कल्पसूत्रकी वि. स० १२४६ में लिखित प्रतिसे ले कर आज पर्यन्तकी प्राचीन-अर्वाचीन ताडपत्रीय एवं कागजकी प्रतियोंमें स्थविरावलिके पाठोंकी कमी बेशीके कारण कोई एक स्थविरका नाम व्यवस्थितरूपसे पाया नहीं जाता है। इस कारण इन दोनो स्थविरोकों एक मानना यह कहां तक उचित है, यह तज्ज्ञ विद्वानोंके लिये विचारणीय है। देववाचक और देवर्द्धिक्षमाश्रमण इन नाम और विशेषण—उपाधिमें भी अंतर है। साथमें यह भी देखना जरूरी है कि नन्दीसूत्रकी स्थविरावलीमें वायगवंस, वायगपय, वायग, इस प्रकार वायग शब्दका ही प्रयोग मिलता है, दूसरे कोई वादी, क्षमाश्रमण, दिवाकर जैसे पदका प्रयोग नजर नहीं आता है। अगर देववाचकको क्षमाश्रमणकी भी उपाधि होती तो नन्दीचूर्णिकार जरूर लिखते ही। जैसे द्वादशारनयचक्रटीकाके प्रणेता सिंहवादी गणि क्षमाश्रमण, विशेषावश्यककी अपूर्ण स्वोपज्ञ टीकाको पूरी करनेवाले कोट्टार्यवादी गणि महत्तर, सन्मतितर्कके प्रणेता वादी सिद्धसेनगणी दिवाकर आदि नामोके साथ दो विशेषण—उपाधियाँ जुडी हुई मिलती है इसी तरह देववाचकके लिये भी दो उपाधियोंका निर्देश जरूर मिलता। अत' देववाचक और देवर्द्धिक्षमाश्रमण, ये दोनो एक ही व्यक्ति है या भिन्न, यह प्रश्न अब भी विचारणीय प्रतीत होता है। कल्पसूत्रकी स्थविरावली और नन्दीसूत्रकी स्थविरावलीका मेलझोल कैसे, कितना और कहां तक हो सकता है, यह भी विचारार्ह है।

वाचकपदकी अपेक्षाकृत प्राचीनता होने पर भी कल्पसूत्रकी समयसमय पर परिवर्धित स्थविरावलीमें थेर और खमासमण पदका ही निर्देश नजर आता है, यह भी दोनो स्थविर और स्थविरावलीकी विशेषता एव भिन्नताके विचारका साधन है।

यहाँ पर प्रसगोपात्त एक बात स्पष्ट करना उचित है कि—भद्रेश्वरसूरिकी कहावलीमें एक गाथा निम्नप्रकारकी नजर आती है—

वाई य खमासमणे दिवायरे वायगे ति एगट्ठा। पुव्वगयं जस्सेस जिणागमे तम्मिमे नामा॥

अर्थात्—वादी, क्षमाश्रमण, दिवाकर और वाचक, ये एकार्थक—समानार्थक शब्द है। जिनागममें जो पूर्वगत शास्त्र हैं उनके शेष अर्थात् अंशोंका पारम्परिक ज्ञान जिनके पास है उनके लिये ये पद है।

इस गाथासे यह स्पष्ट है कि—इन उपाधियोंवाले आचार्योंके पास पूर्वगतज्ञानकी परंपरा थी। किन्तु आज जैन परम्परामें जो ऐसी मान्यता प्रचलित है कि—इन पदधारक आचार्योंको एक पूर्वआदिका ज्ञान था, यह मान्यता भ्रान्त एवं गलत प्रतीत होती है। कारण यह है कि—अगर आचाराङ्गादि प्राथमिक अंगआगम शीर्णविशीर्ण हो चूके थे, इस दशामें पूर्वश्रुतके अखंड रहनेकी सभावना ही कैसे हो सकती है?।

स्थविर श्रीदेववाचककी नन्दीसूत्रके सिवा दूसरी कोई कृति उपलब्ध नहीं है।

चूर्णिकार

नन्दीसूत्रचूर्णिके प्रणेता आचार्य श्रीजिनदास गणि महत्तर है। सामान्यतया आज यह मान्यता प्रचलित है कि—जैन आगम उपरके भाष्योंके प्रणेता श्रीजिनभद्र गणि क्षमाश्रमण और चूर्णियोंके रचयिता श्रीजिनदास गणि महत्तर

ही है, और ऐसे प्राचीन उल्लेख पट्टावली आदिमें पाये भी जाते हैं, किन्तु भाष्य-चूर्णियोंके अवगाहन बाद ये दोनों मान्यताएं गलत प्रतीत हुई हैं। यहाँ पर भाष्यकारोंका विचार अप्रस्तुत है, अतः सिर्फ यहाँ पर जैन आगमोंके उपर जो प्राचीन चूर्णियाँ उपलब्ध हैं उन्हींके विषयमें ही विचार किया जाता है। आज जैन आगमोंके उपर जो चूर्णिनामक प्राकृतभाषाप्रधान व्याख्याग्रन्थ प्राप्त हैं उनके नाम क्रमशः ये हैं—

१ आचाराङ्गचूर्णि २ सूत्रकृताङ्गचूर्णि ३ भगवतीचूर्णि ४ जीवाभिगमचूर्णि ५ प्रज्ञापनासूत्रशरीरपदचूर्णि ६ जम्बूद्वीपकरणचूर्णि ७ दशाकल्पचूर्णि ८ कल्पचूर्णि ९ कल्पविशेषचूर्णि १० व्यवहारसूत्रचूर्णि ११ निशीथसूत्रविशेषचूर्णि १२ पञ्चकल्पचूर्णि १३ जीतकल्पबृहच्चूर्णि १४ आवश्यकचूर्णि १५ दशकालिकचूर्णि श्रीअगस्त्यसिंहकृता १६ दशकालिकचूर्णि वृद्धविवरणाख्या १७ उत्तराध्ययनचूर्णि १८ नन्दीसूत्रचूर्णि १९ अनुयोगद्वारचूर्णि २० पाक्षिकचूर्णि।

उपर जिन बीस चूर्णियोंके नाम दिये हैं उनका और इनके प्रणेताओंके विषयमें विचार करनेके पूर्व एतद्विषयक चूर्णिग्रन्थोंके प्राप्त उल्लेखोंको मैं एकसाथ यहाँ उद्धृत कर देता हूँ, जो भविष्यमें विद्वानोंके लिये कायमकी विचारसामग्री बनी रहे।

(१) आचाराङ्गचूर्णी। अन्त —

से हु निरालंबणमप्पतिट्ठितो। शेषं तदेव॥ इति आचारचूर्णी परिसमाप्ता॥ नमो सुयदेवयाए भगवईए॥ ग्रन्थाग्रम् ८३००॥

(२) सूत्रकृताङ्गचूर्णी। अन्त —

सद्दहामि जध सूत्रेति णेतव्वं सव्वमिति॥ नमः सर्वविदे वीराय विगतमोहाय॥ समाप्तं चेदं सूत्रकृताभिधं द्वितीयमङ्गमिति। भद्रं भवतु श्रीजिनशासनाय। सूगडागचूर्णि समाप्ता॥ ग्रन्थाग्रम् ९५००॥

(३) भगवतीचूर्णि—

श्रीभगवतीचूर्णि परिसमाप्तेति॥ इति भद्रं॥

सुअदेवय तु वंदे जीइ पसाएण सिक्खियं नाणं। बिइयं पि बंतव (?भ)देविं पसन्नवाणिं पणिवयामि॥ ग्रन्थाग्र ६७०७॥श्री॥

(४) जीवाभिगमचूर्णि—

इस चूर्णीकी प्रति अद्यावधि ज्ञात किसी भंडारमें देखनेमें नहीं आई है।

(५) प्रज्ञापनाशरीरपदचूर्णि। अन्त —

जमिह समयविरुद्धं बद्धं बुद्धिविकलेण होज्जा हि। तं जिणवयणविहन्नू खमिऊण मे पसोहिंतु॥ १॥
॥ सरीरपदस्स चुण्णी जिणभद्दखमासमणकित्तिया समत्ता॥ अनुयोगद्वारचूर्णि पत्र ७४।

याकिनीमहत्तरासूनु आचार्य श्रीहरिभद्रसूरिकृत अनुयोगद्वारलघुवृत्ति पत्र ९९ में भी यही उल्लेख है।

(६) जम्बूद्वीपकरणचूर्णि। अन्त —

एवं उवरिल्लभागस्स तेरासियं पउंजियव्वं। विहं चेहवुड्ढीओ आणेयव्वाओ॥ जंबुद्दीवपण्णत्तिकरणाणं चुण्णी समत्ता॥

(७) दशाश्रुतस्कन्धचूर्णि। अन्त —

जाव णया वि। जाव करणओ—सव्वेसिं पि णयाणं० गाथा॥ दशानां चूर्णी समाप्ता॥

(८) कल्पचूर्णी—

आउयवज्जा उ० गाहा ९९। वित्थरेण जहा विसेसावस्सगभासे। ' सामित्तं चेव पगडीण को केवतियं बंधइ ' खवेइ वा केत्तियं को उ ' त्ति जहा कम्मपगडीए। एत पसंगेण गतं।

अन्तः—

तओ य आराहणातो छिण्णससारी भवति ससारसततिं छेत्तुं मोक्खं पावतीति ॥ **कल्पचूर्णी** समाप्ता ॥

ग्रन्थाग्रम्—५३०० प्रत्यक्षरगणनया निर्णीतम् ॥ [सर्वग्रन्थाग्रम्—१४७८४] ॥

(९) कल्पविशेषचूर्णि—

कप्पविसेसचुण्णी समत्तेति ॥

(१०) व्यवहारचूर्णि । अन्तः—

व्यवहारस्य भगवतः अर्थविवक्षाप्रवर्त्तने दक्षम् । **विवरणमिदं** समाप्तं श्रमणगणानाममृतभूतम् ॥१॥

(११) निशीथविशेषचूर्णि । आदिः—

नमिऊणऽरहंताणं, सिद्धाण य कम्मचक्कमुक्काणं । सयणसिणेहविमुक्काण सव्वसाहूण भावेण ॥१॥

सविसेसायरजुत्तं काउ पणाम च अत्थदायिस्स । **पज्जुण्णखमासमणस्स** चरण-करणाणुपालस्स ॥२॥

एवं कयप्पणामो पकप्पणामस्स विवरणं वन्ने । **पुव्वायरियकयं** चिय अहं पि तं चेव उ **विसेसे** ॥३॥

भणिया **विमुत्तिचूला** अहुणाऽवसरो **णिसीहचूलाए** । को संबंधो तिस्सा ? भण्णइ, इणमो निसामेहि ॥४॥

तेरहवा उद्देशके अन्तमें—

संकरजडमउडविभूसणस्स तण्णामसरिसणामस्स । तस्स सुतेणेस कता विसेसचुण्णी णिसीहस्स ॥

पन्द्रहवा उद्देशके अन्तमें—

रविकरमभिधाणक्खरसत्तमवग्गतअक्खरजुएणं । णामं जस्सित्थीए सुतेण तिस्से कया चुण्णी ॥

सोलहवा उद्देशके अन्तमें—

देहडो सीह थोरा य ततो जेट्ठा सहोयरा । कणिट्ठा **देउलो णण्णो** सत्तमो य **तिइज्जिओ** ।

एतेसि मज्झिमो जो उ मंदेवी(मंदधी) तेण वित्तिता(विन्तिता) ॥

अन्तः—

जो गाहासुत्तत्थो चेवविधपागडो फुडपदत्थो । रइओ परिभासाए साहूण अणुग्गहट्ठाए ॥१॥

ति-चउ-पण-ऽट्ठमवग्गे ति-पण-ति-तिगक्खरा ठवे तेसिं । पढम-ततिएहि णिद्दुइ सरजुएहिं णामं कयं जस्स ॥२॥

गुरुदिण्णं च **गणित्तं महत्तरत्तं** च तस्स तुट्ठेण । तेण कतेसा **चुण्णी विसेसणामा** णिसीहस्स ॥३॥

णमो सुयदेवयाए भगवतीए ॥ **जिणदासगणिमहत्तरेण** रइया **णिसीहचुण्णी** समत्ता ॥

(१२) पञ्चकल्पचूर्णि । अन्तः—

कप्पपणयस्स मेओ परूविओ मोक्खसाहणट्ठाए । जं चरिऊण सुविहिया करेंति दुक्खक्खयं धीरा ॥

पञ्चकल्पचूर्णिः समाप्ता ॥ ग्रन्थप्रमाणं सहस्त्रत्रयं शतमेकं पञ्चविंशत्युत्तरम् ३१२५ ॥

(१३) जीतकल्पबृहच्चूर्णी । अन्तः—

इति जेण जीयदाणं साहूणऽइयारपंकपरिसुद्धिकरं । गाहाहिं फुडं रइयं महुरपयत्थाहिं पावणं परमहियं ॥ १ ॥

---

१. इस गाथासे ज्ञात होता है कि चूर्णिकार श्रीजिनदासगणिमहत्तरके पिता का नाम **नाग** अथवा तो **चन्द्र** होगा ।

२. इस गाथाके अर्थका विचार करनेसे चूर्णिकार श्रीजिनदासगणि महत्तरकी माताका नाम प्राकृत **गोवा** संस्कृत **गोपा** अधिक संभवित है ।

३. इस गाथामें उल्लिखित **देहड** आदि, चूर्णिकार श्रीजिनदासगणि महत्तरके सहोदर भाई हैं ।

जिणभद्दखमासमण निच्छियसुत्तऽत्थदायगामलचरण । तमहं वंदे पयओ परम परमोवगारकारिणं महग्घं ॥ २ ॥

॥ जीतकल्पचूर्णि समाप्ता । सिद्धसेनकृतिरेषा ॥

(१४) आवश्यकचूर्णी । अन्त —

करणनयो—सव्वेसिं पि नयाणं० गाथा ॥ इति आवस्सगनिज्जुत्तिचुण्णी समाप्ता ॥ मंगल महाश्री ॥

(१५) दशकालिकसूत्रअगस्त्यसिंहचूर्णी । अन्त —

एवमेतं धम्मसमुक्कित्तणादिचरण करणाणेगपरूवणागब्भं नेव्वाणगमणफलावसाणं भवियजणाणंदिकरं चुण्णि समासवयणेण दसकालियं परिसमत्तं ॥

नम ॥ वीरवरस्स भगवतो तित्थे कोडीगणे सुविपुलम्मि । गुणगणवइराभस्सा वेरसामिस्स साहाए ॥ १ ॥

महरिसिसरिससभावा भावाऽभावाण मुणितपरमत्था । रिसिगुत्तखमासमणा खमा समाणं निधी आसि ॥ २ ॥

तेसिं सीसेण इमा कलसभवमइंदणामधेजेणं । दसकालियस्स चुण्णी पयाण रयणातो उवणत्था ॥ ३ ॥

रुयिरपद संधिणियता छड्डियपुणरुत्तवित्थरपसंगा । वक्खाणमंतरेणावि सिस्समतिबोधणसमत्था ॥ ४ ॥

ससमय परसमयणयाण जं च ण समाधितं पमादेणं । तं खमह पसाहेह य इय विण्णत्ती पवयणीणं ॥ ५ ॥

॥ दसकालियचुण्णी परिसमत्ता ॥

(१६) दशकालिकसूत्रचूर्णि वृद्धविवरणाख्या । अन्त —

अज्झयणाणंतर 'कालगओ समाधीए' जीवणकालो जस्स गतो समाहीए त्ति । जहा तेण एतिएण चेव आराहगा भवति त्ति ॥ दशवैकालिकचूर्णी सम्मत्ता ॥ ग्रन्थाग्रं ७४०० ॥

(१७) उत्तराध्ययनचूर्णि । अन्त —

वाणिजकुलसंभूतो कोडियगणितो य वज्जसाहीतो । गोवालियमहतरओ विक्खातो आसि लोगम्मि ॥ १ ॥

ससमय-परसमयविऊ ओयस्सी देहिमं सुगंभीरो । सीसगणसंपरिवुडो वक्खाणरतिप्पियो आसी ॥ २ ॥

तेसिं सीसेण इमं उत्तरज्झयणाण चुण्णिखंडं तु । रइयं अणुग्गहत्थं सीसाणं मंदबुद्धीणं ॥ ३ ॥

जं एत्थ उस्सुत्तं अयाणमाणेण विरतितं होजा । तं अणुओगधरा मे अणुचिंतेउं समारेंतु ॥ ४ ॥

॥ षट्त्रिंशोत्तराध्ययनचूर्णी समाप्ता ॥ ग्रंथाग्रं प्रत्यक्षरगणनया ५८५० ॥

(१८) नन्दीसूत्रचूर्णि । अन्त —

णि रे ण ग म त्त ण ह स दा जि या (१) पसुपतिसंखगजट्ठिताकुला ।

कमट्ठिता धीमतचिंतियक्खरा फुडं कहेयंतऽभिधाण कत्तुणो ॥१॥

शकराज्ञो पञ्चसु वर्षशतेषु व्यतिक्रान्तेषु अष्टनवतेषु नन्द्यध्ययनचूर्णी समाप्ता इति ॥ ग्रंथाग्रम् १५०० ॥

(१९) अनुयोगद्वारसूत्रचूर्णि । अन्त —

चरणमेव गुणो चरणगुणो । अहवा चरणं चारित्रम्, गुणा खमादिया अणेगविधा तेसु जो जहट्ठिओ साधू सो सव्वणयसम्मतो भवतीति ॥

॥ इति श्रीश्वेताम्बराचार्यश्रीजिनदासगणिमहत्तरपूज्यपादानामनुयोगद्वाराणां चूर्णिः ॥

---

१ इस चूर्णि पर टिप्पन रचनेवाले श्रीश्रीचंद्रसूरिजी प्रस्तुतचूर्णिका बृहच्चूर्णिके नामसे उल्लेख करते हैं ।

(२०) पाक्षिकसूत्रचूर्णि । अन्तः—

अनुष्टुप्भेदेन छंदसां ग्रंथाग्रं चत्वारि शतानि ४०० ॥ पाक्षिकप्रतिक्रमणचूर्णी समाप्तेति ॥ शुभं भवतु सङ्घ संघस्य । मंगलं महाश्रीः ॥

१. उपर जिन बीस चूर्णियोके आदि-अन्तादि अंशोके उल्लेख दिये है. इनके अवलोकनसे प्रतीत होता है कि—**प्रज्ञापना-सूत्र**के बारहवे शरीरपदकी चूर्णि श्री**जिनभद्र**गणि क्षमाश्रमण कृत है। आज इसकी कोई स्वतन्त्र हस्तप्रति ज्ञानभंडारोमें उपलब्ध नहीं है, किन्तु श्री**जिनदास**गणि महत्तर और आचार्य श्री**हरिभद्र**सूरिने क्रमशः अपनी **अनुयोगद्वारसूत्र** उपरकी **चूर्णि** और लघुवृत्तिमें इस चूर्णिको समग्र भावसे उद्धृत कर दी है, इससे इसका पता चलता है। श्री**जिनभद्र**गणि क्षमा-श्रमणने प्रज्ञापनासूत्र उपर सम्पूर्ण चूर्णी की हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता है । इसका कारण यह है कि—प्राचीन जैन ज्ञानभंडारोमे प्रज्ञापनासूत्रचूर्णीकी कोई हाथपोथी प्राप्त नहीं है। दूसरा यह भी कारण है कि—आचार्य श्री**मलयगिरि**ने अपनी **प्रज्ञपनावृत्ति**में सिर्फ **शरीरपद**की वृत्तिके सिवा और कहीं भी चूर्णीपाठका उल्लेख नहीं किया है। अतः ज्ञात होता है कि श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणने सिर्फ प्रज्ञापनासूत्रके बारहवें शरीरपद पद पर ही चूर्णी की होगी। आचार्य **मलयगिरि**ने अपनी वृत्तिमें इस चूर्णीका छ स्थान पर उल्लेख किया है।

२. **नन्दीसूत्रचूर्णी, अनुयोगद्वारचूर्णी** और **निशीथसूत्रचूर्णी**के प्रणेता श्री**जिनदास**गणि महत्तर है। जो इन चूर्णीयोके अन्तिम उल्लेखसे निर्विवाद रूपसे ज्ञात होता है। **निशीथचूर्णि**के प्रारम्भमें आपने अपने विद्यागुरुका शुभनाम श्रीप्रद्युम्न क्षमाश्रमण बतलाया है। सभव है कि आपके दीक्षागुरु भी ये ही हो। इन चूर्णियोंकी रचना जिनभद्र गणि क्षमाश्रमणके बादकी है। इसका कारण यह है कि—नन्दीचूर्णिमें चूर्णिकारने केवलज्ञान-केवलदर्शनविषयक युगपदुपयोग-एकोपयोग-क्रमोपयोगकी चर्चा की है एवं स्थान स्थान पर जिनभद्रगणिके विशेषावश्यक भाष्यकी गाथाओका उल्लेख भी किया है। **अनुयोगद्वारचूर्णी**में तो आपने श्रीजिनभद्रगणिकी शरीरपदचूर्णीको साद्यन्त उद्धृत कर दी है। अतः ये तीनों रचनायें श्री**जिनभद्र**गणिके बादकी ही निर्विवाद सिद्ध है।

३. **दशवैकालिकचूर्णी**के कर्त्ता श्री**अगस्त्यसिंह**गणी है। ये आचार्य **कोटिक**गणान्तर्गत श्री**वज्रस्वामी**की शाखामें हुए श्री**ऋषिगुप्त** क्षमाश्रमणके शिष्य है। इन दोनो गुरु-शिष्योके नाम शाखान्तरवर्त्ति होनेके कारण पट्टावलीयोंमें पाये नहीं जाते है। कल्पसूत्रकी पट्टावलीमें जो श्रीऋषिगुप्तका नाम है वे स्थविर आर्यसुहस्तिके शिष्य होनेके कारण एवं खुद वज्रस्वामीसे भी पूर्ववर्त्ती होनेसे श्रीअगस्त्यसिंहगणिके गुरु ऋषिगुप्तसे भिन्न है। कल्पसूत्रकी स्थविरावलीका उल्लेख इस प्रकार है—

थेरस्स ण अज्जसुहत्थिस्स वासिट्ठसगुत्तस्स इमे दुवालस थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिण्णाया होत्था। तं जहा—

थेरे य अज्जरोहण १ जसभद्दे २ मेहगणी ३ य कामिड्ढी ४।
सुट्ठिय ५ सुप्पडिबुद्धे ६ रक्खिय ७ तह रोहगुत्ते ८ य ॥ १ ॥
इसिगुत्ते ९ सिरिगुत्ते १० गणी य बंभे ११ गणी य तह सोमे १२।
दस दो य गणहरा खलु एए सीसा सुहत्थिस्स ॥ २ ॥

स्थविर आर्यसुहस्ति श्रीवज्रस्वामीसे पूर्ववर्त्ती होनेसे ये ऋषिगुप्त स्थविर दशकालिकचूर्णिप्रणेता श्रीअगस्त्यसिंहके गुरु श्रीऋषिगुप्त क्षमाश्रमणसे जुदा है, यह स्पष्ट है।

आवश्यकचूर्णी, जिसके प्रणेताके नामका कोई पता नहीं है, उसमें तपसयमके वर्णनप्रसगमें आवश्यकचूर्णिकारने इस प्रकार दशवैकालिकचूर्णीका उल्लेख किया है—

तवो दुविहो—बज्झो अब्भतरो य। जधा दसवेतालियचुण्णीए चाउलोदणत (' चालणेदाणत) अल्लेण णिज्जरट्ठ साधूसु पडिवायणीय ८। [आवस्यकचूर्णी विभाग २ पत्र ११७]

आवश्यकचूर्णिके इस उद्धरणमें दशवैकालिकचूर्णीका नाम नजर आता है। दशवैकालिकसूत्रके उपर दो चूर्णीयाँ आज प्राप्त हैं—एक स्थविर अगस्त्यसिंहप्रणीत और दूसरी जो आगमोद्धारक श्रीसागरानंदसूरि महाराजने रतलामकी श्री-ऋषभदेवजी केशरीमलजी जैन श्वेताम्बर सस्थाकी ओरसे सम्पादित की है, जिसके कर्त्ताके नामका पता नहीं मीला है और जिसके अनेक उद्धरण याकिनीमहत्तरापुत्र आचार्य श्रीहरिभद्रसूरिने अपनी दशवैकालिकसूत्रकी शिष्यहितावृत्तिमें स्थान स्थान पर वृद्धविवरणके नामसे दिये हैं। इन दो चूर्णियोंमेंसे आवश्यकचूर्णिकारको कौनसी चूर्णि अभिप्रेत है ?, यह एक कठिनसी समस्या है। फिर भी आवश्यकचूर्णिके उपर उल्लिखित उद्धरणको गौरसे देखनेसे अपन निर्णयके समीप पहुच सकते है। इस उद्धरणमें "चाउलोदणत" यह पाठ गलत हो गया है। वास्तवमें "चाउलोदणत" के स्थानमें मूलपाठ "चालणेदाणत" ऐसा पाठ होगा। परतु मूलस्थानको विना देखे ऐसे पाठोंके मूल आशयका पता न चलने पर केवल शाब्दिक शुद्धि करके सख्याबन्ध पाठोंको विद्वानोंने गलत बनाने के सख्याबध उदाहरण मेरे सामने है। दशवैकालिकसूत्रकी प्राप्त दोनों चूर्णियोंको मैंने बराबर देखी है, किंतु "चाउलोदणतं"का कोई उल्लेख उनमें नहीं पाया है और इसका कोई सार्थक सम्बन्ध भी नहीं है। दशवैकालिकसूत्रकी अगस्त्यसिंहीया चूर्णिमें तपके निरूपणकी समाप्तिके बाद "चालणेदाणि" [पत्र १९] ऐसा चूर्णिकारने लिखा है, जिसको आवश्यकचूर्णिकारने "चालणेदाणत" वाक्यद्वारा सूचित किया है। इस पाठको बादके विद्वानोंने मूल स्थानस्थित पाठको विना देखे गलत शाब्दिक सुधारा कर बिगाड दिया—ऐसा निश्चितरूपसे प्रतीत होता है। अत मैं इस निर्णय पर आया हू कि—आवश्यकचूर्णिकारनिर्दिष्ट दशवैकालिकचूर्णि अगस्त्यसिंहीया चूर्णी ही है। और इसी कारण अगस्त्यसिंहीया चूर्णी आवश्यकचूर्णिके पूर्वकी रचना है।

आचार्य श्रीहरिभद्रसूरिने अपनी शिष्यहितावृत्तिमें इस चूर्णीका खास तौरसे निर्देश नहीं किया है। सिर्फ रइवक्का=स० रतिवाक्या नामक दशवैकालिकसूत्रकी प्रथम चूलिकाकी व्याख्यामें [पत्र २७३–२] "अन्ये तु व्याचक्षते" ऐसा निर्देश करके अगस्त्यसिंहीया चूर्णीका मतान्तर दिया है। इसके सिवा कहीं पर भी इस चूर्णिके नामका उल्लेख नहीं किया है।

इस अगस्त्यसिंहीया चूर्णिमें तत्कालवर्त्ती सख्याबध वाचनान्तर—पाठभेद, अर्थभेद एव सूत्रपाठोंकी कमी-बेशीका काफी निर्देश है, जो अतिमहत्त्वके हैं।

यहाँ पर ध्यान देने जैसी एक बात यह है कि—दोनों चूर्णिकारोंने अपनी चूर्णिमें दशवैकालिकसूत्र उपर एक प्राचीन चूर्णी या वृत्तिका समान रूपसे उल्लेख रइवक्काचूलिका की चूर्णीमें किया है। जो इस प्रकार है—

"एत्थ इमातो वृत्तिगतातो पदुद्देसमेत्तगाधाओ। जहा—

दुक्ख च दुस्समाए जीविउ जे१ लहुसगा पुणो कामा २।
सातिबहुला मणुस्सा ३ अचिरट्ठाण चिम दुक्ख ४ ॥ १ ॥
ओमजणम्मि य खिसा ५ वत च पुणो निसेवियं भवति ६।
अहरोवसपया वि य ७ दुलभो धम्मो गिहे गिहिणो ८ ॥ २ ॥
निवयति परिकिलेसा ९ बधो ११ सावज्जजोग गिहिवासो १३।
एते तिण्णि वि दोसा न हाति अणगारवासम्मि १० १२ १४ ॥ ३ ॥
सायारणा य भोगा १५ पत्तेय पुण्ण पावफलमेव १६।
नीयमवि माणवाण कुसग्गजलचचलमणिच १७ ॥ ४ ॥

णत्थि य अवेदयित्ता मोक्खो कम्मस्स निच्छओ एसो १८।
पदमट्ठारसमेतं वीरवयणसासणे भणितं ॥ ५ ॥"

अगस्त्यसिंहीया चूर्णी

दूसरी मुद्रित चूर्णीमें [पत्र ३५८] "एत्थ इमाओ **वृत्तिगाथाओ**। उक्तं च" ऐसा लिखकर उपर दी हुई गाथायें उद्धृत कर दी है।

इन उल्लेखोसे यह निर्विवाद है कि—दशवैकालिकसूत्र के उपर इन दो चूर्णियोंसे पूर्ववर्ती एक प्राचीन **चूर्णी** भी थी, जिसका दोनों चूर्णीकारोने **वृत्ति** नामसे उल्लेख किया है। इससे यह भी कहा जा सकता है कि—आगमोंके उपर पद्य और गद्यमें व्याख्याग्रन्थ लिखनेकी प्रणालि अधिक पुराणी है। और इससे **हिमवंतस्थविरावलीमें** उल्लिखित निम्न उल्लेख सत्यके समीप पहुंचता है—

"तेषामार्यसिंहानां स्थविराणां **मधुमित्रा-ऽऽर्यस्कन्दिलाचार्यनामानौ** द्वौ शिष्यावभूताम्। आर्यमधुमित्राणां शिष्या आर्यगन्धहस्तिनोऽतीवविद्वांसः प्रभावकाश्चाभवन्। तैश्च पूर्वधरस्थविरोत्तंसोमास्वातिवाचकरचित-**तत्त्वार्थोपरि** अशीतिसहस्रश्लोकप्रमाणं **महाभाष्यं** रचितम्। **एकादशाङ्गोपरि** चाऽऽर्यस्कन्दिलस्थविराणामुपरोधतस्तैर्विवरणानि रचितानि। यदुक्तं तद्रचिताऽऽचाराङ्गविवरणान्ते यथा—

थेरस्स महुमित्तस्स सेहेहिं तिपुव्वनाणजुत्तेहिं। मुणिगणविविदिएहिं ववगयरायाइदोसेहि ॥ १ ॥
बंभद्दीवियसाहामउडेहिं गंधहत्थिविबुहेहिं। विवरणमेय रइय दोसयवासेसु विक्कमओ ॥ २ ॥

आचाराङ्गसूत्रके इस गन्धहस्तिविवरणका उल्लेख आचार्य श्रीशीलाङ्कने अपनी आचाराङ्गवृत्तिके उपोद्घातमें भी किया है। कुछ भी हो, जैन आगमोंके उपर व्याख्या लिखनेकी प्रणाली अधिक प्राचीन है।

४. उत्तराध्यनसूत्रचूर्णिके प्रणेता **कौटिकगणीय, वज्रशाखीय** एव **वाणिजकुलीय** स्थविर **गोपालिक** महत्तरके शिष्य थे। इस चूर्णिकारने चूर्णिमें अपने नामका निर्देश नहीं किया है। इनका निश्चित समयका पता लगाना मुश्किल है। तथापि इस चूर्णिमें विशेषावश्यकभाष्यकी स्वोपज्ञ टीकाका सन्दर्भ उल्लिखित होनेके कारण इसकी रचना जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणके स्वर्गवासके बादकी है। विशेषावश्यक भाष्यकी स्वोपज्ञ टीका, यह श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणकी अन्तिम रचना है। छट्ठे गणधरवाद तक इस टीकाका निर्माण होने पर आपका देहान्त हो जानेके कारण बादके समग्र ग्रंथकी टीकाको श्रीकोट्टार्यवादी गणी महत्तरने पूर्ण की है।

५. **जीतकल्पबृहच्चूर्णीके** प्रणेता श्री**सिद्धसेनगणी** है। इस चूर्णिके अन्तमें आपने सिर्फ अपने नामके अतिरिक्त और कोई उल्लेख नहीं किया है। श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणकृत ग्रन्थके उपर यह चूर्णी होनेके कारण इसकी रचना श्री**जिनभद्र**गणिके बादकी स्वयंसिद्ध है। इस चूर्णिको **टिप्पनककार** श्रीश्रीचन्द्रसूरिने बृहच्चूर्णीनामसे दरशाई है—

नत्वा श्रीमन्महावीरं परोपकृतिहेतवे। जीतकल्पबृहच्चूर्णेर्व्याख्या काचित् प्रकाश्यते ॥ १ ॥

उपरनिर्दिष्ट सात चूर्णीयोंके अतिरिक्त तेरह चूर्णीयोंके रचयिताके नामका पता नहीं मिलता है। तथापि इन चूर्णीयोंके अवलोकनसे जो हकीकत ध्यानमें आई है इसका यहाँ उल्लेख कर देता हूं।

यद्यपि आचाराङ्गचूर्णी और सूत्रकृताङ्गचूर्णिके रचयिताके नामका पता नहीं मिला है तो भी आचाराङ्गचूर्णीमें चूर्णिकारने पन्द्रह स्थान पर **नागार्जुनीय** वाचनाका उल्लेख किया है, उनमेंसे सात स्थान पर **"भदंतनागज्जुणिया"** इस प्रकार बहुमानदर्शक 'भदन्त'शब्दका प्रयोग किया है, इससे अनुमान होता है कि ये चूर्णिकार नागार्जुनसन्तानीय कोई स्थविर होने चाहिए। सूत्रकृताङ्गचूर्णीमें जहां जहां नागार्जुनीय वाचनाका उल्लेख चूर्णिकारने किया है वहां सामान्यतया

नागज्जुणिया इतना ही लिखा है । अत ये दोनों चूर्णिकार अलग अलग ज्ञात होते हैं । सूत्रकृताङ्गचूर्णिमें जिनभद्रगणीके विशेषावश्यकभाष्यकी गाथायें एव स्वोपज्ञ टीकाके सन्दर्भ अनेक स्थान पर उद्धृत किये गये हैं, इससे इस चूर्णिकी रचना श्रीजिनभद्रगणिके बादकी है, तब आचाराङ्गचूर्णिमें जिनभद्रगणिके कोई ग्रन्थका उल्लेख नहीं हैं, इस कारण इस चूर्णीकी रचना श्रीजिनभद्रगणिके पूर्वकी होनेका सम्भव अधिक है ।

भगवतीसूत्रचूर्णिमें श्रीजिनभद्रगणीके विशेषणवतीग्रन्थकी गाथाओंके उद्धरण होनेसे, और कल्पचूर्णिमें साक्षात् विसेसावस्सगभासका नाम उल्लिखित होनेसे इन दोनों चूर्णियोंकी रचना निश्चित रूपसे श्रीजिनभद्रगणीके बादकी है ।

दशासूत्रचूर्णिमें केवलज्ञान-केवलदर्शनविषयक युगपदुपयोगादिवादका निर्देश होनेसे यह चूर्णी भी श्रीजिनभद्रगणीके बादकी है ।

आवश्यकचूर्णिके प्रणताका नाम चूर्णीकी कोई प्रतिमें प्राप्त नहीं है । श्रीसागरानन्दसूरि महाराजने अपने सम्पादनमें इसको जिनदासगणिमहत्तरकृत बतलाई है । प्रतीत होता है कि—आपका यह निर्देश श्रीधर्मसागरोपाध्यायकृत तपागच्छीय पट्टावलीके उल्लेखको देख कर है, किन्तु वास्तवमें यह सत्य नहीं है । अगर इसके प्रणेता जिनदासगणि होते तो आप इस प्रासादभूत महती चूर्णिमें जिनभद्र गणिके नामका या विशेषावश्यकभाष्यकी गाथाओंका जरूर उल्लेख करते । मुझे तो यही प्रतीत होता है कि—इस चूर्णीकी रचना जिनभद्रगणिके पूर्वकी और नन्दीसूत्ररचनाके बादकी है ।

दशवैकालिकचूर्णी (वृद्धविवरण)में और व्यवहारचूर्णीमें श्रीजिनभद्रगणिकी कोइ कृतिका उद्धरण नहीं है, अत ये चूर्णीयाँ भी जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणके पूर्वकी होनी चाहिए ।

जम्बूद्वीपकरणचूर्णी, यह जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिकी चूर्णी मानी जाती है किन्तु वास्तवमें यह जम्बूद्वीपके परिधि जीवा धनु पृष्ठ आदि आठ प्रकारके गणितको स्पष्ट करनेवाले किसी प्रकरणकी चूर्णी है । वर्त्तमान इस चूर्णीमें मूल प्रकरणकी गाथाओंके प्रतिक मात्र चूर्णिकारने दिये हैं, अत कुछ गाथाओंका पता जिनभद्रीय बृहत्क्षेत्रसमासप्रकरणसे लगा है, किन्तु कितनीक गाथाओंका पता नहीं चला है । इस चूर्णीमें जिनभद्रीय बृहत्क्षेत्रसमासकी गाथायें भी उद्धृत नजर आती हैं, अत यह चूर्णी उनके बादकी है ।

यहा पर चूर्णियोंके विविध उल्लेखोंको लक्ष्यमें रख कर चूर्णिकारोंके विषयमें जो कुछ निवेदन करनेका था, वह करनेके बाद अतमें यह लिखना प्राप्त है कि—प्रकाश्यमान इस नन्दीसूत्रचूर्णीके प्रणेता श्रीजिनदासगणि महत्तर हैं, जिसका रचनासमय स्पष्टतया प्राप्त नहीं है, फिर भी आज नन्दीसूत्रचूर्णीकी जो प्रतियाँ प्राप्त है उनके अन्तमें सवतका उल्लेख नजर आता है, जो चूर्णीरचनाका सवत् होनेकी संभावना अधिक है । यह उल्लेख इस प्रकार है—

शकराज्ञ पञ्चसु वर्षशतेषु व्यतिक्रान्तेषु अष्टनवतेषु नन्द्यध्ययनचूर्णी समाप्ता इति ।

अर्थात् शाके ५९८ (वि स ७३३) वर्षमें नन्द्यध्ययनचूर्णी समाप्त हुई । इस उल्लेखको कितनेक विद्वान् प्रतिका लेखनसमय मानते हैं, किन्तु यह उल्लेख नन्द्यध्ययनचूर्णिकी समाप्तिका अर्थात् रचनासमाप्तिका ही निर्देश करता है, लेखनकालका नहीं । अगर प्रतिका लेखनकाल होता तो 'समाप्ता' ऐसा न लिख कर लिखिता' ऐसा ही लिखा होता । इस प्रकार गद्यसन्दर्भमें रचनासवत् लिखनेकी प्रथा प्राचीन युगमें थी ही, जिसका उदाहरण आचार्य श्रीशीलाङ्ककी आचाराङ्गवृत्तिमें प्राप्त है ।

---

१ श्रीवीरात् १०५५ वि० ५८५ वर्षे याकिनीसूनु श्रीहरिभद्रसूरि स्वर्गभाक् । निशीथ-बृहत्कल्पभाष्या ऽऽवश्यकादि-चूर्णिकारा श्रीजिनदासमहत्तराद्य पूर्वगतश्रुतधरश्रीप्रद्युम्नक्षमणादिशिष्यत्वेन श्रीहरिभद्रसूरित प्राचीना एव यथा कालमायिनो बोध्या । १११५ श्रीजिनभद्रगणियुगप्रधान । अय च जिनभद्रीयध्यानशतककाराद् भिन्न सम्भाव्यते । इण्डियन एन्टीक्वेरी पु ११ पृ २५१ ॥

सूत्र और चूर्णिकी भाषा

नन्दीसूत्र और इसकी चूर्णिकी भाषाका स्वरूप क्या है? इस विषयमें अभी यहाँ पर अधिक कुछ मै नहीं लिखता हू। सामान्यतया व्यापकरूपसे मेरेको इस विषयमें जो कुछ कहना था, यह मैने अखिलभारतीयप्राच्यविद्यापरिषत्–श्रीनगरके लिये तैयार किये हुए मेरे "जैन आगमधर और प्राकृत वाड्मय" नामक निबन्धमें कह दिया है, जो 'श्रीहजारीमल स्मृतिग्रन्थ'में प्रसिद्ध किया गया है, उसको देखनेकी विद्वानोको सूचना है।

परिशिष्टादि

चूर्णिके अन्तमें पांच परिशिष्ट और शुद्धिपत्र दिये गये है। पहले परिशिष्टमें मूल नन्दीसूत्रमें जो गाथाये है उनको अकारादिक्रममें दी गई है। दूसरे परिशिष्टमें नन्दीचूर्णिमें चूर्णिकारने उद्धृत किये उद्धरणोंको अकारादिक्रमसे दिये है। तीसरा परिशिष्ट चूर्णिगत पाठान्तर और मतान्तरोंका है। चौथे परिशिष्टमें नन्दीसूत्र और चूर्णिमें आनेवाले ग्रन्थ, ग्रन्थकार, स्थविर, नृप, श्रेष्ठी, नगर, पर्वत आदि विशेषनामोका अनुक्रम है। पाँचवे परिशिष्टमें सूत्र और चूर्णिमें आनेवाले विषयद्योतक एवं व्युत्पत्ति-द्योतक शब्दोंका अनुक्रम दिया गया है। इन परिशिष्टोके बादमें शुद्धिपत्रक दिया गया है। वाचक और अध्येता विद्वानोसे नम्र निवेदन हैं कि इस ग्रन्थको शुद्धिपत्रके अनुसार शुद्ध करके पढें।

संशोधन और सम्पादन

इस ग्रन्थके सशोधनमें अनेक महानुभाव विद्वान् व्यक्तियोंका परिश्रम है। खास तोरसे पं. भाई अमृतलाल मोहनलाल भोजकका इस सम्पादनमें महत्त्वका साहाय्य है। जिसने चूर्णि और मूल सूत्रकी प्रामाणिक प्राण्डुलिपि (प्रेसकॉपी) तैयार की है, साद्यन्त प्रुफपत्र देखे है और इस ग्रन्थके महत्त्वपूर्ण परिशिष्ट भी किये है। भाई श्री दलसुखभाई मालवणिया–मुख्यनियामक ला. द भारतीय सस्कृतिविद्यामंदिर–अहमदाबाद तथा पंडित बेचरदासभाई दोसीने मुद्रणके बादमें साद्यन्त देखकर अशुद्धियोका परिमार्जन किया है, जिसके फलस्वरूप शुद्धिपत्र दिया है। भाई श्रीदलसुख मालवणिया का आगमोंके संशोधनमें शाश्वत साहाय्य प्राप्त है, यह परम सौभाग्यकी बात है।

वसत प्रिन्टींग प्रेसके सचालक श्री जयति दलाल और मेनेजर श्री शांतिलाल शाह प्रमुख प्रेसके सर्व भाईओका प्रस्तुत मुद्रणकार्यमें आंतरिक सहयोग भी हमारे लिए चिरस्मरणीय है।

चूर्णिसहित नन्दीसूत्रके संशोधनमें मात्र ग्रन्थकी प्रतियोंका ही आधार रखा गया है, एसा नहीं है, किन्तु मूलसूत्र एवं चूर्णिके उद्धरण प्राचीन व्याख्याग्रन्थोमें जहाँ जहाँ भी देखनेमें आये उनसे भी तुलना की गई है। इस प्रकार प्राचीन प्रतियाँ, प्राचीन उद्धरणोंके साथ तुलना एवं अनेक विद्वानोंके बौद्धिक परिश्रमके द्वारा इस नन्दीसूत्र एवं चूर्णिका संशोधन और सम्पादन किया गया है। मै तो सिर्फ इस सशोधन एवं सम्पादनमें साक्षीभूत ही रहा हू। अत' इस ग्रन्थके महत्त्वपूर्ण सशोधन एवं सम्पादन का यश हम सभीको एकसमान है।

अन्तमें गीतार्थ मुनिप्रवर एवं विद्वानोसे मेरी नम्र प्रार्थना है कि–मेरे इस सशोधनमें जो भी छोटी मोटी क्षति प्रतीत हो, इसकी मुझे सूचना दी जायगी तो जरूर अतिरिक्त शुद्धिपत्रकी तोरसे उसको आदर दिया जायगा।

स. २०२२ माघ शुक्ल पूर्णिमा
अहमदावाद

मुनि पुण्यविजय

चूर्णियुक्त नन्दीसूत्रका विषयानुक्रम

चूर्णियुक्त नन्दीसूत्रका विषयानुक्रम

|| णमो त्थु णं समणस्स भगवओ महइ-महावीर-वद्धमाणसामिस्स ||

णमो अणुओगधराणं थेराणं ।

सिरिदेववायगविरइयं

नंदीसुत्तं ।

सिरिजिणदासगणिमहत्तरविरइयाए चुण्णीए संजुयं ।



|| नमो भगवते वर्द्धमानाय ||

सव्वसुतक्खंधगादीणं मंगलाधिकारे णंदि त्ति वत्तव्वा । णंदणं णंदी, णंदंति वा [2]अणयेति णंदी, णंदंति वा णंदी, पमोदो हरिसो कंदप्पो इत्यर्थः । तस्स य चतुव्विहो निक्खेवो । [3]गतासु णाम-ट्ठवणासु दव्वणंदी जाणगो अणुवउत्तो । अहवा जाणग-भवियसरीरवतिरित्तो बारसविधो तूरसंघातो इमो—

भंभा १ मकुंद २ मद्दल ३ कडंब ४ झल्लरि ५ हुडुक्क ६ कंसाला ७ ।
काहल ८ तलिमा ९ वंसो १० पणवो ११ संखो १२ य बारसमो ॥१॥

[ ]

भावणंदी णंदिसद्दोवयुत्तभावो । अहवा इमं पंचविहणाणपरूवगं णंदि त्ति अज्झयणं, तं च सुतंसेण सव्वसुत-ब्भंतरभूतं । तं च सव्वसुतारंभेसु विग्घोवसमणत्थ[4]मादीए मंगलं पयुज्जति । तस्स य मंगलट्ठाणावसरपत्तस्स गुरवो विणेयस्स अत्थ-सुतगोरवुप्पादणत्थं अविच्छेदसंताणागतसुतप्पदरिसणत्थं च इमं थेरा[5]वलिं कहेत्ता ततो से अत्थं [6]कहयंति । सव्वसुतत्था य जतो तित्थगरप्पभवा, अतो भत्तीए [7]पण्णवग-सावग-पढग-चिंतगा य पढमताए णमोक्कारं करेत्ता भणंति—

[सुत्तं १]

जयइ जगजीवजोणीवियाणओ जगगुरू जगाणंदो ।
[8]जगणाहो जगबंधू जयइ जगपियामहो भयवं ॥ १ ॥

जयति० गाहा । सोतिंदियादिविसय-कसाय-परीसहोवसग्ग-चउघातिकम्म-ऽट्ठप्पगारं वा परप्पवादिणो य जिणमाणो जितेसु वा जयति त्ति भण्णति । जगं ति—[10]खेत्तंलोगो तम्मि जे जीवा तेसिं जाओ जोणीओ—सच्चित्त-सीत-संवुडादियाओ चउरासीतिलक्खविहाणा वा विविहपगारेहिं जाणमाणो वियाणओ । अहवा जो जहा जेहिं कम्मेहिं जाए जोणीए उववज्जति तं तहा जाणति त्ति विसिट्ठो जाणगो वियाणगो । अहवा जगग्गहणातो धम्मा-ऽधम्मा-ऽऽगास-पुग्गलग्गहणं, जीव त्ति सव्वजीवग्गहणं, जोणि त्ति—जीवा-ऽजीवुप्पत्तिठाणं, जहा य जं उप्पज्जति विग-च्छति धुवं वा तं तहा सव्वं जाणइ त्ति वियाणगो । अनेन वचनेन केवलनाणसामत्थतो सव्वभावे सव्वहा जाणति

१ °क्खंधतादीणं आ० दा० ॥ २ अणाए त्ति आ० । अणेण त्ति दा० ॥ ३ गयाओ णाम-ट्ठवणाओ । दव्व° आ० दा० ॥ ४ °मादीय मंगलट्ठं पयु° आ० ॥ ५ °वलिय कहेत्ता आ० दा० ॥ ६ कथयंति आ० दा० ॥ ७ पण्णावग° आ० दा० ॥ ८ जिणवसभो सललियवसभविक्कमगती महावीरो इत्युत्तरार्धपाठभेदश्चूर्णौ । नायं पाठभेदः कस्मिंश्चिदपि सूत्रादर्शे उपलभ्यते ॥ ९ °सग्गावघाति° आ० । °सग्गुवघाति° दा० ॥ १० खेत्तभावो तम्मि आ० दा० ॥

त्ति ख्यापितं भवति । 'जगगुरु' त्ति जगं ति–सव्वसण्णिलोगो, तस्स भगवानेव गुरुः । कथम्? उच्यते—[जे० १८६ प्र०] गृणाति शास्त्रार्थमिति गुरुः, ब्रवीतीत्यर्थः, तिरिय-मणुयं देवा ऽसुराए परिसाए धम्ममक्खाति । जो वा जं पुच्छति तं सव्वं कहयति त्ति तेण गुरू, अनेन वचनेन परोपकारित्वं प्रदर्शितं भवति । जगा–सत्ता ताणं आणंदकारी जगाणंदो । कहं? उच्यते–सव्वेसिं सत्ताणं अब्बाबादणोवदेसकरणत्तातो । जतो भणितं–"सव्वे सत्ता ण

5 हतव्वा ण परियावेतव्वा ण परिघेत्तव्वा ण अज्जावेतव्वा" [आचा० श्रु १ अ ४ उ २ सू ३] त्ति । विसेसतो सण्णीणं धम्मकहणत्तातो आणंदकारी, ततो वि विसेसतो भव्वसत्ताणं ति । अनेन वचनेन हितोपदेशकर्तृत्वं दर्शितं भवति । जगा–सत्ता ते अण्णेहिं परिभविज्जमाणे रक्खइ त्ति जगणाहो । कहं? उच्यते–मणो वयण-काएहिं कत-कारिता ऽणुमतेहिं रक्खतो जगणाहो भवति । अनेन वचनेन सव्वपाणीणं सणाहता दंसिता भवति । 'जगबंधु' त्ति जगा–सत्ता तेसिं बंधू जगबंधू । कहं? उच्यते–जो अप्पणो परस्स वा आवतीए वि ण परिच्चयति सो बंधू, भगवं च सुट्ठु वि

10 परीसहोवसग्गादिसु बाहिज्जमाणो वि सत्तेसु बंधुत्तं अपरिच्चयतो ण विराहेति त्ति अतो जगबंधू, अनेन वचनेन सव्वसत्तेसु सबंधुता दंसिता भवति । पितामहो त्ति जो पितुपिता स पितामहो, सो य भगवं चेव । सव्वसत्ताणं पितामहो कहं? उच्यते–सव्वसत्ताणं अहिंसादिलक्खणो धम्मो पिता रक्खणत्तातो, सो य धम्मो भगवता पणीतो अतो भगवं धम्मपिता, एवं च सव्वसत्ताणं भगवं पितामहो त्ति । अनेन वचनेन धम्मं पडुच्च आदिपुरिसत्तं ख्यापितं भवति । एतीए गाहाए पच्छद्धस्स पाढंतरं इमं–"जिणवसभो सललियवसभविक्कम [जे० १८६ द्वि०] गती महावीरो ।" जिण

15 एव वसभो जिणवसभो । वसभो त्ति संजमभारुव्वहणे । चंकमतो सुभा गायसंचालणक्रिया सललितं भण्णति । वाम-दाहिणाण वा पुरिम-पच्छिमचलणाणं जं कमुक्खेवकरणं स विक्कमो भण्णति, दुपदस्स पुण एगचलणुक्खेवो चेव विक्कमो । सेसं कंठं ॥ १ ॥ किंच—

जयइ सुयाणं पभवो तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ ।
जयइ गुरू लोगाणं जयइ महप्पा महावीरो ॥ २ ॥

20 जयति सुताणं० गाहा । राग-दोसादिअरी जिणतो जितेसु वा जयति त्ति । ['सुताणं'] सव्वसुताणं ति, सुतणाणत्थो भगवतातो पभवो । 'पभवो' त्ति पसूती । अणिट्ठवयणपरिहारातो पच्छिमो वि अपच्छिमो भण्णति, अहवा पच्छाणुपुव्वीए अपच्छिमो, रिसभो पच्छिमो । अविसिट्ठजीवलोगस्स विसिट्ठसण्णिजीवलोगस्स वा, अहवा सम्मद्दिट्ठिमादिसंजता ऽसंजतलोगस्स गुरू । महं आता जस्स सो य अकम्मवीरियसामत्थतो महात्मा, केवलादि विसिट्ठलद्धिसामत्थतो वा महात्मा ॥ २ ॥ किंच—

25 भद्दं सव्वजगुज्जोयगस्स भद्दं जिणस्स वीरस्स ।
भद्दं सुरा ऽसुरणमंसियस्स भद्दं धुयरयस्स ॥ ३ ॥

भद्दं सव्व० गाहा । भायते भाति वा भद्रम्, तं भगवतो भवतु त्ति । सव्वजगं ति–लोगो । अट्ठविहो वि लोगनिक्खेवो भाणितव्वो [आव० नि० गा० १०५७] । सेसं कंठं ॥ ३ ॥ इमं संघस्स रहरूवगं—

१ य-सदेयां जे दा ॥ २ य पधमक्खा जे० ॥ ३ सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परियावेयव्वा ण परिघेतव्वा ण उद्दवेयव्वा इतिरूपं सूत्रमाचाराङ्गे ॥ ४ विसंधेइ आ० ॥ ५ मह्दो भवति । अनेन आ० ॥ ६ रयगारं हे० ॥ ७ आणत्थाणं भग आ० ॥ ८ च्छिमो वीरो, रिसभो आ० ॥

[सुत्तं २]

भद्दं सीलपडागूसियस्स तव-णियमतुरगजुत्तस्स ।
संघरहस्स भगवओ सज्झायसुणंदिघोसस्स ॥ ४ ॥

भद्दं सील० गाहा । रहो सामण्णतो पंचमहव्वतमइओ । उस्सितो त्ति तस्सऽट्ठारससीलंगसहस्सूसिता जतपडागा । वारसविहो तवो; इंदिय-णोइंदियो य णियमो एते अस्सा । सज्झायसद्दो णंदिघोसो । सेसं कंठं ॥४॥ 5
संघस्सेव इमं चक्करूवगं—

संजम-तवतुंबा-ऽरयस्स णमो सम्मत्तपारियल्लस्स ।
अप्पडिचक्कस्स जओ होउ सया संघचक्कस्स ॥ ५ ॥

संजम० गाहा । विसुद्धभावचक्कस्स सत्तरसविधो संजमो तुंबं । तस्स वारसविहतवोमता अरगा । पारियल्लं ति—जा वाहिरपुट्ठयस्स वाहिरब्भमी, सा से सम्मत्तं कतं, जम्हा अण्णेहिं चरगादिएहिं जेतुं [जे० १८७ प्र०] ण 10
सक्कति तम्हा एयं जयति, अप्पडिचक्कं च एतं । णमो एरिसस्स [संघ]चक्कस्सेति ॥ ५ ॥ इमं संघस्सेव णगररूवगं—

गुणभवणगहण ! सुयरयणभरिय ! दंसणविसुद्धरच्छागा ! ।
संघणगर ! भद्दं ते अक्खंडचरित्तपागारा ! ॥ ६ ॥

गुणभवणगहण० गाहा । तम्मि पुरिससंघणगरे इमे गुणा—पिंडविसुद्धि-समिति-गुत्ति-दव्वादिअभिग्गह-मासादिपडिमा-गोयरे य चरगादिया, एमादिउत्तरगुणा तम्मि संघणगरे भवणा कता, भवण त्ति घरा, तेहिं 15
गहणं ति—निरंतरं संठिता घणा । तं च संघपुरिसणगरं अंगा-ऽणंगादिविचित्तसुतरयणभरितं । खयोवसमितादि-सम्मत्तमइयरच्छाओ य, मिच्छत्तादिकयारवज्जितत्तणतो विसुद्धाओ । मूलगुणचरित्तं च से पागारो, सो य अखंडो त्ति—अविराधितो निरतिचार इत्यर्थः । सेसं कंठं ॥ ६ ॥ इमं पि संघस्सेव पउमरूवगं—

कम्मरयजलोहविणिग्गयस्स सुयरयणदीहणालस्स ।
पंचमहव्वयथिरकण्णियस्स गुणकेसरालस्स ॥ ७ ॥ 20
सावगजणमहुयरिपरिवुडस्स जिणसूरतेयबुद्धस्स ।
संघपउमस्स भद्दं समणगणसहस्सपत्तस्स ॥ ८ ॥　　[जुम्मं]

कम्मरय० गाहा । कम्म एव रयो कम्मरयो । अहवा जं पुव्वबद्धं तं कम्मं, बज्झमाणं रयो, तं सव्वं पि

---

१ भद्दं सील० इति संजमतव० इति गुणभवण० इति च सूत्रगाथात्रिकं श्रीहरिभद्रसूरिवृत्तौ श्रीमलयगिरिपादवृत्तौ च पश्चानुपूर्व्या व्याख्यातमस्ति ॥ २ हरि०वृत्तौ मलय०वृत्तौ च °सुणेमिघोसस्स इति पाठभेदो निर्दिष्टोऽस्ति । अंगविज्जाशास्त्रेऽपि—"तत्थ नरसपन्ने हिरन्न-मेघ-दुंदुभि-वसभ-गय-सीह-सद्दूल-भमर-रधणेमिणिग्घोस-सारस-कोकिल-उक्कोस-कोंच-चक्काक-हंस-कुरर-बरिहिण-तंतीसर-गीत-वादित-तलतालघोस-उक्कुट्ठ-छेलित-प्फोटित-किंकिणिमहुरघोससद्दुब्भावे सव्वसुपण्ण बूया । " इत्यत्र णेमिणिग्घोस इति पदं वर्त्तते ॥ ३ °पडाता आ० ॥ ४ स० मो० आदर्शयोः केनापि विदुषा °बारयस्स स्थाने °बारस्स इति संशोधितं वर्तते । एतत्पाठानुसारेण मलयगिरिपादव्याख्यानं वर्त्तते ॥ ५ °तवो महाअरगा जे० दा० ॥ ६ अखंडचारित्त° मु० ॥ ७ °च्छाया य आ० दा० ॥ ८ °कतवर° आ० दा० ॥ ९ णिरइचार आ० ॥ १० पउम° आ० दा० ॥ ११ °यरपरि° दे० ल० ॥

त्ति ख्यापित भवति। 'जगगुरु' त्ति जग ति–सव्वसण्णिलोगो, तस्स भगवानेव गुरु । कयम् ? उच्यते— [जे० १८६ प्र०] गृणाति शास्त्रार्थमिति गुरु, ब्रवीतीत्यर्थ, तिरिय-मणुय देवा-ऽसुराए परिसाए धम्ममक्खाति। जो वा ज पुच्छति त सव्व कहयति त्ति तेण गुरू, अनेन वचनेन परोपकारित्व प्रदर्शितं भवति। जगा–सत्ता ताण आणदकारी जगाणदो। कह? उच्यते–सव्वेसिं सत्ताण अव्वावादणोवदेसकरणत्तातो। जतो भणितं–"सव्वे सत्ता ण 5 हतव्वा ण परियावेतव्वा ण परिघेत्तव्वा ण अज्जावेतव्व" [आचा० श्रु १ अ ४ उ २ सू ३] त्ति। विसेसतो सण्णिण धम्मकहणत्तातो आणदकारी, ततो वि विसेसतो भव्वसत्ताण ति। अनेन वचनेन हितोपदेशकर्तृत्व दर्शित भवति। जगा–सत्ता ते अण्णेहिं परिभविज्जमाणे रक्खइ त्ति जगणाहो। कह? उच्यते–मणो-वयण-काएहिं कत-कारिता ऽणुमतेहिं रक्खतो जगणाहो भवति। अनेन वचनेन सव्वपाणीण सणाहता दसिता भवति। 'जगबधु' त्ति जगा–सत्ता तेसिं बधू जगबधू। कह? उच्यते–जो अप्पणो परस्स वा आवतीए वि ण परिच्चयति सो बधू, भगव च सुट्ठु वि 10 परीसहोवसग्गादिसु वाहिज्जमाणो वि सत्तेसु बधुत्त अपरिच्चयतो ण विराहेति त्ति अतो जगबधू, अनेन वचनेन सव्वसत्तेसु सबधुता दसिता भवति। पितामहो त्ति जो पितुपिता स पितामहो, सो य भगव चेव। सव्वसत्ताण पितामहो कह ? उच्यते–सव्वसत्ताण अहिंसादिलक्खणो धम्मो पिता रक्खणत्तातो, सो य धम्मो भगवता पणीतो अतो भगव धम्मपिता, एव च सव्वसत्ताण भगव पितामहो त्ति। अनेन वचनेन धम्म पडुच्च आदिपुरिसत्त ख्यापित भवति। एतीए गाहाए पच्छद्धस्स पादतर इम–"जिणवसभो सललियवसभविक्कम [जे० १८६ द्वि०] गती महावीरो।" जिण 15 एव वसभो जिणवसभो। वसभो त्ति सजममारूव्वहणे। चक्कमतो सुभा गायसचालणकिरिया सललित भण्णति। वाम-दाहिणाण वा पुरिम-पच्छिमचलणाण ज कमुक्खेवकरण स विक्कमो भण्णति, दुपदस्स पुण एगचलणुक्खेवो चेव विक्कमो। सेस कठ ॥ १ ॥ किंच–

जयइ सुयाण पभवो तित्थयराण अपच्छिमो जयइ।
जयइ गुरू लोगाण जयइ महप्पा महावीरो ॥ २ ॥

20 जयति सुताण० गाहा। राग-दोसादिअरी जिणतो जितेसु वा जयति त्ति। ['सुताण'] सव्वसुताण ति, सुतणाणत्थो भगवतातो पभवो। 'पभवो' त्ति पसूती। अणिट्ठवयणपरिहारातो पच्छिमो त्रि अपच्छिमो भण्णति, अहवा पच्छाणुपुव्वीए अपच्छिमो, रिसभो पच्छिमो। अविसिट्ठजीवलोगस्स विसिट्ठसण्णिजीवलोगस्स वा, अहवा सम्मदिट्ठिमादिसजता ऽसजतलोगस्स गुरू। मह आता जस्स सो य अकम्मवीरियसामत्थतो महात्मा, केवलादि विसिट्ठलद्धिसामत्थतो वा महात्मा ॥ २ ॥ किंच–

25 भद्द सव्वजगुज्जोयगस्स भद्द जिणस्स वीरस्स।
भद्द सुरा ऽसुरणमसियस्स भद्द धुयरयस्स ॥ ३ ॥

भद्द सव्व० गाहा। भायते भाति वा भद्रम्, त भगवतो भवतु त्ति। सव्वजग ति–लोगो। अट्ठविहो वि लोगनिक्खेवो भाणितव्वो [आव० नि० गा० १०५७]। सेस कठ ॥ ३ ॥ इम सघस्स रहरूवग—

१ य-सदेया जे० दा ॥ २ प पधममक्खा जे० ॥ ३ सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता न हतव्वा न अज्जावेयव्वा न परियावेयव्वा न परिघेत्तव्वा न उद्दवेयव्वा इतिरूपं सूत्रमाचाराङ्गे ॥ ४ विसयेइ आ ॥ ५ मह्रो भवति। अनेन आ ॥ ६ त्यगरा सं० ॥ ७ णाणत्थाणं भग आ० ॥ ८ च्छिमो वीरो, रिसभो आ० ॥

सम्मद्दंसणवइरदढरूढगाढावगाढपेढस्स ।
धम्मवररयणमंडियचामीयरमेहलागस्स ॥ १२ ॥
णियमूसियकणयसिलायलुज्जलजलंतचित्तकूडस्स ।
णंदणवणमणहरसुरभिसीलगंधुद्धुमायस्स ॥ १३ ॥
जीवदयासुंदरकंदरुद्दरियमुणिवरमइंदइण्णस्स ।
हेउसयधाउपगलंतरत्तदित्तोसहिगुहस्स ॥ १४ ॥
संवरवरजलपगलियउज्झरपविरायमाणहारस्स ।
सावगजणपउररवंतमोरणच्चंतकुहरस्स ॥ १५ ॥
विणयमयपवरमुणिवरफुरंतविज्जुज्जलंतसिहरस्स ।
विविहकुलकप्परुक्खगणयभरकुसुमियकुलवणस्स ॥ १६ ॥
णाणवररयणदिप्पंतकंतवेरुलियविमलचूलस्स ।
वंदामि विणयपणओ संघमहामंदरगिरिस्स ॥ १७ ॥[10] [छहिं कुलयं]

सम्मद्दंसण० गाहा । णियमू० गाहा । जीवदया० गाहा । संवर० गाहा । विणय० गाहा । णाणवर० गाहा । संघपव्वतस्स सम्मद्दंसणं[12] चेव वइरं । तं च संकादिसल्लरहियत्तणयो दढं ति[13] रूढं ति—वड्ढितं, कहं ? विसुज्झमाणत्तणयो । गाढं ति—अतीव, अवगाढं ति—ओगाढं, सद्दहाणत्तणतो जीवादिपदत्थेसु अतीवओगाढं ति वुत्तं भवति । एतं पेढं । धम्मो दुविहो मूलुत्तरगुणेसु । सो य दुविहो वि वरो त्ति—पधाणो । तत्थुत्तरगुणधम्मो रयणा, तेहिं मंडिता जे मूलगुणा ते चामीकरं ति, तं च सुवण्णं, तम्मयी मेहला, तया जुत्तस्स मेहलागस्स ॥१२॥

नियमो त्ति इंदिय-णोइंदिएसु अणेगविधो, सो य णियमो सिलातला तेहिं चेव उस्सितो, असुभज्झवसाण-विरहितत्तणतो कम्मविसुज्झमाणत्तणतो वा उज्जलसुत्त-ऽत्थाणुसरणत्तणतो य[14] जलति चित्तं, चिंतिज्जइ जेण तं चित्तं, तं चेव कूडं ति चित्तकूडं तस्स। [जे० १८८ प्र०] णंदंति जेण वणयर-जोतिस-भवण-वेमाणिया विज्जाहर-मणुया य तेण णंदणं, वणं ति—वणसंडं । तं च लता-वल्लि-वितोणाणेगोसहिसतेहिं[15] गहणं, पत्त-पल्लव-पुप्फ-फलोवेवेतेहिं[16] मण-

---

१ °सणवरवइरदढरूढ° डे० शु० ल० मु० । °सणओयरहरूढ° स० ॥ २ °ढपीढ° स० ॥ ३ °लायस्स स० ॥ ४ °यलज्ज° शु० ॥ ५ °गंधुद्धमा° सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु । °गधद्धमा° हरि० वृत्तौ ॥ ६ °मयंदइंघस्स डे० । °मइदइंदस्स ल० ॥ ७ °तरयणदित्तो° मो० मु० । °तरित्थदित्तो° डे० ॥ ८ विणयणयपवर° मसूप्र० । चूर्णिकृत्सम्मत सूत्रपाठ कुत्राप्यादर्शे नोपलभ्यते ॥ ९ विविहगुणकप्परुक्खगफलभरकुसुमाउलवणस्स ससूप्र० । चूर्णिकृत्सम्मत सूत्रपाठ कुत्राप्यादर्शे नोपलभ्यते ॥

१० सप्तदशगाथानन्तर चूर्णिकृदादिभिरव्याख्यात गाथायुगलमिदमधिक सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषूपलभ्यते—
गुणरयणुज्जलकडयं सीलसुयंघतवमंडिउद्देसं । सुयबारसंगसिहरं संघमहामंदरं वंदे ॥१॥
नगर रह चक्क पउमे चंदे सूरे समुद्द मेरुम्मि । जो उवमिज्जइ सयय तं संघ गुणायरं वंदे ॥२॥
अत्रार्थे जेसू० आदर्शे इय टिप्पणी वर्त्तते—"गुणेत्यादि गाथा २ वृत्तावव्याख्यातम्" ॥

११ णाणावरण० गाहा जे० दा० । अशुद्धोऽय पाठभेदः ॥ १२ °द्दंसणं से वइर जे० ॥ १३ °ति चिरवड्ढितं आ० ॥ १४ य उज्जलं-दित्तिमं चिंतिज्जइ तेण दित्तं, तं चेव आ० । अनन्ततोऽशुद्धश्चाय पाठः ॥ १५ °विताणणेगसंठाणसंठितेहिं गहणं जे० दा० ॥ १६ °लोच्चतेहिं आ० ॥

हारित्तणतो मणहर, गधवो सुरभिगध। सीलवणसडे वि जम्हा साधवो णदति भमोदति रमतीत्यर्थ.। विविहलद्धि-विसेसतो य मणहर सीलवण, विसुद्धभावत्तणतो य सुगध, जहा दव्ववणसडे गधेण उद्धुमात त्ति-व्याप्त तहा सीलगधेण सघस्स गधुद्धुमायस्स ॥ १३ ॥ किंच—

ज पव्वतासण्ण सिलारुक्खगहण त कदर ति। भावे जीवेसु दयाकरणसुदर जं त कदर ति। तत्थ य
5 उं-प्यावल्ले, दरितो त्ति-दप्पितो, जीवदयाकरणदप्पितो त्ति वुत्त भवति। को य सो? मुणिगणो। सो चेव मुणिगणो मइदो परप्पवादिसासणसघमयाण इदो। कह? सितवादउंचमभावत्तणतो। हेतु त्ति-पक्खधम्मो कारण वा, ते सतग्गसो सुत्ते सभवति। ते य हेतवो धातू, ते य पगलति परूवणगुहाए। सा य परूवणगुहा णाणादिर-तणादिएहिं दित्ता, खेलोसहिमादिओसहीहिं वा दित्ता ॥ १४ ॥

एव दित्तोसहिगुहस्स सघस्स सवरो त्ति-पच्चक्खाण, त चेव सलिल, किंचि पव्वतग्गातो ओसरित उज्झर,
10 इहावि खाइगभावातो खयोवसमिय उज्झर, ततो पलविता खतोवसमितसंवरदगधारा, स चेव धारा हारो, तेण विरायते-सोमति त्ति। सावगजणो पउरो त्ति-बहु प्रचुर. सो य गीतद्धणीए रवति त्ति-रडती, ते चेव मोरा णाडगादीहि य णच्चति। ज पव्वतस्स अद्धे समप्पदेस रुक्खाकुल [जे०१८८ द्वि०] च त कुहर। एव सघपव्वतस्स ण्हवणमडवादी कुहर ति ॥ १५ ॥

विणयकरणत्तातो विणयेभतो मुणी। सो य विणयकरणत्तेण फुरते, त चेव फुरित विज्जुत ति-चकोरित,
15 त च उज्जल ति-निम्मल, तेण उज्जलत्तेण सघसिहर जलितमिव लक्खिज्जति। सघसिहर च पावयणिपुरिसा दट्ठव्वा। तत्थ य विविहकुलुप्पण्णा साहवो कप्परुक्खा, खीरासवादिलद्धिफलेहि य णयभरा, लद्धिहेतुट्ठिता साहवो कुसुमिता कुम्बवण त्ति दट्ठव्वा ॥ १६ ॥

मति-सुतादिनाणा वर त्ति-पहाणा, ते चेव णाणावेरुलियादिरतणा इव कता, कता इति-कतिजुत्ता। कतिजुत्तत्तणतो चेव सविसतेण जीवादिपदत्थसरूवोवलभतो दिप्पति। नाणस्स य मलो णाणावरण, तन्विगमातो
20 य विगतमल। चूलामणिरिव सिहरोवरि चूला, सा य णाणातिसयगुणेहिं जुत्ता, जुगप्पहाणो पुरिसो चूला इति। एव संघपव्वतस्स पेढादिचूलपज्जवसाणकप्पियस्स वदामि विणयपणतो चि छण्ह वि गाहाण एत क्रियापद ति ॥१७॥

एव चरमतित्थगरस्स सघस्स यें पणामे कते इमा अवसरप्पत्ता आवली भण्णति—सा तिविहा तित्थकर १ गणहर २ थेरावली ३ य। तत्थ तित्थगरावलिदसणत्थ इम भण्णति—

[सुत्त ३]

25 वंदे उसभ अजिअ संभवमभिणदण सुमति सुप्पभ सुपास।
ससि पुप्फदत सीयल सिज्जंस वासुपुज्ज च ॥ १८ ॥

१ स्स किया। ज आ० ॥ २ रत्- आवल्ये इत्यर्थ ॥ ३ उच्चिम आ० ॥ ४ इधावि आ ॥ ५ बहु आ० ॥ ६ गीतज्झुणीए आ० ॥ ७ अद्धे आ० ॥ ८ ण्हाण° आ ॥ ९ वणतो आ० दा० ॥ १० य फलभरा आ० दा० ॥ ११ ता गुणवण त्ति आ० ॥ १२ कतादिजुत्त आ० ॥ १३ सो य णाणातिसयत्थसरूवोवलभगुणेहिजुया जुगप्पहाणा पुरिसा चूला आ० ॥ १५ सरापणणा आ आ० ॥ १६ सेज्जस स शु०। सेयस ख० ॥

विमलमणंतइ धम्मं संतिं कुंथुं अरं च मल्लिं च ।
मुणिसुव्वय णमि णेमी पासं तह वद्धमाणं च ॥ १९ ॥ [जुम्मं]

वंदे उसभ० गाहा । [विमल० गाहा य] कंठा ॥१८॥१९॥ चरमतित्थगरस्स इमा गणहरावली—

[सुत्तं ४]

पढमेत्थ इंदभूती बितिए पुण होति अग्गिभूति त्ति ।　　5
ततिए य वाउभूती ततो वितत्ते सुहम्मे य ॥ २० ॥
मंडिय-मोरियपुत्ते अकंपिते चेव अयलभाता य ।
मेतज्जे य पभासे य गणहरा होंति वीरस्स ॥ २१ ॥ [जुम्मं]

एत्थ गणहरावली ॥२०॥२१॥ तो सुधम्मातो थेरावली पवत्ता, जतो [जे०१८९ प्र०] भण्णति—

[सुत्तं ५]　　10

सुहम्मं अग्गिवेसाणं जंबूणामं च कासवं ।
पभवं कच्चायणं वंदे वच्छं सेज्जंभवं तहा ॥ २२ ॥

सुहम्मं अग्गिवेसाणं० सिलोगो । समणस्स णं० महावीरस्स कासवगोत्तस्स सुधम्मे अंतेवासी अग्गिवेसायण-सगोत्ते । सुहम्मस्स अंतेवासी जंबुणामे कासवे गोत्तेणं । जंबुणामस्स अंतेवासी पभवे कच्चायणसगोत्ते । पभवस्स अंतेवासी सेज्जंभवे वच्छसगोत्ते ॥ २२ ॥　　15

जसभद्दं तुंगियं वंदे संभूयं चेव माढरं ।
भद्दबाहुं च पाइण्णं थूलभद्दं च गोयमं ॥ २३ ॥

जसभद्द० गाहा । सेज्जंभवस्स अंतेवासी जसभद्दे तुंगियायणे वग्घावच्चसगोत्ते । जसभद्दस्स अंतेवासी इमे दो थेरा— भद्दबाहू पाँयीणग्गिसगोत्ते, सभूतविजए य माढरसगोत्ते । सभूतविजयस्स अंतेवासी थूलभद्दे गोतमसगोत्ते ॥२३॥

एलावच्चसगोत्तं[12] वंदामि महागिरिं सुहत्थिं च ।　　20
तत्तो [13]कासवगोत्तं बहुलस्स सरिव्वयं वंदे ॥ २४ ॥

---

१ °मणंतय डे० ल० मु० ॥ २ णेमिं खं० जे० मु० ॥ ३ इद गाथायुगल चूर्णिकृता चूर्णौ स्वयमेवेत्थमुल्लिखितमस्ति । पढमित्थ इंदभूई बीए पुण होइ अग्गिभूइ त्ति । तइए य वाउभूई तओ वियत्ते सुहम्मे य ॥ मंडिय-मोरियपुत्ते अकंपिए चेव अयलभाया य । मेयज्जे य स० डे० शु० मो० ॥ ४ वायभूई डे० ल० ॥ ५ तहा मो० ॥

६ एकविंशति-द्वाविंशतिगाथयोरन्तराले चूर्णिकृताऽव्याख्याताऽपि श्रीहरिभद्रसूरि-श्रीमलयगिरिपादाभ्यां स्वस्ववृत्तौ व्याख्याता जिनशासनस्तुतिरूपा इयमेका गाथाऽधिका सर्वेष्वपि सूत्रादर्शेषु वर्त्तते—

णेव्वुइपहसासणयं जयइ सया सव्वभावदेसणयं । कुसमयमयणासणयं जिणिंदवरवीरसासणयं ॥
जयति शु० । जयउ डे० ल० । जिणंद° ल० ॥

७ जंबुणामं स० ॥ ८ सिज्जंभवं ल० मो० ॥ ९ पायन्नं डे० ल० ॥ १० वाईणतिसगोत्ते आ० ॥ ११ °वच्छस° स० डे० ल० । °वत्सस° शु० ॥ १२ °गुत्तं शु० ल० ॥ १३ कोसियगोत्तं ससूप्र० । श्रीहरिभद्र-मलयगिरिपादाभ्यामेतत्पाठानुसारेणैव व्याख्यातमस्ति । चूर्णिकृत्सम्मतः सूत्रपाठो नोपलभ्यते कुत्राप्यादर्शे ॥

एलावच्च० गाहा । थूलभद्दस्स अंतेवासी इमे दो थेरा–महागिरी एलावच्चसगोत्ते, सुहत्थी य वासिट्ठसगोत्ते । सुहत्थिस्स सुट्ठित सुपडिबुद्धादयो आवलीते जहा दसासु [अ० ८ सूत्र २१०] तहा भाणितव्वा, इह तेहिं अहिगारो णत्थि, महागिरिस्स आवलीए अधिकारो । महागिरिस्स अंतेवासी बहुलो बलिस्सहो य दो जमलभातरो कोसवस गोत्ता । तत्थ बलिस्सहो पावयणी जातो, तस्स थुतिकरणे भणति–"बहुलस्स सरिव्वयं वंदे" । 'सरिव्वयं' ति सरिसव्वयो, वयो य जम्मकालं पडुच्च जा जा सरीरपरिवड्ढिअवत्था सा सा वतो भण्णति ॥ २४॥ 5

हारियगोत्तं साइं च वंदिमो हारियं च सामज्जं ।
वंदे कोसियगोत्तं संडिल्लं अज्जजीयधरं ॥ २५ ॥

हारिय० गाहा । बलिस्सहस्स अंतेवासी साती हारियसगोत्तो । सातिस्स अंतेवासी सामज्जो हारितसगोत्तो चेव । सामज्जस्स अंतेवासी संडिल्लो कोसियसगोत्तो, सो य अज्जजीतधरो त्ति अज्ज ति–आर्यं आध वा जीतं ति–सुत्तं धरति, सुत्तत्थस्स अविच्चुतिधरणत्तातो, वंदे त्ति वक्कसेसं । पाढंतरं वा "जीवधरं" ति, आर्यत्वात् जीवं धरेति–रक्षतीत्यर्थः । अण्णे पुण भणति–संडिल्लस्स अंतेवासी जीवधरो अणगारो, सो य अज्जसगोत्तो ॥२५॥ संडिल्लस्स सीसो— 10

तिसमुद्दखायकित्तिं दीव समुद्देसु गहियपेयालं ।
वंदे अज्जसमुद्दं अक्खुभियसमुद्दगंभीरं ॥ २६ ॥

तिसमुद्द० गाहा । पुव्व-दक्खिणा ऽपरा ततो समुद्दा, उत्तरतो वेतड्ढो, एंततरे खातकित्ती । सेसं कंठं ॥२६॥ तस्स सीसो [जि० १८९ द्वि०] इमो— 15

भणगं करगं झरगं पभावगं णाण दंसणगुणाणं ।
वंदामि अज्जमंगुं सुयसागरपारगं धीरं ॥ २७ ॥

भणग० गाधा । कालियपुव्वसुत्तत्थं भणतीति भणको । चरण करणक्रिया करोतीति कारकः । सुत्तत्थे य मणसा झायतो झरको । परप्पवादिजयेण पवयणप्पभावको । नाण-दंसण-चरणगुणाण च पभावको आधारो य । सेसं कंठं ॥२७॥ तस्स सीसो— 20

णाणम्मि दंसणम्मि य तव विणए णिच्चकालमुज्जुत्तं ।
अज्जीणदिलखमणं सिरसा वंदे पसण्णमणं ॥ २८ ॥

---

१ अत्र चूर्णिकृता हरिभद्रपादैश्च सुहस्ती भगवान् दशाश्रुतस्कन्धाष्टमाध्ययनस्थविरावल्यामिव वासिष्ठगोत्रीयः स्थापितः किन्तु मलयगिरिसूरिचरणैरयं सूत्रगाथानुलोम्याद् ऐलापत्यसगोत्रीयः स्थापितः तदत्र तज्ज्ञा एव प्रमाणम् ॥ २ कोसियगोत्ता दा० ॥ ३ भणिय आ ॥ ४ थगुत्त साय च दे शु० ल ॥ ५ जीवधरं इति चूर्णौ पाठान्तरम् ॥ ६ तेषां शाण्डिल्या चार्याणां आर्यजीतधर आर्यसमुद्राख्यौ द्वौ शिष्यावभूताम् । आर्यसमुद्रस्याऽऽर्यमङ्गुनामानः प्रभावकः शिष्या आता' इति हिमवत्स्थविरावल्याम् पत्र १ ॥ ७ खाइकित्ति क ॥ ८ परथतरे आ० ॥ ९ अज्जमगू ल० ॥ १० अष्टाविंशतितम गाथानन्तरं शु प्रतिं विहाय सर्वासु सूत्रप्रतिषु गाथायुगलमिदमधिकमुपलभ्यते—

वंदामि अज्जधम्मं वंदे तत्तो य भद्दगुत्तं च । तत्तो य अज्जवइरं तव नियमगुणेहिं वयरसमं ॥
वंदामि अज्जरक्खियखमणे रक्खियचरित्तसव्वस्से । रयणकरंडगभूओ अणुओगो रक्खिओ जेहिं ॥

एतद्गाथायुगलविषये जेसू प्रतावियं टिप्पणी– वंदामि अज्जधम्म० एतदपि गाथाद्वयं न चूर्णौ विवृतम् आवलिकान्तर-सम्बन्धत्वादिति सम्भाव्यते । ११ अज्झाणदिल य ॥

णाणम्मि दं० गाहा । कंठा ॥२८॥ तस्स सीसो—

वड्ढउ वायगवंसो जसवंसो अज्जणागहत्थीणं ।
वागरण-करण-भंगी-कम्मप्पयडीपहाणाणं ॥ २९ ॥

वड्ढतु० गाहा । 'वड्ढतु' त्ति वृद्धिं यातु । को य सो ? 'वायगवंसो' वायेंति सिस्साणं कालिय-पुव्वसुतं ति वातगा–आचार्या इत्यर्थः, गुरुसंण्णिहाणे वा सिस्सभावेण वाइतं सुतं जेहिं ते वायगा, वंसो त्ति–पुरिसपव्व-परंपरेण ठितो वंसो भण्णाति । सो चेव जसोवज्जणतो संजमोवज्जणतो वा जसवंसो भण्णाति, सो य अणागतवंसो इत्यर्थः । कस्स सो एरिसो वंसो ? भण्णाति, अज्जणागहत्थीणं ति । केरिसाणं ? ति पुच्छा, भणाति–जीवादिपदत्थ-पुच्छासु वाकरणे सद्दपाहुडे वा पहाणाणं, एवं चरणकरणे कालकरणेसु वा सव्वभंगविकप्पणासु य तप्परूवणे य तहा कम्मप्पगडिपरूवणाए पधाणाणं पुरिसाणं वड्ढतु वायगवंसो ॥२९॥ तस्स सीसो—

जच्चंजणधाउसमप्पहाण मुद्दीय-कुवलयनिहाणं ।
वड्ढउ वायगवंसो रेवइणक्खत्तणामाणं ॥ ३० ॥

जच्चंजण० गाहा । जच्चंजणग्गहणं कित्तिमवुदासत्थं, सरीरवण्णेण तन्निभो । तहा सरस-पक्कमुद्दियफलसण्णिभो य । कुंच्छितो उवलो कुवलयो, सो य कण्हकायो, कुवलयं वा–णीलुप्पलं, कुवलयं वा–रयणविसेसो । रेवतिवायगो त्ति । सेसं कंठं ॥३०॥ तस्स सीसो—

अयलपुरा णिक्खंते कालियसुयआणुओगिए धीरे ।
बंभद्दीवग सीहे वायगपयमुत्तमं पत्ते ॥ ३१ ॥

अयलपुरा० गाहा । बंभदीवगसाहीणं आयरियाणं समीवे निक्खंतो सीहवायको, उत्तमवायकत्तणं च तक्का-लसुतसंभवं पडुच्च । सेसं कंठं ॥ ३१ ॥ तस्स सीसो—

जेसि इमो अणुओगो पयरइ अज्जावि अड्ढभरहम्मि ।
बहुनगरनिग्गयजसे ते वंदे खंदिलायरिए ॥ ३२ ॥

जेसि इमो० गाहा । कहं पुण तेसिं अणुओगो ? उच्यते–बारससंवच्छरिए महंते दुब्भिक्खकाले भत्तट्ठा अण्णण्णतो फिडिताणं गहण-गुणणा-ऽणुप्पेहाभावातो सुते विप्पणट्ठे पुणो सुभिक्खकाले जाते मधुराए महंते साहु-समुदए खंदिलायरियप्पमुहसंघेण 'जो जं संभरति' त्ति एवं संघडितं [जे० १९० प्र०] कालियसुतं । जम्हा य एतं मधुराए कतं तम्हा माधुरा वायणा भण्णाति । सा य खंदिलायरियसम्मय त्ति कातुं तस्संतियो अणुओगो भण्णाति । सेसं कंठं । अण्णे भणंति जहा–सुतं ण णट्ठं, तम्मि दुब्भिक्खकाले जे अण्णे पहाणा अणुओगधरा ते विणट्ठा, एगे खंदिलायरिए संधरे, तेण मधुराए अणुयोगो पुणो साधूणं पवत्तितो त्ति माधुरा वायणा भण्णाति, तस्संतितो य अणियोगो भण्णाति ॥ ३२ ॥

१ 'भंगिय-कम्म' स० मो० विना । हारि० वृत्तौ अयमेव पाठ आदृतोऽस्ति ॥ २ 'सण्णिधे वा आ० ॥ ३ रेवयण' डे० ल० ॥ ४ कुच्छितओ वलयो कुवलयो आ० ॥ ५ जेसिं तिमो ल० ॥ ६ अणुयोगो दा० ॥

ततो हिमवंतमहंतविक्कमे धिइपरक्कममणंते ।
सज्झायमणंतधरे हिमवंते वंदिमो सिरसा ॥ ३३ ॥

ततो हिम० गाहा । हिमवंतपव्वतेण महंतत्तण तुल्लं जस्स सो हिमवंतमहंतो, इह भरहे णत्थि अण्णो तत्तुल्लो त्ति, एस थुतिवादो । उत्तरतो वा हिमवंतेण सेसदिसासु य समुद्देण निवारितो जसो, हिमवंतनिवारणो जसो महंतो त्ति अतो हिमवंतमहंतो । महंतविक्कमो कहं ? उच्यते—सामत्थतो, महंते वि कुल-गण-संघप्पयोयणे तरति त्ति, परप्पवादिजएण वा विसेसलद्धिसपण्णत्तणतो वा महंतविक्कमो । अहवा परीसहोवसग्गे तवविसेसे वा धितिबलेण परक्कमतो महंतो । अणंतगम-पज्जवत्तणतो अणंतधरो त, महंतं हिमवंतणाम वंदे । सेसं कंठं ॥ ३३ ॥

किंच—

कालियसुयअणुओगस्स धारए धारए य पुव्वाणं ।
हिमवंतखमासमणे वंदे णागज्जुणायरिए ॥ ३४ ॥

कालिय० गाहा । हिमवंतो चेव हिमवंतखमासमणो । तस्स सीसो णागज्जुणायरितो ॥ ३४ ॥

तस्स इमा गुणकित्तणा—

मिउ-मद्दवसंपण्णे अणुपुव्विं वायगत्तणं पत्ते ।
ओहसुयसमायारे णागज्जुणवायए वंदे ॥ ३५ ॥

मिदु-मद्दव० गाहा । 'अणुपुव्वी' सामादियादिसुतग्गहणेण, कालतो य पुरिमपरियायत्तणेण पुरिसाणुपुव्वितो य वायगत्तण पत्तो, ओहसुतं च उस्सग्गो, तं च आयरति । सेसं कंठं ॥ ३५ ॥

णागज्जुणवायगस्स सीसो भूतदिण्णो आयरितो । तस्सिमा गुणकित्तणा तिहिं गाहाहिं—

तवणियवरकणग चंपय विमउलवरकमलगब्भसरिवण्णे ।
भवियजणहिययदइए दयागुणविसारए धीरे ॥ ३६ ॥

अड्ढभरहप्पहाणे बहुविहसज्झायसुमुणियपहाणे ।
अणुओगियवरवसभे णाइलकुलवंसणंदिकरे ॥ ३७ ॥

---

१ मणते स सु० ल० । जेसं प्रतौ महंते इति पाठस्योपरि टिप्पणी यथा— 'मणते इति वृत्तौ व्याख्यातम् ।' इति ॥ २ सुतिवादो आ ॥ ३ जसो हिमवतो त्ति, अतो हिमवंते महंतविक्कमो, कहं ? आ० ॥ ४ णतो अणंत या सुत महंतं आ ॥ ५ णुजोग स० ॥ ६ मिय म डे० ॥ ७ पञ्चत्रिंशत्तमगाथानन्तरं P प्रतिं विहाय सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषूपलभ्यत इदं गाथायुगलमधिकम्—

गोविंदाणं पि णमो अणुओगे विउलधारणिंदाणं । निच्चं खंति दयाणं परूवणे दुल्लभिंदाणं ॥
तत्तो य भूयदिन्नं निच्चं तव-संजमे अनिव्विन्नं । पंडियजणसामन्नं वंदामी संजमविहन्नुं ॥

एतद्गाथायुगलविषयं इदमपि गाथाद्वयं न वृत्तौ कुत्रचित् इति जेसं० प्रतौ टिप्पणी ॥ ८ पूरिमपरि आ० । पूरपरि जे ॥ ९ सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु वरकणगतवियचंपय इति पाठ उपलभ्यते । भगवता हरिभद्राचार्येण "वरकणग० गाहा" इति प्रतीकरूपेण अयं पाठः स्वीकृतोऽस्ति । चूर्णौ पुनः "तविय० गाहा" इति प्रतीकदानात् चूर्णिकृता तवियवरकणगचंपय० इति पाठ आदृतः सम्भाव्यते । श्रीमलयगिरिपादैस्तु "वरतवियेत्यादि गाथात्रयम्" इति प्रतीकनिर्देशनेन वरतवियकणगचंपय इति पाठोऽङ्गीकृतो वर्तते । न खल्वेतच्चूर्णिकृद्-मलयगिरिपादनिर्दिष्टं पाठभेदयुगलं सूत्रादर्शेषु दृश्यते ॥ १० °ब्भसिरिव स । °ब्भसमव डे ॥ ११ णुओगिय भ । णुओइय मु० । श्रीहरिभद्र-मलयगिरिभ्यामयमेव पाठः स्ववृत्तौ स्वीकृतोऽस्ति ॥

भूयहिययप्पगब्भे वंदे हं भूयदिण्णमायरिए ।
भवभयवोच्छेयकरे सीसे णागज्जुणरिसीणं ॥ ३८ ॥ [विसेसयं]

तविय० गाहा । गब्भो त्ति–पोमकेसरा । सेसं कंठं ॥ ३६ ॥

अड्ढभरह० गाहा । बहुविहो सज्झायो त्ति–अंगपविट्ठो बारसविधो, अणंगपविट्ठो य कालिय-उक्कालितो अणेगविहो । सो य पधाणो त्ति, सुगुणितत्तणेण निस्संको त्ति कातुं । सेसं कंठं ॥ ३७ ॥ 5

भूतहितय० गाहा । भूतहितं ति अहिंसा । [जे०१९० द्वि०] पगब्भं ति–धारिट्ठं । अहिंसाभावे पागब्भता, अतीवअप्पमत्तताए अहिंसाभावपरिणता इत्यर्थः । सेसं कंठं ॥ ३८ ॥

भूतदिण्णस्स सीसो लोहिच्चो । तस्स इमा थुती—

सुमुणियणिच्चा-ऽणिच्चं सुमुणियसुत्त-ऽत्थधारयं[3] णिच्चं ।
वंदे हं लोहिच्चं सब्भावुब्भावणातच्चं ॥ ३९ ॥ 10

सुमुणित० गाहा । सुट्ठु मुणितं सुमुणितं । किं तं? भण्णति–जीवो जीवत्तणेण निच्चो, गतिमादिएहिं अणिच्चो । परमाणू अजीवत्तणेण मुत्तत्तेण य निच्चो, दुप्पदेसादिएहिं वण्णादिपज्जवेहि य अणिच्चो । सुट्ठु त मुणितं सुत्त-ऽत्थं धरेति । णिच्चकालं पि स्वे भावे ठितो सब्भावो, सं[4]–सोभणो वा भावो सब्भावो, सं[5]–विज्जमाणो वा भावो सब्भावो, तं उब्भासए तच्चत्तेण, तथ्यत्वेन इत्यर्थः । तं च लोहिच्चणामं आयरियं वंदे । सेसं कंठं ॥ ३९ ॥

तस्स लोभिच्चस्स सीसो दूसगणी । तस्स इमा थुती— 15

अत्थ-महत्थक्खाणिं[6] सुसमण[7]वक्खाणकहणणेव्वाणिं[8] ।
पयतीए महुरवाणिं[9] पयओ पणमामि दूसगणिं[10] ॥ ४० ॥[11]

सुकुमाल-कोमलतले तेसिं पणमामि लक्खणपसत्थे ।
पादे पावयणीणं पडिच्छगसएहि[12] पणिवइए ॥ ४१ ॥

अत्थ-महत्थ० गाहा । खाणि त्ति–आगरो । सा य अत्थस्स खाणी । किंविसिट्ठस्स? महत्थस्स । महत्थो य अणेगपज्जायभेदभिण्णो । अहवा भासगरूवो अत्थो, विभासग-सव्वपज्जवत्तीकरो य महत्थो । एरिसस्स अत्थस्स खाणी[13] । का सा? 'वाणि' त्ति संबज्झति । सुभो समण(णो) सुस्समण(णो), तस्स सुस्समणस्स वक्खा[णकह]णं ति–अत्थकहणं, तम्मि अत्थकहणे सोताराण करेति वाणी णेव्वाणी । अहवा वक्खाणं ति–अणुयोगपरूवणं, 20

१ वरकणग० गाहा आ० । वरकणगतविय० गाहा दा० ॥ २ धारेयव्वं । अहिंसा° आ० । धारेव्वं मो० ॥ ३ °धारयं वंदे । सब्भावुब्भावणया, तत्थ लोहिच्चनामाणं ॥ इति मु० पाठ । नायं पाठश्चूर्णि-वृत्तिकृतां सम्मत, नापि च सूत्रप्रतिषूपलभ्यते ॥ ४ सन्-शोभनो वा भाव सद्भाव, सन्-विद्यमानो वा भाव सद्भाव इत्यर्थ ॥ ५ संघेज्जमाणो आ० ॥ ६ °क्खाणी डे० ल० ॥ ७ सुसवण° चूर्णौ पाठान्तरम् ॥ ८ °व्वाणी डे० ल० ॥ ९ °वाणी डे० ल० ॥ १० °गणी डे० ल० ॥ ११ चत्वारिंशत्तमगाथानन्तर P प्रतिं विहाय सर्वासु सूत्रप्रतिषु गाथेयमधिकोपलभ्यते—

तव-नियम-सच्च-संजम-विणय-ऽज्जव-खंति-मद्दवरयाण । सीलगुणगद्दियाणं अणुओगजुगप्पहाणाणं ॥

अत्र "गद्दियाण' इति 'गर्दिताना' ख्यातानाम्" इति आवश्यकदीपिकाकृता व्याख्यातमस्ति । एतद्गाथाविषये जेसू० प्रतौ "एषाऽपि गाथा न वृत्तौ कुतश्चित्" इति टिप्पणी वर्त्तते ॥ १२ पडि° मु० ॥ १३ खाणी, दूसगणि त्ति संब° आ० ॥

कहणं ति–अक्खेवमादियाहिं कहाहिं धम्मकहणं। तत्थ कुड्डाण वि आगताणं तस्स वाणी णेव्वाणिं जणेति, किमंग पुण धम्मस्सवणट्ठमागताणं? । अहवा पाढो–"सुसवण" त्ति तत्थ सवणं ति–कण्णा, तेसु सुहं जणेइ त्ति सुस्सवणा, एवं हकारलोवातो भण्णति। अहवा सुस्सवणा सुहस्सवा इत्यर्थः। सेसं कंठं ॥४०॥ इमा वि दुस्सगणिणो चेव चलणथुती—

5 सुकुमाल० गाहा। पवयणं–दुवालसंगं गणिपिडगं जस्स अत्थि सो पावयणी, गुरुत्तो त्ति कातुं बहुवयणं भणितं। सेसं कंठं ॥ ४१ ॥ एस णमोक्कारो आयरियजुगप्पहाणपुरिसाणं विसेसग्गहणातो कतो। इमो पुण [जे० १९१ प्र०] सामण्णतो सुतविसिट्ठाणं कज्जइ—

जे अण्णे भगवंते कालियसुयआणुओगिए धीरे।
ते पणमिऊण सिरसा णाणस्स परूवणं वोच्छं ॥ ४२ ॥

10 ॥ थेरावलिया सम्मत्ता ॥

जे अण्णे० गाहा। कंठा ॥ ४२ ॥

एतं च नाणपरूवणज्झयणं अरिहस्स देज्जति, णो अणरिहस्स देज्जइ। जतो भणितं—

[सुत्तं ६]

सेलघण १ कुडग २ चालणि ३ परिपूणग ४ हंस ५ महिस ६ मेसे ७ य।
15 मसग ८ जलूग ९ बिराली १० जाहग ११ गो १२ भेरि १३ आभीरे ॥ ४३ ॥

सा समासओ तिविहा पण्णत्ता, तं जहा–जाणिया १ अजाणिया २ दुव्वियड्ढा ३।

६ सेलघण० गाहा। एत्थ अरिहा इमे कुडेसु–अप्पसत्थवम्मसारिच्छा, पसत्थभावितेसु य अवम्मसारिच्छा। तहा हंस मेस-जलूग-जाहगसारिच्छा अरिहा, गो भेरी-आभीरेसु य पसत्थोवणतोवणीता अरिहा। सेसा अणअरिहा ॥ ४३ ॥

20 इमस्स य नाणपरूवणज्झयणस्स परूवणे परिसा जाणिगाइ तिविहा जाणितव्वा। तत्थ जाणिया—
गुण-दोसविसेसण्णू अणभिग्गहिता य कुस्सुइ मतेसु। सा खलु जाणगपरिसा गुणतत्तिल्ला अगुणवज्जा ॥१॥
[कप्पभा गा ३६५]

---

१ किज्जइ डा ॥ २ वंदिऊण स० । वंदितूण P ॥ ३ परूवण ख० ॥ ४ आभीरी सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु। एष एव पाठः श्रीहरिभद्र मलयगिरिभ्यां व्याख्यातोऽस्ति ॥ ५ एतत्सूत्रानन्तरं जे० डे० मो० शुसं० मु० प्रतिषु चूर्णि-वृत्तिकृद्भिरव्याख्यातोऽधिकोऽयं प्रक्षिप्तः सूत्रांशः पाठ उपलभ्यते—
जाणिआ जहा—
खीरमिव जहा हंसा जे घुट्टंति इह गुरुगुणसमिद्धा। दोसे य विवज्जंती तं जाणसु जाणियं परिसं ॥
अजाणिआ जहा—
जा होइ पगइमहुरा मियछावय-सीह-कुक्कुडगभूया। रयणमिव असंठविया अजाणिया सा भवे परिसा ॥
दुव्वियड्ढा जहा—
न य कत्थइ निम्माओ न य पुच्छइ परिभवस्स दोसेण। वत्थि व्व वायपुण्णो फुट्टइ गामेल्लयवियड्ढो ॥
एतत्पाठविषये जेसू प्रतावियं टिप्पणी केनापि विदुषा टिप्पिता दृश्यते—'जाणियेत्यारभ्य एतद् गाथात्रयं वृत्तौ न व्याख्यातम्, अतोऽन्यकर्तृकं सम्भाव्यते।' इति ॥ ६ आभीरीसु आ० ॥

इमा अजाणिया—

पगतीमुद्धमजाणिय मियछावय-सीह-कुक्कुरगभूता । रयणमिव असंठविता सुहसण्णप्पा गुणसमिद्धा ॥ २ ॥

[कल्पभा. गा. ३६७]

इमा दुव्वियड्ढा—

किंचिम्मत्तग्गाही पल्लवगाही य तुरियगाही य । दुवितड्ढिया उ एसा भणिता तिविहा भवे परिसा ॥ ३ ॥ 5

[कल्पभा. गा. ३६९]

एत्थ जाणिया अजाणिया य अरिहा ॥ एवं कतमंगलोवयारो थेरावलिकमे य दंसिए अरिहेसु य दंसितेसु दुस्सगणिसीसो देववायगो साहुजणहितट्ठाए इणमाह —

७. णाणं पंचविहं पण्णत्तं, तं जहा–आभिणिबोहियणाणं १ सुयणाणं २ ओहिणाणं ३ मणपज्जवणाणं ४ केवलणाणं ५ । 10

७. नाणं पंचविहं० इत्यादि । अस्य व्याख्या–णाती णाणं–अवबोहमेत्तं, भावसाधणो । अहवा णज्जइ अणेणेति नाणं, खयोवसमिय-खाइएण वा भावेण जीवादिपदत्था णज्जंति इति णाणं, करणसाधणो । अहवा णज्जति एतम्हि त्ति णाणं, नाणभावे जीवो त्ति, अधिकरणसाहणो । पंच इति संखा । विधिरिति भेदो । पण्णत्तं पण्णवितं प्ररूपितमित्यनर्थान्तरम् , अत्थतो तित्थकरेहिं, सुत्ततो गणधरेहिं । अहवा पण्णा–बुद्धी, पहाणपण्णेण अवाप्तं पण्णत्तं, सम्मद्दिट्ठिणा लद्धमित्यर्थः । अहवा पहाणपण्णातो अवाप्तं पण्णत्तं, तित्थकरसमीवातो गणधरेहिं 15 लद्धं ति वुत्तं भवति । अहवा पण्णा–बुद्धी, तीए अवाप्तं पण्णत्तं, तित्थकर-गणधरा-ऽऽयरिएहिं कहिज्जंतं [जि० १९१ द्वि०] बुद्धीए पण्णत्तमिति । तंदित्तणेण अधिकृतत्थं नाणं संबज्झति । जे पुव्वमुवण्णत्था पंच णाणभेदा तेषां प्रतिपद-मभ्युपगमे जहासद्दो । अत्थाभिमुहो णियतो बोधो अभिनिबोधः, स एव स्वार्थिकप्रत्ययोपादानादाभिनिबो-धिकम् । अहवा अभिनिबोधे भवं, तेण निव्वत्तं, तम्मतं तप्पयोयणं वाऽऽभिणिबोधिकं । अहवा आता तदभिनिबुज्झए, तेण वाऽभिणिबुज्झते, तम्हा वा[ऽभिणि]बुज्झते, तम्हि वाऽभिनिबुज्झए इत्ततो आभिनिबोधिकः । स एवाऽऽभि- 20 णिबोधिकोपयोगातो अनन्यत्वादाभिनिबोधिकम् १ । तहा तच्छृणोति, तेण वा सुणेति, तम्हा वा सुणेति, तम्हि वा सुणेतीति सुतं । आत्मैव वा श्रुतोपयोगपरिणामादनन्यत्वाच्छृणोतीति श्रुतम् २ । अवधीयते इति अवधिः, तेण वाऽवधीयते, तम्हि वाऽवधीयते, अवधाणं वा अवधिः, मर्यादेत्यर्थः । ताए परंपरोपणिबंधणातो दव्वादतो अवधीय(यं)त इति अवधी ३ । परि-सव्वतोभावेण गमणं पज्जवणं पज्जवः, मणसि मणसो वा पज्जवो मणपज्जवो, स एव नाणं मणपज्जवनाणं । तहा पज्जयणं पज्जयः, मणसि मणसो वा पज्जयः मनःपर्ययः, स 25 एव नाणं मणपज्जयणाणं । तहा आयो पावणं लाभो इत्यनर्थान्तरम् , सव्वतो आतो पज्जातो, मणसि मणसो वा पज्जायो मणपज्जायो, स एव नाणं मणपज्जव(?पज्जाय)णाणं । अहवा मणसि मणसो वा पज्जवा मणपज्जवा, तेसिं तेसु वा नाणं मणपज्जवनाणं । तहा मणसि मणसो वा पज्जया [मणपज्जया], तेसिं तेसु वा नाणं मणपज्जयनाणं ।

गमणपरावत्तिगो लाभो भेदा य बहुपरावत्ता । मणपज्जवम्मि नाणे णिरुत्तवयणऽत्थ पंचेते ॥ १ ॥ ४ ।

[ ] 30

१ जे होंति पगयमुद्धा मिग॰ इति कल्पभाष्ये ॥ २ तुरिय॰ आ० दा० ॥ ३ सतद्दिट्ठिणा आ० ॥ ४ तदित्यनेन सधिकृतार्थम् इत्यर्थः । "तं जहा" इति सूत्रांशे विद्यमान 'तद्' इति पदमनुलक्ष्येदं वचनम् ॥ ५ इत्यतः इत्यर्थः ॥

"कवलमेग सुद्ध सकलमसाधारण अणत च।" [विसेसा गा० ८४] इत्यर्थः ५। नाणसद्दो य सव्वत्थाऽऽमिनिबोधिकादीण समाणाधिकरणो [जे० १९२ प्र०] दट्ठव्वो, त जहा–आभिनिबोधिक च त नाण च आभिनिबोधिरनाण। एव सव्वेसु देट्ठव्व। पुच्छा य–किमेस मतिनाणादियो कमो? एत्थ उत्तर भण्णति–एस सकारणो उवण्णासो। इमे य ते कारणा–तुल्लसामित्तणतो सव्वकालाविच्छेदट्ठितेत्तणतो इदिया ऽणिदियणिमित्त-
5 त्तणता तुल्लखवतोवसमकारणत्तणतो सव्वदव्वादिविसयसामण्णत्तणतो परुक्खसामन्नत्तणओ य तब्भावे य सेसणाणसमवातो अतो आदीए मति सुताइ कताइ। तेसु वि य "मतिपुव्वत सुत" [सुत्त ४२] ति पुव्व मतिणाण कत, तस्स य पिट्ठतो सुत ति। अहवा इदिया ऽणिदियनिमित्तत्तणमविसिट्ठे वि मति-सुतेसु परोवदेसत्तणमेत्तभेदातो अरिहतवयणकारणत्तणतो य मतिविसेसत्तणतो य सुतस्स मतिअणतर सुत ति। मति-सुयसमाणकालत्तणतो मिच्छदसणपरिग्गहत्तणतो तव्विवज्जयसाहम्मत्तणतो सामिसाहम्मत्तणतो य कत्थइ काळेगलाभत्तणतो य मति-सुताणतर
10 अवधि त्ति भणितो। ततो य छउमत्थसामिसामण्णत्तणतो य पुग्गलविसयसामण्णत्तणतो य खयोवसमभावसामण्णत्तणतो य पच्चक्खभावसामण्णत्तणतो य अवहिसमणतर मणपज्जवनाण ति। सव्वनाणुत्तमत्तणतो सव्वविसुद्धत्तणतो य विरतसामिसामण्णत्तणतो य सव्वावसाणलाभत्तणतो य सव्वुत्तमलद्धित्तणओ य तदते केवल भणित॥

८ त समासओ दुविह पण्णत्त, त जहा–पच्चक्ख च परोक्ख च।

८ सव्व पेत समासतो दुविध—पच्चक्ख च परोक्ख च० इत्यादि। इह अप्पवत्तव्वत्तणतो पुव्व पच्चक्ख
15 पण्णविज्जति। इह जीवो अक्खो। कह? उच्यते–"अशू व्याप्तौ" इति, णाणप्पणताए अत्थे असइ त्ति इच्चेव जीवो अक्खो, णाणभावेण वावेति त्ति भणित भवति। अहवा "अश भोजने" इच्चेतस्स वा सव्वत्थे असइ त्ति अक्खो, पालयति भुङ्क्ते चेत्यर्थः। अक्ख पति वट्टति त्ति पच्चक्ख, अणिदिय ति वुत्त भवति। चसद्दाओ य से अवधिमादिभेदा दट्ठव्वा। अक्खातो [जे० १९२ द्वि०] परेसु ज णाण उप्पज्जति त परोक्ख समेद चसद्दाओ इदिय-मणोनिमित्त दट्ठव्वमिति।

20 ९ से किं त पच्चक्ख? पच्चक्ख दुविह पण्णत्त, त जहा–इदियपच्चक्ख च णोइदियपच्चक्ख च।

१० से किं त इदियपच्चक्ख? इदियपच्चक्ख पचविह पण्णत्त, तं जहा–सोइदियपच्चक्ख चक्खिदियपच्चक्ख घाणिंदियपच्चक्ख रसणेंदियपच्चक्ख फासिंदियपच्चक्ख। से त इदियपच्चक्ख।

25 ९ से किं त पच्चक्ख? पुच्छा। 'से' त्ति स पच्चक्खनाणभेदो। 'किं त' ति परिपण्हे, कतिभेद ति वुत्त भवति। त च किंसरूव? ति आयरियो पभेदमुवण्णासितु तस्सरूवकहणेण पच्चक्खसरूव कहितुकामो आह—पच्चक्ख दुविह पण्णत्त ति।

१० इदिय ति–पुग्गलेहिं सठाणणिव्वत्तिरूव दव्विदिय, सोइदियमादिइदियाण सव्वातप्पदेसेहिं स्वावरणखतोवसमातो जा लद्धी त भाविंदिय, तस्स पच्चक्ख ति इदियपच्चक्ख। त पचविह। पर आह–णणु

१ पत्तव्वं मो० ॥ २ द्वितित्त° आ० ॥ ३ त्तणेण अविसिट्ठे वि सति सुते वि परो आ० ॥ ४ णतो सम्मत्ताइकाले आ० ॥ ५ चेत्यथ आ० ॥ ६ परोक्ख, त चेदं, चस आ ॥ ७ चक्खुंदिय सं० ॥ ८ जिब्भिंदिय मो मु० ॥

दव्विंदियावत्थियपदेसमेत्तग्गहणतो सेसप्पदेसेसु अणुवलद्धी खयोवसमनिरत्थता वा भवति । आयरिय आह–ण एवं, पदीवदिट्ठंतसामत्थतो, जहा चतुसालभवणेगदेसजालितो पदीवो सव्वं भवणमुज्जोवेति तहा दव्विंदियमेत्तपदेसविसयपडिबोधओ सव्वातप्पदेसोवयोगत्थपरिच्छेययो खयोपसमसाफल्लया य भवति त्ति ण दोसो। भाविंदियोवयारपच्चक्खत्तणतो एतं पच्चक्खं, परमत्थओ पुण चिंतमाणं एतं परोक्खं। कम्हा? जम्हा परा दव्विंदिया, भाविंदियस्स य तदायत्तप्पणतो ॥ 5

११. से किं तं णोइंदियपच्चक्खं? णोइंदियपच्चक्खं तिविहं पण्णत्तं, तं जहा–ओहिणाणपच्चक्खं १ मणपज्जवणाणपच्चक्खं २ केवलणाणपच्चक्खं ३ ।

१२. से किं तं ओहिणाणपच्चक्खं? ओहिणाणपच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा–भवपच्चतियं च खयोवसमियं च। दोन्हं भवपच्चतियं, तं जहा–देवाणं च णेरतियाणं च। दोन्हं खयोवसमियं, तं जहा–मणुस्साणं च पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं च । 10

११-१२. णोइंदियपच्चक्खं ति इंदियातिरित्तं। तं तिविहं ओहिमादी। अवहि त्ति–मज्जाया, सा य रूविदव्वेसु त्ति, "रूविस्सऽवधे" [तत्त्वा. अ. १ सू. २८] त्ति वयणातो, तेसु णाणं ओहिनाणं । 'भवपच्चइतो' त्ति भणिते भण्णति–णणु ओधी खयोवसमिते भावे, णरगादिभवो से उदइए भावे, कहं भवपच्चइतो भण्णति? त्ति, उच्यते–सो वि खयोवसमितो चेव, किंतु सो चेव खयोवसमो णरग-देवभवेसु अवस्सं भवति त्ति, दिट्ठंतो पक्खीणं आगासगमणं व, एवं भवपच्चइतो भण्णति। खयोवसमियं पुण णर-तिरियाणं, तेसु णावस्सं उप्पज्जति त्ति खयोवसममवेक्खति॥ खयोवसमसरूवं च सुत्तेणेव [जे० १९३ प्र०] भणितं— 15

१३. को हेऊ खायोवसमियं? खायोवसमियं तयावरणिज्जाणं कम्माणं उदिण्णाणं खएणं अणुदिण्णाणं उवसमेणं ओहिणाणं समुप्पज्जति। अहवा गुणपडिवण्णस्स अणगारस्स ओहिणाणं समुप्पज्जति।

१३. को हेतु त्ति इच्चादि। सो य खयोवसमो गुणमंतरेण गुणपडिवत्तितो वा भवति। गुणमंतरेण जहा गगणऽब्भच्छादिते अहापवत्तितो छिद्देणं दिणकरकिरण व्व विणिस्सिता दव्वमुज्जोवेंति तहाऽवधिआवरणखयोवसमे अवधिलंभो अधापवत्तितो विण्णेतो। गुणपडिवत्तितो— गुणपडिवण्ण० इत्यादि। उत्तरुत्तरचरणगुणविसुज्झमाणमवेक्खातो अवधिणाण-दंसणावरणाण खयोवसमो भवति। तक्खयोवसमे य अवधी उप्पज्जति ॥ 20

१४. तं समासओ छव्विहं पण्णत्तं, तं जहा–आणुगामियं १ अणाणुगामियं २ वड्ढमाणयं ३ हायमाणयं ४ पडिवाति ५ अपडिवाति ६ । 25

१४. आणुगामियं ति। अणुगमणसीलो अणुगामितो, तदावरणखयोवसमाऽऽतप्पदेसविसुद्धगमणत्तातो लोयणं व ॥

१ सूत्रमिद प्रश्न-निर्वचनात्मकमपि उपलभ्यते–से किं तं भवपच्चइयं? २ दुण्हं, तं जहा–देवाण य णेरइयाण य। से किं तं खयोवसमियं? २ दुण्हं, तं जहा–मणूसाण य पंचेंदियतिरिक्खजोणियाण य। जे० मो० डे० मु०। किन्तु–चूर्णि-वृत्तिकृता नेद प्रश्नोत्तरात्मकं सूत्रं सम्मतम् ॥ २ °इयं ति आ० दा० ॥ ३ °दियाणं ख० ॥

१५ से किं तं आणुगामियं ओहिणाणं? आणुगामियं ओहिणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा–अंतगयं च मज्झगयं च।

१५ अंतगयं ति। जहा जलंतं वणंतं पव्वततं, अविसिट्ठो अंतसद्दो। एवं ओरालियसरीरंते ठितं गतं ति एगट्ठं, तं च आतप्पदेसफड्डगावहि, एगदिसोवलभाओ य अंतगतमोधिण्णाणं भण्णति। अहवा सव्वातप्पदेसविसुद्धेसु वि ओरालियसरीरेगतेण एगदिसिपासणगतं ति अंतगतं भण्णति। अहवा फुडतरमत्थो भण्णति–एगदिसावधिउवलद्ध-खेत्तातो सो अवधिपुरिसो अंतगतो त्ति जम्हा तम्हा अंतगतं भण्णति। मज्झगतं पुण ओरालियसरीरमज्झे फड्डगविसुद्धीतो सव्वातप्पदेसविसुद्धीतो वा सव्वदिसोवलभत्तणतो मज्झगतो त्ति भण्णति। अहवाऽवधिउवल-द्धखेत्तस्स वा अवधिपुरिसो मज्झगतो त्ति अतो वा मज्झगतो भण्णति॥

१६ से किं तं अंतगयं? अंतगयं तिविहं पण्णत्तं, तं जहा–पुरओ अंतगयं १ मग्गओ अंतगयं २ पासतो अंतगयं ३।

१७ से किं तं पुरतो अंतगयं? पुरतो अंतगयं से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चुडलिअं वा अलायं वा मणिं वा जोइं वा पदीवं वा पुरओ काउं पणोल्लेमाणे पणोल्लेमाणे गच्छेज्जा। से त्तं पुरओ अंतगयं।

१८ से किं तं मग्गओ अंतगयं? मग्गओ अंतगयं से जहाणामए केइ पुरिसे उक्कं वा चुडलियं वा अलायं वा मणिं वा जोइं वा पईवं वा मग्गओ काउं अणुकड्ढेमाणे अणुकड्ढेमाणे गच्छेज्जा। से त्तं मग्गओ अंतगयं २।

१९ से किं तं पासओ अंतगयं? पासओ अंतगयं से जहाणामए केइ पुरिसे उक्कं वा चुडलियं वा अलायं वा मणिं वा जोइं वा पईवं वा पासओ काउं परिकड्ढेमाणे परिकड्ढेमाणे गच्छेज्जा। से त्तं पासओ अंतगयं ३। से त्तं अंतगयं।

२० से किं तं मज्झगयं? से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चुडलियं वा अलायं वा मणिं वा जोइं वा पईवं वा मत्थए काउं गच्छेज्जा। से त्तं मज्झगयं।

१६-२० उक्क त्ति–दीविया। चुडलि त्ति–तणपिंडी अग्गे पज्जलिता। अलातं ति–दारुयं जलंतं। मणिं वा जलंतं। जोइं त्ति–मल्लगादिठितं अगणिं जलंतं। पदीवो त्ति–दीवतो। 'पुरतो' त्ति अग्गतो 'पणोल्लण' ति

१ सं० प्रतौ १६-१९ सूत्रेषु सर्वत्र अंतगयं इति परसवर्णान्वितः पाठो दृश्यते॥ २ १७ १९ सूत्रेषु चडुलिअं इति पाठः जे० मो०॥ ३ अत्र १७-१९ सूत्रेषु चडुलियम्वा अलायम्वा पदीवम्वा मणिम्वा जोतिम्वा इतिरूपः पाठः खं० प्रतौ वर्तते॥ ४ १७-१९ सूत्रेषु अलायं वा पदीवं वा मणिं वा जोतिं वा पुरतो इति पाठः सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु दृश्यते। न खलु चूर्णि-वृत्तिकृत्सम्मतः पाठः कुत्राप्यादर्शे उपलभ्यते तथापि व्याख्याक्रमतानुसारेणास्माभिः परावृत्त्य मूले पाठ उद्धृतोऽस्ति। अलायं वा मणिं वा पदीवं वा जोतिं वा पुरओ इति मु० पाठस्तु नास्मत्समीपस्थेषु आदर्शेषु दृश्यते॥ ५ काउं समुव्वहमाणे समुव्वहमाणे गच्छिज्जा जे० मो० मु०॥

"णुद प्रेरणे" हत्थगहितस्स दंडग्गहितस्स वा परंपरेण नयनमित्यर्थः । 'मग्गतो' त्ति पिट्ठतो 'अणुकड्ढणं' ति हत्थग्गहितस्स दंडग्गहितस्स वा अणु-पच्छयो कड्ढणं ति । 'पासतो' त्ति दाहिणे वामे वा पासे सा(दो)पा-सय[जे० १९२ द्वि०]जमलट्ठितं । परिकड्ढियं ति-हत्थ-डंडगट्ठितं वा परि-पासतो ट्ठितस्स कड्ढणं परिकड्ढणं ॥

सीसो पुच्छति—

२१. अंतगयस्स मज्झगयस्स य को पइविसेसो? पुरओ अंतगएणं ओहिनाणेणं पुरओ चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाणि जाणइ पासइ, [2]मग्गओ अंतगएणं ओहिनाणेणं मग्गओ चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाणि जाणइ पासइ, पासओ अंतगएणं ओहिणाणेणं पासओ चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ, मज्झगएणं ओहिणाणेणं सव्वओ [3]समंता संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ । से त्तं आणुगामियं ओहिणाणं ।

२१. अंतगतस्स० इच्चादि । आयरियाऽऽह-पुरतो० इच्चादि । 'सव्वतो' त्ति सव्वासु वि दिसि-विदिसासु 'समंता' इति [4]सव्वातप्पदेसेसु सव्वेसु वा विसुद्धफड्डगेसु । अहवा 'सव्वतो' त्तिसव्वासु दिसि-विदिसासु सव्वातप्प-देसफड्डगेसु य । 'से' इति निद्देसे अवधिपुरिसस्स, 'मंता' इति णाता । अहवा "समत्ता" इति समं-द्रव्वादयो तुल्ला अत्ता इति-प्राप्ता इत्यर्थः ॥

२२. से किं तं अणाणुगामियं ओहिणाणं[5]? अणाणुगामियं ओहिणाणं[6] से जहा-णामए केइ पुरिसे एगं महंतं [7]जोइट्ठाणं काउं तस्सेव [8]जोइट्ठाणस्स परिपेरंतेहिं परिपेरंतेहिं परिघोलेमाणे परिघोलेमाणे तमेव [9]जोइट्ठाणं पासइ, अण्णत्थ गए ण पासइ, [10]एवमेव अणाणुगामियं ओहिणाणं[11] जत्थेव समुप्पज्जइ तत्थेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ, अण्णत्थ गए ण पासइ । से त्तं अणाणुगामियं ओहिणाणं ।

२२. णो गच्छंतमणुगच्छति त्ति अणाणुगामिकं, संकलापडिबद्धट्ठितप्पदीवो व्व, तस्स य खेत्तावेक्खखयो-वसमलाभत्तणतो अणाणुगामित्तं । पेरंतं ति-समंततो [12]अगणिमासण्णं, तस्स य जोइस्स सव्वतो दिसि-विदिसासु समंता परिघोलणं ति-पुणो पुणो इतो इतो परिसक्कणं ॥

२३. से किं तं वड्ढमाणयं ओहिणाणं? वड्ढमाणयं ओहिणाणं [13]पसत्थेसु अज्झ-

---

१ पासे दोसु वा सयं जम° आ० दा० ॥ २ मग्गओ अंतगएणं० इत्यादिसूत्रांश पासओ अंतगएणं० इत्यादिसूत्रांशश्च न० स० प्रत्यो पूर्वापरक्रमव्यत्यासेन वर्तते ॥ ३ समत्ता इति पाठभेदश्चूर्णौ निर्दिष्टोऽस्ति ॥ ४ "सव्वायप्पएसेसु इत्यादौ तृतीयार्थे सप्तमी" इति नन्दिवृत्तौ श्रीमलयगिरिपादैरेतत्पाठोद्धरणे व्याख्यातमस्ति पत्र ८५-२ ॥ ५-६-११ ओहिन्नाणं डे° ल० ॥ ७-८ अगणिट्ठा° ख० स० ल० शु० ॥ ९ सर्वासु सूत्रप्रतिषु अत्र जोइट्ठाण इत्येव पाठो वर्त्तते ॥ १० एवामेव मु० ॥ १२ अगणि-पासेणं, तस्स आ० । अगणिपासणं, तस्स दा० ॥ १३ पसत्थेहिं अज्झवसाणट्ठाणेहिं ख० मो० ॥

वसाणट्ठाणेसु वट्टमाणस्स वट्टमाणचरित्तस्स विसुज्झमाणस्स विसुज्झमाणचरित्तस्स सव्वओ समता ओही वड्ढइ ।

जावतिया तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणगजीवस्स ।
ओगाहणा जहन्ना ओहीखेत्त जहन्न तु ॥ ४४ ॥

5 सव्वबहुअगणिजीवा णिरतर जत्तिय भरेज्जसु ।
खेत्त सव्वदिसाग परमोही खेत्तनिद्दिट्ठो ॥ ४५ ॥

अगुलमावलियाण भागमसखेज्ज दोसु सखेज्जा ।
अगुलमावलियतो आवलिया अगुलपुहत्तं ॥ ४६ ॥

हत्थम्मि मुहुत्ततो दिवसतो गाउयम्मि बोद्धव्वो ।
10 जोयण दिवसपुहत्त पक्खतो पणवीसाओ ॥ ४७ ॥

भरहम्मि अद्धमासो जबुद्दीवम्मि साहिओ मासो ।
वास च मणुयलोए वासपुहत्त च रुयगम्मि ॥ ४८ ॥

सखेज्जम्मि उ काले दीव-समुद्दा वि होति सखेज्जा ।
कालम्मि असखेज्जे दीव-समुद्दा उ भइयव्वा ॥ ४९ ॥

15 काले चउण्ह वुड्ढी कालो भइयव्वु खेत्तवुड्ढीए ।
वुड्ढीए दव्व-पज्जव भइयव्वा खेत्त-काला उ ॥ ५० ॥

सुहुमो य होइ कालो तत्तो सुहुमयरय हवइ खेत्त ।
अंगुलसेढीमेत्ते ओसप्पिणिओ असखेज्जा ॥ ५१ ॥

से त्त वड्ढमाणय ओहिणाणं ।

20 २३ वर्धन वड्ढी, पुव्वावत्थातो उवरुवरि वड्ढमाण ति, त च उस्सण्ण चरणगुणविसुद्धिमपेक्खेत, ततो पसत्यज्झवसाणट्ठाणा तेआदिपसत्थलेसाणुगता भवति, पसत्यदव्वलेसाहि अणुरजित चित्त पसत्यज्झवसाणो भण्णति, पसत्यज्झवसाणातो य चरणा ऽऽतविसुद्धी, चरणा ऽऽतविसुद्धीतो य चरणपच्चतलद्धीण वड्ढी भवति ।

इमाओ य जहण्णुक्कोस विमज्झिमोधिवड्ढिदसणगाहाओ जहा पेढियाए ॥ ४४–५१ ॥

---

१ सायहा सं० ॥ २ वड्ढमाण छ ॥ ३ वीस तु क० । वीसतो डे० ॥ ४ वि शु० । य मो० ॥ ५ खायय खं ॥ ६ पसत्थणतो पसत्य आ दा ॥ ७ आवश्यकनियुक्तिपीठिकायां गाथा ३०–३७ ॥

२४. से किं तं हायमाणयं ओहिणाणं? हायमाणयं ओहिणाणं अप्पसत्थेहिं[1] अज्झवसायट्ठाणेहिं वट्टमाणस्स वट्टमाणचरित्तस्स संकिलिस्समाणस्स संकिलिस्समाणचरित्तस्स सव्वओ समंता ओही[2] परिहायति । से त्तं हायमाणयं ओहिणाणं ।

२४. हाणि त्ति–ह्रस्समाणं, पुव्वावत्थातो अधोऽधो ह्रस्समाणं । तं च वड्ढमाणविपक्खतो भाणितव्वं । अप्पसत्थलेस्सोवरंजितं चित्तं अणेगासुभत्थ[3]चिंतणपरं चित्तं संकिलिट्ठं भण्णाति ॥   5

२५. से किं तं पडिवाति ओहिणाणं? पडिवाति ओहिणाणं जण्णं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्ज[4]तिभागं वा संखेज्ज[5]तिभागं वा वालग्गं वा वालग्गपुहत्तं[6] वा लिक्खं वा लिक्खपुहत्तं वा जूयं वा जूयपुहत्तं वा जवं वा जवपुहत्तं वा अंगुलं वा अंगुलपुहत्तं वा पायं वा पायपुहत्तं वा वियत्थि[7] वा वियत्थिपुहत्तं वा रयणिं वा रयणिपुहत्तं वा कुच्छिं वा कुच्छिपुहत्तं वा धणुयं[8] वा धणुयपुहत्तं वा गाउयं वा गाउयपुहत्तं वा जोयणं वा जोयणपुहत्तं वा जोयणसयं वा जोयणसयपुहत्तं वा जोयणसहस्सं वा जोयणसहस्सपुहत्तं वा जोयणसतसहस्सं[9] वा जोयणसतसहस्सपुहत्तं वा जोयणकोडिं वा जोयणकोडिपुहत्तं वा [10]→जोयणकोडाकोडिं वा जोयणकोडाकोडिपुहत्तं वा← उक्कोसेण लोगं[11] वा पासित्ता णं पडिवएज्जा । से त्तं पडिवाति ओहिणाणं ।   10

२५. उप्पण्णोहिनाणस्स पुणो पातो त्ति पडिवाती, नाशेत्यर्थः । तं च खेत्तविसेसोवलंभेणं भण्णति । ते य इमे–असंखेयंगुलभागादिया । दुप्पभिति जाव णव त्ति अंगुलपुहत्तं भण्णति । दो हत्था कुच्छी । पडिवातिणो जाव उक्कोसो लोगमेत्ते एव ॥   15

२६. से किं तं अपडिवाति ओहिणाणं? अपडिवाति ओहिणाणं जेणं अलोगस्स एगमवि आगासपदेसं[12] पासेज्जा तेण परं अपडिवाति ओहिणाणं । से त्तं अपडिवाति ओहिणाणं ।

२६. अपडिवाति त्ति, सो वि क्खेत्तविसेसोवलंभातो चेव णज्जति, अतो भण्णति अलोगस्स एगमवि त्ति । 'अवि'[13] पदत्थसंभावणे, किमुत दुपदेसादिउपलंभे? इत्यर्थः । [जे० १९४ प्र०] ॥   20

२७. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा–दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । तत्थ[14] दव्वओ णं ओहिणाणी जहण्णेणं अणंताणि रूविदव्वाइं जाणइ पासइ, उक्कोसेणं

---

१ अप्पसत्थेसुं अज्झवसायट्ठाणेसुं स० ॥ २ ओही हायति ख० स० जे० मो० ॥ ३ °गासुतत्थ° जे० ॥ ४-५ °ज्जयभा° जे० मु० ॥ ६ पुहुत्त पुहत्त पहुत्त शब्दाः सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु क्रमपरिहारेण आवृत्त्या दृश्यन्ते ॥ ७ विहत्थिं वा विहत्थि° मो० मु० ॥ ८ धणुं वा धणुपु° जे० मो० मु० ॥ ९ जोयणलक्खं वा जोयणलक्खपुहत्तं जे० मो० मु० ॥ १० →← एतच्चिह्नमध्यगत पाठः ख० स० नास्ति ॥ ११ °मेत्तप वा आ० दा० ॥ १२ स० विनाऽन्यत्र–°पदेसं पासति तेण ख० शु० । °पदेसं जाणइ पासइ तेण जे० डे० ल० मो० ॥ १३ अविपदत्थो संभा° आ० दा० ॥ १४ तत्थ इति स० स० ल० शु० नास्ति ॥

सव्वाइं रूविदव्वाइं जाणइ पासइ १। खेत्तओ णं ओहिणाणी जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं जाणइ पासइ, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं अलोए लोयमेत्ताइं खंडाइं जाणइ पासइ २। कालओ णं ओहिणाणी जहण्णेणं आवलियाए असंखेज्जतिभागं जाणइ पासइ, उक्कोसेणं असंखेज्जाओ उस्सप्पिणीओ अवसप्पिणीओ अतीतं च अणागतं
5 च कालं जाणइ पासइ ३। भावओ णं ओहिणाणी जहण्णेणं अणंते भावे जाणइ पासइ, उक्कोसेणं वि अणंते भावे जाणइ पासइ, सव्वभावाणमणंतभागं जाणइ पासइ ४।

२७ वित्थरेण खयोवसमविसेसतो असंखेज्जविधमोधिण्णाणं, ओधिमादिगतिपज्जवसाणं वा चतुद्दसविधं वित्थरो, तं पडुच्च इमं चतुविहं समासतो भण्णाति दव्वादि। दव्वओ ओधिण्णाणी जहण्णेणं तेयाभासंतरे अणंते दव्वे उवलभति, उक्कोसतो सव्वरूविदव्वाइं। जाणइ त्ति नाणं, तं च जं विसेसग्गाहगं तं णाणं, सागारमित्यर्थः।
10 पासति त्ति दंसणं, तं च जं सामण्णग्गाहगं तं दंसणं, अणागारमित्यर्थः। खेत्त-कालतो य सुत्तसिद्धं। भावतो ओधिण्णाणी जहण्णेणं अणंते भावे उवलभति, उक्कोसतो वि अणंते, जहण्णपदातो उक्कोसपदं अणंतगुणं। उक्कोसपदे वि जे भावा ते सव्वभावाणं अणंतभागे वट्टंति॥

२८ ओही भवपच्चतिओ, गुणपच्चतिओ य वंण्णिओ एसो।
तंस्स य बहू वियप्पा, दव्वे खेत्ते य काले यं॥ ५२॥

15 से त्तं ओहिंणाणं।

२८ ओधी भव० गाथा। दव्वतो बहू विगप्पा परमाणुमादिदव्वविसेसातो। खेत्ततो वि अंगुलअसंखेयभागनिरूप्पादिया। कालतो वि आवलियअसंखेज्जभागादिया। भावतो वि वण्णपज्जवादिया॥ ५२॥

मणपज्जवनाणमिदाणिं। तस्स सरूवं वण्णितमादीए [पत्रम् १३]। इदाणिं सामी विसेसिज्जइ पुच्छुत्तरेहिं—

२९ [१] से किं तं मणपज्जवणाणं? मणपज्जवणांणे णं भंते! किं मणुंस्साणं
20 उप्पंज्जइ अमणुस्साणं? गोयमा! मणुस्साणं, णो अमणुस्साणं। [२] जइ मणुस्साणं किं सम्मुच्छिममणुस्साणं गब्भवक्कंतियमणुस्साणं? गोयमा! णो सम्मुच्छिममणुस्साणं, गब्भवक्कंतियमणुस्साणं। [३] जइ गब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं कंम्मभूम-

---

१ लोयप्पमाणमेत्ताइं ख० सं० विना॥ २ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ खं० सं०॥ ३ सेणं पि अणंते खं०॥ ४ भागो ग०। चूर्णिकृता हरिभद्रपादानां चायमेव पाठः सम्मत॥ ५ ओही खेत्त परिमाणे० इत्याद्यावश्यकनियुक्ति२७-२८ गाथायुगोक्तानि चतुर्दश द्वाराण्यत्रावबोद्धव्यानि॥ ६ वण्णिओ दुविहो इति वृत्तिकृद्भ्यां निर्दिष्टः पाठभेदः॥ ७ तस्सेय स॥ ८ द्वारगाथानन्तरं सर्वेष्वपि सूत्रादर्शेषु हरिभद्रसूरिपाद मलयगिरिचरणव्याख्याता एका गाथाऽधिका उपलभ्यते—

णेरतिय देव तित्थकरा य ओहिस्सऽबाहिरा होंति। पासंति सव्वओ खलु सेसा देसेण पासंति॥

९ सम्मत्तं ओहि ग॥ १० णाणपच्चक्खं मु०॥ ११ पुच्छसुत्तेहिं आ०॥ १२ णाण भंते! जे मो०॥ १३ मणूसाणं सं०। एवमग्रेऽपि अस्मिन् सूत्र (२९) सर्वत्र ज्ञेयम्॥ १४ उप्पज्जइ इति खं० सं० नास्ति॥ १५ कम्मभूमिय मो० मु०। एवमग्रेऽपि सर्वत्र अस्मिन् सूत्र (२९) ज्ञेयम्॥

गगब्भवक्कंतियमणुस्साणं अकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं अंतरदीवगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं ? गोयमा ! कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो अकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो अंतरदीवगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं । [४] जइ कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं असंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं ? गोयमा ! संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो असंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं। [५] जइ संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं अपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं ? गोयमा ! पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो अपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं। [६] जइ पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भक्कंतियमणुस्साणं किं सम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं मिच्छदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं सम्मामिच्छदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं ? गोयमा ! सम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो मिच्छद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो सम्मामिच्छदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं । [७] जइ सम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं संजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं असंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं संजयासंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं ? गोयमा ! संजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो असंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो संजयासंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं । [८] जइ[1] संजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं पमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं अपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं ? गोयमा ! अपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो पमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयक-

१ जति खं० । जदि सं० ॥

म्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं। [९] जइ अपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं इड्ढिपत्तअपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं अणिड्ढिपत्तअपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं? गोयमा! इड्ढिपत्तअपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो अणिड्ढिपत्तअपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं मणपज्जवणाणं समुप्पज्जइ।

२९. किं मणुस्सा० इत्यादि। सम्मुच्छिममणुस्सा गब्भवक्कंतियमणुस्साणं चेव वंत पित्तादिसु संभवंति। कम्मभूमगा पंचसु भरहेसु पंचसु एरवदेसु पंचसु महाविदेहेसु य। हेमवतादिसु मिधुणा ते अकर्मभूमगा। तिण्णि जोयणसते लवणजलमोगाहित्ता चुल्लहिमवतसिहरिपादपतिट्ठिता एगूरुगादि छप्पण्णं अंतरदीवगा। किं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं? ति। पज्जत्ती णाम—सत्ती सामत्थं। सा य पुग्गलदव्वोवचया उप्पज्जति। ताओ य छ पज्जत्तीतो—आहार-सरीर इंदिय आणापाणु भासा-मणपज्जत्ती चेति। तत्थ एगिंदियाणं चउरो, विगलिंदियाणं पंच, असण्णीण सव्वहारतो पंच चेव, सण्णीणं च छ। तत्थ आहारपज्जत्ती नाम खल-रसपरिणामणसत्ती आहारपज्जत्ती। सत्तधातुतया परिणामणसत्ती सरीरपज्जत्ती। पंचण्हमिंदियाणं [जे० १९४ द्वि०] जोग्गा पोग्गले चिणित्तु अणाभोगनिव्वत्तित विरियकरणेणं तब्भावणयणसत्ती इंदियपज्जत्ती। [उस्सास]पोग्गलजोग्गाणापाणूण गहण णिसिरणसत्ती आणापाणुपज्जत्ती। वइजोग्गे पोग्गले घेत्तूण भासत्ताए परिणामेत्ता वइजोगत्ताए निसिरणसत्ती भासापज्जत्ती। मणजोग्गे पोग्गले घेत्तूण मणत्ताए परिणामेत्ता मणजोगत्ताए निसिरणसत्ती मणपज्जत्ती। एताओ पज्जत्तीओ पज्जत्तयणामकम्मोदएण णिव्वत्तिज्जंति, ता जेसिं अत्थि ते पज्जत्तया। अपज्जत्तयणामकम्मोदएण अणिव्वत्ताती जेसिं ते अपज्जत्तया। अप्पमत्तसंजता जिणकप्पिया परिहारविसुद्धिया अहालंदिया पडिमापडिवण्णगा य, एते सततोवयोगोवउत्तत्तणतो अप्पमत्ता। गच्छवासिणो पुण पमत्ता, कण्हुइ अणुवयोगसंभवातो। अहवा गच्छवासी णिग्गता य पमत्ता वि अप्पमत्ता वि भवंति परिणामवसओ। 'इड्ढिप्पत्तस्से'ति आमोसहिमादिअण्णतरइड्ढिपत्तस्स मणपज्जवनाणं उप्पज्जइ त्ति। अहवा 'ओहिनाणिणो मणपज्जवनाणं उप्पज्जति' त्ति अण्णे नियमं भणंति॥

३०. तं च दुविहं उप्पज्जइ, तं जहा—उज्जुमती य विउलमती य।

३०. रिजू मती उज्जुमई, सामण्णग्गाहिणि त्ति भणितं होति। एस मणोपज्जायविसेसो त्ति। ओसण्णं विसेसविमुहं उवलभति, णातीवबहुविसेसविसिट्ठं अत्थं उवलभइ त्ति भणितं होति, घडो णेण चिंतिओ त्ति जाणति। विपुला मती विपुलमती, बहुविसेसग्गाहिणि त्ति भणितं भवति। मणोपज्जायविसेसे जाणति, दिट्ठंतो जहा—णेण घडो चिंतितो, तं च देस-कालादिअणेगपज्जायविसेसविसिट्ठं जाणति॥ अहवा रिजु विपुलमतीणं इमं दव्वादीहिं विसेससरूवं भण्णति—

१ सामत्थता य भा॥ २ ला चिचिणित्तु अणा° भा०॥ ३ तब्भावणयण आ० दा०॥ ४ अणिड्ढिता ता जेसिं भा॥ ५ तं च दुविहं उप्पज्जइ इति ख० सं नास्ति॥ ६ उप्पज्जइ इति शु० नास्ति॥ ७ विमलमती मं॥

३१. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा–[1]दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। [2]तत्थ दव्वओ णं उज्जुमती अणंते अणंतपदेसिए खंधे जाणइ पासइ, ते चेव विउलमती [3]अब्भहियतराए जाणति पासति। खेत्तओ णं [4]उज्जुमती अहे जाव [5]इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए [6]उवरिमहेट्ठिलाइं खुड्डागपयराइं उड्ढं जाव जोतिसस्स उवरिम[7]तले तिरियं जाव अंतोमणुस्सखित्ते अड्ढाइज्जेसु दीव-[8]समुद्देसु सण्णीणं पंचेंदियाणं पज्जत्तगाणं मणोगते भावे जाणइ पासइ, तं चेव विउलमती अड्ढाइ[9]ज्जेहिं अंगुलेहिं [10]अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं [11]खेत्तं जाणति पासति। कालओ णं उज्जुमती जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं उक्कोसेणं पि पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं अतीयमणागयं [12]वा कालं जाणति पासति, तं चेव विउलमती [13]अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ। भावओ णं उज्जुमती अणंते भावे जाणइ पासइ सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ पासइ, तं चेव विउलमती [14]अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ।

३२. मणपज्जवणाणं पुण जणमणपरिचिंतियत्थपायडणं।
माणुसखेत्तणिबद्धं गुणपच्चइयं चरित्तवओ ॥ ५२ ॥
से त्तं मणपज्जवणाणं।

---

१ दव्वओ ४। दव्वओ ल० ॥ २ तत्थ इति खं० स० ल० नास्ति ॥ ३ अब्भहियतराए विउलतराए विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणति जे० डे० मो० ल० । अब्भहियतराए विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणति ग० स० । एतयोः पाठभेदयोः प्रथमः सूत्रपाठभेदः श्रीमलयगिरिपादैः स्ववृत्तावादृतोऽस्ति । द्वितीयः पुनः पाठभेदो भगवता श्रीअभयदेवसूरिणा भगवत्याअष्टमशतकद्वितीयोद्देशके मनःपर्यवज्ञानविषयकसूत्रव्याख्यानावसरे जहा नंदीए इति सूत्रनिर्दिष्टनन्दिसूत्रपाठोद्धरणे तद्व्याख्याने चादृतोऽस्ति । चूर्णि-हरिभद्रवृत्तिसम्मतस्तु सूत्रपाठः शु० आदर्श एव उपलभ्यते ॥ ४ उज्जुमती जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जभागं उक्कोसेण अहे जाव मु० । नोपलभ्यते कस्मिंश्चिदप्यादर्शेऽयं पाठः, नापि चूर्णिकृता वृत्तिकृद्भ्यां वाऽयं पाठः स्वीकृतो व्याख्यातो वा वर्तते । अपि च श्रीअभयदेवाचार्येणापि भगवत्या अष्टमशतकद्वितीयोद्देशके नन्दीपाठोद्धरणे नायं पाठ उल्लिखितो व्याख्यातो वाऽस्ति । नापि विशेषावश्यकादौ तट्टीकादिषु वा मनःपर्यवज्ञानक्षेत्रवर्णनाधिकारे जघन्योत्कृष्टस्थानचिन्ता दृश्यते ॥ ५ इमीए ल० ॥ ६ उवरिमहेट्ठिलेसु खुड्डागपयरेसु उड्ढं ग० स० । उवरिमहेट्ठिले खुड्डागपयरे उड्ढं ग० स० विना मलयगिरिवृत्तौ च ॥ ७ °तलो डे० ग० स० शु० ॥ ८ °समुद्देसु पण्णरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पण्णाए अंतरदीवगेसु सण्णीणं शु० मो० मु० । श्रीमद्भिरभयदेवाचार्यैर्भगवत्यामष्टमशतकद्वितीयोद्देशके नन्दीसूत्रपाठोद्धरणे एष एव सूत्रपाठ आदृतोऽस्ति । ॥ ९ °जेहिमंगु° मो० मु० ॥ १० अब्भहियतरं विउलतरं विसुद्धतरं वितिमिरतरं खेत्तं इति हरिभद्र-मलयगिरिवृत्तिसम्मतः सूत्रपाठः जे० मो० मु० ॥ ११ खेत्तं इति जे० स० डे० शु० नास्ति । भगवत्यामभयदेवाचार्योद्धृते नन्दीपाठेऽपि नास्ति । १२ च भगवत्या श० ८ उ० २ नन्दीपाठोद्धरणे ॥ १३ अब्भहियतरागं विउलतरागं इति पदद्वयं ग० मु० ल० नास्ति । भगवत्यामपि नन्दीपाठोद्धरणे एतत् पदद्वयं नास्ति ॥ १४ अत्र अब्भहियतरागं विउलतरागं वितिमिरतरागं इति पदत्रयं ग० मु० ल० भगवत्यां नन्दीसूत्रपाठोद्धरणे च नास्ति, केवलं विसुद्धतरागं इत्येतदेव पदं वर्तते ॥

३१-३२ सण्णिणा मणत्तेण मणिते मणोखंधे अणते अणतपदेसिए दव्वट्ठताए तग्गते य वण्णादिए भावे मणपज्जवनाणेण पच्चक्ख पेक्खमाणो जाणाति त्ति भणित। मणितमत्थं पुण पच्चक्ख ण पेक्खति, जेण मणालंबण मुत्तममुत्त वा, सो य छदुमत्थो त अणुमाणतो [जे० १९५ प्र०] पेक्खति त्ति अतो पासणता भणिता। अहवा छदुमत्थस्स एगविहखयोवसमलंभे वि विविधोपयोगसंभवो भवति, जहेत्थेव रिजु विपुलमतीणं उवयोगो, अतो
5 विसेस-सामण्णत्थेसु उवउज्जतो जाणति पासइ त्ति भणित, ण दोसो। विपुलमती पुण दव्वट्ठताए वण्णादिएहि य अधिगतर जाणतीत्यर्थः। उवरिमहेट्ठिल्लाइं खुड्डागपतराइं ति इमस्स भावणत्थं इम पण्णविज्जति-तिरियलोगस्स उड्ढाऽहअट्ठारसजोयणसइयस्स बहुमज्झे एत्थ असंखेयगुलभागमेत्ता लोगागासप्पयरा अलोगेण संवट्टिता सव्वखुड्डलतरा खुड्डागपतर त्ति भणिता, ते य सव्वतो रज्जुप्पमाणा। तेसिं जे बहुमज्झे दो खुड्डागपतरा तेसिं पि बहुमज्झे जंबुद्दीवे रतणप्पभपुढविबहुसमभूमिभागे मंदरस्स बहुमज्झे एत्थ अट्ठप्पदेसो रुयगो,-जत्तो दिसि विदि-
10 सिविभागो पवत्तो,-एत तिरियलोगमज्झं। एतातो तिरियलोगमज्झातो रज्जुप्पमाणखुड्डागप्पतरेहिंतो उवरि तिरियं असंखेयगुलभागअसंखेयगुलभागवड्ढी, उवरिहुत्तो वि अंगुलअसंखेयभागारोहो चेव, एव तिरियमुवरिं च अंगुलअसंखेयभागवड्ढीए ताव लोगवड्ढी णेतव्वा जाव उड्ढलोगमज्झं, ततो पुणो तेणेव कमेण संवट्टो कातव्वो उवरिलोगतो रज्जुपमाणो। ततो य उड्ढलोगमज्झातो उवरिं हेट्ठा य कमेण खुड्डागप्पतरा भाणितव्वा जाव जाव रज्जुप्पमाणा खुड्डागप्पतर त्ति। तिरियलोगमज्झरज्जुप्पमाणखुड्डागप्पतरेहिंतो पि हेट्ठा अंगुलअसंखेयभागवड्ढी
15 तिरियं, अहोवगाहेण वि अंगुलस्सअसंखभागो चेव, एव अहेलोगो वड्ढेतव्वो जाव अहेलोगतो सत्त रज्जूओ। सत्तरज्जूपयरेहिंतो उवरुवरिं कमेण खुड्डागप्पतरा भाणितव्वा जाव तिरियलोगमज्झरज्जुप्पमाणा खुड्डागप्पतर त्ति। एव खुड्डागपरूवणे कते इमं भण्णति-उवरिम ति-तिरियलोगमज्झातो [जे० १९५ द्वि०] अहो जाव णव जोयण सता ताव इमीए रयणप्पभपुढवीए उवरिमखुड्डागपतर त्ति भण्णति। तदहो अहेलोगे जाव अहेलोइयगामवत्तिणो ते हेट्ठिमखुड्डागप्पतर त्ति भण्णति, रिजुमती अधो ताव पश्यतीत्यर्थः। अहवा अहेलोगस्स उवरिमा खुड्डागप्पतरा
20 तिरियलोगस्स य हेट्ठिमा खुड्डागप्पतरा ते जाव पश्यतीत्यर्थः।

अण्णे भणंति—उवरिम त्ति-अधोलोगोपरिट्ठिता[१] जे ते उवरिमा। के य ते? उच्यते—सव्वतिरियलोगवत्तिणो तिरियलोगस्स वा अहो णवजोतणसतवत्तिणो ताण चेव जे हेट्ठिमा ते जाव पश्यतीत्यर्थः, इमं ण घडति, अहेलोइयगाममणपज्जवणाणसंभवपाहण्णत्तणतो[२]। उत्तं च—

इहाधोलौकिका ग्रामा न तिर्यग्लोकवर्त्तिनः। मनोगतास्त्वसौ भावान् वेत्ति तद्वर्त्तिनामपि ॥ १ ॥
25
[ ]

अड्ढातियंगुलग्गहणं उस्सेहंगुलमाणतो। कहं णज्जति? उच्यते—"उस्सेहपमाणतो मिणे देहं" [बृहत्संग्रहणी गा ३२५] ति वयणातो। अंगुलादिया य जे पमाणा ते सव्वे देहनिप्फण्णा इति, णाणविसयत्तणतो य ण[३] स्स। रिजुमतिखेत्तोवलंभप्पमाणातो विपुलमती अब्भतियतराग[४] खेत्त उवलभइ त्ति। एगदिसिं पि अब्भतियसंभवो भवति त्ति समततो जम्हा अब्भइय ति तम्हा विपुलतराग भण्णति। अहवा जहा घडो घडातो जलाधारत्तणतो अब्भतितो
30 सो पुण नियमा घडागासखेत्तेण विउलतरो भवति एव विउलमती अब्भतियतराग मणोलद्धिजीवदव्वाधारं खेत्त जाणति, त च नियमा विपुलतर इत्यर्थः। अहवा आयाम विक्खंभेण अब्भइयतराग वाहल्लेण विउलतरं खेत्तं

१ अधेलोगोपरिट्ठितो जे ज ॥ २ संभवपाहण्णत्तणतो आ० दा० हरिभद्रवृत्तौ च ॥ ३ ण दोसो। रिजु दा० मलयगिरिवृत्तौ च। ण दो सा० रिजु आ० ॥ ४ आ० दा० आदर्शयोः एतत्सूत्रचूर्णौ सर्वत्र अब्भतिय स्थाने अब्भहिय इति वर्त्तते ॥

उपलभत इत्यर्थः। अहवा दो वि पदा एगट्ठा। विसिट्ठविसुद्धिविसेसदंसगो तरसद्दो त्ति, यथा शुक्लः शुक्लतर इति। किंच-जहा पगासगदव्वविसेसातो खेत्तविसुद्धि(द्धी) विसेसेणऽक्खिज्जति तहा मणपज्जवनाण-चरणविसेसातो रिजुमणपज्जवणाणिसमी[जे० १९६ प्र०]वातो विपुलमणपज्जवणाणी विसुद्धतरागं जाणति, मणपज्जवनाणाव-रणखयोवसमुत्तमलंभत्तणतो वा वितिमिरतरागं ति भण्णति। अहवा पुव्ववद्धमणपज्जवनाणावरणखयोवसमुत्तमलंभ-त्तणतो विसुद्धं ति भणितं तस्सेवाऽऽवरणवज्झमाणस्सऽभावत्तणतो पुव्ववद्धस्स य अणुदयत्तणतो वितिमिरतरागं-ति भण्णति। अहवा दो वि एते एगट्ठिया पदा। मणपज्जवनाणस्स सेसं कंठं ॥ इदाणिं केवलनाणं भण्णाति, मण-पज्जवनाणाणंतरं सुत्तकमुद्दिट्ठत्तणतो विसुद्धिलाभुत्तमयो य केवलं भण्णति—

३३. से किं तं केवलणाणं? केवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-भवत्थकेवलणाणं च सिद्धकेवलणाणं च

३३. से किं तं केवलेत्यादि सूत्रम्। केवलनाणमभेदे वि भेदो भव-सिद्धावत्थादिएहिं अणेगधा इमो कज्जति-मणुस्सभवट्ठितस्स जं केवलनाणं तं भवत्थकेवलनाणं। चसद्दो उस्सण्णं भेददंसणे। सव्वकम्मविप्पमुक्को सिद्धो, तस्स जं णाणं तं सिद्धकेवलनाणं ॥

३४. से किं तं भवत्थकेवलणाणं? भवत्थकेवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-सजोगिभवत्थकेवलणाणं च अजोगिभवत्थकेवलनाणं च ।

३४. मणादितो जोगो, सो य जहासंभवातो, तेण सह जोगेण सजोगी, तस्स जं नाणं तं सजोगिभवत्थ-केवलणाणं। अजोगी-सव्वजोगनिरुद्धो सइलेसभावट्ठितो, तस्स जं णाणं तं अयोगिभवत्थकेवलनाणं ॥

३५. से किं तं सजोगिभवत्थकेवलणाणं? सजोगिभवत्थकेवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च, अहवा चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च। से त्तं सजोगिभवत्थकेवलणाणं ।

३६. से किं तं अजोगिभवत्थकेवलणाणं? अजोगिभवत्थकेवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-पढमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणं च अपढमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणं च, अहवा चरिमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणं च अचरिमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणं च। से त्तं अजोगिभवत्थकेवलणाणं ।

३५-३६. पढमसमयो-केवलणाणुप्पत्तिसमयो चेव, अपढमो वितियादिसमयो-जाव सजोगित्तस्स चरमसम-एत्यर्थः। अहवा एसेवऽत्थो समयविकप्पेण अण्णहा दंसिज्जति-सजोगिकालचरिमसमए चरिमो त्ति-पच्छिमो, ततो परं अयोगी भविष्यतीत्यर्थः। अचरिमो त्ति-चरिमो न भवति, चरिमस्स आदिसमयातो आरब्भ ओमत्थगं जाव पढमसमयो ताव अचरमसमया भण्णंति, एतेसु जं णाणं तं अचरमसमयभवत्थकेवलनाणं। सेसं कंठं ॥

१ 'विसुद्धिविसेसो लक्खि' आ० दा० ॥ २ 'त्तरमयो आ० दा० ॥

३७ से त किं सिद्धकेवलणाण ? सिद्धकेवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, त जहा–अणतरसिद्धकेवलणाणं च परपरसिद्धकेवलणाण च ।

३७ से किं त सिद्धकेचलनाणेत्यादि सूत्रम् । तत्थ सिद्धकेवलणाण दुविह–अणतर परपर । तत्थ अणतर णो समयतर पच, सिद्धत्वप्रथमसमयवर्तिन इत्यर्थ ॥

5 ३८ से किं त अणतरसिद्धकेवलणाण ? अणतरसिद्धकेवलणाणं पण्णरसविह पण्णत्तं, त जहा–तित्थसिद्धा १ अतित्थसिद्धा २ तित्थगरसिद्धा ३ अतित्थगरसिद्धा ४ सयबुद्धसिद्धा ५ पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ बुद्धबोहियसिद्धा ७ इत्थिलिंगसिद्धा ८ पुरिसलिंगसिद्धा ९ णपुसगलिंगसिद्धा १० सलिंगसिद्धा ११ अण्णलिंगसिद्धा १२ गिहिलिंगसिद्धा १३ एगसिद्धा १४ अणेगसिद्धा १५ । से त्त अणतरसिद्धकेवलणाण ।

10 ३८ ते पचदसविधा तित्थसिद्धाइया । 'तित्थसिद्धा' इति जे तित्थे सिद्धा ते तित्थसिद्धा, तित्थ च–चातुवण्णो समणसघो पढमादिगणधरा वा, भणित च आरिसे–"तित्थ भते ! तित्थ ? [जे० १९६ द्वि०] अरहादि तित्थ ? गोतमा ! अरहा ताव तित्थकरे, तित्थ पुण चातुवण्णो समणसघो" [भग श २० उ० ८ सू ६८२] तम्मि तित्थकालभावे उप्पण्णे ततो वा तित्थकालभावातो जे सिद्धा ते तित्थसिद्धा १ । अतित्थ–चातुवण्णसघस्स अभावो तित्थकालभावस्स वा अभावो। तम्मि अतित्थकालभावे अतित्थकालभावातो वा जे सिद्धा ते अतित्थसिद्धा। त च

15 अतित्थ तित्थतरे तित्थे वा अणुप्पण्णे जहा मरुदेविसामिणिप्पभितयो २ । रिसभादयो तित्थकरा, ते जम्हा तित्थकर णामकम्मुदयभावे ट्ठिता तित्थकरभावातो वा सिद्धा तम्हा ते तित्थकरसिद्धा ३ । अतित्थकरा सामण्णकेवलिणो गोतमादि, तम्मि अतित्थकरभावे ट्ठिता अतित्थकरभावातो वा सिद्धा अतित्थकरसिद्धा ४ । स्वयमेव बुद्धा स्वयबुद्धा, सत अप्पणिज्ज वा जाइसरणादि कारण पडुच्च बुद्धा सतबुद्धा । स्फुटतरमुच्यते–बाह्यप्रत्ययमन्तरेण ये प्रतिबुद्धास्ते स्वयबुद्धा । ते य दुविहा–तित्थगरा तित्थगरवतिरित्ता वा । इह वइरित्तेहिं अधिकारो । किंच–स्वयबुद्धस्स

20 वारसविहो त्ति उवही भवति, पुव्वाधीत से सुत भवति वा ण वा । जति से नत्थि तो लिंग नियमा गुरुसण्णिहे पडिवज्जइ, गच्छे य विहरति । अह पुव्वाधीतसुतसभवो अत्थि तो से लिंग देवता पयच्छति, गुरुसण्णिहे वा पडिवज्जति । जइ य एंगविहारविहरणजोग्गो, इच्छा व से तो एको चेव विहरति, अण्णहा गच्छे विहरतीत्यर्थं । एतम्मि भावे ट्ठिता सिद्धा एतातो वा भावातो सिद्धा सयबुद्धसिद्धा ५ । 'पत्तेयबुद्धा' पत्तेय–बाह्य वृषभादि कारणमभिसमीक्ष्य बुद्धा प्रत्येकबुद्धा । बहि प्रत्ययप्रतिबुद्धाना च पत्तेय नियमा विहारो जम्हा तम्हा य ते पत्तेयबुद्धा,

25 जहा करकंडुमादयो । किंच–पत्तेयबुद्धाण जहण्णेण दुविहो उक्कोसेण णवविधो उवही नियमा पाउरणवज्जो भवति। किंच–पत्तेयबुद्धाण पुव्वाधीत सुत णियमा भवति, जहण्णेण एकारसगा, उक्कोसेण भिण्णदसपुव्वा । लिंग च से देवता पयच्छति, लिंगवज्जितो वा भवति । जतो [जे० १९७ प्र०] भणित–"रुप्प पत्तेयबुद्धा" [आव गा ११३९] इति । एतम्मि भावे एतातो वा सिद्धा पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ । बुद्धबोधिता–जे सतबुद्धेहिं तित्थकरादिएहिं बोहिता, पत्तेयबुद्धेहिं वा कविलादिएहिं बोधिता ते बुद्धबोधिता । अहवा बुद्धबोधिएहिं बोधिता बुद्धबोधिता, एव सुहम्मा

30 दिएहिं जबुणामादयो भवति । अहवा बुद्ध इति–प्रतिबुद्धा, तेहिं प्रतिबोधिता बुद्धबोधिता, प्रभवादिभिराचार्यै ।

१ मप्पणा जे या जाइ आ० दा० ॥ २ णितमा मो० ॥ ३ एगविहारविहरणजोग्गो आ ॥ ४ विहार इत्यर्थ ॥

एतभावे ट्ठिता एतातो वा सिद्धा बुद्धबोधितसिद्धा ७ । 'सलिंगसिद्धा' दव्वलिंगं प्रति रजोहरण-मुहपोत्ति-पडिग्गह-धारणं सलिंगं, एतम्मि दव्वलिंगे ट्ठिता एतातो वा सिद्धा सलिंगसिद्धा ८। 'अण्णलिंगसिद्धा' तावस-परिव्वाय-गादिवक्कल-कासायमादिदव्वलिंगट्ठिता सिद्धा अण्णलिंगसिद्धा ९। एवं गिहिलिंगे वि–केसादिअलंकरणादिए दव्व-लिंगे ट्ठिता सिद्धा गिहिलिंगसिद्धा १० । इत्थिलिंगं ति–इत्थीए लिंगं इत्थिलिंगं, इत्थीए उवलक्खणं ति वुत्तं भवति । तं तिविहं–वेदो सरीरनिव्वत्ती णेवच्छं च, इह सरीरनिव्वत्तीए अधिकारो, ण वेद-णेवच्छेहिं । तत्थ वेदे 5 कारणं–जम्हा खीणवेदो जहण्णेणं अंतोमुहुत्तातो उक्कोसेण देसूणपुव्वकोडीतो सिज्झति, णेवच्छस्स य अणियत-त्तणतो, तम्हा ण तेहिं अहिकारो । सरीराकारणिव्वत्ती पुण णियमा वेदुदयातो णामकम्मुदयाओ य भवति तम्मि सरीरनिव्वत्तिलिंगे ठिता सिद्धा तातो वा सिद्धा इत्थिलिंगसिद्धा ११ । एवं पुरिस-णपुंसकलिंगा वि भाणितव्वा १२-१३ । एक्कसिद्ध त्ति–एकम्मि समए एक्को चेव सिद्धो १४ । अणेगसिद्ध त्ति–एकम्मि समए अणेगे सिद्धा, दुगादि जाव अट्ठसतं ति । भणितं च— 10

बत्तीसा अडयाला सट्ठी बावत्तरी य बोधव्वा । चुलसीती छण्णउती दुरहित अट्ठुत्तरसतं च ॥१॥१५।

[बृहत्स. गा. ३३३]

चोदक आह–णणु एते पण्णरस भेदा छभेदट्ठिताअण्णोण्णनिरवेक्खा ण भवंति कहं पंचदसभेद त्ति पण्णत्ता ? आचार्य आह–णणु तित्थाऽतित्थपुरिसवि[जे० १९७ द्वि०]भागुप्पण्णा-ऽणुप्पण्णकालभेदतो वा दो भेदा परोप्प-रविरुद्धा १, तहा तित्थगरणामकम्मुदयातो अभावतो य दो भेदा परोप्परविरुद्धा २, तहा लिंगादिया दव्वलिंग- 15 पडिवत्तिभेदा परोप्परविरुद्धा ३, तहा मोहुत्तरपगडिवेदभेदोदयतो त्थिमादिसरीरलिंगणिव्वत्ती परोप्परविरुद्धा ४, एगा-ऽणेगा वि एक्ककालसहचरिता-ऽचरितत्तणतो भिण्णा ५, सयंबुद्धादयो वि णाणावरणक्खओवसमविसेसपडि-बोधविसेसत्तणतो प्रतिविसिट्ठा ६, एवं तित्थादियाण अण्णोण्णालक्खणसभावट्ठिताणं पंचदस भेदा पण्णत्ता, किंच–जहा मतिणाणे गैत्यादियाण चरिमपज्जवसाणाणं अण्णोण्णाणुवेधत्तणे वि भेदो इहं पि जइ तहा तो को दोसो ?, किंच–नाणाणयाभिप्पायत्तणतो सुत्तस्स य अणेगगम-पज्जायत्तणतो अभिधाणभेदत्तणतो य पंचदसभेदकरणं ति ण 20 दोसो ॥ इदाणिं तं चेव सिद्धकेवलणाणं समतभेदतो अणेगधा विसेसिज्जति—

३९. से किं तं परंपरसिद्धकेवलणाणं ? परंपरसिद्धकेवलणाणं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा–अपढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउसमयसिद्धा जाव दससमयसिद्धा संखेज्जसमयसिद्धा असंखेज्जसमयसिद्धा अणंतसमयसिद्धा, से त्तं परंपरसिद्धकेवलणाणं । से त्तं सिद्धकेवलणाणं । 25

३९. पढमसमयसिद्धस्स जो बितियसमयसिद्धो सो परो, तस्स वि य अण्णो, एवं परंपरसिद्धकेवलनाणं भाणितव्वं । तं च 'अपढमसमय' इत्यादि । नास्य प्रथमः समयो विद्यत इत्यप्रथमः, द्वितीयसमयसिद्ध इत्यर्थः, स च परंपरसिद्धविसेसणस्स प्रथमः, तस्स परतो बितियादिसमया भाणितव्वा ॥

---

१ भेदा विभेदं आ० दा० । अत्रेदमवधेयम्–श्रीमद्भिर्हरिभद्रपादैः मलयगिरिचरणैश्च स्वस्ववृत्तौ तीर्थसिद्धा-ऽतीर्थसिद्धरूपमे-दद्वयान्तः पञ्चदशभेदान्तर्भाव सद्भल्प्यैव चालना-प्रत्यवस्थाने उपन्यस्ते स्तः तदनुसारी पाठभेदोऽपि चूर्ण्यादर्शेषु दृश्यते । किञ्च–चूर्णी-सत्कप्राचीनतमे आदर्शे षड्भेदान्तः पञ्चदशभेदान्तर्भावावेदकः छब्भेदट्ठिता० इत्यादि पाठो वरीवृत्यते, आचार्यप्रतिविधानमपि षड्विभागा-वेदकमेव विद्यते इत्यस्माभिः छब्भेदट्ठिता० इति पाठ एव मूले आदृतोऽस्ति । अत्रार्थे तद्विद एव प्रमाणमिति ॥ २ गत्यादिकाना चरमपर्यवसानानाम् "गइ इंदिए य०" तथा "भासग परित्त०" इति आवश्यकनिर्युक्तिगाथा १४–१५ निर्दिष्टाना द्वाराणाम् इत्यर्थः ॥ ३ णुवेम्खंताण वि आ० दा० ॥ ४-५-६-७ सिद्धकेवलणाणं ल० ॥ ८ समयो तम्मि सिद्धो आ० दा०॥

४० तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा–दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। तत्थ दव्वओ णं केवलणाणी सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ। खेत्तओ णं केवलणाणी सव्वं खेत्तं जाणइ पासइ। कालओ णं केवलणाणी सव्वं कालं जाणइ पासइ। भावओ णं केवलणाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ।

५ ४०. तं सव्वं पि चतुव्विहं दव्वादियं। 'सव्वदव्व' त्ति धम्मा ऽधम्मा ऽऽगासादयो, तेहिंतो जीवदव्वा अणंतगुणा, तेहिंतो वि पुग्गलदव्वा अणंतगुणा, एते सव्वे सरूवतो जाणति। खेत्तं पि लोगा ऽलोगभेदभिण्णमणंतं सरूवतो जाणति। कालं पि समया ऽऽवलियादियं तीयमणागतसव्वद्धं वा सरूवतो सव्वं जाणति। भावा वि दुविधा भावा–जीवभावा अजीवभावा य। तत्थ जीवभावा कम्मुदयसततत्तपरिणामितलक्खणा गति-कसायादिया कम्मुदयलक्खणा अणेगविधा, उवसम[जे० १९८ प्र०]-खय-खयोवसमजीवसतचलक्खणा अणेगविहा, १० पारिणामिता य जीव भव्वा ऽभव्वत्तादिया, अजीवाऽमुत्तदव्वेसु धम्मा ऽधम्मा ऽऽगासा गति ठिति-अवगाहलक्खणा, अगुरुलहुगा य अणंता, पुग्गलदव्वा य सुहुम-बादर विस्ससापरिणता अब्भिदधणुमादिया अणेगविधा। परमाणुमादीण य वण्णादिपज्जवा एगादिया अणंता। एते दव्वादिया सव्वे सव्वधा सव्वत्थ सव्वकालं उवयुत्तो सागारा ऽणागारलक्खणेहिं णाण-दसणेहिं जाणति पासति य। एत्थ केवलणाण-दसणोवयोगेहिं बहुधा समयसब्भावं आयबुद्धीए पकप्पेंता इमं भणंति–

१५ केयी भणंति जुगवं जाणइ पासति य केवली णियमा।
अण्णे एगंतरियं इच्छंति सुतोवदेसेणं ॥ १ ॥
अण्णे ण चेव वीसुं दसणमिच्छंति जिणवरिंदस्स।
जं चिय केवलनाणं तं चिय से दसणं बेंति ॥ २ ॥ [विशेषण गा १५३ ५४]

तत्थ जे ते भणंति 'जुगवं जाणति पासति य' ते इमं उववत्तिं उवदिसति–

२० जं केवलाइं सादी-अपज्जवसिताइं दो वि भणिताइं।
तो बेंति केइ जुगवं जाणति पासति य सव्वण्णू ॥ ३ ॥

किंच–

इहराऽऽयी णिहणत्तं मिच्छाऽऽवरणक्खयो त्ति व जिणस्स।
इतरेतरावरणया अहवा णिक्कारणावरणं ॥ ४ ॥
२५ तह य असव्वण्णुत्तं असव्वदरिसित्तणप्पसंगो य।
एगंतरोवयोगे जिणस्स दोसा बहुविधीता ॥ ५ ॥ [विशेषण गा १९३ १९५]

एवं परेण बहुधा भणिते आगमवादी उत्तरं इमं आह–

भण्णति, भिण्णमुहुत्तोवयोगकाले वि तो तिनाणिस्स।
मिच्छा छावट्ठी सागरोवमाइं खयोवसमो ॥ ६ ॥ [विशेषण गा २०२]

---

१ दव्वमो ४। दव्वमो ख०॥ २ तत्थ इति म सं० ख० शु० नास्ति॥ ३ ब्वातिं आ' शु०॥ ४ सव्वभावे चं०॥ ५ पु दुमणुगादीण आ० दा०॥

जहा छउमत्थस्स मति-सुता-ऽवधिणाणेसु अंतमुहुत्तकालोवयोगसंभवे उवयोगा-ऽणुवय-
से ठितिकालो दिट्ठो, तहा जति जिणस्स णाण-दंसणा सादिअपज्जवसाणा उवयोगा-ऽणुव-
दोसो ? । जति एतं ते णाणुमतं ता इमं ते कहं अणुमतं भविस्सइ ?—

अह ण वि एतं तो सुण, जहेव खीणंतराइओ अरहा ।
संते वि अंतरायक्खयम्मि पंचप्पगारम्मि ॥ ७ ॥

सततं ण देइ [जं० ११८ द्वि०] लभइ व भुंजइ उवभुंजई य म-
कज्जम्मि देइ लभइ व भुंजइ व तहेव इहयं पि ॥ ८ ॥

किंच—

दिंतस्स लभंतस्स व भुंजंतस्स व जिणस्स एस गुणो ।
खीणंतराइयत्ते जं से विग्घं ण संभवति ॥ ९ ॥

उवउत्तस्सेमेव य णाणम्मि व दंसणम्मि व जिणस्स ।
खीणावरणगुणोऽयं, जं कसिणं मुणइ पासति वा ॥ १० ॥

पुणो पर आह—

पासंतो वि न जाणइ, जाणं व ण पासती जति जिणिंदो ।
एवं ण कदाइ वि सो सव्वण्णू सव्वदरिसी य ॥ ११ ॥

उत्तरं आचार्य आह—

जुगवमजाणंतो वि हु चतुर्हि वि नाणेहिं जह चतुण्णाणी ।
भण्णइ, तहेव अरहा सव्वण्णू सव्वदरिसी य ॥ १२ ॥

पर एवाऽऽह—

तुल्ले उभयावरणक्खयम्मि पुव्वयरसमुब्भवो कस्स ।
दुविधुवयोगाभावे जिणस्स जुगवं ? ति चोदेति ॥ १३ ॥

उत्तरं आचार्य आह—

भण्णति, ण एस नियमो जुगवुप्पण्णेसु जुगवमेवेह ।
होयव्वं उवओगेण, एत्थ सुण ताव दिट्ठंतं ॥ १४ ॥

जह जुगवुप्पत्तीय वि सुत्ते सम्मत्त-मति-सुतादीणं ।
णत्थि जुगवोवयोगो सव्वेसु तहेव केवलिणो ॥ १५ ॥

किंच—

भणितं पि य पण्णत्ती-पण्णवणादीसु जह जिणो समयं ।
जं जाणती ण पासति तं अणुरतणप्पभादीणि ॥ १६ ॥ [

१ पुव्वं समुब्भवो आ० दा० ॥

जे भणंति केवलणाणं दंसणाणं एगत्तं ते इमं हेतुजुत्तिं भणंति—

जह किर खीणावरणे देसण्णाणाण संभवो ण जिणे।
उभयावरणातीते तह केवलदंसणस्साविं ॥ १७ ॥

एस ते हेतुजुत्ती जहा अत्थसाधणं ण संसहइ तहा उत्तर(र) हेतुजुत्तीए चेव भण्णति—

5 देसण्णाणोवरमे जह केवलनाणसंभवो भणितो।
देसद्दंसणविगमे तह केवलदंसणं होतु ॥ १८ ॥

अह देसनाण-दंसणविगमे तव केवलं मतं नाणं।
ण मतं केवलदंसणमिच्छामेत्तं णणु तवेदं ॥ १९ ॥ [विशेषण गा १५५-५७]

किंच—

10 भण्णति जहोहिणाणी जाणति पासति य भासितं सुत्ते।
ण य णाम ओहिदंसणं नाणेगत्तं तह इमं पि ॥ २० ॥ [विशेषण गा १७८]

एवं पराभिप्पाये पडिसिद्धे एगतरोवयोगता सिद्धा तह विमं भण्णति—

जह पासतु तह पासतु, पासति सो जेण दंसणं तं से।
जाणइ य जेण अरहा तं से णाणं ति घेत्तव्वं ॥ २१ ॥ [विशेषण गा १९२]

15 किंच-सिद्धऽधिकारे एगंतरो[जे० १९९ प्र०]वयोगदंसिगा इमा फुडा गाहा—

नाणम्मि दंसणम्मि य एत्तो एगतरयम्मि उवउत्ता।
सव्वस्स केवलिस्सा जुगवं दो णत्थि उवयोगा ॥ २२ ॥ [विशेषण गा २२९]

किंच भगवतीए—

उवयोगो एगतरो पणुवीसतिमे सते सिणायस्स।
20 भणितो वियडत्थो चिय छट्ठुद्देसे विसेसेतुं ॥ २३ ॥ [विशेषण गा २३२]

किंच—

कस्स व णाणुमतमिणं जिणस्स जति होज्ज दो वि उवयोगा।
णूणं ण होंति जुगवं जतो णिसिद्धा सुते बहुसो ॥ २४ ॥ [विशेषण गा २४६]

४१ अह सव्वदव्वपरिणामभावविण्णत्तिकारणमणंतं।
२० सासयमप्पडिवाती एगविहं केवलं णाणं ॥ ५४ ॥
केवलणाणेणऽत्थे णाउं जे तत्थ पण्णवणजोग्गे।
ते भासइ तित्थयरो, वइजोग तयं हवइ सेसं ॥ ५५ ॥
से त्तं केवलणाणं। से[2] त्तं पच्चक्खणाणं।

---

१ वइजोग सुयं हवइ तेसिं इत्ययं पाठः वृत्तिकृद्भ्यां पाठान्तरत्वेन निर्दिष्टोऽस्ति। तथाहि- अन्ये त्वेवं पठन्ति-'वइजोग सुयं हवइ तेसिं' स वाग्योगः श्रुतं भवति तेषां श्रोतॄणाम्। इति हारि० वृत्तौ। 'अन्ये त्वेवं पठन्ति-'वइजोग सुयं हवइ तेसिं' तत्रायमर्थः-तेषां श्रोतॄणां भावश्रुतकारणत्वात् स वाग्योगः श्रुतं भवति, श्रुतमिति व्यवह्रियते इत्यर्थः।" इति मलयगिरयः॥ २ भवे मु०॥ ३ अत्र चूर्णि-वृत्तिकृतां से त्तं पच्चक्ख इत्येव पाठः सम्मतः। नोपलब्धोऽयं कस्मिंश्चिदपि प्रतौ॥

४१. अह सव्वदव्व० गाहा । केवलनाणेण० गाहा । एताओ जहा पेढियाए ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ सेसं कंठं ॥ इदाणिं कमागतं बहुवत्तव्वं पारोक्खं भण्णति—

४२. से[1] किं तं परोक्खणाणं ? परोक्खणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—आभिणिबोहियणाणपरोक्खं च सुयणाणपरोक्खं च ।

४२. अक्खस्स इंदिय-मणा परा, तेसु जं णाणं तं परोक्खं । मति-श्रुते परोक्षमात्मनः, परनिमित्तत्वात्, अनुमानवत् । णणु सुत्ते इंदियपच्चक्खं भणितं ? उच्यते—सच्चमिणं, एत्थं जं इंदिय-मणेहिं बहिलिंगपच्चयमुप्पज्जति तमेगंतेणेव इंदियाण अत्तणो य परोक्खं, अणुमाणत्तणतो, धूमाओ अग्गिणाणं व । जं पुण सक्खा इंदिय-मणोनिमित्तं तं तेसिं चेव पच्चक्खं, अलिंगत्तणतो, अत्तणो अवधिमादि व्व, अत्तणो तु तं एगंतेणेव परोक्खं । इंदियाणं पि तं संववहारतो पच्चक्खं, ण परमत्थतो । कम्हा ? जम्हा दव्विंदिया अचेतणा इति । तं दुविहं—मतिणाणं सुतनाणं च । इह मति-सुताणमुवण्णासकमे कारणं पुव्वुत्तं दट्ठव्वं ॥ मति-सुताण य अभेदसामिणिरूवणत्थं इमं सुत्तं—

४३. जत्था[2]ऽऽभिणिबोहियणाणं तत्थ सुयणाणं, जत्थ सुयणाणं तत्था[3]ऽऽभिणिबोहियणाणं । दो वि एयाइं अण्णमण्णमणुगयाइं तह वि पुण एत्था[4]ऽऽयरिया णाणत्तं पण्णवेंति[5]— अभिणिबुज्झइ[6] त्ति आभिणिबोहियं[7], सुणतीति[8] सुतं ।

"मतिपुव्वयं[9] सुयं, ण मती सुयपुव्विया ।"

४३. जत्थ मतिनाणेत्यादि । 'जत्थ' त्ति पुरिसे जत्थ व इंदिय-नोइंदियखयोवसमे मतिणाणमत्थि तत्थेव सुतनाणं पि । अहवा जत्थाभिनिबोधियसरूवं तत्थेव सुतं पि नियमा, अण्णोण्णाणुगता भवंतेते । आह— मति-सुताणं अण्णोण्णाणुगतत्तणतो सामि-काल-कारण[जे० १९९ द्वि०]-खयोवसमतुल्लत्तणतो य एगत्तं पावति, णो दुगपरिकप्पणं ति, अत्रोच्यते, मति-सुताणं अण्णोण्णाणुगताण वि आयरिया भेदमाह दिट्ठंतसामत्थतो, जहा आगासपइट्ठिताणं धम्मा-ऽधम्माण अण्णोण्णाणुगताणं लक्खणभेदा भेदो दिट्ठो तहा मति-सुताण वि सामि-कालादिअभेदे वि भेदो भण्णति— अभिणिबुज्झतीत्यादि । एवं लक्खणा-ऽभिधाणभेदा[10] भेदो तेसिं । अहवा इमो मति-सुतविसेसो—"मतिपुव्वयं सुतं, ण मती सुतपुव्विया" इति, जतो सुतस्स मतिरेव पुव्वं कारणं । कहं ? उच्यते—मतीए सुतं पाविज्जति, ण मतिमंतरेण प्रापयितुं शक्यते, गहितं च मतीए पालिज्जति, परिवत्तयतो णो पणस्सइ त्ति[11] जतो, मतिरेवं सुतपुव्वा ण भवति । णणु सुतं पि सोतुं मती भवति ? उच्यते—तं दव्वसुतं, न भावश्रुतादित्यर्थः । अहवा मति-सुताण भेदकतो विसेसो, मतिणाणं अट्ठावीसइभेदभिण्णं, सुतणाणं पुण अंगा-ऽ-

१ चूर्णि-वृत्तिकृता **से किं तं परोक्खं ? परोक्ख दुविहं** इति पाठोऽत्र सम्मत, परोक्षज्ञानोपसहारेऽपि त' **से त्तं परोक्खं** इत्येव पाठ स्वीकृतोऽस्ति किन्तु सर्वेष्वपि सूत्रादर्शेषु उभयत्रापि **परोक्खणाणं** इत्येव पाठ उपलभ्यते ॥ २ चूर्णि-वृत्तिकृद्भि किल **जत्थ मतिनाणं तत्थ सुतनाणं, जत्थ सुतनाणं तत्थ मतिनाणं** इतिरूप सूत्र मौलभावेनाङ्गीकृतमस्ति । किञ्च-श्रीचूर्णिकृदादिभि मौलभावेनाङ्गीकृतमेतद् **जत्थ मतिनाणं** इत्यादि सूत्र साम्प्रतीनप्रत्यादर्शेषु नोपलभ्यते ।' अपि च चूर्ण्यवलोकनेनेतदपि ज्ञायते यत् चूर्णिकृत्समयभाविप्रत्यादर्शेषु पाठभेदयुगलमप्यासीदिति ॥ ३ तत्थ आभि॰ ख॰ स॰ ॥ ४ इत्थ आय॰ मो॰ मु॰ ॥ ५ पण्णवेंति शु॰ । पण्णवेंति डे॰ ल॰ । पण्णवयंति मो॰ मु॰ ॥ ६ अभिणिबोज्झतीति ख॰ । अभिणिबुज्झतीति स॰ शु॰ । अभिणिबुज्झइंइ ल॰ ॥ ७ °हियं णाणं, सु° ख॰ ल॰ विना ॥ ८ सुणेइ त्ति मो॰ मु॰ ॥ ९ °पुव्वं जेण सुयं ख॰ डे॰ । चूर्णौ वृत्त्योश्च जेण इति पदं नास्ति । पुव्वं सुयं ख॰ डे॰ विना ॥ १० °ण-विधाण° दा॰ ॥ ११ त्ति, जतो मतिमेव सुतं पव्वण्णो भवति आ॰ ॥

णगाइभेदभिण्णं अणेगहा। अहवा मति-सुताणं इंदियोवलद्धिविभागतो भेदो इमो–सोतिंदियोवलद्धी० गाहा [विशेषा गा १२२] पूर्ववद् व्याख्येया। अहवा मति-सुतभेदं भणति—बुद्धीदिट्ठे० गाहा। [विशेषा गा १२८] एतीए गाहाए अत्थो मति-सुतविसेसो य जहा विसेसावस्सगे तहा भाणितव्वो। अण्णे वागसमं मतिणाणं सुवसमं च सुतणाणं भणंति तं च ण घडति, जम्हा वाग-सुवदिट्ठतेण मइनाणस्सेव सुतं परिणामो दसिज्जति, तम्हा तं ण 5 जुज्जते इत्यर्थः। अहवऽण्णो मतिसुतभेदो—अक्खराणुगतं सुतं, अणक्खरं मतिनाणं ति। अहवाऽऽत्मप्रत्यायकं मतिणाणं, स्व-परप्रत्यायकं सुतनाणं। अहवा मति सुताणं आवरणभेदातो [जे० २०० प्र०] भेदो दिट्ठो। तक्खतोवसमविसेसातो चेव मति-सुताणं भेदो भवति॥ भणितो मति-सुतविसेसो। इदाणिं जहा मति सुतणाणाणं कज्ज कारणभेदेहिं भेदो दिट्ठो तहा मतीए सुतस्स य सम्म मिच्छविसेसो दसणपरिग्गहातो भवइ त्ति अतो सुत्तं भणति—

४४ अविसेसिया मती मतिणाणं च मतिअण्णाणं च। विसेसियाँ मती सम्मद्दिट्ठिस्स 10 मती मतिणाणं, मिच्छादिट्ठिस्स मती मतिअण्णाणं। अविसेसियं सुयं सुयणाणं च सुयअण्णाणं च। विसेसियं सुयं सम्मद्दिट्ठिस्स सुयं सुयणाणं, मिच्छद्दिट्ठिस्स सुयं सुयअण्णाणं।

४४ अविसेसिता मतीत्यादि। सामिणा अविसेसिता मती इमं वत्तव्वा–आभिणिबोधिकेत्यादि। चसद्दो समुच्चये। विसेसिता मतीत्यादि। जता पुण इमेण सामिणा विसेसिता मती भवति तदा इमं वत्तव्वा–सम्मद्दिट्ठिस्स मतीत्यादि सूत्रसिद्धं। अविसेसितं सुतमित्यादि एतं पि उवउज्जिउं एवं चेव वत्तव्वं। अहवा जाव 15 विसेसणेण अविसेसिता मती ताव मती चेव वत्तव्वा। सच्चेव मती णाणऽण्णाणसद्दविसेसणातो इमं वत्तव्वा–आभिनिबोधिकत्यादि सूत्रसिद्धं। णाणऽण्णाणसद्दविसेसणं कहं? भणति–सम्मत्त मिच्छसामिगुणत्तणतो सम्मदिट्ठिस्स मतीत्यादि सुत्तसिद्धं। सुते वि एवं चेव वत्तव्वं। पर आह–तुल्लखयोवसमत्तणतो घडाइवत्थूण य सम्मपरिच्छेदत्तणतो सद्दादिविसयाण य समुवलभातो कहं मिच्छद्दिट्ठिस्स मति-सुता अण्णाणं ति भणिता? उच्यते—

सदसदविसेसणातो भवहेतु जतिच्छितोवलभातो। नाणफलाभावातो मिच्छद्दिट्ठिस्स अण्णाणं॥१॥

20 मतिपुव्वं सुतं ति कातुं मतिणाणं चेव पुव्वं भणामि—

४५ से किं तं आभिणिबोहियणाणं? आभिणिबोहियणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा–सुयणिस्सियं च असुयणिस्सियं च।

४५ से किं तं आभिनिबोधिकेत्यादि सुत्तं। तत्थ 'सुतनिस्सितं' ति सुतं ति–सुत्तं, तं च सामादियादि बिंदुसारपज्जवसाणं। एतं दव्वसुतं गहितं। तं अणुसरतो जं मतिणाणमुप्पज्जति तं सुतणिस्साए उप्पण्णं ति सुतातो 25 वा णिस्सतं तं सुतणिस्सितं भण्णति। तं च उग्गहेहाऽवाय धारणाठितं चतुब्भेदं। 'असुतनिस्सितं च' त्ति जं पुण दव्वभावसुतणिरवेक्खं आभिणिबोधिकमुप्पज्जति तं असुयभावातो समुप्पण्णं ति असुतनिस्सितं भण्णति। तं च उप्पत्तियादिबुद्धिचउक्कं॥ इमं—

१ जम्हा ने दा०॥ २ विसेसदसणं आ दा०॥ ३ अयं मूले स्थापितः सूत्रपाठः सं० मो० विशेषावश्यकमलधारीयवृत्ती १९५ पत्र नन्दीसूत्रपाठोद्धरणे उपलभ्यते। श्रीहरिभद्रसूरिणापि स्ववृत्तावयमेव सूत्रपाठो व्याख्यातोऽस्ति। विसेसिया सम्मद्दिट्ठिस्स मती मतिणाणं मिच्छादिट्ठिस्स मती मतिअण्णाणं। एवं अविसेसियं सुयं सुयणाणं च सुयअण्णाणं च। विसेसियं सम्मद्दिट्ठिस्स सुयं सुयणाणं मिच्छद्दिट्ठिस्स सुयं सुयअण्णाणं। जे० डे० ल० शु०। अयमेव सूत्रपाठः श्रीमता मलयगिरिणा टीकायां व्याख्यातोऽप्यस्ति। विसेसिया मती सम्मद्दिट्ठिस्स मतिणाणं मिच्छद्दिट्ठिस्स मतिअण्णाणं। अविसेसियं सुयं सुयणाणं सुयअण्णाणं च। विसेसियं सुयं सम्मद्दिट्ठिस्स सुयणाणं, मिच्छद्दिट्ठिस्स सुयअण्णाणं। पु०॥

४६. से किं तं असुयणिस्सियं ? असुयणिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा—

उप्पत्तिया १ वेणइया[1] २ कम्मया ३ पारिणामिया ४ ।
बुद्धी चउव्विहा वुत्ता पंचमा नोवलब्भइ ॥ ५६ ॥
पुव्वं अदिट्ठमसुयमवेइयतक्खणविसुद्धगहियत्था ।
अव्वाहयफलजोगा बुद्धी उप्पत्तिया णाम ॥ ५७ ॥

[2]भरहसिल १ पणिय २ रुक्खे ३ खुड्डग[3] ४ पड ५ सरड ६ काय ७ उच्चारे ८ ।
गय ९ घयण १० गोल ११ खंभे १२
खुड्डग १३ मग्गि १४ त्थि १५ पति[4] १६ पुत्ते १७ ॥ ५८ ॥
भरह सिल १ मिंढ २ कुक्कुड[5] ३ वालुय ४ हत्थी ५ [य] अगड ६ वणसंडे ७ ।
पायस[6] ८ अइया ९ पत्ते १० खाडहिला ११ पंच पियरो १२ य ॥ ५९ ॥
महुसित्थ १८ मुद्दि १९ यंके २०[7] य णाणए २१ भिक्खु २२ चेडगणिहाणे २३ ।
सिक्खा २४ य अत्थसत्थे २५ इच्छा य महं २६ सतसहस्से २७ ॥ ६० ॥ १ ।

भरणित्थरणसमत्था तिवग्गसुत्तत्थगहियपेयाला ।
उभयोलोगफलवती विणयसमुत्था हवति बुद्धी ॥ ६१ ॥

णिमित्ते १ अत्थसत्थे २ य लेहे ३ गणिए ४ य कूव ५ अस्से[8] ६ य ।
गद्दभ ७ लक्खण ८ गंठी ९ अगए[9] १० रहिए य गणिया य ११ ॥ ६२ ॥
सीया साडी दीहं च तणं अवसव्वयं च कुंचस्स १२ ।
निव्वोदए[10] १३ य गोणे घोडग पडणं च रुक्खाओ १४ ॥ ६३ ॥ २ ।

उवओगदिट्ठसारा कम्मपसंगपरिघोलणविसाला ।
साहुक्कारफलवती कम्मसमुत्था हवति बुद्धी ॥ ६४ ॥

हेरण्णिए १ करिसए २ कोलिय ३ डोए[11] ४ य मुत्ति ५ घय ६ पवए ७ ।
तुण्णाग ८ वड्डती ९ पूतिए १० य घड ११ चित्तकारे १२ य ॥ ६५ ॥ ३ ।

---

१ वेणयिया सं० शु० । वेणतिया सं० ॥ २ ५८-५९ गाथे सं० शु० डे० ल० प्रतिषु पूर्वापरव्यत्यासेन वर्तेते ॥ ३ गंडग सं० ॥ ४ पय ल० ॥ ५ कुक्कड ३ तिल ४ वालुय ५ हत्थि ६ अगड ७ इतिरूपः सूत्रपाठः सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषूपलभ्यते । आवश्यकनिर्युक्त्यादावपीत्थम्भूत एव पाठ उपलभ्यते, तथा च तत्र सर्वैरपि चूर्णि-वृत्तिकृद्भिः व्याख्यातोऽस्ति । किञ्चात्र एतत्सूत्रचूर्ण्यादिव्याख्यानाद् मलयगिरिपादवृत्त्यनुसारी पाठो मूले आदृतोऽस्ति ॥ ६ पायस ८ पत्ते ९ अइया १० इति पाठानुसारेण मलयगिरिणा व्याख्यानमस्ति, न चोपलभ्यतेऽयं पाठः सूत्रादर्शे ॥ ७ २० पणए २१ भिक्खू २२ य चेडग° प्रत्यन्तरे ॥ ८ आसे सं० ॥ ९ अगए १० गणिया य रहिए य ११ सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु । आवश्यकनिर्युक्त्यादौ तद्वृत्त्यादौ च मूलगत एव पाठ उपलभ्यते ॥ १० निव्वोदएण १३ गोणे शु० ॥ ११ डोवे मो० सं० ॥

अणुमाण हेउ दिट्ठतसाहिया वयविवागपरिणामा ।
हिय णीसेसंफलवती बुद्धी परिणामिया णाम ॥ ६६ ॥
अभए १ सेट्ठि २ कुमारे ३ देवी (?वे) ४ उदिओदए हवति राया ५ ।
साहू य णदिसेणे ६ धणदत्ते ७ साव(?वि)ग ८ अमच्चे ९ ॥ ६७ ॥
5 खंमए १० अमच्चपुत्ते ११ चाणक्के १२ चेव थूलभद्दे १३ य ।
णासिक्कसुदरीनदे १४ वइरे १५ परिणामिया बुद्धी ॥ ६८ ॥
चलणाहण १६ आमडे १७ मणी १८ य सप्पे १९ य खग्गि २० थूभिं २१ दे २२ ।
परिणामियबुद्धीए एवमादी उदाहरणा ॥ ६९ ॥ ४ ।

से त्त असुयनिस्सिय ।

10 ४६ पुव्व० गाहा । [भरहसिल० गाहा] । भरह० गाहा । मधु० गाहा ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ उप्पत्तिया गता १ । इमा वेणतिया—

भरणि० गाहा । निमित्ते० गाहा । सीता० गाहा ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ विण[जे० २०० द्वि०]यस मुत्या गता २ । इमा कम्मइया—

उवओग० गाहा । हेरण्णि० गाहा ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ कम्मइया गता ३ । इमा पारिणामिया—

15 अणु० गाहा । अभए० गाहा । खमए० गाहा । चलणा० गाहा । एताओ सव्वाओ जहा णमोकारे (आव० नि० गा० ९३८–५१) तहा दट्ठव्वाओ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ४ । इदाणिं सुतणिस्सित उग्गहाइय सवित्थर भण्णति—

४७ से किं त सुयणिस्सिय मतिणाण ? सुयणिस्सिय मतिणाण चउव्विह पण्णत्त, त जहा—उग्गहे १ ईहा २ अवाए ३ धारणा ४ ।

४७ इह सामण्णस्स रूवादिअत्थस्स य विसेसनिरवेक्खस्स अणिद्देसस्स अवग्रहणमवग्रह• । तस्सेवऽत्थस्स 20 विचारणंविसेसण्णेसणमीहा । तस्स विसेसणविसिट्ठस्सऽत्थस्स व्यवसातोऽवाय , तव्विसेसावगतमित्यर्थ । तव्वि सेसावगतऽत्थस्स धरण–अविच्चुती धारणा इत्यथ ॥ तत्थ—

४८ से किं त उग्गहे ? उग्गहे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—अत्थोग्गहे य वजणोग्गहे य ।

४८ ओग्गहो दुविहो—अत्थोग्गहो वजणओग्गहो य ॥ एत्थ वजणोग्गहस्स पच्छाणुपुव्वितो 'अत्थोग्गहातो वा पुव्व वजणओग्गहो भवइ' त्ति वजणोग्गहमेव पुव्व भणामि—

---

१ "धिवक्कपरि ख स हे ल सु ॥ २ णिस्सेस सु मो मु ॥ ३ खवगे मो ॥ ४ णामबुद्धीए ल मु ॥ ५ रूवादिअसेसविसेसनिर आ दा । श्रीमलयगिरिपादस्तु आवश्यकवृत्तौ नन्दिवृत्तौ चाय चूर्णिपाठ एवरूप उद्धृतोऽस्ति— यदाह चूर्णिकृत्— सामन्नस्स रूवादिविसेसणरहियस्स अनिद्देसस्स अवग्गहणमवग्गह इति । [आव० टीका पत्र २१–२ नन्दिवृत्ति पत्र १६८–१] ॥ ६ णविसेसेणेहणमीहा आ दा० ॥ ७ स्स अवसातो आ दा ॥ ८ गम इत्यर्थ । तव्विसेसावगमस्स धरण आ० दा ॥

४९. से किं तं वंजणोग्गहे? वंजणोग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—सोतिंदियवंजणोग्गहे १ घाणेंदियवंजणोग्गहे २ जिब्भिदियवंजणोग्गहे ३ फासेंदियवंजणोग्गहे ४। से त्तं वंजणोग्गहे।

४९. वंजणाणं अवग्गहो वंजणावग्गहो, एत्थ वंजणग्गहणेण सद्दाइपरिणता दव्वा घेत्तव्वा। वंजणे अवग्गहो वंजणावग्गहो, एत्थ वंजणग्गहणेण दव्विंदियं घेत्तव्वं। एतेसिं दोण्ह वि समासाणं इमो अत्थो—जेण करणभूतेण अत्थो वंजिज्जइ तं वंजणं, जहा पदीवेण घडो। एवं सद्दादिपरिणतेहिं दव्वेहिं उवकरणिंदियपत्तेहिं चित्तेहिं संबद्धेहिं संपसत्तेहिं जम्हा अत्थो वंजिज्जइ त्ति तम्हा ते दव्वा वंजणावग्गहो भण्णति। एस वंजणावग्गहो सुत्तसिद्धो चतुव्विहो॥ 5

५०. [१] से किं तं अत्थोग्गहे? अत्थोग्गहे छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियअत्थोग्गहे १ चक्खिंदियअत्थोग्गहे २ घाणिंदियअत्थोग्गहे ३ जिब्भिदियअत्थोग्गहे ४ फासिंदियअत्थोग्गहे ५ णोइंदियअत्थोग्गहे ६। [२] तस्स णं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच णामधेया भवंति, तं जहा—ओगिण्हणया १ उवधारणया २ सवणता ३ अवलंबणता ४ मेहा ५। से त्तं उग्गहे। 10

५०. [१] से किं तं अत्थोग्गहेत्यादि सूत्रम्। अत्थस्स ओग्गहो अत्थोग्गहो। सो य वंजणावग्गहातो चरिमसमयाणंतरं एक्कसमयं अविसिट्ठिंदियविसयं गेण्हतो अत्थावग्गहो भवति। चक्खिंदियस्स मणसो य वंजणाभावे पढमं चेव जं अविसिट्ठमत्थग्गहणं कालयो एगसमयं सो अत्थोग्गहो भाणितव्वो। सव्वो वेस विभागेण छव्विहो दंसिज्जति, ण पुण तस्सोग्गहस्स काले सद्दादिविसेसबुद्धी अत्थि। णोइंदियो त्ति—मणो। सो य दव्वमणो भावमणो य। तत्थ मणपज्जत्तिणामकम्मुदयातो जोग्गे मणोदव्वे घेत्तुं मणजोग्ग(?ग)परिणामिता दव्वा दव्वमणो भण्णति। जीवो पुण मणणपरिणामक्रियावण्णो भावमणो। एस उभयरूवो मणदव्वालंवणो जीवस्स नाणवावारो भावमणो भण्णति। तस्स जो उवकरणिंदियदुवारनिरवेक्खो घडाइअत्थसरूवचिंतणपरो बोधो उप्पज्जति सो णोइंदियत्थावग्गहो भवति। 15 20

[२] घोस त्ति—उदत्तादिया सरविसेसा [जे० २०१ प्र०] घोसा भण्णंति। वंजणं ति—अभिलावक्खरा। ते इमे एगट्ठिया पंच—ओगिण्हणता इत्यादि। एते ओग्गहसामण्णतो पंच वि णियमा एगट्ठिता। उग्गहविभागे पुण कज्जमाणे उग्गहविभागंसेण भिण्णत्था भवंति। सो य उग्गहो तिविहो—वंजणोग्गहो सामण्णत्थावग्गहो विसेससामण्णत्थावग्गहो य। एगट्ठियाण इमो भिण्णत्थो—वंजणोग्गहस्स पढमसमयपविट्ठपोग्गलाण गहणता ओगिण्हणता भण्णति, 'उ-प्पावल्ले' त्ति कातुं १। वितियादिसमयादिसु जाव वंजणोग्गहो ताव उवधारणता भण्णति २। एगसामइगसामण्णत्थावग्गहकाले सवणता भण्णति ३। विसेससामण्णत्थावग्गहकाले अवलंबणता 25

---

१ चक्खुदिं° खं० सं० ॥ २ °घेज्जा मो० मु० ॥ ३ ओगेण्ह° मो० मु० ॥ ४ अवधा° जे० ॥ ५ अवि सव्विंदिय° आ० । अविसिट्ठसव्विंदिय° दा० ॥ ६ °वुद्धिमत्थि जे० ॥ ७ विसेसावग्गहो सामण्ण° आ० दा० । हारि० वृत्तौ "त्रिविधश्चावग्रह —सामान्यावग्रह विशेषावग्रहः विशेषसामान्यार्थावग्रहश्च" इति आ० दा० प्रतिगतचूर्णिपाठभेदानुसारि भेदनामत्रय दृश्यते। किं जेसलमेरुदुर्गस्थप्राचीनतमे ताडपत्रीयादर्शे विसेसावग्गहो इति स्थाने वंजणोग्गहो इति पाठो वर्त्तते। मलयगिरिपादैरपि नन्दिवृत्तौ व्यञ्जनावग्रह इति जे० प्रत्यनुसारि नाम निर्दिष्टमस्ति। तथाहि—"इहावग्रहस्त्रिधा, तद्यथा-व्यञ्जनावग्रह सामान्यार्थावग्रह विशेषसामान्यार्थावग्रहश्च।" पत्र १७४-२ ॥ ८ भण्णति, आपल्ले आ० दा० ॥

भण्णति ४। उत्तरुत्तरविसेससामण्णत्थावग्गहेसु जाव मेरया धावइ ताव मेधा भण्णइ ५। जत्थ वजणावग्गहो नत्थि तत्थ सवणादिया तिण्णि एगट्ठिता भवति। आह—णणु भिण्णत्थंदसणे एगट्ठित त्ति विरुद्ध? उच्यते, ण विरुद्धं, जतो सव्वविकप्पेसु उग्गहस्सेव सरूव दसिज्जति ॥ इदाणिं उग्गहसमणतर ईहा—

५१ [१] से किं त ईहा? ईहा छव्विहा पण्णत्ता, त जहा–सोतेंदियईहा १ चक्खि दियईहा २ घाणेंदियईहा ३ जिब्भिदियईहा ४ फासेंदियईहा ५ णोइंदियईहा ६।

[२] तीसे ण इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावजणा पच णामधेया भवति, त जहा– आभोगणया १ मग्गणया २ गवेसणया ३ चिंता ४ वीमसा ५। से त्त ईहा।

५१ [१] सा छव्विहा सुत्तसिद्धा।

[२] इमे तस्सेगट्ठिया, ते वि ईहासामण्णतो एगट्ठिता चेव, अत्थविकप्पणातो पुण भिण्णत्था। इमेण विधिणा—आभोयणता इत्यादि। ओग्गहसमयाणतर सब्भूतविसेसत्थाभिमुहमालोयण आभोयणता भण्णति १। तस्सेव विसेसत्थस्स अण्णय वइरेगधम्मसमालोयण मग्गणा भण्णति २। तस्सेवऽत्थस्स वइरेगधम्म परिच्चाओ अण्णयधम्मसमालोगण च गवेसणता भण्णति ३। तस्सेव तद्धम्माणुगतत्थस्स पुणो पुणो समालोयणतेण चिंता भण्णति ४। तमेवत्थ णिच्चाऽणिच्चादिएहिं दव्व भावेहिं विमरिसतो वीमसा भण्णति ५। एव बहुधा अत्थमालोयतस्स उक्कोसतो अतमुहुत्तकाल सव्वा ईहा भवति ॥ ईहाणतर अवातो—

५२ [१] से किं त अवाए? अवाए छव्विहे पण्णत्ते, त जहा–सोइंदियावाए १ चक्खिदियावाए २ घाणेंदियावाए ३ जिब्भिदियावाए ४ फासेंदियावाए ५ णोइंदियावाए।

[२] तस्स ण इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावजणा पच णामधेया भवति, त जहा– आउट्टणया १ पच्चाउट्टणया २ अवाए ३ बुद्धी ४ विण्णाणे ५। से त्त अवाए।

५२ [१] सो छव्विहो सुत्तसिद्धो।

[२] तस्सेगट्ठिता इमे पच, ते य अवायसामण्णत्तणतो णियमा एगट्ठिता चेव, अभिधाणभिण्णत्तणतो पुण भिण्णत्था। [जे० २०१ द्वि०] इमेण विधिणा—आउट्टणता इत्यादि। ईहणभावनियत्तस्स अत्थसरूवपडिबोध बुद्धस्स य परिच्छेदमुप्पादतस्स आउट्टणता भण्णति १। ईहणभावनियट्टस्स वि तमत्थमालोयतस्स पुणो पुणो णियट्टण पच्चाउट्टण भण्णति २। सव्वहा ईहाए अवणयण कातु अवधारणावधारितत्थस्स अवधारयतो अवातो त्ति भण्णइ ३। पुणो पुणो तमत्थावधारणावधारित बुज्झतो बुद्धी भवइ ४। तम्मि चेवावधारितमत्थे विसेसे पेक्खतो अवधारयतो य विण्णाणे त्ति भण्णति ५ ॥ अवायाणतर धारणा—

---

१ ०त्थत्ताओ एग आ० ॥ २ विधिक जे ॥ ३ चक्खुदि स ॥ ४ धेज्जा मो मु ॥ ५ ०एहिं दव्वभावेहिं जे। विमर्षण विमर्ष क्षयोपशमविशेषादेवोर्ध्व स्पष्टतरावबोधत सद्भूतार्थविशेषाभिमुखमेव व्यतिरेकधर्मपरित्यागतोऽन्वयधर्मालोचन विमर्ष, नित्याऽनित्यादिद्रव्य-भावालोचनमित्यन्ये। इति हारि वृत्तौ। तत ऊर्ध्व क्षयोपशमविशेषात् स्पष्टतर सद्भूतार्थविशेषाभिमुखमेव व्यतिरेकधर्मपरित्यागतोऽन्वयधर्मापरित्यागतोऽन्वयधर्मविमर्शन विमर्श इति मलयगिरिवृत्तौ ॥ ६ यमवाए डे ॥ ७ चक्खुदिय स० ॥ ८-९-१०-११-१२ यमवाए डे ॥ १३ धिज्जा मो० मु ॥ १४ आवट्टणया पच्चावट्टणया ल शु हारि मलय० पुस्तोध। आउंटणया पच्चाउंटणया सं रू ॥ १५ विण्णाण्ण ल सं ॥

५३. [१] से किं तं धारणा? धारणा छव्विहा पण्णत्ता, तं जहा–सोइंदियधारणा १ चक्खिंदियधारणा २ घाणिंदियधारणा ३ जिब्भिंदियधारणा ४ फासिंदियधारणा ५ णोइंदियधारणा ६। [२] तीसे णं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच णामधेया भवंति, तं जहा–धरणा १ धारणा २ ठवणा ३ पतिट्ठा ४ कोट्ठे ५। से त्तं धारणा।

५३. [१] सा य छव्विहा सुत्तसिद्धा।

[२] तस्सेगट्ठिता पंच। ते य सामण्णधारणं पडुच्च णियमा एगट्ठिया, धारणत्थविकप्पणताए भिण्णत्था। इमेण विधिणा—धरणा इत्यादि। अवायाणंतरं तमत्थं अविच्चुतीए जहण्णुक्कोसेणं अंतमुहुत्तं धरेंतस्स धरणा भण्णति १। तमेव अत्थं अणुवयोगत्तणतो विच्चुतं जहण्णेणं अंतमुहुत्तातो परतो दिवसादिकालविभागेसु संभरतो य धारणा भण्णति २। 'ठवण' त्ति ठावणा, सा य अवायावधारियमत्थं पुव्वावरमालोइयं हियतम्मि ठावयंतस्स ठवणा भण्णति, पूर्णघटस्थापनावत् ३। 'पतिट्ठ' त्ति सो च्चित अवधारितत्थो हितयम्मि पभेदेन पइट्ठातमाणो पतिट्ठा भण्णति, जले उपलप्रक्षेपप्रतिष्ठावत् ४। 'कोट्ठे' त्ति जहा कोट्ठगे सालिमादिबीया पक्खित्ता अविणट्ठा धारिज्जंति तहा अवातावधारितमत्थं गुरूवदिट्ठं सुत्तमत्थं वा अविणट्ठं धारयतो धारणा कोट्ठगसम त्ति कातुं कोट्ठे त्ति वत्तव्वा ५॥

५४. इच्चेतस्स अट्ठावीसतिविहस्स आभिणिबोहियणाणस्स वंजणोग्गहस्स परूवणं करिस्सामि पडिबोहगदिट्ठंतेण मल्लगदिट्ठंतेण य।

५४. इच्चेतस्सेत्यादि सुत्तं। 'इति' उपप्रदर्शने। 'एतस्स' त्ति जं अतिकंतं अट्ठावीसतिभेदं। ते य के अट्ठावीसं भेदा? उच्यते–चउव्विहो वंजणावग्गहो, छव्विहो अत्थावग्गहो, छव्विहा ईहा, छव्विहो अवायो, छव्विधा धारणा, एते सव्वे अट्ठावीसं। एत्थ अट्ठावीसइविहस्स मज्झातो जो वंजणावग्गहो चउव्विहो तस्स दिट्ठंतदुगेण परूवणा॥

५५. से किं तं पडिबोहगदिट्ठंतेणं? पडिबोहगदिट्ठंतेणं से जहाणामए केई पुरिसे कंचि पुरिसं सुत्तं पडिबोहेज्जा 'अमुगा! अमुग!' त्ति, तत्थ य चोयगे पन्नवगं एवं वयासी–किं एगसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति? दुसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति? जाव दससमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति? संखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति? असंखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति?। एवं वदंतं चोयगं पण्णवगे एवं वयासी–णो एगसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति, णो दुसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमा-

१ धिज्जा मो० मु० ॥ २ त्रिपञ्चाशत्तमसूत्रानन्तरं श्रीहरिभद्र-श्रीमलयगिरिभ्यां व्याख्यातं सर्वेष्वपि सूत्रादर्शेषु एकं सूत्रमधिकं वर्तते। तच्चेवम्–उग्गहे एक्कसामइए, अंतोमुहुत्तिया ईहा, अंतोमुहुत्तिए अवाए, धारणा संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं। एव अट्ठा° सं० डे० मो० मु०। उग्गहे एक्कं समयं, ईहा-ऽवाया मुहुत्तमद्धं ति, धारणा संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं। एवं अट्ठा° ल०। उग्गह एक्कं समयं, ईहा-ऽवाया मुहुत्तमेत्त तु। कालमसंखं संखं च धारणा होति णायव्वा ॥१॥ एवं अट्ठा° ख० ॥ ३ एवं अट्ठा° सर्वासु सूत्रप्रतिषु वृत्त्योश्च ॥ ४ एयस्स अट्ठा° आ० ग० ॥ ५ से ण जहा मो० ॥ ६ केयि शु० ॥ ७ एवं इति ख० सं० नास्ति ॥ ८ चोदगं सं० ॥ ९ वदासी ख० ॥

गच्छति, जाव णो दससमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति, णो संखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति, असंखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति। से त्तं पडि-बोहगदिट्ठंतेणं।

५५ से जहाणामयेत्यादि। 'से' त्ति पडिबोधकस्स णिद्देसे। 'जहाणामये' त्ति जहाप्पा [जे० २०२ प्र०]म, सम्यक्त आत्माभिप्रायकृतादित्यर्थः। सव्वण्णुप्पणीयमत्थं तदणुसारि सुत्तं वा अप्पबुद्धिविण्णाणत्तणयो अणवगच्छमाणो सीसो पुच्छाचोदणातो चोदको, अहवा तमेव सुत्तमत्थं वा 'अघडमाणं' ति भण्णमाणो तद्दोसचोदयो य चोदगो भण्णति। पवयणमविरुद्धं निद्दोसं सुत्तत्थं पण्णवेंतो पण्णवगो, विरुद्ध-पुणरुत्तसुत्तं वा अत्थतो अविरुद्धं दरिसेंतो पण्णवेति जो सो वा पण्णवगो भण्णति, यथावत् संशयच्छेदीत्यर्थः। चोदको संसयभावण्णो पण्णवगं पुच्छति—'किं एगसमयादिपविट्ठा' इत्यादि कंठं। एवं चोदकं पुच्छाभिप्पायेण वदंतं पण्णवगाऽऽह-'णो एगसमयपविट्ठा' इत्यादि। जो एस पडिसेहो कतो एस सद्दाइकुडविण्णाणजणगत्तेण ति णो गहणमागच्छंति, इहरा पोग्गला गहणमागच्छन्त्येवेत्यर्थः। एवं एगादिसमयपविट्ठपोग्गलपडिसिद्धेसु इमा अणुण्णा—'असंखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति' त्ति। इमस्स अणणुयोगत्थो अणुयोगत्थो य। तत्थ अणणुयोगो इमो—जहा पवासी सगिहमेंतो अद्धाणं पंचाहेण दसाहेण वा वीतीवतित्ता सगिहं पविट्ठो त्ति, एवं असंखेज्जेहिं समयेहिं आगता पविट्ठा कण्णबिलेसु पोग्गला गेण्हति त्ति, एवं अणणुयोगो भवति। इमो अणुयोगत्थो—पढमसमयादारब्भ पतिसमयं पविसमाणेसु असंखेज्जइमे समए जे पविट्ठा ते गहणमागच्छंति, ते य सद्दादिविण्णाणजणगं त्ति कातुं, अतो तेसिं गहणसुत्तदिट्ठं। सो य असंखेज्जइसमयो किंपमाणे असंखेज्जए भवति? उच्यते—जहण्णेणं आवलियाए असंखेज्जइभागमेत्तेसु समयेसु गतेसुं ति, उक्कोसेण [जे० २०२ द्वि०] संखेज्जासु आवलियासु आणापाणुकालपुहुत्ते वा, उभयधा वि अविरुद्धं॥ गतो पडिबोधकदिट्ठंतो। इदाणिं आवागदिट्ठंतो—

५६ [१] से किं तं मल्लगदिट्ठंतेणं?[1] मल्लगदिट्ठंतेणं[2] से जहाणामए[3] केई[4] पुरिसे आवागसीसाओ मल्लगं गहाय तत्थेगं उदगबिंदुं पक्खिवेज्जा से णट्ठे, अण्णे[5] पक्खित्ते से वि णट्ठे, एवं पक्खिप्पमाणेसु पक्खिप्पमाणेसु[6] होही[7] से उदगबिंदू जे णं तं मल्लगं रावेहिति[8], होही[9] से उदगबिंदू जे णं तंसि मल्लगंसि ठाहिति, होही[11] से उदगबिंदू जे[12] णं तं मल्लगं भरे[13]हिति, होही से उदगबिंदू जे[14] णं तं मल्लगं पवाहेहिति, एवामेवं[15] पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं[16] अणंतेहिं पोग्गलेहिं जाहे तं वंजणं पूरितं होति ताहे 'हुं'[17] ति करेति णो[18] चेव

१ गहत्थमा° जे॥ २ आवागदिट्ठंतो इति मल्लकदृष्टान्तस्य नामान्तरम्॥ ३ तेण जहा को दिट्ठंतो? से जहा° दं॥ ४ केयि शु॥ ५ अण्णे वि प दं विना॥ ६ माणे पक्खिप्पमाणे होही डे॥ ७-९-११ होहिति दं शु। होहिइ ल० डे॥ ८ रावेहिइ सं० ल शु। रवेहिइ जे॥ १० मल्लगे ख० स॥ १२-१४ जो ण दं। जण्ण हारिवृत्तौ॥ १३ भरेहिति इत्यनन्तरं विशेषावश्यकमहाभाष्यमलधारीयटीकाया १४८ पत्र नन्दीपाठोद्धरणे होही से उदगबिंदू जे णं तंसि मल्लगंसि न ठाहिहिति इत्यधिकं न ठाहिहिति सूत्रमुपलभ्यते नोपलभ्यते इदं सूत्रं सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु॥ १५ एवमेव दं। एमेव शु॥ १६ मेव पक्खिप्पमाणेहिं अणंतेहिं पोग्ग ल विशेषामलवृत्तौ १४८ पत्र नन्दीसूत्रपाठोद्धरणे। मेव पक्खिप्पमाणेहिं पोग्ग दं। मेव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं पोग्ग सं॥ १७ हों' ति प॥ १८ ण उण ला दं०॥

णं जाणति के वेसं[1] सद्दाइ?, तओ ईहं पविसति तओ जाणइ अमुगे एस सद्दाइ[2]?, तओ[3] अवायं पविसइ[4] तओ से उवगयं हवइ, तओ णं धारणं पविसइ तओ णं धारेइ संखेज्जं[5] वा कालं असंखेज्जं वा कालं ।

[२] से जहाणामए केई[6] पुरिसे अव्वत्तं सद्दं सुणेज्जा तेणं[7] सद्दे[8] त्ति उग्गहिए, णो चेव णं जाणइ के वेस सद्दे त्ति[9], तओ ईहं अणुपविसइ ततो जाणति अमुगे एस सद्दे, ततो णं अवायं पविसइ[10] ततो से उवगयं हवति, ततो धारणं पविसइ[11] तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं । [12]→एवं अव्वत्तं रूवं, अव्वत्तं गंधं, अव्वत्तं रसं, अव्वत्तं फासं पडिसंवेदेज्जा← ।

[३] से जहाणामए केई[13] पुरिसे अव्वत्तं सुमिणं पडिसंवेदेज्जा[14], तेणं सुमिणे[15] त्ति उग्गहिए[16] ण पुण जाणति के[17] वेस सुमिणे त्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणति अमुगे एस सुमिणे त्ति, ततो अवायं पविसइ[18] ततो से उवगयं हवइ, ततो धारणं पविसइ[19] तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं । से त्तं मल्लगदिट्ठंतेणं ।

---

१ के वि एस मो० मु० ॥ २ सद्दे त्ति खं० । सद्द त्ति सं० ॥ ३ तओ उवयाणं गच्छति, तओ से उवग्गहो हवइ खं० ॥ ४ गच्छति खं० सं० शु० ल० ॥ ५ संखेज्जकालं असंखेज्जकालं ल० ॥ ६ केयि शु० ॥ ७ सुणेइ तेणं डे० ल० ॥ ८ सद्द त्ति खं० शु० । सद्दा त्ति जे० डे० ल० मो० ॥ ९ सद्दाइ, तओ ईहं पविसइ सर्वासु सूत्रप्रतिषु हारि० मलय० वृत्त्योश्च ॥ १० गच्छति खं० सं० शु० ल० ॥ ११ पडिवज्जेति संखेज्जं खं० सं० ॥

१२ → ←एतच्चिह्नमध्यवर्त्तिसूत्रस्थाने जे० मो० मु० प्रतिषु रूप-गन्ध-रस-स्पर्शविषयाणि चत्वारि सूत्राण्युपलभ्यन्ते । तानि चेमानि—

से जहानामए केई पुरिसे अव्वत्तं रूवं पासिज्जा, तेणं रूवे त्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस रूवे त्ति, तओ ईह पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस रूवे त्ति, तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ तओ णं धारेइ संखिज्जं वा काल असंखिज्जं वा कालं ।

से जहानामए केई पुरिसे अव्वत्त गंधं अग्घाइज्जा, तेणं गंधे त्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस गंधे त्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस गंधे, तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं ।

से जहानामए केई पुरिसे अव्वत्तं रसं आसाइज्जा, तेणं रसे त्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस रसे त्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस रसे, तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ तओ णं धारेइ संखिज्जं वा काल असंखिज्ज वा काल ।

से जहानामए केई पुरिसे अव्वत्तं फासं पडिसंवेइज्जा, तेणं फासे त्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस फासे त्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस फासे, तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ धारण पविसेइ तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं ॥

१३ केयि सु० ॥ १४ पासिज्जा मो० ल० शु० ॥ १५ सुमिणो त्ति डे० ल० । सुविणो त्ति मलयगिरिटीकायाम् ॥ १६ 'ए नो चेव णं जा' मो० मु० ॥ १७ के वि सु° डे० ल० ॥ १८ गच्छति खं० सं० शु० ल० ॥ १९ पडिवज्जति सं० मु० ॥

५६ [१] तत्थ आवागसीसग ति[आ]पागट्ठाणमेव, अहवा आपागट्ठाणस्स आसण्ण समता परिपेरत, अहवा आपागमुत्तारियाण ज ठाण तआपागसीसय मण्णति। 'अणतेहिं' ति प्रथमसमयादारभ्य प्रतिसमय अणता प्रविशती-त्यतो अणता। 'जाहे त वजण पूरित भवति' त्ति, एत्थ वजणग्गहणेण सद्दाइपुग्गलदव्वा दव्विदिय वा उभयसवधो वा घेतव्व, तिधा वि ण विरोधो। वजण पूरिय ति कह? उच्यते-जदा पुग्गलदव्वा वजण तदा पूरिय ति पभूता ते
5 पोग्गलदव्वा जाता, स्व प्रमाणमागता सविसयपडिवोधसमत्था जाता इत्यर्थ १। जदा पुण दव्विदिय वजण तदा पूरिय ति कह? उच्यते-जाहे तेहिं पोग्गलेहिं त दव्विदिय आहूत भरित वावित तदा पूरिय ति भण्णति २। जदा तु उभयसवधो वजण तया पूरिय ति कह? उच्यते-दव्विदियस्स पुग्गला अगीभावमागता, पुग्गला य दव्विदिए अनुपत्ता, एस उभयभावो, एतम्मि उभयभावे पुग्गलेहिं इदिय पूरित, इदिएण वि सविसयपडिवोधरूप्पमाणा पुग्गला गहिता, एव उभयसामत्थतो विण्णाणभावो भवतीत्यर्थ ३। 'हु ति करेइ' त्ति वजणे पूरिते त अत्थ गेण्हइ
10 त्ति वुत्त भवति। एस एकसमयिओ अत्थावग्गहो। त पुण किंपगार गेण्हति? उच्यते-'नो चेव ण जाणति के वि एस सद्दादी' तक्काले सामण्णमणिद्देस, सद्दादिविसेस ण जाणइ त्ति वुत्त भवति। किंच—सरूव-णाम जाति-गुण किरिया विकप्पविमुह अनाख्येय गृह्णातीत्यर्थ। एत्थ पडिवोधकालातो [जे० २०२ प्र०] पुव्व वजणोग्गहो से भवति। एसा एव वजणोग्गहस्स परूवणा कता। वजणोग्गहस्स परतो 'हु ति करेति' त्ति एतम्मि पडिवोधकाले एग-समइयो अत्थावग्गहो से भवति, ततो से कमेण ईहा ऽवाय धारणाओ त्ति। एत्थ पडिवोह-मल्लगदिट्ठतेहिं वजणो-
15 ग्गहस्स अत्थोग्गहस्स य भिण्णकालता फुड दसिता। पर आह-साधु मे पडिवोध-मल्लगदिट्ठतेहिं वजण ऽत्थावग्ग-हाण भेदो दसितो, जागरओ पुण सद्दाइअत्थे पडुप्पण्णे ण वजणोग्गहो लक्खिज्जति, जतो पुव्वामेव सद्दाइअत्थ-विण्णाणमुप्पज्जते, भणित च सुत्ते 'से जहाणामये केयि पुरिसे'त्यादि। अहवा इमस्स सुत्तस्स इमो सवधो-पर आह-यदुक्त भवता सरूव-णाम-जाति गुण क्रियाविकल्पविमुख अनाख्येय गृह्णातीत्येतद् विरुध्यते, कुत ? यत सूत्रेऽभिहित-से जहाणामतेत्यादि। अहवा इमो सवधो-प्रसुप्तप्रतिबोधक-मल्लगदिट्ठतेहिं वजण ऽत्थावग्गहाण भेदो
20 दसितो, इह पुण सुत्ते मल्लगदिट्ठतेणेव वजण ऽत्थावग्गहाण भेदो दसिज्जति-

[२] 'से जहाणामते'त्यादि। सुत्तुच्चारणसवणाणतरमेव पर आह-एत्थ सुत्ते वजण ऽत्थावग्गहेहा ण लक्खि-ज्जति,जतो 'अव्वत्त सद्द सुणेइ' त्ति भणित, सद्दमेचेऽवधारिते पढमतो अवाय एव लक्खिज्जति त्ति। आयरिय आह-ण तुम सुत्ताभिप्पाय जाणसि, णणु अव्वत्तसद्दसवणातो अत्थावग्गहग्गहण कत, जतो अव्वत्तमणिद्देस सामण्ण विकप्परहिय ति भण्णति, तस्स य पुव्व वजणावग्गहेण भवितव्व, जतो एतग्गाहिणो सोतादिइदियस्स अत्थोग्गहो वंजणोग्गहमतरेण
25 ण भवति त्ति नियमेसो, सो य कालसुहुमत्तणतो उप्पलसतपत्तछेज्जदिट्ठततो ण लक्खिज्जति। चोदक आह-जति एव तो ज सुत्ते भणित "तेण सद्दे ति ओग्गहिते" त कह? उच्यते-इहत "तेण सद्दे ति ओग्गहिते" त्ति वक्खा-सूत्रकारोऽभिधत्ते इति करणनिद्देसातो सव्वविसेसविमुह शब्दमात्रमुक्त [जे० २०३ द्वि०] भवति, णो चेव ण जाणति के वेस सद्दे? त्ति, ण तु शब्दोऽयमित्येव बुध्यते, कम्हा? उच्यते-एकसमयत्तातो अत्थावग्गहस्स, किंच पण्णवेंतो य पण्णवगो सववहाराभिप्पायतो "तेण सद्दे त्ति ओग्गहिते" त्ति ब्रूते, ण दोसो। जति वा "सद्दोऽय"
30 मिति बुद्धी भवे तो अवातो चेव भवे, तच्च न, कह? उच्यते-णो जतो अत्थावग्गहसमयमेत्ते काले "सद्द" इति

१ पुण उवगरणिंदियं मलय नन्दिवृत्तौ चूर्णिपाठोद्धरणे॥ २ आफुण्ण भरित आ०। "आभृत" इति हारि० वृत्तौ॥ ३ अभिपत्ता इत्यर्थ, तदा पूरियं ति भण्णइ इति मलय०नन्दिवृत्तौ चूर्णिपाठोद्धरणे॥ ४ पतार खा ॥ ५ जाति किरियां जे ॥ ६ जतो पत्तग्गाहिणो जे दा ॥

विसेसणाणमत्थि, अह तम्मि वि समए सद्दोऽयमिति बुद्धी हवेज्ज तो फुडं अवाय एव भवेज्ज, णो य तक्काले अवातो इच्छिज्जति, जतो अत्थपरिच्छेदो असंखेज्जसमयकालिओ भवइ त्ति । अण्णे पुण आयरिया एतं सुत्तं [1]→ विसेसत्थावग्गहे भणंति–'अव्वत्तं सद्दं सुणेज्ज' त्ति एस← विसेसत्थावग्गहो, 'तेण सद्दे ति उग्गहिते' ति, एतं सुत्तखंडं सामण्णे-सद्दत्थावग्गहदंसगं, कहं ? उच्यते–जतो भण्णाति "णो चेव णं जाणति के वि एस सद्दे"त्ति संख-संग-णोलि-करय-लादिको त्ति, एसो वि अविरुद्धो सुत्तत्थो । 'ततो' अत्थावग्गहसमयाणंतरं पढमसमयादिसु 'ईहं अणुपविसति' 'ईहं' ति केइ संसयं मण्णंते, तं ण भवति, संसयस्स अण्णाणभावत्तणतो, मतिणाणंसो य ईह त्ति । आह–को पुण संसयेहाण विसेसो ? उच्यते–इह जं थाणु-पुरिसादिअत्थेसुं पेहितं चित्तं तदत्थपडिबोहत्तेण पडिहतं सुत्त इव चेतो संसयो भण्णति, तं च अण्णाणं, जं पुण हेतूववत्ति-साधणेहिं सब्भूतमत्थस्स विसेसधम्माभिमुहालोयणं तस्सेवऽत्थस्स अधम्मविमुहं असम्मोहमविफलमत्थपरिच्छेदकं चित्तं जं तं ईहा भण्णति । अणु त्ति–अवग्गहातो पच्छाभावे असंखेज्जसमइयं परिमाणतो ईहोवयोगं अविच्छेयत्तणतो अंतमुहुत्तकालं ईहति, ततो विसिट्ठमतिनाणखयोवसमभावत्तणतो अंतमुहुत्तकालब्भंतर एव जाणति 'अमुते एस सद्दे' संख-संगादिए त्ति । दुरवबोधत्तणतो पुण अत्थस्स अविसिट्ठमइण्णाणखयोवसमत्तणतो वा ईहोवयोगअंतमुहुत्तचुतो अणवगतत्थो पुणो वि अण्णं अंतमुहुत्तं ईहति, [जे० २०४ प्र०] [एवं] ईहोवयोगाविच्छेदसंताणतो बहुए वि अंतमुहुत्ते ईहेज्जा, ण दोसो । ततो ईहाणंतरं अवातो । सो य सद्दाइअत्थपडुप्पण्णस्स जे परधम्मा तेसु विमुहस्स सधम्मे य अवधारयतो 'ण एस संगसद्दो, णिद्ध-मधुर-गंभीरत्तणतो संखसद्दोऽय'मित्येवमवगतत्थो [जहण्णतो] असंखेज्जसमयितो उक्कोसतो णियमा एगंतमुहुत्तिओ जो अववोधो अत्थपरिच्छेदो सो अवातो भवति । ततो अवायाणंतरं धारणं पविसइ त्ति । सा य धारणा जहण्णतो असंखेज्जसमते अविच्चुतीए तमत्थं धरेति, उक्कोसतो अंतमुहुत्तं, अणुवयोगतो पुण तमत्थं विस्मृतं पुणो वि संभरइ त्ति धारणा । एवं सा संखेज्जवासाउयाणं मुहुत्त-दिवसादिकालसंखाए संखेज्जं कालं भवेज्ज, असंखेज्जवासाउयाणं पुण असंखेज्जं कालं ।

एवं चक्खिंदिए वि रूवं भाणितव्वं, वंजणोग्गहवज्जं । घाण-रस-फासिंदिएसु वि जहा सोइंदिते तहा सव्वं भाणितव्वं । 'संवेदेज्ज' त्ति एते सद्दादिइंदियत्थे पडुप्पण्णे इंदियं स्वं स्वं इंदियत्थं आयखयोवसममणुरूवं सुभमसुभं वा वेदेज्ज[2] त्ति । अहवा फरिसिंदियवज्जं सेसिंदिएहिं पत्तमिंदियत्थं प्रायसो इट्ठमणिट्ठं वा स्वं आत्मानुगतं वेदनं वेदते, न शरीरेण अनुपलक्षं[3] वा वेदयतीत्यर्थः । फासिंदियमत्थं पुण स्वं अनुगतं शरीरानुगतं च दुहा वि फुडं वेदइ त्ति संवेदेज्ज त्ति अतो भणितं ।

एवं मणसो वि सुविणे सद्दादिविसएसु अवग्गहादयो णेया, अण्णत्थ वा इंदियवावारअभावे मणेमाणस्स त्ति । इह सुत्तेण निदरिसणं मणे—

[३] से जहाणामतेत्यादि सुत्तं । कंठं । सुविणो मे दिट्ठो त्ति सुविणादिट्ठं अव्वत्तं सुमरइ । तच्च प्रतिवोधप्रथमसमये सुविणमिति संभरतो अत्थावग्गहो, तस्य प्रथमावस्थायां[7] व्यञ्जनावग्रहः, परतो ईहादि । सेसं पूर्ववत् । जग्गतो अणिंदियत्थवावारे वि मणसो जुज्जते वंजणावग्गहो, उवयोगस्स असंखेज्जसमयत्तणयो, [जे० २०४ द्वि०] उवयोगद्धाए य प्रतिसमयमणोदव्वग्गहणतो, मणोदव्वाणं च वंजणववदेसतो समए य असंखेज्जतिमे मनसो नियमा-

१ →← एतच्चिह्नान्तर्वर्त्ती पाठः जे० नास्ति ॥ २ 'ण्णस्सऽत्था' आ० दा० ॥ ३ 'णादिकर' आ० दा० ॥ ४ 'सुपविट्ठं चित्तं आ० ॥ ५ वेदेज्ज त्ति । एते सद्दाई चक्खुइंदियवज्जं सेसिंदिएहिं आ० दा० ॥ ६ 'नुपलंभं वा आ० दा० ॥ ७ तस्य पूर्वमवस्था' जे० दा० ॥

र्थग्रहणं भवेत्। तस्य च प्रथमसमयार्थप्रतिबोधकालेऽर्थावग्रह, तस्य पूर्वमसंख्येयसमयेषु व्यञ्जनावग्रह । शेषमीहादि पूर्ववत्। सीसो पुच्छति–उग्गहादीण उ कमातिक्कमे एगतरअभावे वा किं सद्दादिवत्थुपरिच्छेदो ण भवति? आचार्याह–आम, ण भवति, अत एव च क्रमे नियम, जम्हा णो अगहितं ईहति तम्हा पुव्वं उग्गहो, जम्हा य अणीहितं णो अवगच्छति ईहाणंतरं तम्हा अवायो, जम्हा य अणावातं ण धारिज्जति वत्थु अवायाणंतरं तम्हा 5 धारणा। जम्हा य एस क्रमनियमो तम्हा सव्वो आभिणिबोधियनाणावगमो नियमा एवं भवति, अत एव च कारणा सव्वे अवग्गहादयो मतिनाणभेदा भवतीत्यर्थ ॥

५७ तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा–दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। तत्थ दव्वओ णं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वदव्वाइं जाणति ण पासति १। खेत्तओ णं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वं खेत्तं जाणइ ण पासइ २। कालओ णं 10 आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वं कालं जाणइ न पासइ ३। भावओ णं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वे भावे जाणइ ण पासइ ४।

५७ तं समासतो चतुव्विहेत्यादि सुत्तं। 'तं च' मतिनाणं खयोवसमरूवतो एगविहं पि होतुं णेयभेदत्तणतो नाणाभेदा दव्वादिया से भवति। 'दव्वतो णं' ति दव्वतो वत्तव्वे 'णं' ति वयणालंकारे, देसीवयणतो वा 'णं' अहवा, अपादानान्ते पञ्चमी विभक्ति', तत्थ पायतवयणसेलीतो दव्वतो णं एवं आभिणिबोधियनाणी लभति– 15 'आदेसेण'मित्यादि, इहाऽऽदेसो नाम–पकारो। सो य सामण्णतो विसेसतो य। तत्थ दव्वजातिसामण्णादेसेण सव्वदव्वाणि धम्मत्थिकायादियाणि जाणति, विसेसदव्वे वि जहा धम्मत्थिकाये धम्मत्थिकायस्स देसे धम्मत्थिकायस्स पदेसेत्यादि केयी जाणति, सव्वे ण याणति, जहा सुहुमपरिणता अंचिसततत्था अप्पण्णवणादिया य। 'ण पस्सइ' त्ति सव्वे सामण्ण विसेसादेसट्ठिते धम्मादिए, चक्खु-अचक्खुदंसणेण रूव-सद्दाइते केयिं पासति त्ति वत्तव्वं। अहवाऽऽदेसो–सुत्तं, तस्सादेसतो सव्वदव्वे जाणतीत्यादि। चोदक आह–जति सुत्तं कहं मतिनाणं? ति, उच्यते– 20 सुतोवलद्धमत्थेसु अणुसरतो तब्भावणबुद्धिसामत्थतो [जे० २०५ प्र०] सुतोवयोगणिरवेक्खा वि मती पवत्तइ त्ति ण सुत्तादेसो विरुज्झते १। खेत्तं पि सामण्ण विसेसादेसतो। तत्थ सामण्णतो खेत्तमागासं, तं चेग सव्वग

१ दव्वओ ४। दव्वओ ल ॥ २ तत्थ इति पदं ख सं डे० ल० नास्ति जे छु मो मु० विआमलवृत्तौ न चुद्धरणे २३० पत्रे पुनर्वर्तते ॥ ३-४-५ ६ अत्र द्रव्य-क्षेत्र-काल भावविषयकेषु चतुर्ष्वपि सूत्रांशेषु जाणति पासति इति पाठो जाणति ण पासति इति पाठभेदेन सह भगवत्यां अष्टमशतकद्वितीयोद्देशके ३५६ २ पत्र वर्त्तते। अत्राभयदेवसूरेष्टीका— दव्वओ णं ति द्रव्यमाश्रित्य आभिनिबोधिकविषयद्रव्य वाऽऽश्रित्य यद् आभिनिबोधिकज्ञान तत्र आएसेण ति आदेश–प्रकार सामान्य विशेषरूप तत्र च आदेशेन ओघतो द्रव्यमात्रतया न तु तद्गतसर्वविशेषापेक्षयेति भाव अथवा आदेशेन श्रुतपरिकर्मिततया सर्वद्रव्याणि' धर्मास्तिकायादीनि जानाति अवाय-धारणापेक्षयाऽवबुध्यते ज्ञानस्यावाय-धारणारूपत्वात् पासइ' ति पश्यति अवग्रहेहापेक्षयाऽवबुध्यते अवग्रहेहयोर्दर्शनत्वात्। 'खेत्तओ ति क्षेत्रमाश्रित्य आभिनिबोधिकज्ञानविषय क्षेत्र वाऽऽश्रित्य यद् आभिनिबोधिकज्ञान तत्र आदेसेण' ति ओघत श्रुतपरिकर्मणया वा सव्व खेत्त ति लोका-ऽलोकरूपम्। एव कालतो भावतश्चेति। इदं च सूत्र नन्द्या इहैव च वाचनान्तरे 'न पासइ' ति पाठान्तरेणाधीतम्। एवं च नन्दिटीकाकृता [हरिभद्रसूरिणा] व्याख्यातम्— आदेश:–प्रकार स च सामान्यतो विशेषतश्च। तत्र द्रव्यजातिसामान्यादेशेन 'सर्वद्रव्याणि' धर्मास्तिकायादीनि जानाति विशेषतोऽपि यथा धर्मास्तिकायो धर्मास्तिकायस्य देश इत्यादि न पश्यति' सर्वान् धर्मास्तिकायादीन् शब्दादींस्तु योग्यदेशावस्थितान् पश्यत्यपीति। ३५८ पत्र ॥ ७ अंचि सततत्था उप्पण्णवणादिया आ दा। अभिधदार्था अप्रज्ञापनादिका इत्यर्थ ॥ ८ सेसा दसविहे धम्मादिए आ रा ॥

तममुत्तं अवगाहलक्खणं सव्वं जाणति। विसेसतो वि लोगा-ऽलोगुड्ढ-ऽह-तिरियादिविसेसखेत्ते जाणति, ण जाणइ य केयी, क्षेत्रं न पश्यत्येव २। काले वि आदेसो सामण्ण-विसेसतो। तत्थ सामण्णतो इमं भण्णति, ण य दरिसणतो, णिच्चमणिच्चं वा मुत्तममुत्तं वा कलासमूहं सव्वदव्वाणि वा कलेइ त्ति कलणं वा कालो, तमेवंविहं सामण्णतो सव्वकालं जाणति। विसेसादेसो–समया-ऽऽवलिगादि उस्सप्पिणीमादि वा विसेसकाले केयि जाणति, ण जाणति केयिं, कालं ण पश्यत्येव ३। भाव इति भवनं भूतिर्वा भावः, एवं सव्वभावे भावजातिमेत्तसामण्णतो जाणति। विसेसादेसतो जीवा-जीवभावे। तत्थ नाण-कसायादिया जीवे, अजीवे वण्णपज्जवादिए अणेगहा वीसस-पयोगपरिणते, एत्थ मतिणाणविसयत्थे जे ते जाणति, सेसे ण याणति, सव्वभावे ण पासइ त्ति, मतिणाणस्स असव्वण्णेयविसयत्तणयो ॥ 5

५८. उग्गह ईहाऽवाओ[1] य धारणा एव होंति चत्तारि।
आभिणिबोहियणाणस्स भेयवत्थू समासेणं ॥ ७० ॥
अत्थाणं[2] उग्गहणं तु उग्गहो, तह वियालणं ईहं। 10
ववसायं तु अवायं, धरणं पुण धारणं बिंति ॥ ७१ ॥
उग्गह एक्कं समयं, ईहा-ऽवाया मुहुत्तमद्धं[3] तु।
कालमसंखं संखं च धारणा होति णायव्वा ॥ ७२ ॥
पुट्ठं सुणेति सद्दं, रूवं पुण पासती अपुट्ठं तु।
गंधं रसं च फासं च बद्ध-पुट्ठं वियागरे ॥ ७३ ॥ 15
भासासमसेढीओ सद्दं जं सुणइ मीसयं[4] सुणइ।
वीसेढी पुण सद्दं सुणेति णियमा पराघाए ॥ ७४ ॥
ईहा अपोह वीमंसा मग्गणा य गवेसणा।
सण्णा सती मती पण्णा सव्वं आभिणिबोहियं ॥ ७५ ॥
से[5] त्तं आभिणिबोहियणाणपरोक्खं। 20

---

१ ईह अवाओ सं० शु० लं० मो० ॥ २ अत्थाणं उग्गहणम्मि उग्गहो तह वियालणे ईहा। ववसायम्मि अवाओ, धरणं पुण धारणं बिंति ॥ मो० डे० लं० मु०। हरिभद्रपादैः मलयगिरिपादैश्चायमेव पाठभेदः निर्दिष्टो व्याख्यातश्चापि वर्त्तते ॥ ३ 'त्तमतं तु हरिभद्रसूरि-मलयगिरिवृत्त्योः निर्दिष्टोऽयं पाठभेदः' ॥ ४ मीसियं डे० मो० मु० ॥ ५ खं० सं० शु० मो० प्रतिषु से त्तं आभिणिबोहियनाणपरोक्खं इति एकमेव निगमनवाक्यम्, जे० डे० लं० मु० प्रतिषु पुनः से त्तं आभिणिबोहियणाणपरोक्खं, से त्तं मतिणाणं इति निगमनवाक्यद्वयं दृश्यते। किञ्च हरिभद्रसूरि-मलयगिरिवृत्त्योः प्रथमं निगमनवाक्यं व्याख्यातमस्ति, चूर्णिकृता द्वितीयं निगमनवाक्यं व्याख्यातं वर्तते इति वृत्ति-चूर्णिकृतामेकतरदेव निगमनवाक्यमभिमतम्। अपि च चूर्णिकृता चूर्णौ– "से किं तं मतिणाणं?" ति एस आदीए जा पुच्छा तस्स सव्वहा सरूवे वण्णिते इमं परिसमत्तिदंसणं णिगमणवाक्यम् —"से त्तं मतिणाणं ति" इत्यादि [पत्र ४४ पं० ९] यन्निगमनवाक्यव्याख्यानावसरे निटङ्कितमस्ति तत्रैतत् किल चिन्त्यमस्ति यत्–चूर्णावपि से किं तं आभिणिबोधिकेत्यादि सुत्तं [सुत्त ४५ पत्र ३२] इति आदिवाक्यमनुपक्षिप्तं वर्त्तते तत् किमिति चूर्णौ निगमनवाक्यव्याख्यानावसरे "से किं तं मतिणाणं' ति एस आदीए जा पुच्छा" इत्यादि चूर्णिकृता निरदेशि? इत्यत्रार्थे तद्विद एव प्रमाणमिति ॥

५८ उग्गह ईहा० गाहा । अत्थाणं० गाहा । उग्गह एक्कं० गाहा । पुट्ठं सुणेइ० गाहा । भासा सम० गाहा । ईहा० गाहा । एताओ गाहाओ जहा पेढियाए [आव० नि० गा० २-६ तथा गा० १२] तहा भाणितव्वा इति ॥७०॥७१॥७२॥७३॥७४॥७५॥

"से किं तं मतिणाणं ?" [सुत्त ४५] ति एस आदीए जा पुच्छा तस्स सव्वहा सरूवे वण्णिते इमं परिसमत्ति दंसगं णिगमणवाक्यम्–"से तं मतिणाणं" ति । अहवा सीसो पुच्छति–जो एस वण्णियसरूवेण ठितो णाणविसेसो सो किंवत्तव्वो ? आचार्य आह–'से' इति निद्देसे, 'तं' ति पुव्वपण्हामरिसणे, तं एतद् 'मतिणाणं' ति स्वनामाख्यानमित्यर्थः । अहवा 'से' त्ति अस्य व्यञ्जनलोपे कृते एवं मतिणाणं ति भवति, एतावद् मतिज्ञानमित्यर्थः ॥

इदाणिं सव्वचरण करणक्रियाधारं जधुद्दिट्ठं कमप्पत्तं सुतणाणं भण्णति—

५९ से किं तं सुयणाणपरोक्खं ? सुयणाणपरोक्खं चोद्दसविहं पण्णत्तं, तं जहा–अक्खरसुतं १ अणक्खरसुतं २ सण्णिसुयं ३ असण्णिसुयं ४ सम्मसुयं ५ मिच्छसुयं ६ सादीयं ७ अणादीयं ८ सपज्जवसियं ९ अपज्जवसियं १० गमियं ११ अगमियं १२ अंगपविट्ठं १३ अणंगपविट्ठं १४ ।

५९ से किं [जे० २०४ द्वि०] तं सुतनाणेत्यादि । तं च सुतावरणखयोवसमत्तणतो एगविहं पि तं अक्खरादिभावे पडुच्च जाव अंगबाहिरं ति चोद्दसविधं भण्णति । तत्थ अक्खरं तिविहं–नाणक्खरं अभिलावक्खरं वण्णक्खरं च । तत्थ नाणक्खरं "क्षर संचरणे" न क्षरतीत्यक्षरम्, न प्रच्यवते अनुपयोगेऽपीत्यर्थः, आतभावत्तणतो, तं च णाणं अविसेसतो चेतनेत्यर्थः । आह–एवं सव्वमविसेसतो णाणमक्खरं कम्हा सुतं अक्खरमिति भण्णति ? उच्यते–रूढिविसेसतो १ । अभिलाववण्णा अक्खरं भणिता, पङ्कजवत्, एवं ताव अभिलावहेतुग्गहणतो सुतविण्णाणस्स अक्खरता भणिता २ । इदाणिं वण्णक्खरं–वण्णिज्जति अणेणाभिहेतो अत्थो इति वण्णो, स चार्थस्य, कुड्ये चित्रवर्णकवत्, अहवा द्रव्ये गुणविशेषवर्णकवत् । वर्ण्यते–अभिलप्यतेऽनेनेति वर्णाक्षरम् ३ ॥ एत्थ सुत्तं—

६० से किं तं अक्खरसुतं ? अक्खरसुतं तिविहं पण्णत्तं, तं जहा–सण्णक्खरं १ वंजणक्खरं २ लद्धिअक्खरं ३ ।

६० से किं तं अक्खरसुतं इत्यादि । अक्खरसद्दं सुणतो भासतो वा अक्खरसुतं । तत्थऽक्खरलम्भो अभिलावो वा दव्वसुतं, खयोवसमलद्धी भावसुतं । तच्च वर्णाक्षरं त्रिविधं सण्णक्खरादि ॥ तत्थ—

६१ से किं तं सण्णक्खरं ? सण्णक्खरं अक्खरस्स संठाणाऽऽगिती । से त्तं सण्णक्खरं ।

६१ 'सण्णक्खरं' अक्खरागारविसेसो । सो य बंभादिलिविविधाणो अणेगविधो आगारो । तेसु आ(अ)काराविआगारेसु जम्हा अकारे अकारसण्णा एवं भवति, एवं सेसेसु वि, तम्हा ते सण्णक्खरा भणिता, जहा वट्टं घडागारं दट्ठु ठकारसण्णा उप्पज्जतीत्यर्थः १ ॥

१ चउद्दस मो ॥ २ अक्खरं ति दुविहं–नाणक्खरं अभिलावक्खरं वण्णक्खरं च । तत्थ नाणं "क्षर जे ॥ ३ लावणा अक्खरं आ० ॥ ४ त्तं सण्णक्खरं । से त्तं ख सं डे ल शु ॥

६२. से किं तं वंजणक्खरं ? वंजणक्खरं अक्खरस्स वंजणाभिलावो । से त्तं वंजणक्खरं ।

६२. व्यक्तीकरणं वंजणं, व्यज्यते अनेनार्थ इति वा व्यञ्जनम्, यथा प्रदीपेन घटः, व्यञ्जनं च तदक्षरं चेति व्यञ्जनाक्षरम्, तच्चेह सर्वमेव भाष्यमाणं अकारादि हकारान्तम्, अर्थाभिव्यञ्जकत्वाच्छब्दस्य । तमेवं अक्खरं अत्थाभिव्यंजकं वंजणक्खरं भवति, जहा घटः पटः इत्यादि २ ॥

६३. से किं तं लद्धिअक्खरं ? लद्धिअक्खरं अक्खरलद्धियस्स लद्धिअक्खरं समुप्पज्जइ, तं जहा—सोइंदियलद्धिअक्खरं १ चक्खिदियलद्धिअक्खरं २ घाणेंदियलद्धिअक्खरं ३ रसणिंदियलद्धिअक्खरं ४ फासेंदियलद्धिअक्खरं ५ णोइंदियलद्धिअक्खरं ६ । से त्तं लद्धिअक्खरं । से त्तं अक्खरसुयं १ ।

६३. 'लद्धक्खरं' ति अक्खरलद्धी जस्सऽत्थि तस्स इंदिय-मणोभयविण्णाणतो इह जो अक्खरलाभो उप्पज्जति तं लद्धिअक्खरं । तं च पंचविहं सोइंदियादि । जहा सोइंदियलद्धिओ सद्दं सोतुं संख इति अक्खरदुयलाभो भ[जे० २०६ प्र०]वति, एवं सव्वत्थ लद्धिअक्खरं भाणितव्वं ३ । इह सण्णा-वंजणक्खरे दो वि दव्वसुतं गहितं, सुतविण्णाणकारणत्तातो, लद्धक्खरं भावसुतं, लद्धीए विण्णाणमयत्तणतो भयणा वा १ ॥ इदाणिं अणक्खरसुतं—

६४. से किं तं अणक्खरसुयं ? अणक्खरसुयं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा—

ऊससियं णीससियं णिच्छूढं खासियं च छीयं च ।
णिस्सिंघियमणुसारं अणक्खरं छेलियादीयं ॥ ७६ ॥

से त्तं अणक्खरसुयं २ ।

६४. अणक्खरसद्दसवणँतो करतो [? वा] अणक्खरसुतं भवति । तं च अणेगविहं इमं—

ऊससितं० गाहा । पूर्ववत् कंठा [आव० नि० गा० २०] ॥७६॥ २ । इदाणिं सण्णिमसण्णिसुतं—

६५. से किं तं सण्णिसुतं ? सण्णिसुतं तिविहं पण्णत्तं, तं जहा—कालिओवएसेणं १ हेऊवएसेणं २ दिट्ठिवादोवदेसेणं ३ ।

६५. सण्णिस्स सुतं सण्णिसुतं । असण्णिस्स सुतं असण्णिसुतं । तत्र संज्ञाऽस्याऽस्तीति संज्ञी । सो य सण्णी तिविहो—'कालिओवदेसेण' इत्यादि । चोदक आह—जइ सण्णासंबंधयो सण्णी तो सव्वे जीवा सण्णी, जतो एगिंदियाण वि दस आहारादिसण्णातो पढिज्जंति ? आचार्याह—ओहसण्णा थोवत्तणतो णाधिक्रियते, जहा णो करिसावणेण धणवं भवइ त्ति, सेसआहारादिसण्णाओ वि भूयिष्ठतरा वि णाधिक्रियंते, अणिट्ठत्तणतो, जहेह हुंडसंठितो ण मुत्तित्तणतो रूववं भण्णति । एते अधिकतसण्णाए अणुवणयदिट्ठंता । इमे उवणयदिट्ठंता—जहा बहुधणो धणवं, पसत्थणिव्वत्ति-देहमुत्तित्तणतो य रूववं भण्णति, तहेव महती सुभा य संज्ञाऽधिक्रियते । सा य संज्ञानं संज्ञा—मनोविज्ञानम्, तत्सम्बन्धात् सन्नीत्यर्थः ॥ उक्तः प्रसङ्गः । प्रकृतमुच्यते—

---

१ लावो वंजणक्खरं । से त्तं जे० सं० ल० शु० ॥ २ अस्मिन् सूत्रे सर्वत्र लद्धियक्खरं इति सं० शु० मो० ॥ ३ 'णतो कारणतो वा आ० दा० । अनन्तरशब्दश्रवणात 'धुवंतो वा' मापन इत्यर्थ ॥ ४ कार्षापणेन ॥

६६ से किं त कालिओवएसेणं? कालिओवएसेणं जस्स णं अत्थि ईहा अपोहो मग्गणा गवेसणा चिंता वीमंसा से णं संण्णि त्ति लब्भइ, जस्सं णं णत्थि ईहा अपोहो मग्गणा गवेसणा चिंता वीमंसा से णं असंण्णीति लब्भइ। से त्तं कालिओवएसेणं १।

६६ 'कालितोवदेसेण' ति इहाऽऽदिपदलोवो दट्ठव्वो, तस्सुच्चरणे 'दीहकालितोवदेसेण' ति वत्तव्वं। दीह- आयत, कालितो त्ति विसेसणं। कस्स? उच्यते-उवदेसस्स, जहा जिणभवणे मुहुत्तकालितो दीहकालितो वा पूयामहवो कतो तहा दीहकालितोवदेसेण ति भाणितव्वो। उवदिसणमुवदेसो, उपदेसो त्ति वा आदेसो त्ति वा पण्णवण त्ति वा परूवण त्ति वा एगट्ठा। दीहकालिओ उवदेसो दीहकालिओवदेसो, तेण दीहकालितोवदेसेण जस्स सण्णा भवति सो आदिपदलोवातो कालिओवदेसेण सण्णीत्यर्थः। अहवा कालियं-आयारादि सुत्तं तदुवदेसेण सण्णी भण्णति। सो य इमेरिसो-जो य अतीतकाले सुदीहे वि [जे० २०६ द्वि०] इदं तदिति कृतमणुभूतं वा सुमरति, वट्टमाणे य इंदिय णोइंदिएण वा अण्णतरं सद्दाइअत्थमुवलद्धं अण्णतं वइरेगधम्मेहिं ईहइ त्ति ईहा। तस्सेव परधम्मपरिच्चागे सधम्माणुगतावधारणे य 'अवोहो' त्ति अवातो। विसेसधम्मण्णेसणा मग्गणा, जहा मधुर-गंभीरत्तणतो एस संखसद्द इति। वीसस-प्पयोगुब्भवणिच्चमणिच्च चेत्यादि गवेसणा। जो यऽणागते य चिंतयति 'कहं वा तं तत्थ कातव्वं?' इति अण्णोण्णालंबणाणुगतं चित्तं चिंता। आत-पर इह-परत्थयहिता ऽहितविमरिसो वीमंसा। अहवा 'किमेयं?' ति ईहा। णिच्छयावधारितो अत्थो अवोधो। अभिलसियत्थस्स मणो-वयण-काएहिं जायणा मग्गणा। अभिलसितत्थे चेव अपहुप्पज्जमाणे गवेसणा। अणेगहा सकप्पकरणं चिंता। द्वन्द्वमर्थेषु वीमंसा, जहा णिच्चमणिच्चं हितमहितं थूरं कुञ्चं थोवं बहु इत्यादि। अहवा संकप्पतो चेव विविधा आमरिसणा वीमंसा। अहवा 'अवोहो' त्ति अवातो। सेसा ईहाएगट्ठिया। जस्सेव अण्णयरविकप्पेण मणोदव्वमणुगतं चित्तं धावति एस कालिओवदेसेण सण्णि त्ति। सो य अणते मणोजोगे खंधे घेत्तुं मणेति, एतलद्धिसपण्णो मणविण्णाणावरणखयोवसमजुत्तत्तणतो य जहा चक्खुमतो पदीवादिप्पगासेण फुडा रूवोवलद्धी भवति तहा मणखयोवसमलद्धिमतो मणोदव्वपगासेण मणोछट्ठेहिं इंदिएहिं फुडमत्थं उवलभतीत्यर्थः। कालितोवदेससण्णीविवक्खे असण्णी, जहेह अविसुद्धचक्खुमतो मंदमंदप्पगासे रूवोवलद्धी असुद्धा एवं सम्मुच्छिमपचेंदियअसण्णिस्स, उक्कोसखयोवसमे वि अप्पमणोदव्वग्गहणसामत्थे मंदपरिणामत्तणतो य असण्णिणो अविसुद्धमप्पा य अर्थोपलब्धीत्यर्थः। ततो वि अविसुद्धा चतुरिंदियाणं, ततो तेइंदियाणं, ततो वि अविसुद्धा बेइंदियाण अत्थुवलद्धी। जस्स य जइ इंदिया स तहा तेसु अवग्गहादिसु पवत्तते। विगलिंदियाण वि आदेसतरतो मणोदव्व[जे० २०७ प्र०]ग्गहणं असुद्धमप्पत्तणतो य भाणितव्वं। सो य मणो तेसिं अमणो चेव दट्ठव्वो, असुद्धत्तणतो, असीलवद् अँशनवद्वा। तयो बेइंदियेहिंतो वि समीवातो अव्वत्ततरं विण्णाणं एगिंदियाणं, जहा मत्त मुच्छिय विसमावितस्स य तहा एगिंदियाण सव्वधा मणाभावे विण्णाणं सव्वजहण्णं। कालितोवदेससण्णिणो एते सम्मुच्छिमादयो सव्वे असण्णी भवतीत्यर्थः १॥ इदाणिं—

६७ से किं तं हेऊवएसेणं? हेऊवएसेणं जस्स णं अत्थि अभिसंधारणपुव्विया

---

१ स्सऽत्थि खं० सं० ल० शु ॥ २ अवोहो जे मो मु ॥ ३ सण्णीति जे मो० मु ॥ ४ स्स णत्थि ख सं० शु ल० ॥ ५ अवोहो जे० मो० मु० ॥ ६ ण्णी ल° ख सं० डे० ल शु० ॥ ७ आत्म-परेह-परत्रजहिता ऽहितविमर्श इत्यर्थः ॥ ८ इप्पण्णमाणे दा । हुच्चमाणे आ० ॥ ९ त्त वा धावति एस जे आ दा० । धावति इति पाठस्तु मो० चूर्ण्यादर्शगतो ज्ञेयः ॥ १० मद्देतुत्तणतो आ० दा ॥ ११ गासा रूवो आ० ॥ १२ अघनवद्वा आ ॥ १३ जस्सऽत्थि खं० सं० ल० शु० ॥

करणसत्ती से णं सण्णीति लब्भइ, जस्स णं णत्थि अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती से णं असण्णि त्ति लब्भइ। से त्तं हेऊवएसेणं २।

६७. 'हेतूवदेसेणं' ति हेतुः कारणं निमित्तमित्यनर्थान्तरम्, 'उवदेसेणं' ति पूर्ववत्। हेतूतो सण्णा भवति त्ति जेण तेण सो हेतुउवदेसेण सण्णी भवति। 'जस्स' त्ति जीवस्स, 'णं' वाक्यालंकारे देसीवयणओ वा आत्मस्वरूपप्रदर्शनवचनोपन्यासे वा; अव्यक्तेन विज्ञानेन अभिसन्धार्य पूर्वं ततः विज्ञानस्यैव 'करणशक्तिः' करणं–क्रिया शक्तिः–सामर्थ्यं, अथवा करणे शक्तिः करणशक्तिः, अथवा करण एव शक्तिः करणशक्तिः। तच्च अभिसंधारणं संचित्य संचिंत्य इट्ठेसु विसयवत्थूसु आहारादिसु पवत्तंते, अणिट्ठेसु य णियत्तंते। एवं सदेहपरिपालणहेतो पवत्तंति। ते य पायं पडुप्पण्णकाले, ण तीता-ऽणागतकालावलंबिणो भवंति, उस्सण्णमेवं, केयिं तु तीता-ऽणागतकालावलंबिणो वि भवंति, ते पुण ण दीहकालाणुसारिणो। किंच—तेसु वि आगतो सुहुमो संताणचोदको अविस्सरणहेतू दट्ठव्वो। एवं ते विकलेंदिया सम्मुच्छिमपंचेंदिया या(य) हेतुवायसण्णी भणिता, ते पडुच्च असण्णी जे णिचेट्ठा इट्ठा-ऽणिट्ठविसय[अ]विणियट्टवावारा मत्त-मुच्छिय-विसोवयुत्तादिसारिच्छचेतणट्ठिता पुढवादिएगिंदिया इत्यर्थः २॥

इदाणिं—

६८. से किं तं दिट्ठिवाओवएसेणं? दिट्ठिवाओवएसेणं सण्णिसुयस्स खओवसमेणं सण्णी लब्भति, असण्णिसुयस्स खओवसमेणं असण्णी लब्भति। से त्तं दिट्ठिवाओवएसेणं ३। से त्तं सण्णिसुतं ३। से त्तं असण्णिसुतं ४।

६८. दिट्ठिवाओवदेसेणं ति दृष्टिः–दर्शनम्, वदनं वादः, उपदेशनमुपदेश इति, अनेन दृष्टिवादोपदेशेन संज्ञीत्यभिधीयते। सो य सम्मद्दिट्ठी सण्णी, तस्स सम्मद्दिट्ठिणो सण्णिस्स जं सुतं तं सण्णिसुतं, तेण सण्णिसुतखयोवसमभावेण जुत्तत्तणतो दिट्ठिवातसण्णी लब्भति। अहवा दिट्ठिवायसण्णि त्ति मिच्छत्तस्स [जे० २०७ द्वि०] सुतावरणस्स य खयोवसमेणं कतेणं सण्णिसुतस्स लंभो भवति, एवं सो दिट्ठिवातसण्णी लब्भति, तस्स सुतं दिट्ठिवातसण्णिसुतमित्यर्थः। तं खयोवसमियभावत्थं समदिट्ठिं सण्णिं पडुच्च मिच्छद्दिट्ठी असण्णी भणितो। सो य मिच्छत्तस्सुदयतो अस्सण्णी भवति, तस्स सुतं असण्णिसुतं। तं च सुतअण्णाणावरणखयोवसमेणं लब्भति, एवं दिट्ठिवातअसण्णीत्यर्थः, तस्स सुतं दिट्ठिवातअसण्णिसुतं। एवं दिट्ठिवाते सण्णि-असण्णिसु सुतखयोवसमभावो(वा) सुतं घेतव्वं इति। पर आह–खयोवसमभावट्ठित(तो) सण्णित्तणतो लक्खिज्जति खाइगभावट्ठितो केवली किण्ण सण्णि? त्ति, उच्यते–अतीतभावसरणत्तणतो पडुप्पण्णभावाण य बुज्झणतो अणागतभावचिंतणतो य सण्णि त्ति, तं तहा जिणे अणुसरणं णत्थि, जेण सो सव्वदा सव्वधा सव्वत्थ सव्वभावे जाणतीत्यर्थः, तम्हा केवली णोसण्णीणोअसण्णी भवति। पुनरप्याह परः–इह मिच्छादिट्ठिणो वि केयिं हिता-ऽहितनाणवावारसण्णासंजुत्ता दीसंति किं ते असण्णिणो भणिता? उच्यते–तस्स जा सण्णा सा जतो कुच्छिता, जहेह कुच्छितवयणमवयणं कुच्छितसीलमसीलं वा, तहा तस्स सण्णा कुच्छितत्तणतो असंण्णेव दट्ठव्वा, अण्णं च तस्स मिच्छत्तपरिग्गहातो नाणमनाणमेव दट्ठव्वं। भणितं च—

---

१ सण्णि त्ति ल° डे० शु०। सण्णी ल° ख० स० जे०॥ २ असण्णी ल° ख० स० डे० ल० शु०॥ ३ 'हेतुवाओवदेसेणं' आ० दा०॥ ४ सण्णी भवति आ० दा०॥ ५ एवं तेसिं विकलेंदियाणं सम्मुच्छिमपंचेंदियाण या हेतुवायसण्णा भणिता आ० दा०॥ ६-७ °वादोव° स०। °वातोव° स०॥ ८ °स्सुययतो जे०॥ ९ °भावसुतं आ० दा०॥

"सदसदविसेसणातो०" [विशेषा० गा० ११५] गाहा। कंठा। एवं पि ते असण्णी। आह-एगिंदियाण ओहसण्णा चेव अतो ते असण्णी चेव, तेहिंतो बेइंदियाइ जाव सम्मुच्छिमपचेंदी एते विसिट्ठतरसण्णाए हेतुवायसण्णी भणिता, कालितोवदेस पुण पडुच्च ते वि असण्णी, विण्णाणअविसिट्ठत्तणतो, दिट्ठिवातोवदेस पुण पडुच्च कालिकोपदेसा वि असण्णी अविसिट्ठत्तणतो चेव, अतो णज्जति दिट्ठिवातसण्णी सव्वुत्तमो, सुत्ते य उवरिं ठवितो, जुत्त
5 मेतं, कालिय हेतुसण्णीण पुण उक्कमकरण कम्हा? उच्यते-सव्वत्थ सुत्ते सण्णिग्गहण जं कत तं कालितोवदेस सण्णिस्स, अत सर्वत्र तत्सव्यवहारज्ञापनार्थं आदौ कालि[जे० २०८ प्र०]कग्रहण कृतमित्यर्थं। किंच-सण्णि असण्णीण समनस्का ऽमनस्का इति क्रमश्च दर्शितो भवति, अत्र विकलेन्द्रिया अमनस्का इति अल्पमनोद्रव्यग्रहणसामर्थ्यम्, प्रतिविद्यते पुनर्मनस्तेषाम्। यस्मादुक्तम्—

कृमि-कीट-पतङ्गाद्या समनस्का जङ्गमाश्चतुर्भेदा०। अमनस्का पञ्चविधा पृथिवीकायादयो जीवा ॥ १ ॥
10 [ ] इति ॥

भणित सण्णि-असण्णिसुत ३। ४। इदाणिं सम्म मिच्छासुत। तत्थ सुत्त—

६९ [१] से किं त सम्मसुत? सम्मसुत ज इम अरहतेहिं भगवतेहिं उप्पण्णणाणदसणधरेहिं तेलोक्कचहित-महिय पूइएहिं तीय-पडुप्पण्ण मणागयजाणएहिं सव्वण्णूहिं सव्वदरिसीहिं पणीय दुवालसंग गणिपिडग, त जहा—आयारो १ सूयगडो २ ठाण ३ समवाओ
15 **४ विवाहपण्णत्ती ५ णायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइ १० विवागसुत ११ दिट्ठिवाओ १२।**

[२] इच्चेय दुवालसगं गणिपिडग चोद्दसपुव्विस्स सम्मसुत, अभिण्णदसपुव्विस्स सम्मसुत, तेण पर भिण्णेसु भयणा। से त्त सम्मसुत ५।

६९ [१] से किं त सम्मसुत्तेत्यादि। 'ज' इति अणिद्दिट्ठस्स गहण, 'इम' ति पच्चक्खभावे। वदण-
20 नमसण-पूयणादि अरहतीति अरहता, अरिणो वा हता अरिहता। तेसिं गुणसपदाए विसेसण—'भगवतेहिं' धम्म-जस-अत्थ-लच्छी-पयत्त विभवा एते छ प्पदत्था भगसण्णा, ते जेसिं अत्थि ते भगवतो। केवलनाण-दसणाण आवरणक्खते केवलणाण दसणा उप्पज्जति, ते य जुगवमुप्पण्णे सव्वमणागतद्ध जधुप्पण्णसरूवे णिरावरणे सव्वदव्वगुण-पज्जव विसेस-सामण्णविसए वि जुगवपवत्ते णाण-दसणधरे ते तेहिं नाण-दसणेहिं तीयद्धाए सव्वदव्व-गुणभावे जाणति, तहा पडुप्पण्णे अणागते य जाणति, तिकालजे दव्व भावे य पडुप्पण्णे काले जाणतीत्यर्थ। हिंसद्दो
25 सर्ववचनेषु करणार्थे बहुवचनप्रतिपादक। तेलोक ति-तिण्णि लोगा तेलोकं, ते य ऊर्ध्वा-ऽधस्तिर्यक्, अत्र तन्निवासिग्रहणम्। भवनवासिनो अहेलोगनिवासी, वणयर-जोति-तिरियच-मणुस्सा तिरियलोकनिवासी, ऊर्ध्वं वैमानिका।

---

१ ण्णा तदप्पत्ततो ते असण्णी आ० दा ॥ २ एतेसिं दूरतरसण्णीए हेतुवा आ० ॥ ३ अवरिं जे ॥ ४ रत्यापनार्थे आ ॥ ५ तत्थ सम्मसुत आ दा० ॥ ६ क्कनिरिक्खित महित-पूइएहिं सर्वासु सूत्रप्रतिषु हरिभद्र-मलयगिरिवृत्त्योश्च। चूर्णिकृत्सम्मत सूत्रपाठो नोपलभ्यते कुत्राप्यादर्शे। केवलं अनुयोगद्वारेषूपलभ्यते चूर्णिकृत्सम्मतः सूत्रपाठ [पत्रं १७-१]॥ ७ पडुप्प मो मु० ॥ ८ दसीहिं सं० ॥ ९ चउदस ल० ॥ १० णो मं मु० स डे० ल० ॥ ११ ण्णमणिधिसए जे० ॥

एवं प्रायोवृत्त्या अहेलोइयग्रामसंभवाद् वाच्यम्। 'चहितं' ति चाहितं प्रेक्षितं निरीक्षितं दृष्टमित्यनर्थान्तरम्, त्रैलोक्येन [जे० २०८ द्वि०] चहिता–मनोरथदृष्टिदृष्टा, अथवा गोशीर्षचन्दनादिना चर्चिता। त्रैलोक्यस्य मनोहिता महिता, अथवा महिमाकरणेन महिता, सा च महिमा महाजनसमुदयेन गीत-नृत्य-नाटकाद्यनेकप्रेक्षणकरणविधानैः। अणलिय-मणवज्ज-सब्भूतत्थ-विसारयवयणेहिं थुता पूइया। अथवा अन्योन्यविषयप्रसिद्धा ह्येते एकार्थवचना। 'पणीतं' ति तिसततिसट्ठपवादिमते अभूतत्थरूवे वज्जेऊण इमं जहत्थं दुवालसंगं पणीतं, जह णवणीतं दहियातो, भूतत्थेण वा जुत्तं प्रकरिसेण णीतं प्रणीतं। 'दुवालसंगं' इत्यादि कंठं। 5

इहंगगतं आयारादि, अणंगगतं च आवस्सगादि। एतं सव्वं दव्वट्ठितणयमतेण सामिणा असंबद्धं पंचत्थिकाया इव णिच्चं सम्मसुतं भण्णति। अहवा एतं चेव दुवालसंगादि सामिणा संबद्धं भयणिज्जं सम्मसुतं मिच्छसुतं वा उच्यते–सम्मद्दिट्ठिस्स सम्मसुतं, मिच्छदिट्ठिस्स मिच्छसुतं। इमं चेव सुतपरिमाणतो णियमिज्जति—

[२] जो चोद्दसपुव्वी तस्स सामादियादि बिंदुसारपज्जवसाणं सव्वं नियमा सम्मसुतं, ततो ओमत्थगपरिहाणीए जाव अभिण्णदसपुव्वी एताण वि सामाइयादि सव्वं सम्मसुतं सम्मगुणत्तणतो चेव भवति। मिच्छद्दिट्ठी पुण मिच्छणुभावत्तणतो अभिन्नदसपुव्वे ण पावति, दिट्ठंतो जहा अभव्वो अभव्वाणुभावत्तणतो ण सिज्झतीत्यर्थः। 'तेण परं' ति अभिण्णदसपुव्वेहिंतो हेट्ठा ओमत्थगपरिहाणीए जाव सामादितं ताव सव्वे सुतट्ठाणा सामिसम्मगुणत्तणतो सम्मसुतं भवति, ते चेव सुतट्ठाणा सामिमिच्छगुणत्तणतो मिच्छसुतं भवति ५॥ इदाणिं मिच्छसुतं— 10

७०. [१] से किं तं मिच्छसुतं? मिच्छसुतं[3] जं इमं अण्णाणिएहिं मिच्छद्दिट्ठिएहिं[5] सच्छंदबुद्धि-मतिविगप्पियं[6], तं जहा–भारहं रामायणं हंभीमासुरक्खं[7] कोडिल्लयं[8] सगभद्दियाओ[9] खोडमुहं[10] कप्पासियं नागसुहुमं[11] कणगसत्तरी[12] वइसेसियं[13] बुद्धवयणं वेसितं[14] कविलं[15] लोगायतं[16] सट्ठितंतं माढरं पुराणं[17] वागरणं[18] णाडगादी, अहवा बावत्तरिकलाओ चत्तारि य वेदा संगोवंगा। 15

१ वा। कहं तं चेव सम्मसुयं मिच्छसुयं वा? उच्यते आ० दा०। वा। कहं? उच्यते जे०॥ २-३ मिच्छासुयं डे० ल० मो० मु०॥ ४ इत आरभ्य चत्तारि य वेदा संगोवंगापर्यन्तं सूत्रमिदं समग्रमपि अनुयोगद्वारेषु वर्तते [सू० ४१]॥ ५ मिच्छदिट्ठीहिं जे० मो० मु० विना॥ ६ °विगप्पि° जे० मो० मु०॥ ७ हंभीमासुरुक्खं ख० डे० शु०। दंभीमासुरुक्खं मो०। भीमासुरुक्खं जे० मु०। "भंभीयमासुरुक्खे माढर कोडिल्लदंडनीतिसु।" अस्य व्यवहारभाष्यगाथांशस्य मलयगिरिकृता व्याख्या—"भम्भ्याम् आसुवृक्षे माढरे नीतिशास्त्रे कौटिल्यप्रणीतासु च दण्डनीतिषु ये कुशला इति गम्यते।" [व्यवहार० भाग ३ पत्र १३२], अत्र प्राचीनासु व्यवहारभाष्यप्रतिषु "हंभीयमासुरक्खं" इति पाठो वर्त्तते। "आभीयमासुरक्खं भारह-रामायणादिउवएसा। तुच्छा असाहणीया सुयअण्णाण ति ण बेंति॥३०३॥ [संस्कृतच्छाया-] आभीतमासुरक्षं भारत-रामायणाद्युपदेशाः। तुच्छा असाधनीया श्रुताज्ञानमिति इद ब्रुवन्ति॥३०३॥ [भावार्थ-] चौरशास्त्र तथा हिंसाशास्त्र, भारत, रामायण आदिके परमार्थशून्य अत एव अनादरणीय उपदेशोंको मिथ्याश्रुतज्ञान कहते हैं।" [गोम्मटसार-ज्ञानकाण्ड पत्र ११०]। "निघण्टे निगमे पुराणे इतिहासे वेदे व्याकरणे निरुक्ते शिक्षायां छन्दस्विन्यां यज्ञकल्पे ज्योतिषे सांख्ये योगे क्रियाकल्पे वैशिके वैशेषिके अर्थविद्यायां बार्हस्पत्ये आश्चर्ये आसुर्ये मृगपक्षिरुते हेतुविद्यायाम्" इत्यादि [ललितविस्तरे परि० १२ ३३ पञ्चानन्तरम् पत्र १०८]॥ ८ कोडिल्लयं मो० मु०॥ ९ सयभ° डे० ल०। सद्दभ° शु०। सगडभ° मु०। अनुयोगद्वारेषु सगभद्दियाओ सतभद्दियाओ इत्येते नामान्तरे अपि ग्रन्थान्तरेषु दृश्येते॥ १० घोडमुहं शु०। ल० मु० प्रत्योरेतन्नाम नास्ति। अनुयोगद्वारेषु पुनः घोडगमुहं, घोटयमुहं, घोडयसहं, घोडयमुयं इति नामान्तराण्यपि ग्रन्थान्तरेषु दृश्यन्ते॥ ११ नागसुहुमं डे० ल० अनु०॥ १२ कणगसत्तरी नामानन्तरं रयणावली इत्यधिकं नाम शु०॥ १३ वतिसे° शु०॥ १४ तेसियं ल० शु० डे० ल० मो०। तेरासियं मु०॥ १५ काविलियं डे० ल० मो० मु०। काविलं अनु०॥ १६ लोगायतं मु०॥ १७ पोराणं ल०॥ १८ वागरणं इति नामानन्तरं भागवतं पायंजली पुस्सदेवयं लेहं गणियं इत्यधिकः पाठः डे० ल० शु०, नायं पाठः अनुयोगद्वारेष्वपि॥

[२] इच्चेताइं सम्मद्दिट्ठिस्स सम्मत्तपरिग्गहियाइं सम्मसुयं। इच्चेयाइं मिच्छद्दिट्ठिस्स मिच्छत्तपरिग्गहियाइं मिच्छसुतं।

[३] अहवा मिच्छद्दिट्ठिस्स वि एयाइं चेव सम्मसुयं, कम्हा? सम्मत्तहेउत्तणओ, जम्हा ते मिच्छदिट्ठिणो तेहिं चेव समएहिं चोइया समाणा केइ सपक्खदिट्ठीओ वमेंति। से त्तं 5 मिच्छसुयं ६।

७० [१] से किं तं मिच्छसुतं इत्यादि। अण्णाण इतेहिं [जे० २०९ प्र०] अण्णाणितेहिं। अण्णाण–अबोधो विवरीयत्थबोधो वा तेण इतो–अणुगतेत्यर्थः। मिच्छादिट्ठि इतेहिं मिच्छादिट्ठितेहिं, मिच्छ त्ति–अनृतं, दिट्ठि त्ति–दरिसणं, मिच्छादिट्ठिणा अणुगतेहिं ति भणितं भवति। स–इत्यात्मनिर्देशः, छन्द–अभिप्रायः, तत्थमतत्थेण वा अत्थस्स जो बोहो स बुद्धि–अवग्रहमात्रम्, उत्तरत्र ईहादिविकप्पा सव्वे मती। अहवा नाणावरणखयोवसमभावो 10 बुद्धी, सो चेव जदा मणोदव्वणुसारतो पवत्तइ तदा मती भण्णति। एवं आत्माभिप्रायबुद्धि-मतिभिः यच्छ्रुतं विविधकल्पनाविकल्पितमिति रचितं, तं च भारथादि जाव चत्तारि य वेदा संगोवगा, सव्वेते लोगसिद्धा, लोगतो चेवेतेसिं सरूवं जाणितव्वं। एतं सव्वं मिच्छभावट्ठितं ति कातुं मिच्छसुतं भाणितव्वं। एतम्मि सम्म मिच्छसुत विकप्पे चतुरो विकप्पा भाणितव्वा इमेण विधिणा—

[२] सम्मसुतं सम्मदिट्ठिणो सम्मसुतं चेव १, सम्मसुतं मिच्छदिट्ठिणो मिच्छसुतं २, मिच्छसुतं सम्मदिट्ठिणो 15 सम्मसुतं ३, मिच्छसुतं मिच्छदिट्ठिणो मिच्छसुतं चेव ४। 'इच्चेताइं सम्मद्दिट्ठिस्स सम्मत्तपरिग्गहिताइं सम्मसुतं' एत्थ सुत्ते पढम-तइयविकप्पा दट्ठव्वा। 'इच्चेयाइं' ति सम्म मिच्छसुताइं, अहवा मिच्छसुताइं चेव। सेसं कंठं। 'मिच्छदिट्ठिस्स' इच्चादिसुत्ते बितिय-चतुत्थविकप्पा दट्ठव्वा। तत्थ पढमविकप्पे सम्मसुतं सम्मत्तगुणेण सम्मं परिणामयतो सम्मसुतं चेव भवति १ बितियविकप्पे वि जहा खडसजुतं खीरं पित्तजरोदयतो ण सम्मं भवइ तहा मिच्छत्तुदयतो सम्मसुते मिच्छाभिणिवेसतो मिच्छसुतं भवति २ ततियविकप्पे तिफलादिमणिट्ठं पि उवउत्तं उवका 20 रकारित्तणतो सम्मं भवति तहा मिच्छसुते मिच्छभावोवलभातो सम्मसुते दढतरभावुप्पायकरणत्तणतो तं से सम्मसुतं भवति ३ चरिमविकप्पे मिच्छसुतं, तं चेव मिच्छाभिणिवेसतो मिच्छसुतं चेव भवति ४।

[३] तस्स वा मिच्छदिट्ठिणो तं चेव मिच्छसुतं सम्मसुतं भवति। कम्हा एवं भण्णति? उच्यते–परिणामविसेसतो, जम्हा ते मिच्छदिट्ठिणो 'तेहिं [जे० २०९ द्वि०] चेव' पुव्वावरविरुद्धेहिं मिच्छसुतभणितेहिं 'चोदिता' भणिता 'समाणा' इति सन्तः, चोदणाणंतरं आत्मकालावस्थाया सन्त इत्यर्थः। पुव्वं जं सासणं पडिवण्णो तं से 25 सपक्खो, तम्मि जा दिट्ठी तं 'वमेंति' परिच्चयंति, छड्डेंति त्ति वुत्तं भवति। जम्हा एवं तम्हा तं पुव्वमिच्छसुतं सम्मसुतं से भवति। परं आह–तत्त्वावगमसंभावसामण्णे सम्मत्त-सुताणं को पतिविसेसो जेण भण्णति 'सम्मत्त परिग्गहिताइं सम्मसुतं'? उच्यते–जहा णाण-दंसणाणं अवबोधसामण्णे भेदो तहा सम्म-सुताणं पि भविस्सति।

१ एयाणि चेव सम्मं सर्वासु सूत्रप्रतिषु। वृत्तिकृद्भिरयमेव सूत्रपाठः सम्मतोऽस्ति॥ २ एयाइं मिच्छं सर्वासु सूत्रप्रतिषु। वृत्तिकृतोरयमेव सूत्रपाठः सम्मतः॥ ३ °च्छद्दिट्ठिपरि° ख॥ ४ मिच्छासुयं डे० मो० मु०। अपि च–सम्यक्श्रुत-मिथ्याश्रुतविवेचकोऽयं सूत्रांशः सर्वासु सूत्रप्रतिषु चूर्ण्योरपि च क्रमव्यत्यासेन वर्त्तते॥ ५ एयाइं चेव इति खं० सं० जे० डे० ल० शु० नास्ति। श्रीहरिभद्राचार्यैरपि नास्त्ययं पाठः स्वीकृतः॥ ६ हिया तेहिं डे० ल० विना॥ ७ ससमएहिं जे०॥ ८ चयंति जे० मो०। श्रीमलयगिरिपादैरेतत्पाठानुसारेणैव व्याख्यातमस्ति॥ ९ मिच्छासुयं डे० मो० मु०॥ १० तत्थ आतत्थेण वा अत्थस्स आ० दा०॥ ११ त्मकलावस्थाया स आ०॥ १२ तस्सेव पक्खो जे०॥ १३ सब्भाव आ० दा०॥

कहं ? उच्यते—जहा विसेसाणं बोधमवात-धारणे नाणं, अवग्रहेहाबोधे च दंसणं तहा इमं । तत्ते जा रुती तं सम्मत्तं, तत्थेव जं रोचकं तं सुतं । एवं मिच्छत्तपरिग्गहे वि वत्तव्वं ६ ॥ इदाणिं सादि-सपज्जवसाणे—

७१. से किं तं सादीयं सपज्जवसियं ? अणादीयं अपज्जवसियं च ? इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं विउच्छित्तिणयट्ठयाए सादीयं सपज्जवसियं, अविउच्छित्तिणयट्ठयाए अणादीयं अपज्जवसियं ।　5

७१. से किं तं सादीयं इत्यादि । इह पज्जातट्ठितो वोच्छित्तिणतो, तस्स मतेणं दुवालसंगं पि सादि सपज्जवसाणं । कहं ? जहा णरगादिभवमवेक्खातो जीवो व्व । दव्वट्ठितो पुण अव्वोच्छित्तिणतो, तस्स मयेणं दुवालसंगं पि 'अणादि अपज्जवसाणं च' त्रिकालवस्थायी, जहा पंचत्थिकाय व्व ॥ एसेवऽत्थो दव्वादिचतुक्कं पडुच्च चिंतिज्जति । तत्थ—

७२. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ ।　10 **तत्थ दव्वओ णं सम्मसुयं एगं पुरिसं पडुच्च सादीयं सपज्जवसियं, बहवे पुरिसे पडुच्च अणादीयं अपज्जवसियं १ । खेत्तओ णं पंच भरहाइं पंच एरवयाइं पडुच्च सादीयं सपज्जवसियं, पंच महाविदेहाइं पडुच्च अणादीयं अपज्जवसियं २ । कालओ णं ओसप्पिणिं उस्सप्पिणिं च पडुच्च सादीयं सपज्जवसियं, णोउस्सप्पिणिं णोओसप्पिणिं च पडुच्च अणादीयं अपज्जवसियं ३ । भावओ णं जे जया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति**　15 **दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ते[10] तहा पडुच्च सादीयं सपज्जवसियं, खाओवसमियं पुण भावं पडुच्च अणादीयं अपज्जवसियं ४ ।**

७२. दव्वतो सम्मसुतं एगपुरिसे सादि जं पढमताए पढति; सपज्जवसाणं देवलोगगमणातो, गेलण्णातो वा णट्ठे, पमादेण वा, केवलणाणुप्पत्तितो वा, मिच्छादंसणगमणतो वा सपज्जवसाणं, अहवा एगपुरिसस्सेव सादिसपज्जवसाणत्तणतो । दव्वतो चेव बहवे पुरिसे पडुच्च अणादि अपज्जवसाणं, अण्णोण्णट्ठितसंताणाविच्छेयत्तणतो,　20 मणुयत्तणं व जहा । खेत्ततो भरहेरवएसु तित्थगर-धम्म-संघातियाण उप्पाद-वोच्छेदत्तणतो सादि सपज्जवसाणं, महाविदेहेसु अवुच्छेदत्तणतो [अणादि अपज्जवसाणं] । कालतो ओसप्पिणीए [जे० २१० प्र०] तिसु, उस्सप्पिणीए दोसु सायंतं, णोओसप्पिणिणोउस्सप्पिणिततियं महाविदेहकालपलिभागं पडुच्च तिसु वि कालेसु अवट्ठितत्तणतो अणादि अपज्जवसाणं । इदाणि भावतः—'जे' इति अणिद्दिट्ठस्स णिद्देसो । 'जदा' इति काले पुव्वण्हे अवरण्हे वा. दिया रातो वा पुव्विं जिणेहिं पण्णत्ता भावा, पच्छा त एव गोतमादिभिः 'आघविज्जंती'त्यादि,　25

१ साणं अवोधिअवातकरणे णाण आ० मो० ॥ २ इच्चेइयं मो० मु० ॥ ३ वुच्छि° मो० मु० ॥ ४ अवुच्छि° मो० मु० ॥ ५ तत्थ इति पद स० स० डे० ल० शु० नास्ति ॥ ६ पराव° स० शु० ॥ ७ पंच विदेहाइं ल० ॥ ८ णं उस्सप्पिणिं ओसप्पिणिं च जे० मो० मु० । नाय पाठश्चूर्णि-वृत्तिकृतां सम्मत ॥ ९ णोओसप्पिणिं णोउस्सप्पिणिं च ल० । हारि०वृत्तौ पाठदुसारेण व्याख्यातमस्ति ॥ १० ते तया भावे पडुच्च जे० डे० मो० । ते भावे पडुच्च ल० । चूर्णिकृता ते तदा पडुच्च इति पाठान्तरनिर्देशेन सह ते तहा पडुच्च इति पाठ आदृतोऽस्ति । वृत्तिकृद्‌द्वया पुन ते तया पडुच्च इत्येव पाठोऽङ्गीकृतोऽस्ति ॥

'आघविज्जति' आख्यायन्ते सामण्णतो [विसेसतो] विसेससामण्णतो वा, पण्णविज्जति भेदमभेदेहिं, तेसिं भेदम भेदाण सरूवमक्खाण परूवणा, दसिज्जति उवमामेत्तेण जहा गो तहा गवय इति, णिदसण हेतु दिट्ठतेहिं, उवदसणा उवणयोवसघारेहिं सव्वणएहिं वा। अहवा एगट्ठिता एते। 'ते' इति पण्णवणिज्जाण णिद्देसो। 'तहा' इति पण्णवग पण्णवणिज्जे वा पडुच्च सादि सपज्जवसाण भवति। तत्थ पण्णवग पडुच्च उवयोगतो सरविसेसतो पयत्तयो आसण विसेसतो य सादि सपज्जवसाण। पण्णवणिज्जे पडुच्च गतीतो ठाणतो दुपदेसादिभेदतो तहेगपदेसादिमवगाहतो एगसमयादिमवत्थाणतो वण्णादिपज्जवे य आसज्ज सादि सपज्जवसाण। पाढतर वा "ते तदा पडुच्च" 'तया' इति काल अनाद्यपर्यवसितम्। भावत॰ श्रुतज्ञान क्षायोपशमिके भावे नित्य वर्तते स्वामित्वसम्बन्ध इति।

७३ अहवा भवसिद्धीयस्स सुय साईय सपज्जवसिय, अभवसिद्धीयस्स सुय अणादीय अपज्जवसिय।

७३ अहवा सादि सपज्जवसाण सपडिपक्खपदेसु भगचतुक्के पढमभंगे सम्मसहितसुतभावो चिंतेयव्वो, अणेगविह वा खयोवसमभाव पडुच्च दव्वादिउवयोग वा पडुच्च पढमभगो भवति। बितियभगो सुण्णो, अहवा अभव्वाण अणागतद्धसजोगेण सुतभावो भाणितव्वो। चरिम-ततियभगेसु अविसिट्ठसुतभावो अभव्व भव्वे पडुच्च जोएतव्वो। अभवसिद्धीयस्स इत्यादि सुतसिद्ध। इह चरिम-ततियभगेसु अणादिसुतभावो दिट्ठो सुताधि कारतो, इधरा मतिभावो वि दट्ठव्वो, मति-सुताण अण्णोण्णाणुगतत्तणतो। सो य अणादिणाणभावो जहण्णो अजहण्ण[जे० २१० द्वि०]मणुक्कोसो वा हवेज्ज, उक्कोसो ण भवति, कम्हा? जम्हा उक्कोसनाणभावो केवलिणो भवति॥ तस्स य सुत्ते इम पमाण पढिज्जति—

७४ सव्वागासपदेसग्ग सव्वागासपदेसेहिं अणतगुणिय पज्जवंग्गक्खर णिप्फज्जइ।

७४ सव्वागासपदेस इत्यादि सुत्र। सव्वमिति—अपरिसेससव्वग्ग अधिकिच्चेव भण्णति, सव्व आकास सव्वाकास, सव्वागासस्स पदेसा सव्वागासपदेसा, ज एतेसिं अग्ग—ज परिमाण ति वुच भवति, एत सव्वागासप्प देसरासियग्ग अणतेण रासिणा अण्णेण गुणित ताहे ज रासिपमाण लब्भति त सव्वपज्जवाण अग्ग भवति। पज्जाया णाम—एक्केक्कस्साऽऽगासपदेसस्स जावतो अगरुलहुयादी पज्जवा ते पण्णाए सव्वे सपिंडिता, तेसिं सपिंडिताण ज अग्ग एतप्पमाण अक्खर लब्भति।

[अक्खरपडल]

इह अक्खर ति दुविह- णाण अकारादिदव्वसुतक्खर च। तत्थ नाणमक्खर ति अविसेसतो सव्वनाणमक्खर, जम्हा त जीवातो उप्पण्ण अणण्णभावत्तणतो णो क्खरति चि, इह पुण सव्वपज्जायतुल्लत्तणतो केवलणाण घेत्तव्व, जम्हा केवल सव्वदव्वपज्जायविण्णत्तिसमत्थ भवति। त च केवल णेये पवत्तइ, तस्स वि परिमाण इमेण चेव विधिणा भाणितव्व—'सव्वागासपदेसग्ग' इत्यादि पूर्ववत्। ते य सव्वदव्वपज्जाया समासतो तीस इमेण विधिणा—गुरु लहू गुरुलहू अगुरुलहू एते चतुरो, पच वण्णा, दो गधा, पच रसा, अट्ठ फासा, अणित्थत्थ सठाणसहिता छ सठाणा, एते मुत्तदव्वे सव्वे समवति। अमुत्तदव्वेसु अगुरुलहू चेव एको पज्जायो सभवइ।

१ आघविज्जति' त्ति प्राकृतशैल्या आख्यायन्ते सामान्य विशेषाभ्यां कथ्यन्त इत्यर्थ इति हारि॰नन्दिवृत्तौ। 'अग्घविज्जति' त्ति प्राकृतत्वाद् आख्यायन्ते सामान्यरूपतया विशेषरूपतया वा कथ्यन्ते इत्यर्थ इति मलय॰नन्दिवृत्तौ॥ २ सायि सप खं। साई सप ल॰॥ ३ पज्जवक्खरं जे मो मु विशेषावश्यके २६८ पत्रे नन्दिसूत्रपाठोद्धरणे। नायं पाठश्चूर्णि वृत्तिकृतां सम्मतः॥

एत्थ य एक्केक्के भेदे अणंता भेदा संभवंति । किंच मुत्तदव्वेसु णतविसेसतो अणियोगधरा अट्ठावीसं मूलपज्जाए भणंति । कहं ? उच्यते–ते चेव तीसं सव्वगुरु-लहुपज्जाएहिं विहूणा । जतो भणितं—

> निच्छयतो सव्वगुरुं सव्वलहुं वा ण विज्जते दव्वं ।
> ववहारतो तु जुज्जति बादरखंधेसु णऽण्णेसु ॥ १ ॥ [कल्पभा. गा. ६५]

णिच्छयणयमतेण सव्वधा गुरुं लहुं वा नत्थि दव्वं । जदि हवेज्ज तो तस्स पडमाणस्स ण विरोधो केणइ 5 हवेज्ज, सव्वलहुस्स वा उप्पयमाणस्स, जतो य णिच्चपडणं उप्पयणं वा ण विज्जति तम्हा [जे० २११ प्र०] सव्वधा गुरुं लहुं वा दव्वं नत्थि । ववहारणयादेसेणं पुण दो वि अत्थि, जहा–सव्वगुरु कोडिसिला वज्जं वा, सव्वलहुं च धूम-उलुगपत्तादी । एवं ववहारणयादेसतो बादरपरिणामपरिणतेसु खंधेसु गुरुभावो लहुभावो य भवति । 'णऽण्णेसु' त्ति ण सुहुमपरिणामेसु त्ति वुत्तं भवति ॥

के पुण सुहुमपरिणता दव्वा ? के वा बादरपरिणता ? उच्यते–परमाणूतो आरद्धं एगुत्तरवड्ढितेसु ठाणेसु 10 जाव सुहुमो अणंतपदेसिओ खंधो, एतेसु ठाणेसु सुहुमपरिणता दव्वा लब्भंति, एतेसिं च अगरुलहुपज्जाया भवंति । बादरो पुण परमाणूतो आरब्भ जाव असंखेज्जपदेसितो खंधो ताव ण लब्भति, परतो बादरपरिणामो खंधो लब्भति, सो य जहण्णो वि अणंतपदेसिओ नियमा भवति, तातो एगुत्तरवड्ढिया अणंता अणंतट्ठाणावडिया बादरा खंधा । ते य ओराल-विउव्वा-ऽऽहार-तेयवग्गणासु भवंति, णियमा य ते गुरुलहुपज्जाई भवंति । सीसो पुच्छति–जे रूविगुरुलहू दव्वा अगुरुलहू य तेसिं के थोवा बहू वा ? उच्यते–थोवाणि गुरुलहुदव्वाणि, तेहिंतो 15 रूवीअगरुलहुयदव्वा अणंतगुणा । कहं पुण ते अणंतगुणा भवंति ? उच्यते–थूराणं अणंतपदेसिताणं खंधाणं सट्ठाणे अणंतातो वग्गणातो, सुहुमाणं पि अणंतातो वग्गणातो, थूरवग्गणठाणेहिंतो उवरिं भासादिवग्गणट्ठाणेसु एक्केक्के अणंतातो वग्गणातो, हेट्ठतो वि थूरवग्गणट्ठाणाणं परमाणूणं एक्का वग्गणा, एवं जाव दसपदेसियाणं संखेज्जपदेसियाणं संखेज्जातो वग्गणातो, असंखेज्जपदेसिताणं असंखेज्जाओ वग्गणाओ, एतेणं कारणेणं गुरुलहुदव्वेहिंतो रूवीअगरुलहुदव्वाणि अणंतगुणाणि भवंति । आदेसतरेण वा बादरठाणेसु वि सुहुमपरिणामो अविरुद्धो त्ति 20 भाणितव्वो । उक्तं च—

> गुरुलहुदव्वेहिंतो अगरुलहूपज्जया अणंतगुणा ।
> उभयपडिसेहिता पुण अणंतकप्पा [जे० २११ द्वि०] बहुविकप्पा ॥ २ ॥ [कल्पभा. गा. ६७]

गुरुलहुपज्जायजुत्ता जे दव्वा तेसिं चेव जे गुरुलहुपज्जाया तेहिंतो रूविअगरुलहुयदव्वाण जे अगरुलहुयपज्जाया ते आधारअणंतगुणत्तणतो अणंतगुणा एव भवंतीत्यर्थः । 'उभयपडिसेधिता णाम' अगरुयलहुया । 25 'पुण' विसेसणे । किं विसेसेति ? उच्यते–अरूविदव्वाधारा इत्यर्थः । अहवा 'उभयपडिसेधिता णाम' बादरसुहुमभाववज्जिता जे दव्वा, अरूविण इत्यर्थः । तेसु 'अणंतकप्पा णाम' अणंतप्पकारा । कहं ? उच्यते–आकासत्थिकाए देस-पदेसपरिकप्पणाए, एवं धम्मादिसु वि । 'बहुविकप्प' त्ति तेसिं अणंतकप्पाणं एक्केक्को अणंतप्पकारो । कहं पुण ? उच्यते–जम्हा एक्केक्के आगासप्पदेसे अणंता अगरुलहुयपज्जाया भवंति तम्हा ते बहुविकप्प त्ति । ते य सव्वण्णुवयणतो सद्धेया इति ॥ 30

१ 'पज्जाया भवंति आ० दा० ॥ २ अस्या गाथाया एतदुत्तरार्द्धमेव कल्पभाष्ये वर्त्तते ॥ ३ अविरूविण जे० । अवरुविण दा० ॥ ४ णाम' पक्केक्का अणंत' आ० दा० ॥

रूवि-अरूविदव्वाण य पज्जायअप्पबहुत्तं इमं भण्णति–रूविदव्वाण जे य अगरुलहुपज्जाया ते पण्णाछेदेण पिंडिता, एतेहिंतो एक्कस्स चेव अमुत्तदव्वस्स जे अगरुयलहुपज्जाया ते अणंतगुणा भवतीत्यर्थः । एत्थ सीसो भणति–केवतितेहिं पुण भागेहिं मुत्तदव्वाण पिंडितपज्जाएहिंतो अमुत्तदव्वाण अगुरुलहुपज्जाया अणंतगुणा भवंति? उच्यते–नास्त्यत्र परिमाणं, बहुधा वि अणंतएण गुणिज्जमाणे अमुत्तदव्वपज्जाएसु णत्थि परिमाणं ॥

5 एवगते परिमाणार्थे इमं भण्णति—

केण हवेज्ज निरोधो अगरुलहूपज्जयाण तु अमुत्ते ? ।
अच्चंतमसंजोगो जहित पुण तव्विवक्खस्स ॥ ३ ॥ [कल्पभा गा ६९]

जतो अमुत्तदव्वाण बहुहा वि अणंतएण गुणिज्जमाणे पज्जायग[1] ण भवति । ततो 'केनेति' केनान्येन प्रकारेण 'हवेज्ज' त्ति भवे 'णिरोहो णाम' परिमाणं ? परिच्छेदेत्यर्थः, किं मुत्तदव्वेहिंतो अमुत्तदव्वाण अगरुयल-
10 हुपज्जायपरिमाणं भविस्सति ? त्ति, नेत्युच्यते, 'अच्चंतमसंजोगो' 'अच्चंतं' अतीव अंयुज्जमाणो[2] जम्हा संजोगो। [जे० २१२ प्र०] 'जहिय' ति यत्र। 'पुण' विसेसणे। किं विसेसयति ? रूविदव्वे। तदित्यनेन अमुत्तदव्वपक्खो, तस्स विवक्खो–मुत्तदव्वपगारो, तेसु पज्जायथोवत्तणतो अमुत्तदव्वेसु य पज्जायाण अतीवबहुयत्तणतो, अतो मुत्त-दव्वेहिंतो अमुत्तदव्वपज्जायाण परिमाणकरणसंजोगो एगतेणेव ण जुज्जते, ण घटतेत्यर्थः ॥

एवं तु अणंतेहिं अगरुलहूपज्जएहिं संजुत्तं ।
15 होति अमुत्तं दव्वं अरूविकायाण तु चतुण्हं ॥ ४ ॥ [कल्पभा गा ७०]

'एवमिति' यथेदमुक्तं । सेसं कंठं । णवरिं 'अरूविकाताण तु चतुण्ह' ति धम्मा ऽधम्मा ऽऽगास-जीवाण ति एतेसिं चतुण्ह वि नियमा पत्तेयं अणंता अगरुयलहुयपज्जाया भवंति । कहं ? उच्यते–जम्हा एतेसिं एक्केक्को पदेसो अणंतेहिं अगरुयलहुयपज्जाएहिं संजुत्तो तम्हा धम्मा ऽधम्मेगजीवस्स य असंखेज्जपदेसत्तणतो असंखेज्जमणंता पत्तेयं भवंति । आगासपदेसअपरिमाणत्तणतो पुण तस्स नत्थि परिमाणं, तहा वि सव्ववहारतो अणंता उक्ता इत्यर्थः ॥

20 एवं ताव ज्ञेयमनंतमुक्तम् । अथेदानीं तत् केवलज्ञानं यथाऽनन्तं तथेदमुच्यते—

उवलद्धी० गाहा । [कल्पभा गा ७१] सव्वे रूविदव्वा ऽरूविदव्वाण य जावतिया गुरुलहुपज्जाता सव्वे अरूविदव्वाण य जे अगरुलहुपज्जाया एते सव्वे जुगवं जाणति पासति य जतो, एवमणंतं केवलणाणमक्खरं ति समसगमभिहितम् ।

इदाणिं 'अकारादिदव्वसुतमक्खरं' ति जति अविसेसतो णाणमक्खरमुक्तं णेयं वा तहा वि रूढिवसतो जहा
25 पकप्प तहा सरक्खरं वंजणक्खरं वण्णक्खरं वा भण्णति । तत्थ 'सरक्खरं' अक्खरं अक्खरं सरति–गच्छति सरति वा इत्यतो सरक्खरं अकारादि, वंजणस्स वा फुडमभिधाणं सरति, ण वा सरक्खरमंतरेण अत्थो समरिज्जइ त्ति सरक्खरं। ककारादि वंजणक्खरा, व्यज्यते तेनार्थ इति प्रदीपेन घटादिवद् व्यंजनाक्षरम् । तेहिं चेव सर-वंजणक्खरेहिं जदा अत्थो वण्णिज्जति अभिलप्यते वा तदा ते वण्णक्खरं भण्णति । इह एक्केक्कस्स अकारादिहकारांतमक्खरस्स[3] स-परप-ज्जायभेदा इमे–अकारस्स य पज्जाया जहा दीह ह्रस्व-प्लुतास्त्रय, तत्थ दीहो [जे० २१२ द्वि०] उदात्ता ऽनुदात्त-स्व-
30 रितैंभेद[4], एव ह्रस्व-प्लुतावपि, पुनरप्येकैको सानुनासिको निरनुनासिकश्च, इत्येवं अष्टादशभेदः । एवं सेसक्खराण वि जहासंभवं भेदा भावितव्वा । अहवा सरविसेसतो एक्केक्कमक्खरस्स अणंता सपज्जया । एत्थ अकारस्स

१ पज्जायग जे दा ॥ २ अपुज्जमाणो आ० ॥ ३ तलरक्खरस्स आ० दा ॥ ४ तन्निभेदः, जे दा ॥

अकारजातीसामण्णतो सपज्जाया अट्ठारस, सेसा परपज्जाया, एवं संखेज्जा पज्जाया । अहवा अकारादिसरा ककारादिवंजणा केवला अण्णसहिता वा जं अभिलावं लभे स तस्स सपज्जायो, सेसा तस्स परपज्जाया, ते य सव्वे वि अणंता । जतो सुते भणितं–"अणंता गमा अणंता पज्जया" । [सू० ८५ तः ९४ आदि] भणितं च—

पण्णवणिज्जा० गाहा [कप्पभा. गा. ९६४] । अक्खरलंभेण०-गाहा [विशेषा. गा. १४३] । अणभिलप्पाण अभिलप्पा अणंतभागो, तेसिं पि अणंतभागो सुतनिबद्धो इति । अहवा अकारादिअक्खराण पज्जाया सव्वदव्वपज्जायरासिप्पमाणमेत्ता भवंति । कहं ? उच्यते–जे अभिलावतो संजुत्ता-ऽसंजुत्तेहिं अक्खरेहिं उदत्ता-ऽणुदत्तेहि य सरेहि जावतिए अभिलावे अभिलप्पे य लभति ते सव्वे तस्स सपज्जया, सेसा सव्वे तस्सेव परपज्जया । आकासं मोत्तुं सव्वस्स सपज्जएहितो परपज्जया अणंतगुणा । आकासस्स सपज्जएहिंतो परपज्जया अणंतभागे । पर आह–कहं तस्सेव परपज्जया य ? णणु विरुद्धं, उच्यते–सव्वक्खराण घडाइवत्थुणो वा दुविहा पज्जया चिंतिज्जंति–संबद्धा असंबद्धा य । तत्थ अकारस्स अकारपज्जया अकारभावत्तणतो अत्थित्तेण संबद्धा, घडागारावस्थायां घटपर्यायवत्; ते चेव णत्थित्तेणं असंबद्धा, नत्थित्तस्स अभावत्तणतो, जहा घटाकारावस्थायां मृत्पर्यायवत् । अकारे इकारादिपर्याया णत्थित्तेण संबद्धा, अकारे णत्थित्तभावत्तणतो, जहा मृदवस्थायां पिंडाकारपर्यायवत्; ते चेव अत्थित्तेण असंबद्धा, अत्थित्तअभावत्तणतो, घटाद्यवस्थायां पटपर्यायवत् । एवं अक्खरेसु घडाइपज्जाया वि चिंतणिज्जा, घडादिसु य अका(? क्ख)रपज्जाया, इच्चेवं एक्केक्कमक्खरं सव्वपज्जायमं ॥ [जे० २१३ प्र०]

एवं सर्वात्मकाः सर्वपर्यायाः, अतो भण्णति–सव्वागासपदेसग्गं अणंतगुणितं पज्जवग्गं अक्खरं निप्फज्जति ॥ एवं नाणक्खरं अकारादिअक्खरं णेयअक्खरं च तिण्णि वि अणंताऽभिहिता । एत्थ नाणक्खरं जं तं जीवस्स संसारत्थस्स ण कताइ ण भवति त्ति । जतो भणितं —

७५. सव्वजीवाणं[3] पि य णं अक्खरस्स अणंतभागो णिच्चुग्घाडियओ[4], जति पुण सो[5] वि आवरिज्जा[6] तेणँ[7] जीवो अजीवत्तं[8] पावेज्जा[9]।

सुट्ठु वि मेहसमुदए होति पभा चंद-सूराणं।

से त्तं सादीयं सपज्जवसियं । से त्तं अणादीतं अपज्जवसितं ७।८।९।१०।

७५. सव्वजीवाणं पि य णं इत्यादि सुत्तं । सव्वजीवग्गहणे वि सति 'अवि' पदत्थसंभावणे, किं संभावयति ? इमं–सिद्धे मोत्तुं, चसद्दतो य भवत्थकेवली मोत्तुं । 'णं'कारो वाक्यालंकारे । अक्खरं ति–नाणं, तस्स अणं-

१ °रेसु णत्थित्तभावत्तणतो घडाइपज्जाया आ० दा० । °रेसु घडेसु घड इव पज्जाया मो० ॥ २ °ज्जायमयं । एवं आ० दा० । °ज्जायमयं । एवं सर्वत्रकाः सर्व° मो० ॥ ३ द्वादशारनयचक्रवृत्तौ इद सूत्रमित्थं वर्त्तते—सव्वजीवाणं पि य णं अक्खरस्स अणंततमो भागो णिच्चुग्घाडितओ ।

तं पि जदि आवरिज्जिज्ज तेण जीवा अजीवतं पावे । सुट्ठु वि मेहसमुदये होइ पभा चंद-सूराणं ॥१॥

अन्तरं च नयचक्रग्रन्थान्तरे अणंतभागो इति जीवो अजीवत्तं इति च पाठभेदोऽप्युपलभ्यते ॥ ४ °डिओ स० चूर्णि च विना ॥ ५ अत्र चूर्णिकृता चूर्णौ जति पुण सो वि वरिज्जेज्ज इत्यादि गाथैवोल्लिखिताऽस्ति, नयचक्रोद्धरणेऽपि पाठभेदेन गाथैव दृश्यते, सम्मार्श्वाकृतसूत्रप्रतिषु ये विविधा पाठभेदा वर्त्तन्ते, यच्च पाठस्य स्वरूपमीक्ष्यते, एतत्सर्वविचारणेन सम्भाव्यते यदत्र सूत्रे गाथैव भवता समस्ति । वृत्तिकृद्भिराचार्यैः पुनरत्र किं गद्यं गाथा वा मान्याऽस्ति? इति न सम्यगवगम्यते, तथापि वृत्तिस्वरूपावलोकनेन गाथैव तेषां सम्मतेति सम्भाव्यते ॥ ६ सो वि वरिज्जेज्जा स० शु० । सो वाऽऽवरिज्जेज्ज स० ॥ ७ तेणं जे० मो० मु० ॥ ८ अजीवतं स० ॥ ९ पावेज्ज स० ॥ १० सादि सप° स० शु० । सआदि सप° स० ॥

तभागो निच्चुग्घाडियतो, सो केवलस्स न समवति, केवलस्स अविभागसपुण्णत्तणतो य, ओधीए वि ण समवति, अणतभागस्स अभावत्तणतो, अवधे[1] असख्येयप्रकृतिसमवादित्यर्थ , मणपज्जवनाणे वि रिजु विपुलदुभेदसभवतो अणतभागो ण भवति, किंच अवधि-मणपज्जवाण णिच्चुग्घाडअभावत्तणतो इह अणधिकारो, परिसिट्ठे मति-सुते त्ति 'अक्खरस्स अणतभागो निच्चुग्घाडियओ' अधिकतसुतस्स वा अक्खरस्स अणतभागो निच्चुग्घाडियतो। जत्थ सुत तत्थ मतिणाण पि घेत्तव्व । 'णिच्च' ति सव्वकाल । 'उग्घाडिततो' त्ति णाऽऽवरिज्जति । सो य अणतभागो पुढवादिएगिंदियाण वि पचण्ह निच्चुग्घाडो, अहवा सव्वजहण्णो अणतभागो निच्चुग्घाडो पुढविक्काइए, चैतन्यमात्रमात्मन । त च उक्कोसथीणिद्धिसहितनाण-दसणावरणोदए वि णो आवरिज्जति ।

जति पुण सो वि वरिज्जेज्ज तेण जीवो अजीवय पावे । सुट्ठु वि मेहसमुदए होति पहा चद-सूराण ॥१॥
[कल्पभाष्ये गा ७४]

जम्हा सो णाऽऽवरिज्जति तम्हा जीवो जीवत्त ण परिच्चयति । सो य कम्हा णाऽऽवरिज्जति ? उच्यते–दव्वसभावसरूवत्तणतो। इह दिट्ठतो जहा—सुट्ठु वि मेहच्छादिए णभे चद सूरप्पहा मेहपडले भेत्तु दव्वे ओभासति, तहा अणतेहिं णाण-दसणावरणकम्मपुग्गलेहिं एक्केक्को आतप्पदेसो आवेढियपरिवेढितो ते कम्मावरणपडले भेत्तु नाणस्स अणतभागो उव्वरति, [जे० २१३ द्वि०] ततो य से अव्वत्त नाणमक्खर सव्वजहण्ण भवति । ततो पुढविकाइतेहिंतो आउकातियाण अणतभागेण विसुद्धतर नाणमक्खर, एव कमेण तेउ-वाउ-वणस्सति बेइदिय तेइदिय-चउरिंदिय-असण्णिपचेंदिय-सण्णिपचेंदियाण य विसुद्धतर भवतीत्यर्थ । ७ । ८ । ९ । १० ॥ भणित सादि सपज्जवसित अणादि अपज्जवसित च । एत्थेव पसगतो अक्खरपडल भणित ।

एव बहुवचव्व अक्खरपडल समासतोऽभिहित । वित्थरतो से अत्थ जिण-चोद्दसपुव्विया कहए ॥ १ ॥

[॥ अक्खरपडल सम्मत्त ॥]

इदाणिं गमिया-ऽगमिय—

७६ से किं त गमिय ? गमिय दिट्ठिवाओ । अगमिय कालिय सुय । से त्त गमिय । से त्त अगमिय ११ । १२ ।

७६ गमबहुलत्तणतो गमिय । तस्स लक्खण—आदि-मज्झ ऽवसाणे वा किंचिविसेसजुत्त सुत्त दुगादिसतग्गसो तमेव पढिज्जमाण गमिय भण्णति, त च एवविहमुस्सण्ण दिट्ठिवातो । अण्णोण्णक्खराभिधाणट्ठित ज पढिज्जति त अगमिय, त च प्रायसो आयारादि कालियसुत ११ । १२ ॥

उक्त गमिया ऽगमिय । इदाणिं अगा ऽणग-पविट्ठ—त च गमिया ऽगमिय चेव समासतो अगा ऽणगपविट्ठ भण्णति । कह ? उच्यते—सव्वसुतस्स तब्भावतगतत्तणतो ।

७७ अहवा त समासओ दुविह पण्णत्त, त जहा–अगपविट्ठ अगेबाहिर च ।

७७ अहवा अरिहतमग्गोवदिट्ठाणुसारि सुत ज त समासतो दुविह इत्यादि सुत्त ।

---

१ पडलं आ० दा० ॥ २ परथ बहु आ० दा० ॥ ३ अहवा इति खं० सं० ल० शु० नास्ति ॥ ४ दु ब अंग° जे० ॥ ५ अणगपविट्ठ च खं० सं० डे० ल० शु० ॥

पायदुगं जंघोरू गातदुगद्धं तु दो य बाहूयो । गीवा सिरं च पुरिसो बारसअंगो सुतविसिट्ठो ॥ १ ॥
[ ]

इच्चेतस्स सुतपुरिसस्स जं सुतं अंगभावभागट्ठितं तं अंगपविट्ठं भण्णति । जं पुण एतस्सेव सुतपुरिसस्स वइरेगट्ठितं तं अंगबाहिरं ति भण्णति । अहवा—

गणहरकतमगगतं जं कत थेरेहिं बाहिरं तं च । णियतं वंगपविट्ठं अणियत सुत बाहिरं भणितं ॥ १ ॥ 5
[ ]

७८. से किं तं अंगबाहिरं ? अंगबाहिरं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—आवस्सगं च आवस्सगवइरित्तं च ।

७९. से किं तं आवस्सगं ? आवस्सगं छव्विहं पण्णत्तं, तं जहा—सामायियं १ चउवीसत्थओ २ वंदणयं[3] ३ पडिक्कमणं ४ काउस्सग्गो[4] ५ पच्चक्खाणं ६ । से त्तं आवस्सयं । 10

७८-७९. से किं तं अंगबाहिरमित्यादि । कंठं ॥

८०. से किं तं आवस्सयवइरित्तं ? आवस्सयवइरित्तं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—कालियं च उक्कालियं च ।

८०. आवस्सगवतिरित्तं दुविहं—कालियं उक्कालियं च । तत्थ 'कालियं' जं दिण-रातीणं पढमचरिमपोरिसीसु पढिज्जति । जं पुण कालवेलवज्जं पढिज्जति तं उक्कालियं ॥ तत्थ— 15

८१. से किं तं उक्कालियं ? उक्कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा—दसवेयालियं १ कप्पियाकप्पियं २ चुल्लकप्पसुतं ३ महाकप्पसुतं ४ ओवाइयं[5] ५ रायपसेणियं[6] ६ जीवाभिगमो ७ पण्णवणा ८ महापण्णवणा ९ पमायप्पमादं १० नंदी ११ अणुओगदाराइं १२ देविंदत्थओ १३ तंदुलवेयालियं १४ चंदावेज्झयं १५ सूरपण्णत्ती १६ पोरिसिमंडलं १७ मंडलप्पवेसो १८ विज्जाचरणविणिच्छओ १९ गणिविज्जा २० झाणविभत्ती २१ मरणविभत्ती २२ आयविसोही २३ वीयरायसुतं २४ संलेहणासुतं २५ विहारकप्पो २६ चरणविही २७ आउरपच्चक्खाणं २८ महापच्चक्खाणं २९[7] । से त्तं उक्कालियं । 20

८१. उक्कालियं अणेगविहं दसवेयालियादि । कप्पमकप्पं च जत्थ सुते वण्णिज्जति तं कप्पियाकप्पियं २ । कप्पं जत्थ सुते वण्णितं तं कप्पसुतं, अणेगविहचरणकप्पणाकप्पयं [जे० २१४ प्र०] च कप्पसुतं । तं दुविह—चुल्लं महंतं च । चुल्लं ति—लहुतरं अवित्थरत्थं अप्पगंथं च चुल्लकप्पसुतं ३ । महत्थं महागंथं च महा- 25

१-२ अणंगपविट्ठं न० स डे० ल० शु० ॥ ३ वंदणं ज० स० टे० ल० शु० ॥ ४ काओसग्गो ख० ॥ ५ "ओवाइय'ति [illegible] पाद पर्यन्ते औपपातिकम्" इति पाक्षिकसूत्रवृत्तौ । उववाइयं शु० सु० ॥ ६ रायपसेणीयं ज० । रायपसेणइयं टे० न० सु० ॥ ७ ॰क्खाण २९ पवमाइ । से त्तं जे० मो० मु० । पवमाइ इति सूत्रपदं चूर्णि-वृत्तिकृद्भिर्नास्ति व्याख्यातम् । अपि च [illegible] प्रतौ अग्रार्थे "टीकायामिद न दृश्यते" इति टिप्पनकमपि वर्तते ॥

कप्पसुत ४। एमेव [पंण्णवणा] पण्णवणत्थो सवित्थरो ८। अण्णे य सवित्थरत्था जत्थ भणिता सा महा पण्णवणा ९। मज्जादियो पचविहो पमातो, तेसु चेव आभोगपुव्विया उवरती अप्पमातो, एते जत्थ सवित्थरत्था दसिज्जति तमज्झयण पमादप्पमादं १०। सूरचरित पण्णविज्जते जत्थ सा सूरपण्णत्ती १६। पुरिसो चि-सङ्कू पुरिससरीर वा, ततो पुरिसातो निप्फण्णा पोरिसी, एव सव्वस्स वत्थुणो जदा स्वप्रमाणा च्छाया भवति तदा
5 पोरिसी भवति, एत पोरिसिप्रमाण उत्तरायणस्स अते दक्खिणायणस्स य आदीए एक्क दिण भवति, अतो पर अट्ठ एकसट्ठिभागा अगुलस्स दक्खिणायणे वड्ढति, उत्तरायणे य ह्रस्सति, एव मडले मडले अण्णोण्णा पोरिसी जत्थ अज्झयणे दसिज्जति तमज्झयण पोरिसिमडल १७। चदस्स सूरस्स य दाहिणुत्तरेसु मडलेसु जहा मडलातो मडले पवेसो तहा वण्णिज्जति जत्थऽज्झयणे तमज्झयण मडलप्पवेसो १८। विज्ज त्ति-नाण, चरण-चारित्त, विविधो विसिट्ठो वा णिच्छयो-सब्भावो स्वरूपमित्यर्थ , फल वा निच्छयो, त जत्थऽज्झयणे वण्णिज्जति तमज्झयण विज्जा
10 चरणविणिच्छयो १९। सबाल-वुड्ढाउलो गच्छो गणो, सो जस्स अत्थि सो गणी, विज्ज त्ति-णाण, त च जोइसनिमित्तगत णातु पसत्थेसु इमे कज्जे करेति, त जहा-पव्वावणा १ सामाइयारोवण २ उवट्ठावणा ३ सुतस्स उद्देस-समुद्देसा ऽणुण्णातो ४ गणारोवणं ५ दिसाणुण्णा ६ खेत्तेसु य णिग्गम पवेसा ७, एमाइया कज्जा जेसु तिहि करण-णक्खत्त-मुहुत्त-जोगेसु य जे जत्थ करणिज्जा [जे० २१४ द्वि०] ते जत्थऽज्झयणे वण्णिज्जति तमज्झयण गणिविज्जा २०। थिरमज्झवसाण झाण, विमयण विभत्ती, सभेद झाण जत्थ वण्णिज्जति अज्झयणे तमज्झयण
15 झाणविभत्ती २१। मरण-पाणपरिच्चागो, विमयण-विभत्ती, पसत्थमपसत्थाणि सभेदाणि मरणाणि जत्थ वण्णिज्जति अज्झयणे तमज्झयण मरणविभत्ती २२। आत त्ति-आत्मा, तस्स विसोही तवेण चरणगुणेहिं य आलोयणाविहाणेण य जहा भवति तहा जत्थ अज्झयणे वण्णिज्जति तमज्झयण आतविसोही २३। सरागो वीतरागो य एतेसिं जत्थ सरूवकहणा, विसेसतो वीतरागस्स, तमज्झयण वीतरागसुत २४। वाघातो निव्वाघातो वा भत्तसलेहो कसायादिभावसलेहो य जो जहा कातव्वो तहा वण्णिज्जते जत्थऽज्झयणे तमज्झयण सलेहणासुत
20 २५। विहरण विहारो, तस्स कप्पो-विधि त्ति वुत्त भवति, सो जिणकप्पे थेरकप्पे वा, जिणकप्पे पडिम-अहालंद परिहारिया य दट्ठव्वा, एतेसिं सवित्थरो विधी जत्थ अज्झयणे [वण्णिज्जति] तमज्झयण विहारकप्पो २६। चरण-चारित्त, तस्स विही चरणविही, सभेदो चरणविही वण्णिज्जति जत्थ अज्झयणे तमज्झयण चरणविही २७। आउरो-गिलाणो, त किरियातीत णातु गीतत्था पच्चक्खावेंति, दिणे दिणे दव्वह्रास करेता अते य सव्वदव्वदात णताए भत्ते वेरग्ग जणेंता भत्ते नित्तण्हस्स भवचरिमपच्चक्खाण कारेंति, एत जत्थऽज्झयणे सवित्थर वण्णिज्जइ
25 तमज्झयण आउरपच्चक्खाण २८। थेरकप्पेण जिणकप्पेण वा विहरित्ता अते थेरकप्पिया बारस वासे संलेह करेत्ता, जिणकप्पिया पुण विहारेणेव [जे० २१५ प्र०] सलीणा तहा वि जहाजुत्तं सलेह करेत्ता निव्वाघात सचेट्ठा चेव भवचरिम पच्चक्खति, एत सवित्थर जत्थऽज्झयणे वण्णिज्जति तमज्झयण महापच्चक्खाण २९। एते अज्झयणा जहाभिधाणत्था भणिया ॥

उक्त उक्कालिय। इदाणिं कालिय—

30 **८२ से किं त कालियं? कालिय अणेगविहं पण्णत्त, त जहा—उत्तरज्झयणाइं १ दसाओ २ कप्पो ३ ववहारो ४ णिसीह ५ महाणिसीह ६ इसिभासियाइ ७ जबुद्दीवपण्णत्ती**

---

१ "जीवादीनां प्रज्ञापनं प्रज्ञापना" इति हारिभवृत्तौ ॥ २ कालिय अणगविहं? कालिय अणगविहं अणेग सं० खं० शु०। नाय पाठश्चूर्णि-वृत्तिकृतां सम्मतोऽस्ति ॥

८ दीवसागरपण्णत्ती ९ चंदपण्णत्ती १० खुड्डियाविमाणपविभत्ती ११ महल्लियाविमाणपविभत्ती १२ अंगचूलिया १३ वंग्गचूलिया १४ विवाहचूलिया १५ अरुणोववाए १६ गरुलोववाए १७ धरणोववाए १८ वेसमणोववाए १९ देविंदोववाए २० वेलंधरोववाए २१ उट्ठाणसुयं २२ समुट्ठाणसुयं २३ नागपरियाणियाओ २४ निरयावलियाओ २५ कप्पवडिंसियाओ २६ पुप्फियाओ २७ पुप्फचूलियाओ २८ वण्हीदसाओ २९। 5

८२. से किं तं कालियं इत्यादि सुत्तं। जं इमस्स निसीहस्स सुत्तत्थेहिं वितिथिण्णतरं तं महाणिसीहं ६। सोहम्मादिसु जे विमणा ते आवलितेतरट्ठिते पतिविभागेण विभयइ जमज्झयणं तं विमाणपविभत्ती भण्णति। ते य दो अज्झयणा—तत्थेगं सुत्तत्थेहिं संखित्ततरं खुड्डं ति ११, बितियं सुत्तत्थेहिं वितिथिण्णतरं महल्लं ति १२। अंगस्स चूलिता जहा—आयारस्स पंच चूलातो, दिट्ठिवातस्स वा चूला १३। वग्गो ति विवक्खावसातो अज्झयणादिसमूहो वग्गो, जहा अंतकडदसाणं अट्ठ वग्गा, अणुत्तरोववातियदसाणं तिण्णि वग्गा, तेसिं चूला 10 वग्गचूला १४। वियाहो भगवती, तीए चूला वियाहचूला, पुव्वभणितो अभणिओ य समासतो चूलाए अर्थो भण्यतेत्यर्थः १५। अरुणे णामं देवे तस्समयनिवद्धे अज्झयणे, जाहे तं अज्झयणं उवउत्ते समाणे अणगारे परियट्टेति ताहे से अरुणे देवे समयनिवद्धत्तणतो चलितासणे जेणेव से समणे तेणेव आगच्छित्ता ओवयति, ताहे समणस्स पुरतो अंतद्धिते कतंजली उवउत्ते सुणेमाणे चिट्ठति, समत्ते य भणति—सुभासितं, वरेह वरं ति, इहलोगणिप्पिवासे से समणे पडिभणति—ण मे वरेण अट्ठो त्ति, ताहे से पदाहिणं करेत्ता णमंसित्ता य पडिगच्छति १६। एवं गरुले 15

---

१ वंगचू° खं० सं० लं० शु० ॥ २ वियाह° शु० लं० ॥ ३ उववाएपदान्तानि सूत्रनामानि अस्मदादृतास्वष्टासु सूत्रप्रतिषु चूर्ण्यादर्शेषु हारि०वृत्तौ मलयगिरिवृत्तौ पाक्षिकसूत्रयशोदेवीयवृत्तौ च क्रमव्यत्यासेन न्यूनाधिकभावेन च वर्त्तन्ते। तथाहि—अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए धरणोववाए वेसमणोववाए वेलंधरोववाए देविंदोववाए उट्ठाण° जेसू० मोसू० मुसू०। अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए धरणोववाए वेलंधरोववाए देविंदोववाए वेसमणोववाए उट्ठाण° डे०। अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेलंधरोववाए देविंदोववाए वेसमणोववाए उट्ठाण° सं० शु०। अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेलंधरोववाए देविंदोववाए उट्ठाण° खं०। अरुणोववाए वेलंधरोववाए देविंदोववाए वेसमणोववाए उट्ठाण° लं०। अथ च—अरुणोववाए इति सूत्रनामव्याख्यानानन्तरं हरिभद्रवृत्तौ "एवं वरुणोववादादिसु वि भाणियव्वं" इति, मलयगिरिवृत्तौ च "एवं गरुडोपपातादिष्वपि भावना कार्या" इति, पाक्षिकसूत्रवृत्तौ च "एवं वरुणोपपात-गरुडोपपात-वैश्रमणोपपात-वेलन्धरोपपात-देवेन्द्रोपपातेष्वपि वाच्यम्" इति निर्दिष्टं दृश्यते। चूर्ण्यादर्शेषु पुनः पाठभेदत्रयं दृश्यते—१ श्रीसागरानन्दसूरिमुद्रिते चूर्ण्यादर्शे [पत्र ४९] "एवं गरुले वरुणे वेसमणे सक्क-देविंदे वेलंधरे य त्ति" इति, २ श्रीविजयदानसूरिसम्पादिते मुद्रितचूर्ण्यादर्शे [पत्र ९०-१] 'एवं वरुणे गरुले धरणे वेसमणे वेलधरे सक्के-देविंदे य त्ति" इति, ३ अस्माभिरादृते शुद्धतमे जेसलमेरुस्तके तालपत्रीयप्राचीनतमचूर्ण्यादर्शे च "एवं गरुले धरणे वेसमणे सक्के-देविंदे वेलधरे य त्ति" इति च। श्रीसागरानन्दसूरीयो वाचनाभेद आदर्शान्तरेषु प्राप्यते, श्रीदानसूरीयो वाचनाभेदस्तु नोपलभ्यते कस्मिंश्चिदप्यादर्शे इत्यत सम्भाव्यते—श्रीमद्विजयदानसूरिभिः मुद्रितसूत्रादर्श-चूर्ण्यादर्शान्तर-हारि०वृत्ति-पाक्षिकवृत्त्याद्यवलोकनेन पाठगलनसम्भावनया सूत्रनामप्रक्षेपः क्रमभेदश्चापि विहितोऽस्तीति। अस्माभिस्तु जेसलमेरीयचूर्णिग्रन्थानुसारेण सूत्रपाठो मूले स्थापितोऽस्तीति॥ ४ °परियावणियाओ जे० सं० डे० शु०। परियावलियाओ ?० मो० लं० ॥ ५ °याओ कप्पियाओ कप्पवडिं° सर्वासु सूत्रप्रतिषु। श्रीमता चूर्णिकृता कप्पियाओ इति नाम [illegible] नास्ति। [illegible]—सर्वास्वपि नन्दिसूत्रप्रतिषु एतन्नाम दृश्यते, श्रीहरिभद्रसूरि-मलयगिरिवृत्त्योः पाक्षिकसूत्रटीकायां [illegible] वर्त्तते। तथाहि—"'कप्पियाओ' त्ति सौधर्मादिकल्पगतवक्तव्यतागोचरा ग्रन्थपद्धतयः कल्पिका उच्यन्ते।" नन्दीहारि०वृत्तिः। [illegible] व्याख्या मलयगिरिवृत्तौ पाक्षिकटीकायां च वर्त्तते॥ ६ वण्हीदसाओ इति नाम्नः प्राक् वण्हीयाओ [illegible] नाम शु०। नेदं नाम चूर्णि-वृत्त्यादिषु व्याख्यातं निर्दिष्टं वाऽस्ति॥ ७ एवं गरुले वरुणे वेसमणे सक्के-देविंदे वेलंधरे य त्ति आ० मो०। एवं वरुणे गरुले धरणे वेसमणे वेलंधरे सक्के-देविंदे य त्ति दा० ॥

१७ धरणे १८ वेसमणे १९ सक्के-देविंदे २० वेलधरे २१ य त्ति। 'उट्ठाणसुत' ति अज्झयणं सिंगणाइयकज्जे जस्स णं गामस्स वा जाव रायहाणीए वा एगकुलस्स वा समणे आसुरुत्ते रुट्ठे उवउत्ते तं उट्ठाणसुतं त्ति अज्झयणं परियट्टेति एक्कं दो तिण्णि वा वारे ताहे से गामे वा जाव रायधाणी वा कुलं वा उट्ठेति, उव्वसइ त्ति वुत्तं भवति २२। से चेव समणे [जे० २१५ द्वि०] तस्स गामस्स वा जाव रायधाणीए वा तुट्ठे समाणे पसण्णे पसण्णलेस्से 5 सुहासणत्थे उवउत्ते समुट्ठाणसुतं परियट्टेइ एक्क दो तिण्णि वा वारे वाहे से गामे वा जाव रायहाणी वा आवासेति। समुवट्ठाणसुये त्ति वत्तव्वे वगारलोवातो समुट्ठाणसुये त्ति भणितं। अप्पणा पुव्वुट्ठियं पि कतसकप्पस्स आवासेति २३। 'णागपरियाणिय' त्ति अज्झयणे णाग त्ति-नागकुमारे, तेसु समयनिबद्धं अज्झयणं, तं जदा समणे उवउत्ते परियट्टेति तया अकतसंकप्पस्स वि ते णागकुमारा तत्थत्था चेव परियाणंति, वदंति णमंसंति भत्तिबहुमाणं च करेंति, सिंगणाइयकज्जेसु य वरया भवतीत्यर्थः २४। निरयावलियासु आवलियपविट्ठेतरे य निरया तग्गामिणो 10 य णर तिरिया पसंगतो वण्णिज्जंति २५। सोहम्मीसाणकप्पेसु जे कप्पविमाणा ते कप्पवडेंसया ते वण्णिता, तेसु य देवीओ जा जेण तवोविसेसेण उववण्णा ता वण्णिता, ताओ य कप्पवडेंसिया भणिया २६। संजमभाव विगसितो पुप्फितो, संजमभावविचुतोऽवपुप्फितो, अगारभावं परिच्चेच्चा पव्वज्जाभावेण विगसितो पच्छा सीयइ जो, तस्स इहभवे परभवे य विलवणा दंसिज्जइ जत्थ ता पुप्फिया २७। एसेवऽत्थो सविसेसो पुप्फचूलाए दंसिज्जति २८। अंधगवण्हिणो जे कुले ते अंधगसद्दलोवातो वण्हिणो भणिया, तेसिं चरियं गती सिज्झणा य 15 जत्थ भणिता ता वण्हिदसातो। दस त्ति-अवत्था अज्झयणा वा २९॥

८३ एवमाईयाइं चउरासीतीपइण्णगसहस्साइं भगवतो अरहओ उसहस्स आइतित्थयरस्स, तहा संखेज्जाणि पइण्णगसहस्साणि मज्झिमगाणं जिणवराणं, चोद्दस पइण्णगसहस्साणि भगवओ वद्धमाणसामिस्स। अहवा जस्स जत्तिया सिस्सा उप्पत्तियाए वेणतियाए कम्मयाए पारिणामियाए चउव्विहाए बुद्धीए उववेया तस्स तत्तियाइं पइण्णगसहस्साइं, पत्तेय 20 बुद्धा वि तत्तिया चेव। से त्तं कालियं। से त्तं आवस्सयवइरित्तं। से त्तं अणंगपविट्ठं।

८३ भगवओ उसभस्स चउरासीतिसमणसाहस्सीतो होत्था, पइण्णगज्झयणा वि सव्वे कालिय-उक्कालिया चतुरासीतिसहस्सा। कहं? जतो ते चतुरासीतिं समणसहस्सा अरहंतमग्गउवदिट्ठे जं सुतमणुसरित्ता किंचि णिज्जूहंते ते सव्वे पइण्णगा, अहवा सुतमणुस्सरतो अप्पणो वयणकोसल्लेण जं धम्मदेसणादिसु भासते तं सव्वं पइण्णगं, जम्हा अणंतगमपज्जयं सुत्तं दिट्ठं। तं च वयणं नियमा अण्णतरगमाणुपाती भवति तम्हा तं [जे० २१६ प्र०] 25 पइण्णगं। एवं चतुरासीती पइण्णगसहस्सा भवतीत्यर्थः। एतेण विधिणा मज्झिमतित्थगराणं संखेज्जा पइण्णगसहस्सा। समणस्स वि भगवतो जम्हा चोद्दस समणसाहस्सीतो उक्कोसिया समणसंपदा तम्हा चोद्दस पइण्णगज्झय

---

१ यातिं सं०॥ २ भगवओ अरहओ सिरिउसहसामिस्स, मज्झिमगाणं जिणाणं संखेज्जाणि पइण्णगसहस्साणि चोद्दस सं० डे०। भगवओ अरहओ उसहस्स समणाणं, मज्झिमगाणं इत्यादि सु०। भगवओ उसहदिसि (सिरि?)स्स समणस्स मज्झिमगाणं इत्यादि ख जे०। त्रयाणामप्येषां पाठभेदानां मज्झिमगाणं इत्याद्युत्तरांशेन समानत्वेऽपि नैकतरोऽपि पाठो सुपरिष्कृतो सम्मतः। वृत्तिकृद्भ्यां तु मूले आदृत एव पाठो गृहीतोऽस्ति। चूर्णिकृता पुनः सं डे पाठानुसारेण व्याख्यातमस्तीति सम्भाव्यते॥ ३ सिरिउसहसामिस्स आइ° सं०। अत्र चूर्णिकृता उसहस्स इति हरिभद्रसूरिणा सिरिउसहस्स इति मलयगिरिणा च सिरिउसहसामिस्स इति पाठोऽङ्गीकृतोऽस्ति॥ ४ सीसा सं० सं० चूर्णि विना॥

णगसहस्सा भवंति। अहवा 'जत्तिया सिस्सा' इत्यादि सुत्तं। इह सुत्ते अपरिमाणा पइण्णगा पइण्णगसामिअपरिमाणत्तणतो, किंच इह सुत्ते पत्तेयबुद्धप्पणीतं पइण्णगं भाणितव्वं। कम्हा? जम्हा पइण्णगपरिमाणेण चेव पत्तेयबुद्धपरिमाणं कीरइ त्ति भणितं 'पत्तेयबुद्धा वेत्तिया चेव' त्ति। चोदक आह–णणु पत्तेयबुद्धा सिस्सभावो य विरुज्झते? आचार्याह–तित्थगरपणीयसासणपडिवन्नत्तणतो तस्सीसा भवंतीत्यर्थः॥

भणितं कालितसुतं अंगबाहिरं च। इदाणिं अंगपविट्ठं—

८४. से किं तं अंगपविट्ठं? अंगपविट्ठं दुवालसविहं पण्णत्तं, तं जहा–आयारो १ सूयगडो २ ठाणं ३ समवाओ ४ वियाहपण्णत्ती ५ णायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइं १० विवागसुतं ११ दिट्ठिवाओ १२।

८४. से किं तं अंगपविट्ठं इत्यादि सूत्रम्॥

८५. से किं तं आयारे? आयारे णं समणाणं णिग्गंथाणं आयार-गोयर-विणय-वेणइय-सिक्खा-भासा-अभासा-चरण-करण-जाया-माया-वित्तीओ आघविज्जंति। से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा–णाणायारे १ दंसणायारे २ चरित्तायारे ३ तवायारे ४ वीरियायारे ५। आयारे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए पढमे अंगे, दो सुयक्खंधा, पणुवीसं अज्झयणा, पंचासीतीं उद्देसणकाला, पंचासीतीं समुद्देसणकाला, अट्ठारस पयसहस्साइं पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा। सासत-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जइ। से त्तं आयारे १।

८५. [से किं तं आयारे इत्यादि सुत्तं]। आयरणं आयारो। गोयरो–भिक्खागहणविधाणं। विणयो–णाणातियो तिविहो वायण्णविधाणो वा। वेणइया–सीसा, तेसिं जहा आसेवणासिक्खा। भासा–सच्चा असच्चामोसा य। अभासा–मोसा सच्चामोसा य। चरणं–"वतसमिति०" गाहा [　　　　]। करणं–"पिंडस्स जा

---

१ इह तित्थे अपरिमाणा इति पाठो मलयगिरिसूरिउद्धृतचूर्ण्युद्धरणे॥ २ सूयगड सं०॥ ३ वियाह° खं० विना॥ ४ वाइणा ल०॥ ५ चूर्णौ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, इति पाठो व्यत्यासेन व्याख्यातोऽस्ति॥ ६-७ °सीइं ल०॥ ८ °स्साति शु०। °स्साणि मो० मु०॥ ९ चूर्णिकृता एवंआया इति पाठो न गृहीतो न च व्याख्यातोऽस्ति, किन्तु श्रीहरिभद्रसूरिणा श्रीमलयगिरिणा च एष पाठो गृहीतोऽस्ति, साम्प्रतं च प्राप्तासु सर्वास्वपि नन्दीसूत्रसूत्रप्रतिषु एष पाठो दृश्यते। समवायाङ्गसूत्रवृत्तावभयदेवसूरिभिः एवंआया इति पाठो नन्दीसूत्रत्वेनाऽऽहृतो व्याख्यातश्चापि दृश्यते। तैरेव च तत्र स्पष्टं निर्दिष्टं यद्–असौ पाठो न समवायाङ्गसूत्रप्रतिषु वर्तत इति। एतच्चेदं सूचयति यत्–चूर्णिकारप्राप्तप्रतिभ्यो भिन्ना एव नन्दीसूत्रप्रतयो हरिभद्रादीनां समक्षमासन्, तथाऽभयदेवसूरिप्राप्तासु समवायाङ्गसूत्रप्रतिषु एष पाठो नासीत्। सम्प्रति प्राप्यमाणासु च समवायाङ्गसूत्रस्य कतिपयासु प्रतिषु दृश्यमान एष पाठोऽभयदेवसूरिनिर्दिष्ट-व्याख्यानपाठानुरोधेनाऽऽयात इति सम्भाव्यते॥ १० °वणया मा° सं० डे०॥ ११ आचारे ल०॥

विसोही०" गाहा [व्यव भा उ १ गा २८९]। जाय त्ति-संजमजत्ता, तस्स साहणत्थं आहारो मात त्ति-मात्राजुत्तो घेत्तव्वो। वर्तनं वृत्ती। एतं सव्वं आयारे 'आघविज्जइ' त्ति आख्यायते। सुत्तमत्थस्स य पदाणं वायणा सा परित्ता, अणंता ण भवति, आदि-अतोवलभत्तणतो। अहवा ओसप्पिणि-उस्सप्पिणिकालं वा पडुच्च परित्ता, तीता ऽणागत-सव्वद्धं च पडुच्च अणंता। उवक्कमादि णामादिणिक्खेवकरणं च अणियोगद्दारा, ते आयारे संखेज्जा, तेसिं पण्णव-
5 गवयणगोयरत्तणतो। वेढो-छंदजाती। 'पडिवत्तीओ' त्ति दव्वादिपदत्थब्भुवगमो पडिमा ऽभिग्गहविसेसा य पडिवत्तीओ, ते समासतो सुत्तपडिबद्धा संखेज्जा। तिविहा जेण णिक्खेवमादिनिज्जुत्ती तेण संखेज्जा। णव बंभचेरा पिंडेसणा सेज्जा इरिया भासज्जाया वत्थेसणा पातेसणा [जे० २१६ द्वि०] ओग्गहपडिमा सत्तसत्तिक्कया भावणा विमोत्ती, एते एव णिसीहवज्जा पणुवीसं अज्झयणा। पंचासीती उद्देसणकाला। कहं ? उच्यते—अगस्स सुतक्खंधस्स अज्झयणस्स उद्देसगस्स, एते चउरो वि एक्को उद्देसणकालो। एवं सत्थपरिण्णाए सत्त उद्देसणकाला, लोग-
10 विजयस्स छ, सीतोसणिज्जस्स चतुरो, समत्तस्स चतुरो, लोगसारस्स छ, धुयस्स पंच, महापरिण्णाए सत्त, विमोहातयणस्स अट्ठ, उवधाणसुतस्स चतुरो, पिंडेसणाए एक्कारस, सेज्जाए तिण्णि, इरियाए तिण्णि, भासज्जाताए दो, वत्थेसणाए दो, पातेसणाए दो, उग्गहपडिमाए दो, सत्तिक्कयाणं सत्त, भावणाए एक्को, विमोत्तीए एक्को, एते सव्वे पंचासीतिं। चोदक आह—जदि दो सुतक्खंधा पणुवीसं अज्झयणा य अट्ठारस पदसहस्सा पदग्गेण भवतिं तो जं भणितं "णवबंभचेरमइओ अट्ठारसपदसहस्सितो वेदो।" [आचा० नि० गा० ११] त्ति एतं विरुज्झति ?। आचार्य आह—णणु
15 एत्थ वि भणितं 'सपंचचूलो अट्ठारसपदसहस्सितो वेदो' त्ति, इह सुत्तालावयपदेहिं सहितो बहू बहुतरो य वक्तव्येत्यर्थः। अहवा दो सुतखंधा पणुवीसं अज्झयणा य, एतं आयारग्गसहितस्स आयारस्स पमाणं भणितं। अट्ठारस पदसहस्सा पुण पढमसुतखंधस्स णवबंभचेरमइयस्स पमाणं। विचित्तत्थबद्धा य सुत्ता, गुरूवदेसतो सिं अत्थो भाणितव्वो। अक्खररयणाए संखेज्जा अक्खरा। अभिधाणाभिधेयवसतो गमा भवति, ते य अणंता इमेण विधिणा—सुतं मे आउसं तेणं भगवता, तं सुतं मे आउसं, तहिं सुतं मे आ०, आ सुतं मे आ०, तं सुतं मया आ०,
20 तदा सुतं मदा आ०, तहिं सुतं मदा आ०, एवमादिगमेहिं भण्णमाणं अणंतगमं। अक्खरपज्जएहिं अत्थपज्जएहिं य अणंतं। परित्ता तसा, अणंता ण भवति। अणंता थावरा वणप्फइसहिता। सासत त्ति पंचत्थिकाइयाइया। कड त्ति-किंचिमा, पयोगतो वीससापरिणामतो [जे० २१७ प्र०] वा जहा अब्भा अब्भरुक्खादी। एते सव्वे आयारे सुत्तेण निबद्धा। निज्जुत्ति-संगहणि हेतूदाहरणादिएहिं य णिकाइया। किंच एते अण्णे य 'जिणपण्णत्ता' जिणप्पणीया भावा 'आघविज्जंति' जाव उवदंसिज्जंति' एतेसिं पदाणं पूर्ववद् व्याख्या। एवंविहमायारं अहिज्जित्तु से
25 पुरिसे 'एवं' ति जहा आयारे निबद्धा परूविता य तहा सव्वदव्व भावाण णाता भवति। विण्णे त्ति-अणेगधा जाणमाणो विण्णाता भवति। अण्णपावादुगेहिंतो वा विसिट्ठतरे विसिट्ठयरं वा जाणमाणो विण्णाता भवति। सेसं निगमणसुत्तं कंठं। से त्तं आयारे १॥

८६ से किं तं सूयगडे ? सूयगडे णं लोए सूइज्जइ, अलोए सूइज्जइ, लोया ऽलोए सूइज्जइ, जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जंति, जीवा ऽजीवा सूइज्जंति, ससमए सूइज्जइ,
30 परसमए सूइज्जइ, ससमय परसमए सूइज्जइ। सूयगडे णं आसीतस्स किरियावादिसयस्स, चउरासीईए अकिरियवादीणं, सत्तट्ठीए अण्णाणियवादीणं, बत्तीसाए वेणइयवादीणं, तिण्हं

१ ज्जंति सं० सं ल०॥ २ °ज्जति डे शु०॥ ३ असीयस्स खं० सं० विना॥ ४ सीम ल०॥ ५ यावा सं० शु० मो शु०॥

तेसट्ठाणं[1] पावादुयसयाणं[2] वूहं किच्चा ससमए ठाविज्जइ । सूयगडे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए बिइए[3] अंगे, दो सुयक्खंधा, तेवीसं अज्झयणा, तेत्तीसं उद्देसणकाला, तेत्तीसं समुद्देसणकाला, छत्तीसं पदसहस्साणि पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जइ[4] । से त्तं सूयगडे २ ।

८६. से किं तं सूयगडेत्यादि सुत्तं । 'सूइज्जइ' त्ति जधा णट्ठा सूई तंतुणा सूइज्जइ, उवलब्भतेत्यर्थः । अहवा जहा सूयी पडं सूतेइ तहा सूयगडे जीवादिपदत्था सूइज्जंति । 'वूहं' किच्च त्ति प्रतिव्यूहं, तेण प्रतिव्यूहेन ते परप्पवादी णिप्पट्ठ-पसिणे कातुं ससमयस्स सब्भावे ठाविज्जति । उद्देसयपरिमाणं नातुं उद्देसणकाला जाणेज्जा । सेसं कंठं । से त्तं सूयगडे २ ॥

८७. से किं तं ठाणे ? ठाणे णं जीवा ठाविज्जंति, अजीवा ठाविज्जंति, जीवा-ऽजीवा ठाविज्जंति, →[5]लोए ठाविज्जइ, अलोए ठाविज्जइ, लोया-ऽलोए ठाविज्जइ,← ससमए ठाविज्जइ, परसमए ठाविज्जइ, ससमय-परसमए ठाविज्जइ । ठाणे णं टंका कूडा सेला सिहरिणो पब्भारा कुंडाइं गुहाओ आगरा दहा णदीओ आघविज्जंति । [6]ठाणे णं एगाइयाए[7] एगुत्तरियाए वुड्ढीए दसट्ठाणगविवड्ढियाणं भावाणं परूवणया[8] आघविज्जति[9] । ठाणे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा[10], संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए तइए अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, एक्कवीसं उद्देसणकाला, एक्कवीसं समुद्देसणकाला, बावत्तरिं पदसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, [11]अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति

---

१ तेवट्ठाणं ख० स० जे० डे० ल० । हारि०वृत्तौ समवायाङ्गसूत्रादिषु च तेसट्ठाणं इति पाठो वर्त्तते ॥ २ पासंडियसयाणं जे० डे० मो० मु० । श्रीमलयगिरिभिरयमेव पाठ आदृतोऽस्ति । ३ बिदिए शु० । बिइए ल० ॥ ४ °ज्जंति खं० शु० ल० डे० ॥ ५ → ← एतच्चिह्नमध्यवर्ती पाठ' जे० मो० मु० प्रतिषु ससमय-परसमए ठाविज्जइ इति पाठानन्तरं वर्तते ॥ ६ ठाणे णं इति ख० स० ल० शु० नास्ति ॥ ७ एगाइयाणं एगुत्तरियाणं दसठाण° स० डे० ल० शु० ॥ ८ °वणा जे० मो० ॥ ९ °ज्जंति ख० डे० शु० ॥ १० जे० डे० विनाऽन्यत्र सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं ख० स० ल० शु० समवायाङ्गसूत्रे च । सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं मो० मु० ॥ ११ खं० स० ल० शु० प्रतिषु अणंता गमा अणंता पज्जवा इति नास्ति ॥

परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण करणपरूवणा आघविज्जइ। से त्तं ठाणे ३।

८७ से किं तं ठाणेत्यादि सुत्तं। 'ठाविज्जति' त्ति स्वरूपतः स्थाप्यते, प्रज्ञाप्यतेत्यर्थः। छिण्णं तडं टंकं। कूडं ति—जहा वेतड्ढदसोवरि णव सिद्धायतणाइया कूडा। हिमवतादिया सेला। सिहरेण सिहरी, जहा 5 वेतड्ढो। जं कूडं उवरिं अवखुज्जयं तं पब्भारं, जं वा पव्वयस्स उवरिभागे हत्थिकुंभागिई कुडुइं निग्गयं तं पब्भारं। गंगादिया कुंडा। तिमिसादिया गुहा। रुप्प सुवण्ण रतणादिया आगरा। पोंडरीयादिया दहा। गंगा-सिंधुमादियाओ णदीओ। सेसं कंठं। से त्तं ठाणे ३॥

८८ से किं तं समवाए? समवाए णं जीवा समासिज्जंति, अजीवा समासिज्जंति, जीवा-ऽजीवा समासिज्जंति, लोए समासिज्जंति, अलोए समासिज्जंति, लोया-ऽलोए 10 समासिज्जंति, ससमए समासिज्जंति, परसमए समासिज्जंति, ससमय परसमए समासिज्जंति। समवाए णं एगाइयाणं एगुत्तरियाणं ठाणगसयविवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जति। दुवालसंगस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समासिज्जंति। समवाए णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ। से णं अंगट्ठयाए चउत्थे 15 अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे अज्झयणे एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले, एगे चोयाले पदसयसहस्से पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण करणपरूवणा आघविज्जंति। से त्तं समवाए ४।

20 ८८ से किं तं समवाए' इत्यादि। समवाए निक्खेवो चतुव्विहो। दव्वे सचित्तादिदव्वसमवातो, भावसमवातो इमं चेव अंगं। अहवा जत्थ वा एगत्थ ओदइयाइ बहू भावा सण्णिवादियसंजोगा वा भावसमवातो। भावसमवाए वा इमं णिरुत्तं—जीवा 'समासिज्जंति' सम्मं आसइज्जंति। सम ति—ण विसमं, जहावत्थितं अनूनातिरिक्तं इत्यर्थः। आसइज्जति—आश्रीयते, बुद्धया ज्ञानेन गृह्यतेत्यर्थः। अहवा समास त्ति—इहमग्गेऽभिहितं [जे० २१७ द्वि०] सव्वपदत्थाणं समासतो विमरिसो त्ति। सेसं कंठं। उक्तः समवायः ४॥

१ पणया सं ल सु ॥ २ ज्जति खं० सं डे ल० ॥ ३ मह्या इत्यर्थः ॥ ४ लसविहस्स मो डे ॥ ५ पज्जवग्गे सं। पल्लवग्गे इत्यस्यार्थः— तथा द्वादशाङ्गस्य च गणिपिटकस्य 'पल्लवग्गे' त्ति पर्यवपरिमाणं अभिधेयादितद्धर्मसंख्यानम् यथा 'परित्ता तसा' इत्यादि। पर्यवशब्दस्य च 'पल्लव' त्ति निर्देशः प्राकृतत्वात्, पयङ्क पल्यङ्क इत्यादिवदिति। अथवा पल्लवा इव पल्लवा—अवयवास्तत्परिमाणम्। इति समवायाङ्गसूत्रवृत्तिः ११३-२ पत्रे ॥ ६ वायस्स णं जे डे मो० ॥ ७ जेसं० डे० विनाऽन्यत्र—सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ। से णं खं० सं० ल० सु। सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडियत्तीओ। से णं मो० सु० ॥ ८ णाया ल० ॥ ९ ज्जति खं० सं० ॥

८९. से किं तं वियाहे ? वियाहे णं जीवा वियाहिज्जंति, अजीवा वियाहिज्जंति, जीवा-ऽजीवा वियाहिज्जंति, लोए वियाहिज्जति, अलोए वियाहिज्जति, लोया-ऽलोए वियाहिज्जति, ससमए वियाहिज्जति, परसमए वियाहिज्जति, ससमय-परसमए वियाहिज्जति । वियाहे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । 5
से णं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे सातिरेगे अज्झयणसते, दस उद्देसगसहस्साइं, दस समुद्देसगसहस्साइं, छत्तीसं वागरणसहस्साइं, दो लक्खा अट्ठासीतिं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, 10
एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ । से त्तं वियाहे ५ ।

८९. से किं तं वियाहेत्यादि । 'वियाहे' त्ति व्याख्या, इह जीवादयो व्याख्यायंते । इह सतं चेव अज्झयणसण्णं । गोतमादिएहिं पुट्ठे अपुट्ठे वा जो पण्हो तव्वागरणं [च] । सेसं कंठं । से त्तं वियाहे ५ ॥

९०. से किं तं णायाधम्मकहाओ ? णायाधम्मकहासु णं णायाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया इहलोग-पर- 15
लोगिया रिद्धिविसेसा भोगपरिच्चागा पव्वज्जाओ परियागा सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाईओ पुणबोहिलाभा अंतकिरियाओ य आघविज्जंति । दस धम्मकहाणं वग्गा । तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं, एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयासयाइं, एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइओवक्खाइयासयाइं, एवमेव सपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाओ कहाणग- 20
गकोडीओ भवंति त्ति मक्खायं । णायाधम्मकहाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा,

---

१-२ विवाहे जे० मो० मु० ॥ ३ विवाहस्स णं जे० डे० मो० मु० ॥ ४ डे० विनाऽन्यत्र—सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं ख० स० ल० शु० । सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से ण जे० मो० ॥ ५ °स्साइं, चउरासीई पयसहस्साइं पयग्गेणं, इति समवायाङ्गसूत्रे पाठ । अत्राभयदेवीया टीका—"चतुरशीतिः पदसहस्राणि पदाग्रेणेति, समवायापेक्षया द्विगुणताया इहानाश्रयणात्, अन्यथा द्वे लक्षे अष्टाशीति सहस्राणि च भवन्तीति ।" इति ११६-१ पत्रे । तथैतदर्थसमर्थक' 'विवाहपण्णत्तीए ण भगवतीए चउरासीइ पदसहस्सा पदग्गेण" इति समवायाङ्गे ८४ स्थानके सूत्रपाठोऽपि वर्त्तते ॥ ६ °वणया ल० ॥ ७ °ज्जंति खं० स० ल० ॥ ८ विवाहे ख० स० विना ॥ ९ चेतियाति वणसंडाति शु० ॥ १० °पियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ इह-पारलोइया इड्ढिविसेसा जे० मो० मु० । 'धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइयइड्ढीविसेसा" इति समवायाङ्गे ॥ ११ पव्वज्जापरियागा ख० स० डे० ल० शु० । "पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइ परियागा सलेहणाओ" इति समवायाङ्गे ॥ १२ वग्गा पण्णत्ता । तत्थ स० ॥

संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, सखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से ण अगट्ठयाए छट्ठे अगे, दो सुयक्खधा, एगूणवीस णात ज्झयणा, एगूणवीस उद्देसणकाला, एगूणवीसं समुद्देसणकाला, सखेज्जाइ पयसहस्साइ पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, 5 सासत-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जंति णिदसिज्जंति उवदसिज्जति। से एवआया, एवं णाया, एव विण्णाया, एव चरण करणपरूवणा आघविज्जति। से त्त णायाधम्मकहाओ ६।

९० से किं त णायाधम्मकहेत्यादि सुत्त। एकूणवीस णातज्झयणा, णाय त्ति—आहरणा, दिट्ठतियो वा णज्जति जेहऽत्थो ते णाता, एते पढमसुतखधे। अहिंसादिलक्खणस्स धम्मस्स कहा धम्मकहा, धम्मियाओ 10 वा कहाओ धम्मकहाओ, अक्खाणग त्ति वुत्त भवति, एते बितियसुतखधे। पढम बितियसुतखधे भणिताण णाता धम्मकहाण णगरादिया भण्णति। बितिये सुतक्खधे दस धम्मकहाण वग्गा। वग्गो त्ति—समूहो, तव्विसेसणविसिट्ठा दस अज्झयणा चेव ते दट्ठव्वा। एगूणवीस णाता, दस य धम्मकहाओ। तत्थ णातेसु आदिमा दस णाता चेव, ण तेसु अक्खादियादिसभवो। सेसा णव णाता, तेसु एक्केके णाते चत्तालीस चत्तालीस अक्खाइयाओ भवति, तत्थ वि एक्केकाए अक्खाइयाए पच पच उवक्खाइयासताइ भवति, तेसु वि एक्केकाए उवक्खा15 इयाए पच पच अक्खाइओवक्खाइयसताइ भवति, एव एते णव कोडीओ। एताओ धम्मकहासु सोहेतव्व त्ति कातु एकोणवीसाए णाताण दसण्ह य धम्मकहाण विसेसो कज्जति—दस णाता दस णव य धम्मकहातो दसहिं परोप्पर छुद्धा। एवं विसेसे कते सेसा णव णाता, ते णव चत्तालीसाए गुणिता जाता तिण्णि सता सट्ठा अक्खाइयाण, एते अक्खाइयपचसतेहिंतो सोधिता, तत्थ सेस चत्ताल सतं, त उवक्खाइयपचसतेहिं गुणितं जाता उवक्खाइताण सत्तरिं सहस्सा, ते पचहिं अक्खाइतोवक्खाइयसतेहिं गुणिता एव जाता अद्धुट्ठातो अक्खाइयकोडीतो। 'पदग्गेण' त्ति 20 उवसग्गपद णिवातपद णामियपद अक्खातपद मिस्सपद च, एते पदे अहिकिच्च पचल[जे० २१८ प्र०]क्खा छावत्तरिं च सहस्सा पदग्गेण भवति, अहवा सुत्तालावयपदग्गेण सखेज्जाइ पदसहस्साइ भवति। अहवा छाहत्तरा दियसहस्सपचलक्खा वि सखेज्जपदसहस्सेहिं ण विरुज्झति। सेस कठ। से त णाताधम्मकहाओ ६॥

९१ से किं त उवासगदसाओ? उवासगदसासु ण समणोवासगाण णगराइ उज्जाणाइ चेइयाइ वणसडाइ समोसरणाइ रायाणो अम्मा पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया 25 इहलोग-परलोइया रिद्धिविसेसा भोगपरिच्चाया परियागा सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइ सील व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासपडिवज्जणया पडिमाओ उवसग्गा सलेहणाओ

१ दे० मो मु० विनाऽन्यत्र—सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ। से ण खं० सं० ल शु०। सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से ण जे॥ २ वीसं अज्झयणा खं० जे० दे ल० मो० शु समवायाङ्गे च। चूर्णिकृता मलयगिरिणा च मूले स्वीकृत एव पाठो व्याख्यातोऽस्ति॥ ३-४ एगूणतीसं ल०॥ ५ संखेज्जा पयसहस्सा जे० मो०॥ ६ पयसयसह समवायाङ्गे॥ ७ वणया खं० सं० ल० शु॥ ८ ज्जति खं० सं० दे० शु० ल०॥ ९ दस य धम्म जे॥ १० चेतियाति शु॥ ११ वणसंडाइ खं० सं० शु नास्ति॥ १२ पियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ जे० मो० मु॥ १३ इहलोइय-परलोइया इड्ढिवि जे० मो० मु०॥ १४ या पव्वज्जाओ परि जे० दे० ल० शु०॥

भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाईओ पुणबोहिलाभा अंतकिरियाओ य आघविज्जंति । उवासगदसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, [1]संखेज्जाओ संगहणीओ, [2]संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए सत्तमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, [3]संखेज्जाइं [4]पदसहस्साइं पयग्गेणं । संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरू[5]वणा आघवि[6]ज्जति । से त्तं उवासगदसाओ ७ ।

९१. से किं तं उवासगदसातो इत्यादि सुत्तं । उवासक त्ति–सावता । तेसिं अणुव्वत-गुण-सीलव्वतोवदेसणा दससु अज्झयणेसु [7]अक्खात त्ति उवासगदसा भणिता । तासु सुत्तपदग्गं एकारस लक्खा बावण्णं च सहस्सा पदग्गेणं । सुत्तालावयपदेहिं संखेज्जाणि वा पदसहस्साइं पदग्गेणं । सेसं कंठं । से तं उवासगदसाओ ७ ॥

९२. से किं तं अंतगडदसाओ ? अंतगडदसासु णं अंतगडाणं णगराइं उज्जाणाइं चेतियाइं [8]वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा-पि[9]यरो धम्मकहाओ धम्मायरिया इह[10]लोग-परलोगिया रिद्धिविसेसा भोग[11]परिच्चागा [12]पव्वज्जाओ परियागा सुतपरिग्गहा तवोवहाणाइं संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं [13]→देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा← अंतकिरियाओ य आघविज्जंति । अंतगड[14]दसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जा[15]ओ संगहणीओ, संखेज्जा[16]ओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए अट्ठमे अंगे, [17]एगे सुयक्खंधे, अट्ठ

---

१ संखेज्जाओ संगहणीओ जे० मो० नास्ति ॥ २ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ ख० डे० ल० शु० नास्ति ॥ ३ संखेज्जा पदसहस्सा जे० मो० मु० ॥ ४ पदसयसहस्साइं समवायाङ्गे ॥ ५ °वणया ल० ॥ ६ °ज्जंति ख० सं० डे० ल० ॥ ७ अक्खाइज्जति त्ति आ० दा० ॥ ८ वणसंडाइं इति ख० स० डे० ल० शु० नास्ति ॥ ९ °पियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ जे० ल० मो० मु० ॥ १० °लोइय-पारलोइया इड्ढिवि° मो० । °लोइय-परलोइया इड्ढिवि° जे० मु० ॥ ११ भोगपरिभोगा ख० ल० शु० ॥ १२ पव्वज्जा परियागा सुत° ख० । पव्वज्जा सुत° ल० ॥ १३ →←एतच्चिह्नमध्यवर्त्ती पाठ मो० मु० नास्ति ॥ १४ °दसाणं जे० स० ॥ १५ संखेज्जाओ संगहणीओ इति जे० मो० मु० नास्ति ॥ १६ सखेज्जाओ पडिवत्तीओ इति खं० स० ल० शु० नास्ति ॥

१७ एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, सत्त वग्गा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पद-[सत]सहस्साइं पयग्गेणं इति समवायाङ्गसूत्रे पाठः । अत्राभयदेवीया टीका—

“नवर ‘दस अज्झयण’ त्ति प्रथमवर्गापेक्षयैव घटन्ते, नन्द्यां तथैव व्याख्यातत्वात् । यच्चेह पठ्यते ‘सत्त वग्ग’ त्ति तत् प्रथमवर्गादन्यवर्गापेक्षया, यतोऽत्र सर्वेऽप्यष्ट वर्गा, नन्द्यामपि तथापठितत्वात् । तद्वृत्तिश्चेयम्—‘अट्ठ वग्ग’ त्ति अत्र वर्ग. समूह, स चान्तकृतानामध्ययनाना वा । सर्वाणि चैकवर्गगतानि युगपदुद्दिश्यन्ते ततो भणित ‘अट्ठ उद्देसणकाला’ इत्यादि ” । इह च दश उद्देशनकाला अभिधीयन्ते इति नास्याभिप्रायमवगच्छामः । तथा सख्यातानि पदशतसहस्राणि पदाग्रेणेति, तानि च किल त्रयोविंशतिर्लक्षाणि चत्वारि च सहस्राणीति ।” १२१-२ पत्रे ॥

वग्गा, अट्ठ उद्देसणकाला, अट्ठ समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड णिबद्ध णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा 5 आघविज्जति। से त्तं अंतगडदसाओ ८।

९२ से किं तं अंतगडदसातो इत्यादि सुत्तं। अंतकडदस त्ति—कम्मणो संसारस्स वा अंतो कडो जेहिं ते अंतकडा, ते य तित्थकरादी, दस त्ति—पढमवग्गे दस अज्झयण त्ति तस्संक्खतो अंतकडदस त्ति। अहवा दस त्ति—अवत्था, तदंते जा अवत्था सा वण्णिज्जति त्ति अतो अंतकडदसा। सरीरा ऽऽयुदसाण वा दसण्ह अंतकडो त्ति अंतकडदसा। एत्थ 'अंतकडकिरियाओ' त्ति अस्य व्याख्या—अंतकडाण किरिया अंतकडकिरिया, बहूण ता 10 अंतकडकिरियाओ त्ति भणिता। किरिय त्ति—क्रिया, चर्या इत्यर्थः। अहवा किरिय त्ति—कर्मक्षपणक्रिया, सा य सेलेसिअवत्थाए। अहवा किरिय त्ति—सहुमकिरियज्झाणं। अहवा घातिकम्मेसु अंतकडेसु किरिय त्ति—कम्मबंधो, सो य इरियावहितो त्ति भणितं होति। एतं च आघविज्जति। वग्गो त्ति—समूहो, सो य अंतकडाण अज्झयणाण वा। सव्वे अज्झयणा जुगवं उद्दिसंति। तासु सुत्तपदग्गं तेवीसं लक्खा चतुरो य सहस्सा पदग्गेणं। संखेज्जाणि वा पदसहस्साणि सुत्तालावगपदग्गेणं। सेसं कंठं। से त्तं अंतगडदसा ८॥

15 ९३ से किं तं अणुत्तरोववाइयदसाओ? अणुत्तरोववाइयदसासु णं अणुत्तरोववाइयाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया इहलोग-परलोगिया रिद्धिविसेसा भोगपरिच्चागा पव्वज्जपरियागा सुतपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाओ उवसग्गा संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं अणुत्तरोववाइयत्ते उववत्ती सुकुलपच्चायादीओ पुणबोहिलाभा अंतकिरियाओ य आघविज्जंति। 20 अणुत्तरोववाइयदसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए णवमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, तिण्णि वग्गा, तिण्णि उद्देसणकाला, तिण्णि समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा

१ घणया ख ल ॥ २ विज्जति ख० सं डे ल शु० ॥ ३ तत्साक्ष्यत इत्यर्थः ॥ ४ वणसंडाइं इति मो मु एव वर्त्तते ॥ ५ धम्मायरिया धम्मकहाओ मो मु ॥ ६ लोइय-परलोइया जे मो० मु० ॥ ७ अणुत्तरोववत्ती शु। अणुत्तरोववाय त्ति खं सं ॥ ८ दसाण ख० जे मो ॥ ९ वायणा ल ॥ १० संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ इति ल नास्ति ॥ ११ संखेज्जाओ संगहणीओ जे मो० नास्ति ॥ १२ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ खं सं० ल० शु० नास्ति ॥ १३ एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, तिण्णि वग्गा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेण प० इति समवायाङ्गे। अत्राभयदेवपादा — इह अध्ययनसमूहो वर्गः वर्गे दशाध्ययनानि वर्गश्च युगपदेवोद्दिश्यते इत्यतस्त्रय एवोद्देशनकाला भवन्ति एवमेव च नन्द्यामभिधीयन्ते इह तु दृश्यन्ते दशेति अत्राभिप्रायो न ज्ञायत इति।' ११२-२ पत्र ॥

आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जंइ । से त्तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ ।

९३. से किं तं अणुत्तरोववातियदसा इत्यादि सुत्तं । णत्थि जस्सुत्तरं सो अणुत्तरो, उववज्जणमुववातो उप्पत्तीत्यर्थः, अणुत्तरो उववातो जस्स सो अणुत्तरोववाइओ, तेसिं बहुवयणातो [जे० २१८ द्वि०] अणुत्तरोववाइय त्ति, वग्गे वग्गे य दसऽज्झयण त्ति अतो अणुत्तरोववातियदसा भणिता । संसारे सुभभावं पडुच्च अणुत्तरः, अहवा गतिचतुक्कं पडुच्च अणुत्तरः, अहवा देवगतीए चेव अणुत्तरः । अणुत्तरदेवेसु जेसिं उववातो तेसिं णगरादिया कहिज्जंति । इह वग्गो त्ति–समूहो, सो य अज्झयणाणं, वग्गे वग्गे दस अध्ययना इत्यर्थः । तेसिं पदग्गं छातालीसं लक्खा अट्ठ य सहस्सा, संखेज्जाणि वा पदसहस्साणि । सेसं कंठं । से त्तं अणुत्तरोववाइयदसा ९ ॥

९४. से किं तं पण्हावागरणाइं ? पण्हावागरणेसु णं अट्ठुत्तरं पसिणसयं, अट्ठुत्तरं अपसिणसयं, अट्ठुत्तरं पसिणा-ऽपसिणसयं, अण्णे वि विविधा दिव्वा विज्जातिसया नाग-सुवण्णेहि य सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जंति । पण्हावागरणाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए दसमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, पणयालीसं अज्झयणा, पणयालीसं उद्देसणकाला, पणयालीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पदसहस्साइं पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जइ । से त्तं पण्हावागरणाइं १० ।

९४. से किं तं पण्हावागरणाइं इत्यादि सुत्तं । पण्हो त्ति–पुच्छा, पडिवयणं वागरणं, प्रत्युत्तरमित्यर्थः । तम्हि पण्हावागरणे अंगे पंचासवदाराइदा व्याख्येयाः परप्पवादिणो य । अंगुट्ठ-बाहुपसिणादियाणं च पसिणाणं अट्ठुत्तरं सतं । किंच–जे विज्ज-मंता विधीए जविज्जमाणा अपुच्छिता चेव सुभासुभं कहयंति तारिसाणं अपसिणाणं अट्ठुत्तरं सतं । अंगुट्ठादिपसिणभावं अपसिणभावं च वाकरेंति तारिसाणं पसिणा-ऽपसिणविज्जाणं अट्ठुत्तरं सतं । अहवा अणंतरा जे कहेंति ते पसिणा, परंपरे पसिणापसिणा, तं पुण विज्जाकहितं कहेंतस्स परंपरं

---

१ °वणया ल० ॥ २ °विज्जंति ख० स० डे० ल० शु० ॥ ३ °सयं, तं जहा—अंगुट्ठपसिणाइं, बाहुपसिणाइं अद्दागपसिणाइं, अण्णे वि जे० डे० ल० मो० मु० । नायं पाठश्चूर्णि-वृत्तिकृद्भिर्गृहीतो व्याख्यातो वा विद्यते ॥ ४ वि विचित्ता दिव्वा सर्वासु सूत्रप्रतिषु । हारि० वृत्तौ एष एव पाठो व्याख्यातोऽस्ति । मलयगिरिपादाः पुनः चूर्णिकारमनुसृताः सन्ति ॥ ५ दिव्वा शु० स० एव वर्त्तते ॥ ६ दिव्वा संधाणा संधणंति इति चूर्णिकृन्निर्दिष्टः पाठभेदः, दिव्याः सन्धानाः सन्धनन्ति इत्यर्थः ॥ ७ संखेज्जाओ संगहणीओ इति जे० मो० नास्ति ॥ ८ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ ख० स० ल० शु० समवायाङ्गे च नास्ति ॥ ९ °विज्जंति ख० स० डे० ल० शु० ॥

भवति । अण्णे य विविधा विज्जातिसता कहिज्जति । किंच णागा सुवण्णा अण्णे य भवणवासिणो ते विज्जभता-गरिसिता आगता साहुणा सह सवदति-जल्प करेंति । पाढतर वा "दिव्वा सघाणा सघणति" तदु सुखा भवति, वरदाश्च गर्जितादि वा कुर्वंति । दसममगस्स पदग्ग बाणउतिं लक्खा सोलस य सहस्सा पदग्गेण, सखेज्जाणि वा पदसहस्साणि । सेस कठ । से त्त पण्हावागरणाइ १० ॥

5 ९५ से किं त विवागसुत ? विवागसुते ण सुकड-दुकडाण कम्माण फल विवागा आघविज्जति । तत्थ ण दस दुहविवागा, दस सुहविवागा ।

से[2] किं त दुहविवागा ? दुहविवागेसु ण दुहविवागाण णगराइ उज्जाणाइ वणसडाइ चेइयाई समोसरणाइ रायाणो अम्मा-पियरो धंम्मकहाओ धम्मायरिया ईहलोइय-परलोइया [5]रिद्धिविसेसा निरयगमणाइ दुहपरपराओ ससारभवपवचा दुकुलपच्चायाईओ दुलहबोहियत्तं

10 आघविज्जति । से[8] त्त दुहविवागा ।

से किं तं सुहविवागा ? सुहविवागेसु ण सुहविवागाण णगराइ उज्जाणाइ वणसडाइ चेइयाइ समोसरणाइ रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया ईहलोइअ-परलोइया रिद्धिविसेसा भोगपरिच्चागा पव्वज्जाओ परियागा सुतपरिग्गहा तवोवहाणाइ सलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइ पाओवगमणाइ देवलोगगमणाइ सुहपरपराओ सुकुलपच्चायादीओ पुणबो-

15 हिलाभा अतकिरियाओ य आघविज्जति ।

विवागसुते ण परित्ता वायणा, सखेज्जा अणुयोगदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, सखेज्जाओ सगहणीओ, सखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से ण अगट्ठयाए एक्कारसमे अगे, दो सुयक्खधा, वीस अज्झयणा, वीस उद्देसणकाला, वीसं समुद्देसणकाला, सखेज्जाइ पदसहस्साइ पदग्गेण, सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता

20 पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासय कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति णिदसिज्जति उवदसिज्जति । से एवआया, एव णाया, एव विण्णाया, एव चरण-करणपरूवणा आघविज्जंति । से त्त विवागसुत ११ ।

९५ से किं त विवागसुत इत्यादि । विविधो पाक विपचन वा विपाक, कर्मणा शुभमशुभो वा

---

१ विवागे आघविज्जइ जे० मो० मु० ॥ २ से किं त दुहविवागा इति ख० शु० नास्ति । समवायाङ्गे अस्त्यस्य वत्तते ॥ ३ धम्मायरिया धम्मकहाओ सं० जे डे० ल० मो० मु० ॥ ४ इहलोग-परलोगिया सं० ॥ ५ इड्ढिवि मो० मु ॥ ६ गमणं ख० ॥ ७ भवपवचा सं० ल० समवायाङ्गे च ॥ ८ से त्त दुहविवागा । से किं त सुहविवागा ? इति ख० शु नास्ति । समवायाङ्गे तु वत्तते ॥ ९ धम्मायरिया धम्मकहाओ ख० डे ॥ १० इहलोग-पारलोगिया इड्ढिविसेसा जे० मो० मु० ॥ ११ ज्जा परि ख० ॥ १२ विवागसुयस्स ण जे० मो० मु० । विवागेसु णं शु० ॥ १३ पदसयसहं समवायाङ्ग ॥ १४ विज्जति ख० सं० डे ल० शु० ॥

जम्मि सुत्ते विपाको कहिज्जति तं विपाकसुतं । विपाकसुतस्स सुत्तपदग्गं एगा पदकोडी चुलसीतिं च लक्खा बत्तीसं च सहस्सा पदग्गेणं, संखेज्जाणि वा पदसहस्साइं पदग्गेणं [जे० २१९ प्र०] । सेसं कंठं । से त्तं विवागसुतं ११ ॥

९६. से किं तं दिट्ठिवाए? दिट्ठिवाए णं सव्वभावपरूवणा आघविज्जंति[1] । से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—परिकम्मे[2] १ सुत्ताइं[3] २ पुव्वगए ३ अणुओगे ४ चूलिया ५ ।

९६. से किं तं दिट्ठिवाते त्ति । दृष्टिर्दर्शनम्, वदनं वादः, दृष्टीनां वादो दृष्टिवादः, तत्र वा दृष्टीनां पातः दृष्टिपातः, सभेदभिण्णाओ सव्वणतदिट्ठीओ तत्थ वदंति पतंति व त्ति अतो दिट्ठिवातो । सो य पंचभेदो- परिकम्मादि ॥

९७. से किं तं परिकम्मे? परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—सिद्धसेणियापरिकम्मे १ मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ पुट्ठसेणियापरिकम्मे ३ ओगाढसेणियापरिकम्मे[4] ४ उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ५ विप्पजहणसेणियापरिकम्मे[5] ६ चुतअचुतसेणियापरिकम्मे[6] ७ ।

९८. से किं तं सिद्धसेणियापरिकम्मे ? सिद्धसेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—माउगापयाइं १ एगट्ठियपयाइं २ अट्ठापयाइं[7] ३ पाढो ४ आमासपयाइं ५ केउभूयं ६ रासिबद्धं ७ एगगुणं ८ दुगुणं ९ तिगुणं १० केउभूयपडिग्गहो[8] ११ संसारपडिग्गहो[9] १२ नंदावत्तं १३ सिद्धावत्तं[10] १४ । से त्तं सिद्धसेणियापरिकम्मे १ ।

९९. से किं तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे ? मणुस्ससेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—माउगापयाइं १ एगट्ठियपयाइं २ अट्ठापयाइं ३ पाढो ४ आमासपयाइं ५ केउभूयं ६ रासिबद्धं ७ एगगुणं ८ दुगुणं ९ तिगुणं १० केउभूयपडिग्गहो ११ संसारपडिग्गहो[11] १२ णंदावत्तं १३ मणुस्सावत्तं[12] १४ । से त्तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ ।

१००. से किं तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे ? पुट्ठसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, तं जहा—पाढो १ आमासपयाइं[13] २ केउभूयं ३ रासिबद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो[14] ९ णंदावत्तं १० पुट्ठावत्तं ११ । से त्तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे ३ ।

१०१. से किं तं ओगाढसेणियापरिकम्मे ? ओगाढसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे

---

१ °विज्जंति खं० सं० डे० ल० ॥ २ परिकम्मं जे० मो० मु० विना ॥ ३ सुयाइं खं० ॥ ४ ओगाहणसे° समवायाङ्गे ॥ ५ विजहणसे° खं० सं० ल० शु० । विप्पजहसे° समवायाङ्गे ॥ ६ चुयअचुय° ल० शु० । चुयाचुय° डे० ॥ ७ अट्ठप° सं० ॥ ८-९ °परिग्गहो ल० ॥ १० सिद्धादट्ठं सं० । सिद्धवद्ध समवायाङ्गे ॥ ११ °परिग्गहो जे० ॥ १२ °स्सादट्ठं सं० । मणुस्सबद्धं समवायाङ्गे ॥ १३ °पयाइं एवमादि । से त्तं पुट्ठ° खं० सं० । °पयाइं २ इच्चाइ । से त्तं पुट्ठ° ल० ॥ १४ °परिग्गहो जे० ॥

पण्णत्ते, त जहा–पाढो १ आमासपयाइ २ केउभूय ३ रासिबद्ध ४ एगगुण ५ दुगुण ६ तिगुण ७ केउभूयपडिग्गहो ८ ससारपडिग्गहो ९ णदावत्त १० ओगाढावत्त ११। से त्त ओगाढसेणियापरिकम्मे ४।

१०२ से किं त उवसपज्जणसेणियापरिकम्मे? उवसपज्जणसेणियापरिकम्मे एकारसविहे पण्णत्ते, त जहा–पाढो १ आमासपयाइ २ केउभूय ३ रासिबद्ध ४ एगगुण ५ दुगुण ६ तिगुण ७ केउभूयपडिग्गहो ८ ससारपडिग्गहो ९ णदावत्त १० उवसपज्जणावत्त ११। से त्त उवसपज्जणसेणियापरिकम्मे ५।

१०३ से किं त विप्पजहणसेणियापरिकम्मे? विप्पजहणसेणियापरिकम्मे एगारसविहे पण्णत्ते, त जहा–पाढो १ आमासपयाइ २ केउभूय ३ रासिबद्ध ४ एगगुण ५ दुगुण ६ तिगुण ७ केउभूयपडिग्गहो ८ ससारपडिग्गहो ९ णदावत्त १० विप्पजहणावत्त ११। से त्त विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ६।

१०४ से किं त चुयमचुयसेणियापरिकम्मे? चुयमचुयसेणियापरिकम्मे एगारसविहे पण्णत्ते, त जहा–पाढो १ आमासपयाइ २ केउभूय ३ रासिबद्ध ४ एगगुण ५ दुगुण ६ तिगुण ७ केउभूयपडिग्गहो ८ ससारपडिग्गहो ९ णदावत्त १० चुयमचुयावत्त ११। से त्त चुयमचुयसेणियापरिकम्मे ७।

९७–१०४ तत्थ परिकम्मे त्ति जोग्गकरण, जहा गणितस्स सोलस परिकम्मा, तग्गहितसुत्तत्थो सेसगणितस्स जोग्गो भवति। एव गहितपरिकम्मसुत्तत्थो सेससुत्तादिदिट्ठिवातसुतस्स जोग्गो भवति। त च परिकम्मसुत सिद्धसेणियापरिकम्मादिमूलभेदयो सत्तविह, उत्तरभेदतो तेसीतिविह मातुयपदादी। त च सव्व समूलुत्तरभेद सुत्तत्थतो वोच्छिण्ण, जहागतसपदात वा वच्च ॥ किंच—

१०५ [ईंचेइयाइ सत्त परिकम्माइ, छ ससमइयाइ, सत्त आजीवियाइ,] छ चउक्कणइयाइ, सत्त तेरासियाइ। से त्त परिकम्मे १।

१०५ एतेसिं सत्तण्ह परिकम्माण छ आदिमा परिकम्मा ससमइका, स्वसिद्धातप्रज्ञापना एवेत्यर्थ। आजीविकापासडत्था गोसालपवत्तिता, तेसिं सिद्धतमतेण चुता ऽचुतसहिता सत्त परिकम्मा पण्णविज्जति। इदाणिं परिकम्मे णतचिंता—णेगमो दुविहो–सगहितो असगहितो य, सगहितो सगह पविट्ठो, असगहितो ववहार, तम्हा

१ केउभूय ३ इच्चादि। से त्त ओगाढ ख० सं० डे० ल० ॥ २ परिग्गहो जे ॥ ३ पाढो १ इच्चादि। से त्त उवस सं डे ल ॥ ४-५ विजहण ख० सं ल० शु ॥ ६ पाढो १ इच्चादि। से त्तं विजहण खं० सं डे ल ॥ ७ ८ चुयमचुय ने डे ल० ॥ ९ पाढाइ। से त्त चुय ख० स० डे० ल ॥ १० चुयअचुय डे ल०। चुयाचुय जे ॥ ११ एतत् चतुरस्रकोष्ठकान्तर्वर्ति सूत्र सूत्रप्रतिषु न वर्तते। चूर्णि-वृत्तिकृद्भि पुनरादृत दृश्यत इति समवायाङ्गसूत्रात् सूत्रांशोऽयमत्रोद्धृतोऽस्ति ॥ १२ याइ नइयाइं। से त्त सं० ॥

संगहो ववहारो रिजुसुतो सद्दाइया य एक्को, एवं चतुरो णया । एतेहिं चतुहिं णएहिं छ ससमइकाइं परिकम्माइं चिंतिज्जंति त्ति अतो भणितं-'छ चतुक्कणइयाइं' ति । ते चेव आजीविका तेरासिया भणिता । कम्हा ? उच्यते—जम्हा ते सव्वं जगं त्र्यात्मकं इच्छंति, जहा-जीवो अजीवो जीवाजीवश्च, लोए अलोए लोयालोए, संते असंते संतासंते एवमादि । णयचिंताए वि ते तिविहं णयमिच्छंति, तं जहा-दव्वट्ठितो पज्जवट्ठितो उभयट्ठितो, अतो [जे० २१९ द्वि०] भणियं-'सत्त तेरासियाइं' ति सत्त परिकम्माइं तेरासियपासंडत्था तिविधाए णयचिंताए चिंतयंतीत्यर्थः १ ॥ 5

१०६. से किं तं सुत्ताइं? सुत्ताइं बावीसं पण्णत्ताइं, तं जहा-उज्जुसुतं १ परिणयापरिणयं २ बहुभंगियं ३ विजयचरियं ४ अणंतरं ५ परंपरं ६ मासाणं ७ संजूहं ८ संभिण्णं ९ आयच्चायं १० सोवत्थिप्पण्णं ११ णंदावत्तं १२ बहुलं १३ पुट्ठापुट्ठं १४ वेयावच्चं १५ एवंभूयं १६ भूयावत्तं १७ वत्तमाणुप्पयं १८ समभिरूढं १९ सव्वओभद्दं २० पण्णासं २१ दुप्परिग्गहं २२ । 10

---

१ सुत्ताइं बावीसाइं पण्णत्ताइं, तं जहा ख० स० । सुत्ताइं अट्ठासीतिं भवंतीति मक्खायाइं, तं जहा सम० ॥

२ द्वाविंशतिसूत्रनाम्ना नन्दिसूत्रप्रत्यन्तरेषु पाठभेदोऽधउल्लिखितकोष्ठकाद् ज्ञातव्यः—

ख० प्रति	स० प्रतिः	जे० प्रतिः	डे० प्रतिः	ल० प्रति	मो० प्रति	शु० प्रति
१ उज्जुसुत	०	०	०	०	०	०
२ परिणयापरिणय	०	०	०	०	०	०
३ वहुभगिय	०	०	वहुभगीय	वहुभगीय	०	०
४ विज्जवियच्चिय	विज्झायच्चाविय	विजयचरिय	विजयविधत्त	विजयविधत्त	विजयचरिय	वियच्चवियत्त
५ अणतर	०	०	०	०	०	०
६ परपर	०	०	०	०	०	०
७ समाण	मासाण	मासाण	समाणस	समाणस	सामाण	समाएस
८ सजूह	सजूह	संजूह	जूह	जूह	सजूह	जूह
९ भिण्ण	०	०	सभिण्ण	सभिण्ण	०	०
१० आयच्चाइ	आयच्चाय	आहच्चाय	आहव्वय	आहव्वय	आहव्वाय	आहव्वाय
११ सावट्ठिपत्त	सोवत्थिप्पण्ण	सोमत्थिप्पन्न	सोवत्थियवत्त	सोमच्छिप्पन्न	सोवत्थिअ घट	सोवत्थिप्पन
१२ णदावत्त	०	मंदावत्त	०	०	०	०
१३ वहुल	०	०	०	०	०	०
१४ पुट्ठापुट्ठ	०	०	पुच्छापुच्छ	०	०	०
१५ वेयावच्च	०	वियावत्त	वियावत्त	वियावत्तं	वियात्रत्त	०
१६ एवभूय	०	०	०	०	०	०
१७ भूयावत्त	दूयात्रत्त	दूयावत्त	दुयावत्त	दुयावत्त	दुयात्रत्त	दुयावत्तं
१८ १.	वत्तमाणय	वत्तमाणप्पय	वत्तमाणुप्पत्त	वत्तमाणुप्पत्तं	वत्तमाणप्पय	वत्तमाणुप्पत्त
१९ समभिरूढ	०	०	०	०	०	०
२० सव्वओभद्द	०	०	०	०	०	०
२१ पणगास	०	०	०	०	०	०
२२ दुपरिग्गह	दुप्पडिग्गह	दुप्पडिग्गह	परिग्गह	०	दुप्पडिग्गह	०

अत्र शून्येन पाठभेदाभावो ज्ञातव्य', न तु पाठाभाव इति ॥

पण्णत्ते, त जहा–पाढो १ आमासपयाइ २ केउभूय ३ रासिबद्ध ४ एगगुण ५ दुगुण ६ तिगुण ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णदावत्त १० ओगाढावत्त ११ । से त्त ओगाढसेणियापरिकम्मे ४ ।

१०२ से किं त उवसपज्जणसेणियापरिकम्मे ? उवसपज्जणसेणियापरिकम्मे एकारसविहे पण्णत्ते, त जहा–पाढो १ आमासपयाइ २ केउभूय ३ रासिबद्ध ४ एगगुण ५ दुगुण ६ तिगुण ७ केउभूयपडिग्गहो ८ ससारपडिग्गहो ९ णदावत्त १० उवसपज्जणावत्त ११ । से त्तं उवसपज्जणसेणियापरिकम्मे ५ ।

१०३ से किं त विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ? विप्पजहणसेणियापरिकम्मे एगारसविहे पण्णत्ते, त जहा–पाढो १ आमासपयाइ २ केउभूय ३ रासिबद्धं ४ एगगुण ५ दुगुण ६ तिगुण ७ केउभूयपडिग्गहो ८ ससारपडिग्गहो ९ णदावत्त १० विप्पजहणावत्तं ११ । से त्त विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ६ ।

१०४ से किं त चुयमचुयसेणियापरिकम्मे ? चुयमचुयसेणियापरिकम्मे एगारसविहे पण्णत्ते, त जहा–पाढो १ आमासपयाइ २ केउभूय ३ रासिबद्ध ४ एगगुण ५ दुगुण ६ तिगुण ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णदावत्त १० चुयमचुयावत्त ११ । से त्त चुयमचुयसेणियापरिकम्मे ७ ।

९७–१०४ तत्थ परिकम्मे त्ति जोग्गकरण, जहा गणितस्स सोलस परिकम्मा, तग्गहितसुत्तत्थो सेसगणितस्स जोग्गो भवति । एव गहितपरिकम्मसुत्तत्थो सेससुत्तादिदिट्ठिवातसुतस्स जोग्गो भवति । त च परिकम्मसुत सिद्धसेणियापरिकम्मादिमूलभेदयो सत्तविह, उत्तरभेदतो तेसीतिविह मातुयपदादी । त च सव्व समूलुत्तरभेद सुत्तत्थतो वोच्छिण्ण, जहागतसमदात वा वच्च ॥ किंच–

१०५ [ईच्चेइयाइ सत्त परिकम्माइ, छ ससमइयाइ, सत्त आजीवियाइ,] छ चउक्कणइयाइ, सत्त तेरासियाइ । से त्त परिकम्मे १ ।

१०५ एतेसिं सत्तण्ह परिकम्माण छ आदिमा परिकम्मा ससमइका, स्वसिद्धातप्रज्ञापना एवेत्यर्थ । आजीविकापासडत्था गोसालपवत्तिता, तेसिं सिद्धतमतेण चुता ऽचुतसहिता सत्त परिकम्मा पण्णविज्जति । इदाणिं परिकम्मे णतचिंता—णेगमो दुविहो–सगाहितो असगाहितो य, सगाहितो सगह पविट्ठो, असगहितो ववहार, तम्हा

१ केउभूय ३ इच्चादि । से त्त ओगाढ ख० स० हे० ल० ॥ २ परिग्गहो जे ॥ ३ पाढो १ इच्चादि । से त्त उवस सं हे० ल० ॥ ४-५ विजहण ख० सं ल० सु ॥ ६ पाढो १ इच्चादि । से त्त विजहण ख० सं हे ल ॥ ७ ८ चुयमचुय जे० हे ल० ॥ ९ पाढाइ । से त्त चुय खं० स० हे० ल ॥ १० चुयअचुय हे० ल० । चुयाचुय जे ॥ ११ एतद् चतुरस्रकोष्ठकान्तर्वर्त्ति सूत्र सूत्रप्रतिषु न वर्त्तते । चूर्णि-वृत्तिकृद्भि पुनराहत्त दृश्यत इति समवायाङ्गसूत्राद् सूत्रांशोऽयमत्रोद्धृतोऽस्ति ॥ १२ याइ नइयाइ । से त्त सं ॥

संगहो ववहारो रिजुसुतो सद्दाइया य एक्को, एवं चतुरो णया । एतेहिं चतुहिं णएहिं छ ससमइकाइं परिकम्माइं चिंतिज्जंति त्ति अतो भणितं–'छ चतुक्कणइयाइं' ति । ते चेव आजीविका तेरासिया भणिता । कम्हा ? उच्यते— जम्हा ते सव्वं जगं त्र्यात्मकं इच्छंति, जहा–जीवो अजीवो जीवाजीवश्च, लोए अलोए लोयालोए, संते असंते संतासंते एवमादि । णयचिंताए वि ते तिविहं णयमिच्छंति, तं जहा–दव्वट्ठितो पज्जवट्ठितो उभयट्ठितो, अतो [जे० २१९ द्वि०] भणियं–'सत्त तेरासियाइं' ति सत्त परिकम्माइं तेरासियपासंडत्था तिविधाए णयचिंताए चिंतयंतीत्यर्थः १ ॥

१०६. से किं तं सुत्ताइं? सुत्ताइं बावीसं पण्णत्ताइं, तं जहा–उज्जुसुतं १ परिणयापरिणयं २ बहुभंगियं ३ विजयचरियं ४ अणंतरं ५ परंपरं ६ मासाणं ७ संजूहं ८ संभिण्णं ९ आयच्चायं १० सोवत्थिप्पण्णं ११ णंदावत्तं १२ बहुलं १३ पुट्ठापुट्ठं १४ वेयावच्चं १५ एवंभूयं १६ भूयावत्तं १७ वत्तमाणुप्पयं १८ समभिरूढं १९ सव्वओभद्दं २० पण्णासं २१ दुप्पडिग्गहं २२ ।

१ सुत्ताइं बावीसाइं पण्णत्ताइं, तं जहा ख० स० । सुत्ताइं अट्ठासीतिं भवंतीति मक्खायाइं, तं जहा सम० ॥

२ द्वाविंशतिसूत्रनाम्ना नन्दिसूत्रप्रत्यन्तरेषु पाठभेदोऽधउल्लिखितकोष्ठकाद् ज्ञातव्यः—

ख० प्रति	स० प्रति	जे० प्रति	डे० प्रति	ल० प्रति	मो० प्रति	शु० प्रति
१ उज्जुसुत	०	०	०	०	०	०
२ परिणयापरिणय	०	०	०	०	०	०
३ वहुमगिय	०	०	वहुभगीय	वहुभगीय	०	०
४ विज्झवियच्चिय	विज्झायव्वाविय	विजयचरिय	विजयविवत्त	विजयविधत्त	विजयचरिय	वियच्चवियत्त
५ अणतर	०	०	०	०	०	०
६ परंपर	०	०	०	०	०	०
७ समाण	मासाण	मासाण	समाणस	समाणस	सामाण	समाएस
८ सजूह	सजूह	सजूह	जूह	जूह	सजूह	जूह
९ भिण्ण	०	०	सभिण्ण	सभिण्ण	०	०
१० आयच्चाइ	आयच्चाय	आहच्चाय	आहव्वय	आहव्वय	आहव्वाय	आहव्वाय
११ सावट्ठिपत्त	सोवत्थिप्पण्ण	सोमत्थिप्पन्न	सोवत्थियवत्त	सोमच्छिप्पन्न	सोवत्थिअ घट	सोवत्थिप्पन
१२ णदावत्त	०	मंदावत्त	०	०	०	०
१३ वहुल	०	०	०	०	०	०
१४ पुट्ठापुट्ठ	०	०	पुच्छापुच्छ	०	०	०
१५ वेयावच्च	०	वियावत्त	वियावत्त	वियावत्तं	वियावत्त	०
१६ एवभूय	०	०	०	०	०	०
१७ भूयावत्त	दूयावत्त	दूयावत्त	दुयावत्त	दुयावत्त	दुयावत्त	दुयावत्तं
१८ ?	वत्तमाणय	वत्तमाणप्पय	वत्तमाणुप्पत्त	वत्तमाणुप्पत्तं	वत्तमाणप्पय	वत्तमाणुप्पत्त
१९ समभिरूढ	०	०	०	०	०	०
२० सव्वओभद्द	०	०	०	०	०	०
२१ पण्णास	०	०	०	०	०	०
२२ दुपरिग्गह	दुप्पडिग्गह	दुप्पडिग्गह	परिग्गह	०	दुप्पडिग्गह	०

अत्र शून्येन पाठभेदाभावो ज्ञातव्य, न तु पाठाभाव इति ॥

इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं छिण्णच्छेयणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं १, इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं अच्छिण्णच्छेयणइयाइं आजीवियसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं २, इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं तिगणइयाइं तेरासियसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं ३, इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं चउक्कणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं ४, एवामेव सपुव्वावरेण अट्ठासीतिं सुत्ताइं भवंतीति मक्खायं। 5 से त्तं सुत्ताइं २।

१०६ 'सुत्ताइं' ति उज्जुसुताइयाइं बावीसं सुत्ताइं। ताणि य सुत्ताइं सव्वदव्वाण सव्वपज्जवाण सव्वणताण सव्वभंगविकप्पाण य दंसगाणि, सव्वस्स य पुव्वगतसुतस्स अत्थस्स य सूयग त्ति, अतो ते सूयणत्तातो सुत्ता भणिता जहाभिधाणत्थाते। ते य इदाणिं सुत्त ऽत्थतो वोच्छिण्णा, जहागतसमदायतो वा वत्ता। ते चेव बावीसं सुत्ता विभागतो अट्ठासीतिं सुत्ता भवति इमेण विधिणा—बावीसं सुत्ता छिण्णच्छेदणताभिप्पायतो। कहं छिण्णच्छेदणतो त्ति भण्णति? 10 उच्यते—जो णयो सुत्तं छिण्णं छेदेण इच्छति, जहा—"धम्मो मंगलमुक्कट्ठं०" ति सिलोगो [दसवे० अ० १ गा० १]। एस सिलोगो सुत्त ऽत्थतो पत्तेयं छेदेण ठितो, णो बितियादिसिलोगे अवेक्खइ त्ति वुत्तं भवति। छिण्णो छेदो जस्स स भवति छिण्णच्छेदं, प्रत्येकं कल्पितपर्यंतेत्यर्थः। एते एव बावीसं ससमतसुत्तपरिवाडीए सुत्ता ठिता। एते चेव बावीसं अच्छिण्णच्छेदणताभिप्पायतो आजीवियसुत्तपरिवाडीए ठिता। अच्छिण्णच्छेदणतो जहा—एसेव दुमपुप्फियपढमसिलोगो अत्थतो बितियाइसिलोगे अवेक्खमाणो, बितियादिया य पढमं अच्छिण्णच्छेदणताभिप्पाययो भवति। एवं पि बावीसं 15 सुत्ता अक्खररयणविभागट्ठिता वि अत्थयो अण्णोण्णमवेक्खमाणा अच्छिण्णच्छेदणयट्ठित त्ति भण्णाति। णयचिंताए वि बावीसं चेव सुत्ता, 'तेरासियाणं तिकणइयाइं' ति त्रिकनयाभिमायतो चिंत्यतेत्यर्थः। तहा ससमये वि णयचिंताए बावीसं चेव सुत्ता चउक्कणइया। एवं चतुरो [जे० २२० प्र०] बावीसातो अट्ठासीतिं सुत्ता भवति। से त्तं सुत्ताइं २॥

१०७ से किं तं पुव्वगते? पुव्वगते चोद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—उप्पादपुव्वं १ 20 अग्गेणीयं २ वीरियं ३ अत्थिणत्थिप्पवातं ४ णाणप्पवातं ५ सच्चप्पवादं ६ आयप्पवादं ७ कम्मप्पवादं ८ पच्चक्खाणं ९ विज्जणुप्पवादं १० अवझं ११ पाणायुं १२ किरियाविसालं १३ लोगबिंदुसारं १४। उप्पायस्स णं पुव्वस्स दस वत्थू चत्तारि चुल्लयवत्थू पण्णत्ता १। अग्गेणीयस्स णं पुव्वस्स चोद्दस वत्थू दुवालस चुल्लवत्थू पण्णत्ता २। वीरियस्स णं पुव्वस्स अट्ठ वत्थू अट्ठ चुल्लवत्थू पण्णत्ता ३। अत्थिणत्थिप्पवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठारस

१-३-५-७ इच्चेइयाइं मो० मु० ॥ २-४-६-८ सुत्ताइं इति पदं खं० सं० एव वर्तते नान्यत्र समवायाङ्गेऽपि नास्ति ॥ ९ भवति इच्चमक्खायं ल० ॥ १० अग्गेणियं ख० ॥ ११ पच्चक्खाणप्पवादं ख० सं० विना ॥ १२ विज्जाणु जे० ल० मो० मु० ॥ १३ पाणाउं ज० । पाणाउ डे० ल० मो० मु० ॥ १४ अस्मिन् सूत्रे उप्पायस्स णं पुव्वस्स, अग्गेणीयस्स णं पुव्वस्स वीरियस्स णं पुव्वस्स इत्यादिकेषु चतुर्दशस्वपि पूर्वनामस्थानेषु उप्पायपुव्वस्स णं, अग्गेणीयपुव्वस्स णं, वीरियपुव्वस्स णं इत्यादि पाठभेदो मो० मु० दृश्यते ॥ १५ चूलवत्थू मु० । चूलियावत्थू जे० डे० मो० मु० ॥ १६ अग्गेणइयस्स डे० ल० ॥ १७ चूलवत्थू ल० मु० । चूलियावत्थू ज० डे० मो० मु० ॥ १८ चूलव मु० । चूलिआव जे० डे० मो० मु० ॥

वत्थू दस चुल्लवत्थू पण्णत्ता ४ । णाणप्पवादस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता ५ । सच्च-प्पवायस्स णं पुव्वस्स दोण्णि वत्थू पण्णत्ता ६ । आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स सोलस वत्थू पण्णत्ता ७ । कम्मप्पवायस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता ८ । पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स वीसं वत्थू पण्णत्ता ९ । विज्जणुप्पवादस्स णं पुव्वस्स पणरस वत्थू पण्णत्ता १० । अवंझस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता ११ । पाणायस्स णं पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता १२ । किरियाविसालस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता १३ । लोगबिंदुसारस्स णं पुव्वस्स पणुवीसं वत्थू पण्णत्ता १४ ।

दस १ चोद्दस २ अट्ठ ३ ऽट्ठारसेव ४ बारस ५ दुवे ६ य वत्थूणि ।
सोलस ७ तीसा ८ वीसा ९, पण्णरस १० अणुप्पवायम्मि ॥ ७७ ॥

बारस एक्कारसमे ११, बारसमे तेरसेव वत्थूणि १२ ।
तीसा पुण तेरसमे १३, चोद्दसमे पण्णवीसा उ १४ ॥ ७८ ॥

चत्तारि १ दुवालस २ अट्ठ ३ चेव दस ४ चेव चुल्लवत्थूणि ।
आइल्लाण चउण्हं, सेसाणं चुल्लया णत्थि ॥ ७९ ॥

से त्तं पुव्वगते ३ ॥

१०७. से किं तं पुव्वगतं ? ति, उच्यते–जम्हा तित्थकरो तित्थपवत्तणकाले गणधराण सव्वसुताधारत्तणतो पुव्वं पुव्वगतसुतत्थं भासति तम्हा पुव्व त्ति भणिता, गणधरा पुण सुत्तरयणं करेन्ता आयाराइक्कमेण रयंति ट्ठवेंति य । अण्णायरियमतेणं पुण पुव्वगतसुत्तत्थो पुव्वं अरहता भासितो, गणहरेहि वि पुव्वगतसुतं चेव पुव्वं रइतं पच्छा आयाराइ । एवमुक्ते चोदक आह–णणु पुव्वावरविरुद्धं, कम्हा ? जम्हा आयारनिज्जुत्तीए भणितं–"सव्वेसिं आयारो०" गाहा [आचाराङ्गनि. गा ८] । आचार्याऽऽह–सत्यमुक्तम्, किंतु सा ठवणा, इमं पुण अक्खररयणं पडुच्च भणितं, पुव्वं पुव्वा कता इत्यर्थः । ते य उप्पायपुव्वादिया चोद्दस पुव्वा पण्णत्ता । पढमं उप्पायपुव्वं ति, तत्थ सव्वदव्वाणं पज्जवाण य उप्पायभावमंगीकाउं पण्णवणा कता, तस्स पदपरिमाणं एक्का पदकोडी १ । बितियं अग्गेणीयं, तत्थ वि सव्वदव्वाण पज्जवाण य सव्वजीवविसेसाण य अग्गं–परिमाणं वण्णिज्जइ त्ति अग्गेणीतं, तस्स पदपरिमाणं छण्णउतिं पदसतसहस्सा २ । ततियं वीरियप्पवायं, तत्थ वि अजीवाणं जीवाण य सकम्मेतराण वीरियं प्रवदति त्ति वीरियप्पवादं, तस्स वि सत्तरिं पदसतसहस्सा ३ । चउत्थं अत्थिणत्थिप्पवादं, जं लोये जहा अत्थि जहा वा णत्थि, अहवा सिंतवादाभिप्पादतो तदेवास्ति नास्तीत्येवं प्रवदतीति अत्थिणत्थिप्पवादं भणितं, तं पि पदपरिमाणतो सट्ठि पदसतसहस्साणि ४ । पंचमं णाणप्पवादं ति, तम्मि मतिणाणाइपंचकस्स सप्रभेदं प्ररूवणा जम्हा कता तम्हा णाणप्पवादं, तम्मि पदपरिमाणं एक्का पदकोडी एगपदूणा ५ । छट्ठं सच्चप्पवादं, सच्चं–संजमो सच्च-

---

१ चूलवत्थू ल० शु० । चूलियावत्थू जे० डे० मो० मु० ॥ २ विज्जाणु° जे० ल० मु० ॥ ३ पाणायुस्स स० । पाणाउस्स जे० डे० ल० मो० मु० ॥ ४ चूलव° मो० शु० सम० ॥ ५ चूलिया स० विना ॥ ६ स्याद्वादाभिप्रायत ॥

वयण वा, त सच्च जत्थ समेद सपडिवक्ख च वण्णिज्जति त सच्चप्पवाद, तस्स पदपरिमाण एगा पदकोडी छप्प दाधिया ६ । सत्तम आयप्पवात, आय त्ति-आरमा, [जे० २२० द्वि०] सो णेगहा जत्थ णयदरिसणेहिं वण्णि ज्जति त आयप्पवाद, तस्स वि पदपरिमाण छव्वीस पदकोडीओ ७ । अट्ठम कम्मप्पवाद, णाणावरणाइय अट्ठ विध कम्म पगति ठिति-अणुभाग प्पदेसादिएहिं भेदेहिं अण्णेहि य उत्तरुत्तरभेदेहिं जत्थ वण्णिज्जति त कम्मप्प 5 वाद, तस्स वि पदपरिमाण एगा पदकोडी असीतिं च पदसहस्साणि भवति ८ । णवम पच्चक्खाण, तम्मि सव्वपच्चक्खाणसरूव वण्णिज्जति त्ति अतो पच्चक्खाणप्पवाद, तस्स य पदपरिमाण चतुरासीतिं पदसतसहस्साणि भवति ९ । दसम विज्जणुप्पवात, तत्थ य अणेगे विज्जातिसया वण्णिता, तस्स पदपरिमाण एगा पदकोडी दस य पदसतसहस्साणि १० । एगादसम अवझ ति, वझ णाम-णिप्फल, ण वंझमवझ, सफलेत्यर्थं, सव्वे णाण-तव-सजमजोगा सफला वण्णिज्जति, अप्पसत्था य पमादादिया सव्वे असुभफला वण्णिता, अतो अवझ, 10 तस्स वि पदपरिमाण छव्वीस पदकोडीओ ११ । बारसम पाणायु, तत्थ आयु-पाणविधाण सव्व समेद अण्णे य पाणा वण्णिता, तस्स पदपरिमाण एगा पदकोडी छप्पण्ण च पदसतसहस्सा १२ । तेरसम किरियाविसाल, तत्थ कायकिरियादियाओ विसाल त्ति-सभेदा, सजमकिरियाओ यं छदक्किरियविहाणा य, तस्स वि पदपरिमाण णव कोडीयो १३ । चोद्दसम लोगबिंदुसार, त च इमम्मि लोए सुतलोए वा बिंदुमिव अक्खरस्स [सार-] सव्वुत्तम सव्वक्खरसण्णिवातपढितत्तणतो लोगबिंदुसार, तस्स पदपरिमाण अद्धतेरस पदकोडीओ १४ । ३ ॥

15 इदार्णि अणिओगो त्ति—

१०८ से किं त अणुओगे ? अणुओगे दुविहे पण्णत्ते, त जहा-मूलपढमाणुओगे य गडियाणुओगे य ।

१०८ अनुयोग इत्येतद् अनुरूपो योग अनुयोग इति । एव सर्व एव सूत्रार्थो वाच्य । इह जन्म भव पर्याय शिष्यादियोगविवक्षातोऽनुयोगो वाच्य । स च द्विविध -मूलपढमाणुयोगो गडिकाविशिष्टश्च ॥ तत्थ—

20 १०९ से किं त मूलपढमाणुओगे ? मूलपढमाणुओगे णं अरहंताण भगवताण पुव्व भवा देवलोगगमणाइं आउ चवणाइ जम्मणाणि य अभिसेया रायवरसिरीओ पव्वज्जाओ, तवा य उग्गा, केवलनाणुप्पयाओ तित्थपवत्तणाणि य सीसा गणा गणधरा य अज्जा य पवत्तिणीओ य, सघस्स चउव्विहस्स ज च परिमाण, जिण-मणपज्जव ओहिणाणि-समत्तसुय णाणिणो य वादी य अणुत्तरगती य उत्तरवेउव्विणो य मुणिणो जत्तिया, जत्तिया सिद्धा, 25 सिद्धिपहो जह य देसिओ, जच्चिर च काल पादोवगओ, जो जहिं जत्तियाइ भत्ताइ छेयइत्ता अतगडो मुणिवरुत्तमो तमरओघविप्पमुक्को मुक्खसुहमणुत्तर च पत्तो, एते अन्ने य एवमादी भावा मूलपढमाणुओगे कहिया । से त्त मूलपढमाणुओगे ।

---

१ छत्तीस जे० ॥ २ य पयकिरिय जे विना ॥ ३ देवगम डे० ल० शु० मो मु ॥ ४ आय सं ॥ ५ उत्तर वेउव्वियणा य मुणिणो इति सं सम० नास्ति ॥ ६ छेइत्ता जे डे ल० मो० मु० ॥ ७ रयंघ सं ॥ ८ सुहं च अणुत्तर पत्तो सं ल ॥ ९ पढमन्ने डे० मु ॥

१०९. 'मूलपढमाणुयोगो' त्ति, इह मूलभावस्तु–तीर्थकरः, तस्य प्रथमं–पूर्वभवादि, अहवा [जे० २२१ प्र०] मूल एव प्रथमः मूलपढमाणुयोगो। एत्थ तित्थगरस्स अतीतभवभावा वट्टमाणभवे य जम्मादिया भावा कहिज्जंति। अहवा मूलस्स जे पढमा भावा ते मूलपढमाणुयोगो भण्णति। एत्थ तित्थकरस्स जे भावा प्रस्तुतास्ते परियाय-सुत-सिस्साइया भाणितव्वा ॥

११०. से किं तं गंडियाणुओगे? गंडियाणुओगे णं कुलगरगंडियाओ तित्थगरगंडियाओ चक्कवट्टिगंडियाओ दसारगंडियाओ बलदेवगंडियाओ वासुदेवगंडियाओ गणधरगंडियाओ भद्दबाहुगंडियाओ तवोकम्मगंडियाओ हरिवंसगंडियाओ ओसप्पिणिगंडियाओ उस्सप्पिणि-गंडियाओ चित्तंतरगंडियाओ अमर-णर-तिरिय-निरयगइगमणविविहपरियट्टणेसु एवमाइयाओ गंडियाओ आघविज्जंति। से त्तं गंडियाणुओगे। से त्तं अणुओगे ४। 5

११०. गंडियाणुओगो त्ति इक्खुमादिपव्वगंडिकावत् एकाहिकारत्तणतो गंडियाणुओगो भणितो। ता य 10 कुलकरादियाओ, विमलवाहणादिकुलकराणं "पुव्वभव जम्म णाम प्पमाण०" गाहा [आव. नि. गा. १४९] एवमादि जं किंचि कुलकरस्स वत्तव्वं तं सव्वं कुलकरगंडियाए भणितं। एवं तित्थकरादिगंडियासु वि। 'चित्तंतर-गंडिय' त्ति चित्रा इति–अनेकार्था, अंतरे इति–उसभ-अजियतरे ता दिट्ठा, गंडिका इति–खंड, अतो चित्तंतरगंडिका भणिता। तासि परूवणे पुव्वायरिएहिं इमा विधी दिट्ठा—

आदिच्चजसादीणं उसभस्स पयोपदे णरवतीणं। सगरसुताण सुबुद्धी इणमो संखं परिकहेति ॥१॥ 15
चोद्दस लक्खा सिद्धा णिवईणेक्को य होति सव्वट्ठे। एवेक्केक्कट्ठाणे पुरिसजुगा होंतऽसंखेज्जा ॥२॥
पुणरवि चोद्दस लक्खा सिद्धा निवतीण दोण्णि सव्वट्ठे। दुगठाणे वि असंखा पुरिसजुगा होंति णातव्वा ॥३॥
जाव य लक्खा चोद्दस सिद्धा पण्णास होंति सव्वट्ठे। पण्णासट्ठाणे वि तु पुरिसजुगा होंतऽसंखेज्जा ॥४॥
एगुत्तरा तु लक्खा सव्वट्ठे णेय जाव पण्णासा। एक्केकुत्तरठाणे पुरिसजुगा होंतऽसंखेज्जा ॥५॥ १।
विवरीयं सव्वट्ठे चोद्दस लक्खाइं निव्वुतो एगो। स चेव य परिवाडी पण्णासा जाव सिद्धीए ॥६॥ २। 20
तेण पर दुलक्खादी दो दो ठाणा य समग वच्चंति। सिवगति-सव्वट्ठेहिं इणमो तेसिं विही होइ ॥७॥
दो लक्खा सिद्धीए दो लक्खा णरवतीण सव्वट्ठे। एवं तिलक्ख चतु पंच जाव लक्खा असंखेज्जा ॥८॥ ३।
सिवगति-सव्वट्ठेहिं चित्तंतरगंडिया ततो चउरो। एगादेगुत्तरिया एगादिबिउत्तरा बितिया ॥९॥
ततिएगादितिउत्तर तिगमादिबिउत्तरा चतुत्थेवं। [जे०२२१ द्वि०] पढमाए सिद्धेक्को दोण्णि य सव्वट्ठसिद्धम्मि ॥१०॥
तत्तो तिण्णि णरिंदा सिद्धा चत्तारि होंति सव्वट्ठे। इय जाव असंखेज्जा सिवगति-सव्वट्ठसिद्धेहिं १ ॥११॥ 25
ताहे बिउत्तराए सिद्धेक्को तिण्णि होंति सव्वट्ठे। एवं पंच य सत्त य जाव असंखेज्ज दो वि त्ति २ ॥१२॥
एग चतु सत्त दसगं जाव असंखेज्ज होंति दो वि त्ति। सिवगति-सव्वट्ठेहि तिउत्तराए तु णेतव्वा ३ ॥१३॥

१ परूवणा पुव्वायरिएहिं इमा दिट्ठा आ० दा० ॥ २ एगुत्तरा उ ठाणा सव्वट्ठे चेव जाव पण्णासा। एक्केक्क-तरठाणे दा० ॥ ३ सव्वट्ठाणे य आ० ॥ ४ तेसिं हारि०वृत्तौ ॥ ५ दोण्णि त्ति दा० ॥ ६ °रा एत्थ णेयव्वा आ०। °राए मुणेयव्वा दा० ॥

ताहे-तियगादिविउत्तराए अउणत्तीस तु तियग ठावेतु। पढमे णत्थि तु खेवो सेसेसु इमो भवे खेवो ॥१४॥
दुग पण णवग तेरस सत्तरस दुवीस छ च अट्ठेव। बारस चोद्दस तह अट्ठवीस छब्बीस पणुवीसा ॥१५॥
एक्कारस तेवीसा सीताला सत्तरि सत्तसत्तरि या। इग दुग सत्तासीती एगत्तरिमेव बावट्ठी ॥१६॥
अउणत्तरि चउवीसा छायाल सत्त तहेव छव्वीसा। एते रासीखेवा तिगअतता जहाकमसो ॥१७॥
5 सिवगति-सव्वट्ठेहिं दो दो ठाण विसमुत्तरा णेया। जाव उणतीसठाणे उणतीस पुण छवीसाए ॥१८॥
विसमुत्तरा य पढमा एवमसख विसमुत्तरा णेया। सव्वत्थ वि अतिल्लु अण्णाए आदिम ठाण ॥१९॥ गत ॥
अउणत्तीस बारा ठावेतु णत्थि पढमए खेवो। सेसे अट्ठवीसाए सव्वत्थ दुगादियो खेवो ॥२०॥
सिवगति पढमादीए बितियाए तह य होति सव्वट्ठे। इय एगतरिताइ सिवगति-सव्वट्ठठाणाइ ॥२१॥
एवमसखेज्जाओ चित्ततरगडियाओ णेतव्वा। जाव जितसत्तुराया अजितजिणपिता समुप्पण्णो ४ ॥२२॥
10 एव गाहाहिं चित्ततरगडिया समत्ता। इमा एतासिं ठवणा—

सिद्धा लक्खा	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
सव्वट्ठे लक्खा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	५०

एव जाव असखेज्जा पुरिसजुगा सिद्धा। अतो पर—

सिद्धा लक्खा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	५०
सव्वट्ठे लक्खा	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४

15

एव पि असखेज्जा पुरिसजुगा सिद्धा। एते वि लक्खा—

सिद्धा लक्खा	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सव्वट्ठे लक्खा	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

एव जाव असखेज्जा आवलिया दुगादिएगुत्तरा दो [जे० २२२ प्र०] वि गच्छति ॥

20

सिद्धा	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९
सव्वट्ठे	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०

एव असखेज्जा। एगादेगुत्तरा पढमा चित्ततरगडिया णेया ॥

सिद्धा	१	५	९	१३	१७	२१	२५	२९	३३	३७	४१
सव्वट्ठे	३	७	११	१५	१९	२३	२७	३१	३५	३९	४३

25 एव असखेज्जा। एगादिविउत्तरा बितिया चित्ततरगडिया ॥

१ इमो भवे खेवो आ० ॥ २ चित्रान्तरगण्डिका-स्थापनाकरणकविशेषजिज्ञासुभिरवलोक्या अस्मत्सम्पादितनन्दिसूत्रहारिभद्रीवृत्त्यनन्तर-मुद्रितदुर्गपदव्याख्याया १६७ तमे पत्र टिप्पणी ॥

सिद्धा	१	७	१३	१९	२५	३१	३७	४३	४९	५५
सव्वट्ठे	४	१०	१६	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८

एवं जाव असंखेज्जा। एगादितिउत्तरा ततिया चित्तंतरगंडिया ॥

सिवगति	३	८	१६	२५	११	१७	२९	१४	५०	८०	५	७४	७२	४९	२९
सव्वट्ठे	५	१२	२०	९	१५	३१	२८	२६	७३	४	९०	६५	२७	१०३	

सव्वट्ठे	२९	३४	४२	५१	३७	४३	५५	४०	७६	१०६	३१	१००	९८	७५	५५
सिवगति	३१	३८	४६	३५	४१	५७	५४	५२	९९	३०	११६	९१	५३	१२९	

सेसं गाहाणुसारेण णेतव्वं जाव असंखेज्जा ४ ॥

१११. से किं तं चूलियाओ[1]? चूलियाओ[2] आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं चूलिया[3], अवसेसा पुव्वा अचूलिया। से त्तं चूलियाओ[4] ५।

१११. 'चूल' त्ति सिहरं। दिट्ठिवाते जं परिकम्म-सुत्त-पुव्व-अणुयोगे य ण भणितं तं चूलासु भणितं। ताओ य चूलाओ आदिल्लपुव्वाण चतुण्हं जे चूलवत्थू भणिता ते चेव सव्वुवरि ठविता पढिज्जंति य, अतो ते सुयपव्वय-चूला इव चूला। तेसि जहक्कमेण संखा चतु बारस अट्ठ दस य भवंति ५ ॥

११२. दिट्ठिवायस्स[5] णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ। से णं अंगट्ठयाए[6] दुवालसमे[7] अंगे, एगे सुयक्खंधे, चोद्दस पुव्वा[8], संखेज्जा वत्थू, संखेज्जा चुलवत्थू[9], संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जा पाहुडपाहुडा, संखेज्जाओ पाहुडियाओ, संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ, संखेज्जाइं पदसहस्साइं[10] पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवंआया, एवंणाया, एवंविण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जंति[11]। से त्तं दिट्ठिवाए १२।

११२. संखेज्जा वत्थू पणुवीसुत्तरा दो सता। 'संखेज्जा चूलवत्थु' त्ति चतुत्तीसं ॥

१-२ चूलिया ख० सं० ल० शु० ॥ ३ चूलिया, सेसाइं पुव्वाइं अचूलियाइं, से त्तं जे० मो० मु० ॥ ४ चूलिया ख० सं० ल० शु० ॥ ५ दिट्ठिवाए णं ख० सं० ल० शु० ॥ ६ अंगट्ठाए सं० शु० ॥ ७ बारसमे जे० मो० मु० ॥ ८ पुव्वाइं जे० मो० मु० ॥ ९ चूलवत्थू ख० सं० सम० विना ॥ १० पदसतसह° सम० ॥ ११ °विज्जंति सं० जे० ॥

११३ इच्चेइयम्मि दुवालसंगे गणिपिडगे अणंता भावा अणंता अभावा अणंता हेऊ अणंता अहेऊ अणंता कारणा अणंता अकारणा अणंता जीवा अणंता अजीवा अणंता भवसिद्धिया अणंता अभवसिद्धिया अणंता सिद्धा अणंता असिद्धा पण्णत्ता। संगहणिगाहा-

भावमभावा हेउमहेऊ कारणमकारणा चेव ।
5 जीवाऽजीवा भवियमभविया सिद्धा असिद्धा य ॥ ८० ॥

११३ अणंता भाव त्ति भवनं भूतिर्वा भावः, ते य जीवा ऽजीवात्मका अणंता प्रतिबद्धा। 'अणंता अभाव' त्ति अभवनं अभाव अभूतिर्वा। जहा जीवो अजीवत्तेण अभावो, अजीवा य जीवत्तेण, घडो पडत्तेण, पडो य घडत्तेण, एमादि अणंता अभावा प्रतिबद्धा। अहवा जे जहा जावइया भावा तेसिं पडिपक्खतो तावइया चेव अणंता अभावा भवति। 'अणंता हेतु' त्ति पंच-दसावयवत्र्वयणेसु पक्खधम्मत्त सपक्खसत्त अभिलसितमत्थसाधकं 10 वयणं हेतू भण्णति, अहवा सव्वजुत्तिजुत्तं वयणं हेतू भण्णति, अहवा सव्वे जिणवयणपहा हेतू, भतिपांतकत्तणतो, णिद्दोसहेतुवयणं व, सुत्तस्स य अणंत[जे० २२२ द्वि०]गमत्तणतो, एवं अणंता हेतू। भणितपडिवक्खतो य अणंता चेव अहेतू। 'अणंता कारण' त्ति कज्जसाधयं कारणं ति, ते य पयोग-वीससातो अणंता भाणितव्वा। जं च जस्स असाधकं तं तस्स अकारणं, जहा चक्क-दंडादयो पडस्स, एवं अणंता अकारणा। 'अणंता जीवा' इत्यादि कंठं॥

११४ इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए विराहेत्ता 15 चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिंसु। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टंति। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागते काले अणंता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिस्संति।

११४ इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीते काले अणंता जीवा आणाए विराहेत्ता इत्यादि। 'दुवालसंगं गणिपिडगं' ति तिविहं पण्णत्तं–सुत्ततो अत्थतो तदुभयतो य। एमेव आणा तिविहा–सुत्ताणा अत्थाणा

१ इच्चेयम्मि ख० ॥ २ कारणा जीवा। अजीव भवियऽभविया, तत्तो सिद्धा सं० ल शु० ॥ ३ पञ्चावयव दशा वयवज्ञानार्थमत्रोल्लिख्यमानो दशवैकालिकसूत्रनियुक्ति चूर्णि-वृद्धविवरण-वृत्त्यादिगतो ग्रन्थसन्दर्भोऽवधारणीय — पइण्णा-हेउ दिट्ठंतोवसंहार णिगमणेहिं वा णिरुविज्जति आगमवयणं पंचहिं दसहिं वा।' तथा "पतिण्णा पढमो अवयवो १ पतिण्णासुद्धी २ हेऊ ३ हेउसुद्धी ४ दिट्ठंतो ५ दिट्ठंतविसुद्धी ६ उवसंहारो ७ उवसंहारविसुद्धी ८ णिगमणं ९ णिगमणविसुद्धी दसमो १ । इति [कथ्यति पंचावयवं" इति दशवैकालिकसूत्रनियुक्तिगाथा ९३ अगस्त्यसिंहचूर्णौ पत्र २०]। कत्थइ आगम हेउ दिट्ठंतोवसंघार णिगमणावसाणेण पंचावयवेण कहिज्जइ, कदाइ पुण दसावयवेण। तथा—"इदाणिं दसावयवाण परूवणं काहामि तं०—पतिण्णा पढमो अवयवो १ पइण्णाविसुद्धी २ एवं हेऊ तइओ अवयवो ३ हेउविसुद्धी चउत्थो अवयवो ४ दिट्ठंतो पंचमो अवयवो ५ दिट्ठंतविसुद्धी छट्ठो ६ उवसंहारो ७ उवसंहारविसुद्धी अट्ठमो ८ णिगमणं णवमो ९ णिगमणविसुद्धी दसमो १०। इति वृद्धविवरणे पत्र ३८–३९। प्रतिज्ञादयः यथोक्तम्—'प्रतिज्ञा हेतूदाहरणोपनय निगमनान्यवयवाः' [न्यायद० १–१–३२] दशवैकालिकहरिभद्रवृत्ति पत्र ३३ तथा— ते उ पइन्न १ विभत्ती २ हेउ ३ विभत्ती ४ विवक्ख ५ पडिसेहो ६। दिट्ठंतो ७ आसंका ८ तप्पडिसेहो ९ निगमणं १० च १३७॥ दशवैकालिकनिर्युक्ति। अस्या व्याख्यार्थं हारिभद्री वृत्तिरवलोकनीया। एषूल्लेखेषु दशावयवद्वैविध्यमपि न विस्मरणीयम्॥ ४ वयणे सपक्खधम्मत्त-सपक्खत्त अभिलसितसज्झसाधकं आ ॥ ५ पावकत्तणतो आ दा ॥ ६ इच्चेयं खं शु एवमग्रेऽपि सर्वत्र ज्ञेयम् ॥

तदुभयआणा य ऐवं एगट्ठिता तहा वि अभिधाणतो विसेसो कज्जति–यदा आज्ञाप्यते एभिः तदा आज्ञा भवति, तंतुंपटव्यपदेशवत् । आज्ञाप्यते यया हितोपदेशत्वेन सा आज्ञा इति । इदाणिं एतेसिं विराहणा चिंतिज्जति–जं सुत्ततो दुवालसंगं गणिपिडगं तं अत्थतो अभिनिवेसेण अण्णहा पण्णवेंतो ताए अत्थाणाए सुत्तं विराहेत्ता तीते काले अणंता जीवा संसारं भमितपुव्वा, गोट्ठामाहिलवत् । अहवा जं अत्थतो दुवालसंगं गणिपिडगं तं सुत्ततो अभिणिवेसेण अण्णहा पढंतो ताए सुत्ताणाए अत्थं विराहेत्ता तीते काले अणंता जीवा संसारं भमितपुव्वा 5 जमालिवत् । अहवा आणं ति-पंचविहायारायरणसीलस्स गुरुणो हितोवदेसवयणं आणा, तमण्णधा आयरंतेण गणिपिडगं विराधितं भवति, एवं तीए काले अणंता जीवा संसारं भमितपुव्वा, एसो अक्खरसमो अत्थो । इमो अणक्खरसमो–आणाए विराधेत्ता इति जहा छायाए भुंजित्ता गतो, णो च्छायाए करणभूयाए भुंजित्ता, किंतु च्छायायां भुक्त्वा गतेति, एवं आज्ञायां विराधनं कृत्वा । सा य आणा इमा–'इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं आणाए विराहेत्ता' । सेसं पूर्ववत् । पडुप्पण्ण-अणागतेसु वि सुत्तेसु एवं चेव वत्तव्वं, णवरं पडुप्पण्णे काले परित्ता जीवा 10 इति, अणंता असंखेज्जा य [जे० २२३ प्र०] ण भवंति, सण्णिमणुयाणं संखेज्जत्तणतो ॥

११५. इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अतीतकाले[3] अणंता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं वितिवइंसु[4] । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं वितिवयंति[5] । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं वितिवतिस्संति[6] । 15

११७. तिसु वि आरायणसुत्तेसु एवं चेव वत्तव्वं ॥

११६. इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं ण कयाइ णाऽऽसी ण कयाइ ण भवति ण कयाइ ण भविस्सति, भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे णिअए[7] सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे । से जहाणामए[8] पंचत्थिकाए[9] ण कयाति णाऽऽसी ण कयाति णत्थि ण कयाइ[10] ण भविस्सति, भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवा णीया सासता अक्खया अव्वया अवट्ठिया णिच्चा, एवामेव दुवालसंगे गणिपिडगे ण कयाइ णाऽऽसी ण कयाइ णत्थि ण कयाइ ण भविस्सति, भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे णिअए[11] सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे । 20

११६. ण कताइ णाऽऽसीत्यादि । त्रिकाले नास्तित्वभावप्रतिषेधकं सूत्रम् । 'भुविं च' इत्यादि त्रिकाले अस्तित्वभावप्रतिपादकं सूत्रम् । त्रिकालभावित्तणतो चेव अचलभावत्वाद् ध्रुवं मेर्वादिवत् । धुवत्तणतो चेव जीवादि- 25

१ एए एग° दा० ॥ २ तंतुभिः पटं व्यय, देवदत्तवत् आ० दा० ॥ ३ तीए काले जे० मु० ॥ ४-५-६ वीइव° जे० मो० । वीतीव° शु० ॥ ७ णीते ख० ल० शु० ॥ ८ °णामे ख० ॥ ९ °काया ख० डे० ल० शु० ॥ १० ण भवंति ण कयाइ ण भविस्संति, भुविं च भवंति च भविस्संति य, धुवा णीया सासता अक्खया अव्वया अवट्ठिया णिच्चा, दा० ल० शु० ॥ ११ णीते ख० ल० शु० ॥

णवपदत्थेसु नियुक्तं नियतं जहा लोकवचनं पंचास्तिकायेष्विव। णियतत्तणतो चेव 'सासतं' शश्वद् भवतीतिशाश्वतम्, प्रतिसमया ऽऽवलिक-मुहूर्त दिनादिष्विव कालः। सासतत्तणतो चेव वायणादिसु 'अक्खयं' नास्य क्षयो अक्षयम्, गंगा सिंधुप्रवाहेष्वपि पोंडरीकहृदवत्। अक्खयत्तणतो चेव 'अव्वयं' नास्य व्ययो अव्ययम्, मानुषोत्तराद् बहिसमुद्रवत्। अव्वयत्तणतो चेव स्वप्रमाणे अवट्ठितं जंबूद्दीपादिवत्। अवट्ठितत्तणतो चेव सव्वहा चिंतिज्जमाणं 'निच्चं' आकाशवद्
5 अविनाशीत्यर्थः। अहवा एते धुवादिया एगट्ठिता। चोदक आह-इच्चेयं दुवालसंगं धुवादिपदपरूवितं किमाणागेज्झं दिट्ठंततो वा सज्झं? आचार्याऽऽह-जम्हा जिणा अणण्णहावादिणो तम्हा तेसिं वयणं सव्वं आणाते चेव गज्झं, कहिंचि दिट्ठंततो वि गज्झं। इह दुवालसगस्स धुवादिपरूवितत्थस्स साधको इमो दिट्ठंतो-'से जहानामते' त्यादि कंठं॥

११७ से समासतो चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। तत्थ दव्वओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ। खेत्तओ णं सुयणाणी उवउत्ते
10 सव्वं खेत्तं जाणइ पासइ। कालओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वं कालं जाणइ पासइ। भावओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वे भावे जाणइ पासइ।

११७ तं च दुवालसंगसुतं चतुव्विहं दव्वादि। अभिण्णदसपुव्वादियाण जाव सुतनाणकेवली ते पडुच्च भणितं। दव्वतो णं सुतनाणी सुतनाणेणोवयुत्तो सुत्तविण्णासीए सव्वदव्वादिं जाणति पासति य। णणु पासइ त्ति विरोहो? उच्यते-जम्हा अदिट्ठाण वि मेरुमादियाण सुतणाणपासणताए आगारमालिहइ, ण यादिट्ठ लिहइ,
15 पण्णवणाए य भणिता सुतणाणपासणत त्ति, ण विरोधो। आरतो पुण जे सुतनाणी ते सव्वदव्वनाण-पासणतासु भइता। सा य भयणा मतिविसेसतो जाणितव्वा। एवं खेत्त-काल-भावेसु वि [जे० २२३ द्वि०] भाणितव्वा॥

सुतनाणदसणत्थं भणति-

११८ अक्खर १ सण्णी २ सम्मं ३ सादीयं ४ खलु सपज्जवसियं ५ च।
गमियं ६ अंगपविट्ठं ७ सत्त वि एए सपडिवक्खा॥ ८१॥
20
[आव० नि० गा० १९]

आगमसत्थग्गहणं जं बुद्धिगुणेहिं अट्ठहिं दिट्ठं।
बिंति सुयणाणलभं तं पुव्वविसारया धीरा॥ ८२॥

सुस्सूसइ १ पडिपुच्छइ २ सुणेइ ३ गिण्हइ ४ य ईहए ५ यावि।
तत्तो अपोहए ६ वा धारेइ ७ करेइ वा सम्मं ८॥ ८३॥
25
मूयं १ हुंकारं २ वा बाढक्कार ३ पडिपुच्छ ४ वीमंसा ५।
तत्तो पसंगपारायणं ६ च परिणिट्ठ ७ सत्तमए॥ ८४॥

१ जिणा णऽण्णहा आ० ॥ २ तत्थ इति खं० दे० ल० शु० विशामचूदरणे ३०० पत्रे नास्ति ॥ ३-५-७-९ ण हारोपा० ॥ ४-६-८ सव्वं ख विशामन्चूदरणे ३०० पत्रे ॥ १० अट्ठहिं वि दिट्ठ जे० ७० ॥ ११ आवि खं० । या जे० म० ॥ १२ या ल० ॥

सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ णिज्जुत्तिमीसिओ भणिओ ।
तइओ य णिरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥ ८५ ॥

[आव० नि० गा० २१-२४]

से त्तं अंगपविट्ठं । से त्तं सुयणाणं । से त्तं परोक्खणाणं ।

॥ से त्तं णंदी सम्मत्ता ॥

११८. अक्खर० गाहा । एसा चोद्दसविहसुतभावपरूवणा कता ॥ ८१ ॥ एत्थं आयारादिगणधरागमपणीतस्स[1] पत्तेगबुद्धभासितस्स वा तहाकालणुभावतो बल-बुद्धि-मेधाऽऽयुहाणिं जाणिऊण जे य सुतभावा आयरिएहिं निज्जूढा तेसु गहणविही दंसिज्जइ—

आगम० गाहा ॥८२॥ इमे ते अट्ठ बुद्धिगुणा—

सुस्सूसति० गाहा ॥८३॥ विणेतस्स अत्थसवणे इमा विही—

मूयं हुंकार० गाहा ॥८४॥ गुरुणो अणुयोगकहणे इमा विही—

सुत्तत्थो खलु० गाहा ॥८५॥

जं ण भणितमूणं वा अतिरित्तं वा वि अहव विवरीतं ।
तं सम्मऽणुयोगधरा कहेंतु कातुं मम खवंतिं ॥ १ ॥

णि रे णं ग म त्त ण ह स दा जि या पसुपतिसंखगजट्ठिताकुला[2] ।
कमट्ठिता धीमतचिंतियक्खरा, फुडं कहेयंतऽभिधाण कत्तुणो ॥ छ ॥

शैकराज्ञो[3] पंचसु वर्षशतेषु व्यतिक्रांतेषु अष्टनवतेषु नंद्यध्ययनचूर्णी समाप्ता इति ॥ छ ॥ छ ॥ ग्रन्थाग्रम् १५००॥



१ 'गणधरपणीतस्स आ० दा० ॥ २ णिरेणगामेत्तमहासहाजिता पसूयती संखजगट्ठिता आ० ॥ ३ सकराजतो पंचसु वर्षशतेषु नन्द्यध्ययन' आ० ॥

प्रथमं परिशिष्टम्

नन्दीसूत्रान्तर्गतानां सूत्रगाथानामकारादिवर्णक्रमेण अनुक्रमणिका

द्वितीयं परिशिष्टम्

नन्दीसूत्रचूर्ण्यन्तर्गतानामुद्धरणानामकारादिवर्णक्रमेण अनुक्रमणिका

द्वितीयं परिशिष्टम्

नन्दीसूत्रचूर्ण्यन्तर्गतानामुद्धरणानामकारादिवर्णक्रमेण अनुक्रमणिका

३

तृतीय परिशिष्टम्

नन्दीसूत्रचूर्णिगतानि पाठान्तर-मतान्तरनिदर्शकानि स्थानानि

	पत्र पंक्ति		पत्र पंक्ति
अण्णायरियमतेण	७१ १७	अहवा	१७ १३
अण्णे	२२ २२, ३२ ३	अहवा पाढो	१२ २
अण्णे पुण	८ ११	केइ	४१ ६
अण्णे पुण आयरिया	४१ २	पाढंतरं इमं	२ १४
अण्णे भणंति	९ २५, २४ २१	पाढंतरं	८ ११, ५२ ६, ७० २

चतुर्थं परिशिष्टम्

नन्दीसूत्र-तच्चूर्ण्यन्तर्गतानां ग्रन्थ-ग्रन्थकार-स्थविर-नृप-श्रेष्ठि-नगर-पर्वतादीना-मकारादिवर्णक्रमेणानुक्रमणिका

[अस्मिन् परिशिष्टे * एतादृक्पुष्पिकायुतानि नामानि नन्दीसूत्रमूलगतानि ज्ञेयानि, ० एतादृक्शून्ययुतानि नामानि उद्धरणस्थानत्वेनास्माभिर्निर्दिष्टानि ज्ञेयानि, शेषाणि च नामानि चूर्णि-टिप्पणिसत्कानि ज्ञेयानि]



पञ्चम परिशिष्टम्

नन्दीसूत्र-तच्चूर्ण्यन्तर्गतानां विषयव्युत्पत्त्यादिद्योतकानां शब्दानामकारादिवर्णक्रमेणानुक्रमणिका

[अस्मिन् परिशिष्टे *एतच्चिह्नाङ्किता शब्दा नन्दीमूलसूत्रान्तर्गता तत्र व्याख्याता ज्ञेया, +एतच्चिह्नाङ्किता शब्दा चूर्णिकृता ग्रन्थसन्दर्भे स्वयं प्रयोजिता ज्ञेया, शेषाश्च शब्दा सूत्रान्तर्गता चूर्णिकृता व्याख्याता अवबोद्धव्या ।]



PRAKRIT TEXT SERIES

PUBLISHED WORKS

1 ANGAVIJJA

-Demy Quarto size Pages-8+94+372 Price Rs 21/-

Angavijjā is published for the first time by the Prakrit Text Society It is critically edited by Muni Shri Punyavijayaji, with English Introduction by Dr Motichandra and Hindi Introduction by Dr V S Agarwal.

Angavijjā is an ancient Prakrit Text relating to prognostication on the basis of bodily signs The work is of unknown authorship but was considered to be of high antiquity and great sanctity having been delivered by Mahāvira himself Its internal evidence points to its having been finally compiled at the end of the Kushan period about 4th Century A. D

It is highly important document firstly for the history of Prakrit language and secondly for the cultural history of India. It contains hundreds of lists of all descriptions for example seats postures utensil. containers flowers trees personal names food and drinks bed steads conveyances textiles ornaments jewellery coins birds animals arrows weapons boats gods goddesses etc.

2 PRĀKṚITA PAINGALAM. Part I

-Demy Octevo size Page-700 Price-Rs 16/-

Prakritapaingalam is a text on Prakrit and Apabhramśa Metres It is critically edited with three Sanskrit commentaries on the basis of the two earlier editions and further available manuscript material by Dr Bholashankar Vyas a distinguished member of the Hindi Department of the Banaras Hindu University He has also added Hindi translation with philological notes and glossary of Prakrit and Apabhramśa words.

3 CAUPPANNAMAHĀPURISACARIYAM.

-Demy Quarto size Pages-8+68+384 Price Rs 21/-

Cauppannamahapurisacariyam is a great biographical work by Ācharya Śilaṅka of the 9th Century A D It is critically edited by Pt Amritlal Mohanlal Research scholar of Prakrit Text Society Its Introduction is written by Dr K L. Bruhn

It gives the lives of 54 great men revered by the Jains viz. 24 Tirthaṅkaras 12 Chakravartins 9 Baladevas and 9 Vāsudevas

4 PRAKRITAPAINGALAM Part II

-Demy Octavo size Pages 16+16+592+12 Price Rs 15/-

The Part I of this work on Prakrit metres is published as the Second Volume of the Prakrit Text Series. Part II contains the editor's comprehensive Introduction dealing with the problems of the PrākṛtaPaiṅgalaṁ together with a critical and comparative study of the metres that form the subject matter as well as the exact nature of the language of the original text and also a literary assessment of the portion which the author intended to serve as illustrations to the Matrika and Varnika metres dealt with by him.

5 ĀKHYANAKAMANIKOŚA.

-Demy Quarto size Pages 8+16+25+422 Price Rs 21/-

Ākhyānakamaniko a is critically edited for the first time by Muni Shri Punyavijayaji.

It is written by Nemichandra and is commented upon by Āmradeva of the 12th Century A. D This book is a mine of historical and legendary stories in Prakrit and Apabhramśa

6 PAUMACARIA Part I.

-Demy Quarto size Pages 8+40+376 Rs. 18/-

This is the earliest Prakrit version of the story of Rama. It was written in about the third Century A D by Vimala. The work is printed with Hindi translation. It is edited by Muni Shri Punyavijayaji and translated by Prof S M vora, M A. Jamadarśanāchārya. Its Introduction is written by Dr V M. Kulkarni.

